8,2

अंक (२)

[बिहार सरकार द्वारा विद्यालय आ पुस्तकालय खातिर स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी परिवार (पटना) के त्रैमासिक मुख-पत्र]

⁂

जामें रस कछु होत है ताहि पढ़त सब कोय
भाव अनूठो चाहिए भाषा कोऊ होय

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

⁂

प्रधान सम्पादक

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

६
र

किरिनि-३-४
१९६५ ई०
१९६६ ई०

संरक्षक

श्री अम्बिका प्रसाद सिंह, राज्यमंत्री, बिहार

सम्पादक-मंडल

रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द', रासबिहारी राय शर्मा, गणेश चौबे

प्रो० वसन्त कुमार, रामनाथ पाठक 'प्रणयी',

सहायक सम्पादक

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

एह अंकमें पढ़ीं——

पन्ना
१ ऐसन तोहार कुर्बानी बा (कविता) पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय १
२ कुन्दन सिंह-केसर बाई (कहानी) —स्व० शिवपूजन सहाय ३
३ वतन की राहपर (कहानी)—गिरिजाशंकर राय, 'गिरिजेश' ५
४ ऊ कारीगर रहे (कहानी)—दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' १०
५ परमपद (कहानी)—स्वामी विमलानन्द सरस्वती १४
६ लवङ्गा फूआ क सपना (कहानी)—राजवली दूबे 'तरल' २४
७ मदारी (कहानी) – प्रो० विवेकी राय २९
८ बन्नी माई आ कवि (कहानी)—प्रो० उमाकान्त वर्मा २९
९ समुझ के फेर (कहानी)—मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरीचाचा) ३७
१० बेला (कहानी)—लव शर्मा 'प्रशान्त' ४२
११ जिनिगी के मोह आ तियाग (कहानी)—मणीन्द्रभूषण त्रिपाठी 'मधुर' ४८
१२ हिलकोरा (कहानी)—रामनाथ पाण्डेय ५१
१३ काठ के हाँड़ी (कहानी)—प्रो० बचन पाठक 'सलिल' ५९
१४ सपना बिखरि गइल (कहानी)—गणेशदत्त 'किरण' ६३
१५ इहो ह चानिये कटल (कहानी)—माधव पाण्डेय 'निर्मल' ६८
१६ गोबरधन जी (कहानी)—रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' ७१
१७ अंगूर (कहानी)—डा० स्वर्णकिरण ७३
१८ सम्पादक के विचार
१९ संमति ८०

प्रकाशक—भोजपुरी परिवार, पटना-३

'तमसो माँ ज्योतिर्गमय'

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के,
पह फाटल, बिहँसी अब किरिनियाँ 'अँजोर' के।

कला—६]   अक्टूबर १९६५; जनवरी १९६६   [किरिन ३-४

ऐसन तोहार कुर्बानी बा (आकास बानी पटना के सौजन्यसे)

गांधी के अखंड, भारत के—सपना आजु पुकारऽता
इतिहास आजु आगे बढ़ि के, ओह पौरुष के ललकारऽता
छत्रसाल, परताप, शिवा के, जुग अजहूँ हूँकारऽता
शौर्य्य अउर साहस के दुर्दम क्रुद्ध नाग फूफकारऽता
चंगेज़ गजनवी गोरी से, बदला के मोका आइल बा
भारत माता के नयननि के झर-झर आंसु न भुलाइल बा
सुनले बानी इतिहास बराबर अपना के दोहरावेला
गौरव स्वदेस के बार बार, बलिदानी के गोहरावेला
ई, यादि रहे हरदम ऐसन मोका आवे ना जीवन में
हर बार न ऐसन तूफानी हिलकोर उठेला तनमन में
बिजय-माल ले खड़ा हिमालय स्वागत में झूमि गावता
अँजुरिन्ह फूले चढ़ावे के, देवन्हि के टोली आवता
बिजय-तिलक देबे खातिर, उमड़त सागर के पानी बा
लाल लहू से लिखी काल, ऐसन तोहार कुर्बानी बा
आइल उबाल बा शोणित में, सुलगऽ दुश्मन के खाक करऽ
आकास हवा में त्रिभुवन में, गर्जन के भीषन नाद करऽ
उत्ताल तरंगनि पर नाच, प्रलयंकर के आह्वान करऽ
बलि के बेदी पर बिना हिचक, निर्भय मस्तक के दान करऽ

—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

कुन्दन सिंह—केसर बाई

—स्व० शिवपूजन सहाय (पश्चिमी शाहाबाद)

दूनों के उठती जवानी रहे। ओह जवानी पर भी अइसन चिक्कन पानी रहे कि देखिनिहार के आँखि बिछिलात चले। गाँव के लोग कहे कि बरम्हा का दुआरे जब सुघराई बँटात रहे तब सबसे पहिले ईहे दूनों बेकती पहुँचले। सचमुच दूनों आप-आपके सुग्घर। बिआह का बेर माँड़ों में देखिनिहार का धरनिहार लागल रहे।

घर-परिवार में केहू ना रहे। दुइए प्रानी से आँगन-घर गहगहाइल बुझाइ। जब एगो बनूक छतियावे त दोसर ओकर तमतमाइल चेहरा निहार-निहार के मुसुकाए आ भहूँ फरफरावे। एगो जब बँसुरी बजावे बइठे त दोसर चिटुकी बजाइ-बजाइ के गुनगुनाए लागे। एगो जब कसरति करे लागे त दोसर दाँते ओठ चाँपि के हुँकारी देत चले। एगो जब खाये बइठे त दोसर बेनिया डोलाइ के सवाल पूछें।

एक दिन आसिन के पूनो का अँजोरिया में अपने अँगना पटिहाटि खटिया पर सुजनी डसाइ के दूनों बतरस के आनन्द लेत रहले कि एही बीच में एगो कहलस, हम तोहरा के बहुत पेयार करीला। ई सुनि के दोसरकी बोललि, हमहूँ तोहरा पेयार के दुलार करीला।

"वो दुलार के भी हम सिंगार करीला। जब-जब हम तोहरा दुलार के सिंगरले बानी, तोहरा जरूर इयाद होई। माघ के रिमझिम मघेरिया में, फागुन के फगुनहट से मस्ताइल रँगझरिया में, चइत-बइसाख के खुब्बे फुलाइल फुलवरिया में, जेठ के करकराइल दुपहरिया में, असाढ़-सावन के उमड़लि बदरिया में, भादों के अधिरतियामें—अन्हरिया में, कुआर-कातिक के टहाटह अँजोरिया में, अगहन पूस के कँपकँपात सिसिकरिया में—जब-जब तूँ हमरा के दुलार कइलू, हम वोह दुलार के अइसन सिंगार कइलीं कि तोहार आँखि मँड़राए लागलि। बाटे इयाद?"

अतना सुनिके ऊहो ठुनुकि-ठुनुकि के जम्हाई लेबे लागलि। अइसन रंगढंग देखि के ई कहलसि कि हमनीं का भगवान के दीहल सब सुख भोगत बानी, बाकी अपना देस के कौनो सेवा अबहीं ले ना सँपरल। छत्री

ना देखवलीं। हमरा इसकूल के साथी सब कहेलनि कि जब से तोहार बिआह भइल तब से तूँ अइसन मउग हो गइलऽ जे दिन राति घरे में घुसल रहेलऽ।

"एह खातिर हम का करीं? सरकारे आपन करनी निहारीं। पहिले रउरे उसकाईंले, पाछे लागीले देसभक्ति के गीति गाइके अपना साथियन के ओरहन सुनावे। रावा जवन काम करबि तवना में हमरा साथ देबही के परी। रावा झंडा लेके निकसीं त देखीं जे हमहूँ अपने का संगे निकसत बानी कि ना। हमहूँ छत्री के बेटी हईं। हमरा नइहर के सखी के मरद अपना संगे हमरा सखिओ के जेहलि में ले गइल बाड़े। रउरो हमरा के जहाँ चाहीं तहाँ ले चलीं। रावा साथे हम आगिओ में कूदबि त तनिको आँच ना लागी। रउरे संगे तरुअरिओ के धार पर हँसते-हँसते चलि सकीला। बाकी रउरा बिना हम कतहीं ना जाइ सकीं। पहिले सरकारे अपना के सुधारीं, हम त पिछलगुई हईं। मरद के परछाँहीं मेहरारू हवे। मेहरिया के पाछा-पाछा मरदा रसियाइल-डोरियाइल फिरी त कवन अभागिन होई जे ओकरा के लुलुआवत रही।"

"तोहार बात हम काटत नइखीं, बाकी सभ दोस हमरे नइखे!"

"अच्छा त बिहान होखे दऽ, हमहीं पहिले तिरंगा झंडा ले के निकसबि।"

"तब त हमार छाती सिकन्दरी गज से डेढ़ गज के हो जाई। बात नइखीं बनावत।"

"तोहरा बात बनावे से अधिका बात चिकनावे आवेला।"

"अच्छा त काल्हु जब सरकारी चउकठ लाँघी देखल जाई हमार उमंग तरंग।"

२

सन् उनइस सौ बेयालिस ईसवी में भोजपुरियो इलाका अइसन अगियाइल रहे कि जेने देखीं तेने उतपाते लउके। कहीं सड़क कटात रहे, कहीं टेसन आ मालगोदम लुटात रहे, कहीं थाना-डाकखाना फुँकात रहे, कहीं भाला-बरछा-फरसा मँजात रहे, कहीं मल्लू अइसन मुँह वाला टामी लोग के लाटा कुटात रहे, कहीं रेल के लाइन उखड़ात रहे, कहीं कौनो पुलिस-दारोगा ओहारल डोला में लुका के परात रहे, कहीं मकई का खेत

---

*सन् १९४२ ई० के उत्तर प्रदेश के एक साच घटना पर लिखल कहानी—ले०

में लड़ाई के मोरचा बन्हात रहे, जहाँ सूई ना समात रहे तहाँ हैंगा समवावल जात रहे, सगरे अन्धाधुन्हिए बुझात रहे।

कुन्दन-केसर के देखादेखी गाँवों के लोग हमेसा कमर कसले रहसु। सभे ईहे बिनवत-मनावत रहे कि गोरन्हि के राज उलटि जाउ। गोरा अफसर लोग जेने-तेने बिललात फिरत रहसु। दूनों के साहस आ उत्साह त काम करते रहे, दूनों के रूप के जादू सबसे बेसी मोहनी डाले। जेने दूनों के दल चले तेने हंगामा मचि जाइ। दूनो बेकत के बोली सुनला से लोगन के मन ना अघात रहे। जनता पर रूप आ कंठ के टोना अइसन चलल कि अँगरेजी सरकार के माथा ठनके लागलि। दूनों के नाम वारण्ट कटल। जनता दूनों के पलक-पुतरी अइसन रच्छा करे लागलि। जब थाना-पुलिस के गोटी ना लहलि त फउजी गोरन्हि के तइनाती भइल। तबो गोरा लोग के छक्का छूटि गइल, बाकी दूनों के टोह ना मिलल।

जवना दिन दूनों अपना घर के असबाब एने-ओने हटावे खातिर गाँवें पहुँचले तवने दिन पांठियाठोक गोरा पहुँचले सऽ। दूनों अपना घर के खलिहाइ के भीतरे बतियावत छतियावत रहलेसनि, तवले गोरा धमकि अइलेसऽ, हल्ला सुनि के दूनों के कान खड़ा हो गइल। कुन्दन कच्छा कसि के बनूक में टोटा भरे लागल, केसर झटपट मियान से तरुआरि खीलि के कमर में आँचल बान्हि लेलसि। दूनों हूह करत धड़फड़ बाहर निकलले त केवार खुलते गोरा अकचकाइ गइलेसऽ। कुन्दन तीनि जाना के ठावें पटरा कइ देलस आ केसरी दुइ जाना के माथ काटि के दुरुगा-भवानी अइसन छरपे लागलि। गोरा लोग के जबले झटका खुले-खुले तवले दूनों के मार-काट से केहू के हाथ कटा के गिरि परल आ केहू के कपार फाटि गइल केहू छाती में छेद ले के गिरल कँहरे लागल। अपना छत्रियाँव दिखवला का बाद दूनों खूनी बहादुर खेत रहले। गोली लगला पर केसर घुमरी खात कुन्दन का देह पर जा गिरलि। अतने में गाँव-जवार के लोगनि के गोहारि जुटलि, बाकी गोरा आपन पाँचो लासि लेके पराइ गइलेसऽ।

कुन्दन-केसर के लोथ उठाइ के लोग गंगाजल से नहवावल, चन्दन चढ़ावल, फूलमाला से सजावल, अँजुरी के अँजुरी फूल बरिसावल, अगरबत्ती-कपूर के आरती देखावल, दूनों के जयजयकार से आकास गुँजावल, गाँवें-गाँव जलूस घुमाइ के दूनों साहसी सहीदन के पूजा करावल आ घरे-घरे देवी लोग लोर ढारि ढारि अर्घ चढ़ावल। चारू ओर पंचमुखे ईहे सुनाइ जे अइसन मरन भगवान बिरले के देले।

वतन की राहपर

—गिरिजाशंकर राय, 'गिरिजेश'

धाँय..धाँय..गड़म धाँय गड़ड़. धम्म . भारत-पाकिस्तान का बीच में लड़ाई खूब जमि के होत रहे। पाकिस्तान का हर ईंट क जवाब भारत पत्थर से देत रहे। असमान से लड़ाई का मैदान में आगि बरिसति रहे। चिराइन गँध से नाकि भरि गइल रहे। दुसमन का हमला के भारत क बहादुर सिपाही हर मोरचा पर वेकाम बनावत अउरी पाकिस्तानी सेना के गाजर-मुरई नियर बालत आगे बढत जात रहन स। भारती वीर जवानन क वीरता के आगे अमेरिकी पैटन टैंक क फौलाद पानी बनि जा। तोपनि के कान फारे वाली आवाजि से आकास फाटत रहे। गोला जवन तोपन का मुँह से निकलसुस असमान का छाती में जा के समा जा सन। राति क निचाटपन गोला क अवाजि तूर देले रहे। फायरिंग का अँजोर में कवनो लासि कबो-कबो चमकि जा। सबेर होत रहे बाकिर अबही रात कुछ रहे। अब्दुल हमीद का आँखि ले नीन उड़ि गइलि रहे। सुतले कई दिन हो गइल रहे। मोरचा पर ऊ पूरी तरह डटल रहलन। हर तोपची कीहें बिजुली का फुरती से दउरि के पहुँचसु त कबो जीप पर सवार होके आदेस देसु.. रामू सिंह तोप क मुँह घुमा के दुसमन का सेना का ओह टुकड़ी ओर करऽ जेवन सामने बा ...आ ओह के निसाना बनावतऽ ....रशीद खाँ पाकिस्तान का ओह तोप पर गोला दागऽ जेवना क गोला हमनी का ओर आवत बा। चाबस..चाबस गुरुंग ..निसाना ना चूके... मारु ठीक से निसान भिड़ा के । अब्दुल हमीद क ललकारि तोपचिन का मन में एगो नया उत्साह आ जोस भरि दे। हमीद क फुर्ती आ मेहनत देखि के ऊ हो आपन प्राण हथेली पर लेलेसुस।

हमीद कबो एह तोप पर......कबो ओह तोप पर जासु। आजु नियर खटनी कबो ना परलि रहलि ह। बुझा, जइसे आजु उनकरो अगिन परीछा बा। आजु क लड़ाई बड़ा भयंकर रहे। पाकिस्तान आजु जान पर खेलि गइल बा। टैंकन के झोंकले चलल जात बा। बाकिर केतनों कीमत पर ओकर दाँत खट्टा करे के परी...उनकरा बुझाइल कि आज ऊ रहिहन चाहे देस क आन रही। हमीद खातिर हमर देस क आन... ...अब्दुल हमीद कवन तुलना देस खातिर वतन का शान खातिर हमरा नियर केतने हमीद कुर्बान हो जइहन। बहुत दिन पर त मन क साधिपूरा भइल चाहति बा। हमीद का सोझा बीतल दिन इसपेरस गाड़ी नियर पास करे लगलन स।

गाजीपुर क सहीदन क इतिहास सन् ४२ वाला सुनि के हमीद क मन देस खातिर जीव देवे के के ललचि क पड़े। जब उनकर एगो संगी जिला का सहीदन क कहनीं सुनवलसि कि कइसे सन् ४२, का हड़गुड़ानि में मुहम्मदाबाद तहसील पर झण्डा गाड़े खातिर सहीदन क टोली हथियार अंगरेजन क बनूकि क गोली का सोझा अपना के झोंकति गइलि। अब्दुल हमीद खिनसा गइल रहलन जेतना घरी ऊ सुनलन कि कस्बा क एगो मुस्तफा काजी नाँव क मुसलमान तहसीलदार क संग देके मुसलमान का नाँव पर करिखा पोती दिहलसी। हमीद का बुझा कि केहू उनकर करेजा उमेठत बा . ना ...ना हम एह कलंक के धोइबि...एगो लहरि मनमें उठलि. जवनी धरती हमरा के जनम देहले बा ओकरा खातिर हमरो ऊहे करे के परी जेवन सहीदन क टोली कइलसि।

अन्हार-अंजोर क झगरो चलत रहे। समय केकर कबों राह ना देखलसि। अब्दुल हमीद अपना के बेल्कुल साधि घललन। बनूकि क निसाना पक्का रहे। उड़ति चिरईं के मारि के लोटा देसु। हर काम में फरहर...सायकिल रेल नियर दउरावसु...संगी उनकर नाँव धइलन धइलन चंचल हमीद...मनमें दूसर बाति रहे त पढ़ाई में मन कइसे लागो ...एही घरी अब्बा हाथ में बेड़ी डालि दिहलन। निकाह भइल, चान क सुघराइ ले ले...धान क पियराईं ले ले फूल क सुकुमारी ले, ले...पाकलि कइनि नियर लचकि लिहले पातरि छुईं-मुईं नियर कनियाँ घरे आइलि... हमीद भुला गइलन अपना के ..जिनिगी क कुल्हि दुख ओकरा एगो हँसी पर बिसरि जा। बूढ़ बाप सिलाईं का मसीन पर आधाराति ले सियल करे...खट...खट...खट...गरीबी से जूझल करे। दिया का अँजोरा आँखि गड़कवला से कबो-कबो पानी भरि आवे...के जानी ऊ मेहनति क पानी रहे कि गरीबी क लोर ?

अचानक एक दिन अब्बा बेमार पड़लन...अम्मी आँखि में लोर भरि के कहलसि "बेटा हमीद अब्बा के बचावे क उपाय करु, ऊहे हमनी क हाथ गोड़ बानऽ...। हमीद कुल्हि संगी साथिन कीहे घूमलन...पाँच रुपया खातिर केहू ना दिहल। आँखि खुलि गइलि..मंदिर पर हरकीर्तन कइल तजिया में हसेन .हुसेन कइल कुल्हि छूटि गइल। साचो अब्बा एगो अलम बानन। बाकिर जेवना अदिमो का दू गोड़ ऊ काहें एगो पर भार दे। काहे राति भर कमइहन हम मउज लेइबि। अब्दुल हमीद अपना के अब्बा एक दिन सेना का दफ्तर में खड़ा पवलन। भारत क बेकारी सुरसा नियर मुँह बवलही रहि गइलि अब्दुल हमीद मलेटरी में भरती

क बाति सुनलन त कुछदेर चुप रहलन फेनु कहलन—“भरती त ठीक बा बाकिर बेटा! जवना दिन समुझिह कि देस के तोहर जरुरति बा ओही दिन देस के अपना के सउँपि दीह।” पलक में आइल लोर अब्बा कुर्ता का बांहिसे पोछलन। हमीद क छाती फूलि गइलि···अइसन कुरान शरीफ नियर जेकर बाप फेनु का।

एगो जुग बीति गइल...एहमें हमीद चार लइका क बाप हो गइलन ...नेहरु जी का जोर से सान्ती रहे। हमीद आपन साहस कहाँ देखावसु ...मोका खोजत रहसु अफसर खुस रहसु स...नायक हो गइलन चीन का लड़ाई में उनका बहादुरी पर सरकार खुस रहे हमीद हवलदार हो गइलन। तरक्की होत रहे हमीद आपन अवसर खोजसु। अब्बा तरक्की क बाति सुनलन त पीठि ठोकलन आ आपन बाति दोहरवलन “जब तूँ अकेले रहल त हमार ऊ सीख रहे...अब त तोहार जामल चारिगो भइलन स··· बेटा वतन का बफ़ादारी में कवनों कोर कसर मत रखिह जब ओहके जरूरत होखे अपना के कुर्बान क दीह।”

धाँय···धाँय गड़म···गड़म···बिचार धारा टूटलि। फजिर होत रहे। भारतीय जवान मोरचा सम्भरले रहनस। कुल्हि तोपि ठीक से काम कर त रहलीस स। हमीद क दिमाग फेनु भुलाइल बाति धइलसि। भारत-पाकिस्तान का बीच जब कच्छ का रन में लड़ाई होति रहे त अब्बा क चिठी आइल रहे—‘बेटा हमीद! पाकिस्तान से लड़े के कच्छ का मोरचा पर जाये के परे त जाके देस क रछा करिह। मुसलमान ऊ, जेवन वसूल पर मरि जा..अपना देस क, आजादी क, रछा कइल हमनी क वसूल ह..एह पर मरि मिटिह। पाकिस्तानगुमराह भइल बा तबे हिन्दू मुसलमान का बीच में फूट डाले खातिर जेहाद बोलत बा। ओहके का पता कि विजयदशमी के मुसलमान अब आपन तेवहार मानत बान स आ ईद के हिन्दू आपन . तूँ त गाँव में देखलही बाड़ की ईद की सेवई चउधरी घरे आके कइसे पीएलन आ दशहरा क मिठाई हमनी का उनकरा कोहे कइसे खाइला जा।” हमीद का आँखि पर आपन गाँव धामोपुर नाचि गइल कि कइसे उनकर सेवई गोपाली छोरि के पी जा...आ ओकर मिठाई ऊ कइसे छोरि के खा जासु···कइसन हमार इ देस बा ओह में हमार गाँव जहाँ मजहबी देवालि के तूर दिहलबा।

धाँय···धाँय .गड़म सरर्र...धाँय...हमीद उपर देखलन विचार धारा रुकि गइलि आकास में पाकिस्तान साबर जेट मेड़रात रहलन स। अँजोर होइगल रहे बाकिर बारुद का धूआँ में सुरुज लुका गइल रहे।

धाँय..धाँय..धाँय ..हमीद सामने देखलन दइत्तर नियर पाकिस्तानी फौज पैटन टैंक लेले बढलि आवति रहे। अंगार बरिसत रहे रामू सिंह.... रशीद मिया..गुरुंग .सब लो ग मोरचा बनावजा...गुरुंग फायर करऽ.. सुरजित सिंह एंगिल बना के निसाना ल..हमीद क अवाजि कड़कि उठलि। धाँय..धाँय...भयंकर लड़ाई। एगो तानाशाह आपन जिद्दपूरा करे खातिर ई खून खराबा करत रहे। सायद अयूब खाँ भारत क इतिहास ना पढ़लन..कहलजाला विलायत में पढ़ले हउवन..नहीं त ऊ जनतन कि शांति से रहला क मतलब कायर बनि के जियल ना ह। उनके का पता कि एहदेस पर जे आइल ऊ कुछ दे गइल जब भारत जागल तब केहू से ना हारल..आजु कुल्हि देस एक बटल बा त अयूब नियर केतने सियार रास्ता काटसु। भारत के सांत कइल अब मोसकिल बा कश्मीर लेत लेत कहीं पाकिस्तान चलि जा।

ओस्ताद···खुदा हाफिज···हमीद चिहाके देखलन रशीद दम तोड़ देहलसि। बन्दे मातरम्···जयहिन्द···गुरुंग···सुरजित···साथे-साथे खतम हो गइलन स। दैत्याकार टैंक गुर गुरात आगि उगिलत बढ़त आवत रहन स। हमीद का मालूम भइल कि कुल्हि विजय अकारथ जाले। तोपन पर ले हटि गइला पर पाकिस्तान क अधिकार हो जाई आ फेनु एही तोपन से हमनी के भूंजी देई। थोरकी देर में भारत क कुल्हि एह छेत्र क रच्छा-पाति टूटि जाई। ना···ना···ई कइसे होखी आजु देस के बुझात बा कि हमार जरूरत पड़ि गइल। हमीद का सोझा अब्बा क सूरति खट···खट···ढिबरी बारि के सिलाई मसीन चलावति नाचि गइल। माई- मेहरारू क सारी क पेवन बड़ हो गइलन स ··हमरा बाद के अलम रही··एगो गोड़ एतना बरदास करी तुरंते एगो सूरति लउकलि ··भारत माता हथकड़ी पहिरले एगो राछस धइले जात रहे। अब्बा क कहलि बाति गूँजली-"जब देस के तोहार-जरुरत परे त ओह घरी पाछे मत हटिह···"। हमीद के बुझाइल की जेवना घरी के ऊ खोजत रहले ह ऊ आ गइलि 'गाजीपुर क इतिहास एक बेर फेनु चमकी' '४२ क मुस्तफा क कलंक धोआ जाई··जाई अब्बा क बाति रहि जाई वतन क आन रहि जाई। हमीद का शरीर में बिजुली क फुरती जागि गइलि।

राम प्रसाद·· गुरूंग क तोप सम्हार··समसुद्दीन तू सुर जित क तोपसम्भार सुरजित गुरुमित्र सिंह तूँ ओह तोप पर जा हमीद जीप पर बम भरलन। स्टेयरिंग पर बइठलन जीप स्टार्ट हो गइलि। साथिन की ओर मुँह कके चिचिअइलन···दोस्तो खुदाहाफिज···हमीद चल रहा है···जयहिन्द··। सब देखल हमीद क जीप धरधरा के आवत पैटन टैंकन का ओर चल गइल।

धाँध···धाँय··धाँय···हमीद जीप के विजुली नियर चलावत रहलन। हाथ क गोला टैंकन पर बगल से फेकत जासु··देखत देखत तीन टैंक छितरा गइलन स चउथा लड़ खड़ाइल बाकिर ओहि पर ले चललि मसीन गन क गोली हमीद के छेदी दिहलसि ·जयहिन्द हमीद देखल भारतीय तोपन का गोला से पाकिस्तान क ई हमला अब बेकार होत रहे · तोप नका धूआँ में एगो चेहरा नाचल··अब्बा मुसकियात रहे··बेटा राखि लिहले हमार सान··धाँय···धाँय···हमीद के लिहले जीप उड़ि के हवा में विखरि गइलि।

सबेरे के बेरा रहे। बुढऊ अब्दुल दुआरी पर बइठल दतौन करत रहलन। एगो जीप आके रूकल आ कलक्टर साहब उतरलन···हमीद के पिता आप ही हैं? बूढउ सकपका गइलन····जी हमरे बेटा हउवन···का भइल हमीद के।

"आप क लइका लड़त···लड़त वीर गति पवलसिह ·कलक्टर साहब क कहत-कहत आँखि भरि आइलि। सरकार हई १० हजार रुपया पाँच बिघा खेत, ·परम वीर चक्र प्रदान कइलसिह।"

बुढउ दरजी ठक हो गईलन···फेनु कहलन साहेब हमार बेटा मरल ह रोवत बानी आप कुरान शरीफ कसम ई नाती जहिया बड़ होइहन स त इन्हने से कहबि कि अपना बाप क खून क बदला लेसु स ·अफसोस··हमरा अब कवनो लइका नइखे ना त अबही लड़े के तुरंत भेजती ।"

कलक्टर साहब फाटल कमीज का नीचे देखि के सोचत रहलन कि ओकरा नीचे केतना बड़ दिल बा·· ।

भोजपुरी कहानियाँ, मासिक पत्रिका
सं० श्री रामबली पाण्डेय
भोजपुरी संसद, वाराणसी
मूल्य सालाना-५)—एक अंक के ८ आ०

ऊ कारीगर रहे

दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ऊ सिल्पी रहे—दिल्ली दरबार के प्रधान सिल्पी। सिल्प ही ओकर जीवन, सिल्प ही ओकर आनन्द, सिल्प कला ही धन, परिवार, संसार, सब कुछ।

उमर ओकर साठ बरिस रहे। दुबर पातर सरीर, कमर झुकल, माँस के कहीं पता ना, सजीव कंकाल मात्र। बाकी ओकरा उजर आँखि में तेज के जोति दमकति रहे। मुँह पर आत्म-विसवास के जीअत जागत प्रभा रहे।

ऊ दिन भर गगनचुम्बी मचान पर बइठ के, सैकड़न सिल्पी आ हजारन मजदूरन के साथ—धूप के धूप, सीत के सीत, आ बरखा के बरखा ना समुझि के—राज भवन के निरमान में बरिसन बितवले रहे, यही में आपन गौरव आ सन्तोष समझले रहे।

राति राति भर जागि के ऊ कला के बारीकी, खोदाई, पच्चीकारी, रंगसाजी, नक्कासी, चित्रकारी आदि के चिन्तन क के ओह महल के निरमान में आपन स्वास्थ के साथ-बलि चढ़ा देले रहे, तब कहीं महल तैयार भईल रहे।

साँझ के फाटक के सामने खड़ा होके आपन कारीगरी के ऊ घंटो तक बड़ा ध्यान से देखलसि। फिर दू बूँद आनन्द के आँसू गिरा के अपना सहायक सिल्पियन के साथ, घर के ओर रवाना भईल। ओकरा पीछे हजारन मजदूर ओकर कुछ हथियार ले ले, चुपचाप ओकरा के घरे पहुँचावे खाती चललनि। घर पहुँचला पर ऊ भरल कंठ से उन्हनि के सम्बोधित करके कहलसि "जा लोग । भगवान तोहन लोग के सुखी रखिहें। हमनी के गरीब हइजा परिसरम ही हमनी के धरम ह, याद रखिह लोग।

× × × × × × ×

काल्ह बादशाह के सवारी नया महल में जाई। नया महल में गृह परवेस होई। हजारन पुरुष स्त्री सजधज के महल के बाहर भीतर दौड़तरहन । बेगमन के ऐस आराम के सामान, बादशाह के आराम गाह खातीर इतर, फुलेल, केसर, कस्तुरी आदि सुगन्ध, फर्सफानूस आदि सजावट के सामान, गुलाब जल से भरल हम्माम, आम आ खास दरबार के सजावट, सेना के परदरसन—सब के तैयारी में राज करमचारी बेआकुल रहनस।

खास अफसर साँझ के महल में गइले आ सब के निरीछन क के वापस अइलें। परबन्ध सब ठीक रहे। सहर में मुनादी कर दिहल गईल कि नया महल में बादसाह जी कालिह प्रवेस करिहें आ ओहिजे आम दरबार होई।

× × × × × × ×

रात के सन्नाटा में, महल के परधान फाटक के सामने चौड़ा सड़क प खड़ा खड़ा एक बूढ़ गरीब अँजोरिया के परकास में महल के सोभा निरखत रहे। घंटा भर बीत गइल तबो ओहिजे चुपचाप खड़ा रहे ऊ एक टक महल निरेखत रह गइल।

थोड़े देर बाद तीन चार अधेड़ आदमी ओहिजा अइले। ओह बुढ़ा के बगल में खाड़ हो के ऊ लोग भी महल के देखे लगलें।

सभे चुपे रहे एक आदमी थोड़े देर बाद कहलसि, "गुरुदेब! एतना दिन के परिसरम के फल के ई सौंदर्य रासि के रूप में सामने खड़ा देख के कतना आनन्द होत बा।"

बूढ़ा सिल्पी के धेयान टूटल। ऊ तीनों आदमी के कहलसि, "तूँ लोग हव? कब अइलऽ? का कहलहऽ?"

एक आदमी आपन बात फेर दोहरवलसि। बूढ़ आदमी कहलसि कि कलाकार के कला के त इहे सच्चा पुरसकार ह!

+ × × × × × ×

ऊ महल के ओर देखत फाटक में घुसत रहे कि सिपाही आगे बढ़ि के रोकलसि कि भीतर जाये के हुकुम नईखे।

सिल्पी अचरज में पड़ि के पूछलसि, "केकर हुकुम नईखे? तू के हवऽ"?

सिपाही कहलसि—बादसाह के। हम फौज के एक सिपाही हईं। सिल्पी कहलसि — ई घर हमरन के ना बादसाह के हऽ? हम एह में ना जा सकीं? अच्छा!"

ऊ लौट गइल। तेजी से ऊ घर के ओर चलल जात रहे। सिर ओकर नीचे झुकल रहे आ मन ओकर आकास में। आकास पताल के सोचे में बेआकुल रहे।

× × × ×

हाथी, रिसाला, फौज फिर राजा महाराजा आ अमीर उमराव के सवारी उनकर चोबदार आ खवास सब एक एक क के फाटक के भीतर घुस गईले।

अन्त में बादसाह के सवारी आइल। सोना के तामदान, जरीदार

मखमली पोसाक से सजल कहाँरन के कान्ह पर, ओहू में मूँगा, मोती,हीरा--- जवाहर से लदल बादसाह रहन ।

चोबदार सलामी देलन स । चारण लोग जस गवलनि आ सिपाही लोग गोड़ पटक के सलामी दीहलनि ।

जब तामदान फाटक में घुसे लागल तब एक साठ बरिस के बूढ़ सड़क के दोसरा किनारे से डाँट के कहलसि, "खबरदार तामदान आगे मत जाय ।"

अङ्गरक्षक सिपाही लोग तरुआरि खींच लेलन । बल्लमदार भाला सम्हारि के आगे बढ़लनि । बादसाह इसारा से ओके मना कइलें आ तामदान रोके के हुकुम देले । ऊ बुढ़ा बोलावल गइल ।

बादसाह पूछलनि, "तू के हव ?"

बूढ़ उत्तर देलसि, "एही राज भवन के मुख सिल्पकार । हम ही एह महल के हजारन सहायकन के साथ बनवले हईं । महल हमार हऽ । बिना हमरा आज्ञा के एह में रवां के जाये वाला हईं ?"

बादसाह मुस्कुरइलन । हुकुम देलनि, "पुराना महल के ओर जूलूस लौटाव ।"

× × × ×

हजारों भूखल गरीब मजदूरन के बीच से मुख सिल्पी के ले जाके दू चोबदार सजल दरबार में बादसाह के सामने खड़ा कईलन । चोबदार कहलसि, "बादसाह के कोरनीस करऽ ।"

सिल्पी चोबदार के देखलसि आ चुप खड़ा रहल । बादसाह पुछलन, तू हीं राज परसाद बनावे वाला मुख सिल्पी हव ?"

सिल्पी विरक्त होके कहलसि—जी हाँ । काल्ह तू ही साही सवारी के आगे बढ़े में बाधा देले रहलऽ ?

"हाँ ! दोसरा के घर में जाये से रोकले रहीं ।" जब साही खजाना से तोहरा के महल बनावे वास्ते खरच आ तोहार सुल्क मिलल रहे, तब महल तोहार कइसे भइल ?"

"साही खजाना केकरऽ?"

"परजा के । आकि बादसाह ?"

परजा के सेवक, खजाना रखवार ?"

फेन रउर महल कईसे भइल ? इ परजा के हऽ ?"

"खाली हमार ना, इ हम हजारन मजदूरन के महल हऽ ?, जे टिकस दे के साही खजाना के कायम कइले बाड़नि, घूप आ सीत में आपन खून सुखा के महल के तैयार कइले बाड़नि ! का इ हजारन मजदूरन के परिसरम के कीमत रउआ समझतानी, खाली ओही ताँवा के कुछ टुकड़ा के जे उहे लोग रउआ खजाना में जमा कइले बाड़नि"

अतना कहके सिल्पी बादसाह के ओर अइसन ताके लागल जइसे कुछ पूछत हो। बादसाह चुप रहन, उनकर सिर झुकल रहे।

सिल्पी चोबदार के ओर देख के कहलसि, "तू लोग कह ताड़ऽ कि कोरनीस करऽ। अपना कृतघ्न सेवक के, ओकरा स्वार्थीपन खातिर सलाम करीं ? कबहूँना"

समूचे दरबार में तरुआरि चमके लागल। बादसाह के एक इसारा के देर रहे; ओह गुस्ताख सिल्पी के सिर धड़ से अलग हो जाइत। बाकि बादसाह ओहि तरह सिर नीचा कईले गम्भीर होके बइठल रहन। सिल्पी धीरे धीरे दरबार से बाहर निकलल। ओकरा के रोके के केहू के हिम्मत ना परल।

सब मजदूर जयकार के साथ ओकर स्वागत कइले। दोसरा दिन लोग देखले कि नया महल से सब साही सामान निकाल कर पुरान महल में जात रहे आ बुढ़ा सिल्पी के अध्यक्षता में एक सिल्प विद्यालय आ कला परदर्सनी खोले वास्ते ओह महल में तइयारी होत रहे।

माटी के बोली भोजपुरी मासिकी
सं० विश्वनाथ प्रसाद
माटी के बोली कार्य्यालय,
छपरा, विहार
सालाना तीन रुपया, एगो के २५ पइसा

परमपद

—स्वामी विमलानन्द सरस्वती (काशी)

"खेदू भाई ! जिनगी क कवन ठेकान बा ? ढेली तोहार पलिवार हउवनि। बेटा आ भतीजा दूइ ना ह। केतना नेह-छोह से तोहार सेवा करत बाड़न। हाथ मइल न गोड़ मइल। बइठल चिक्कन सुरस भोजन मिलत बा। ऊधो क लेना न माधो क देना, कल से राम-राम कहे के बा। तोहरा के दूसर का चाहीं ? उनसे नराज काहें रहत बाड़ऽ ? पलिवार से विरोध ना राखे के ?'

'बुढ़वती आइलि। थाहि के डेग धरे के चाही। हमन का दरियाव का आरी क फेड़ बानीं जा। आज गिरलीं भा काल्हि ! पाकल आम का चुवेमें कवन देर बा ?'

मीठ आ मोलायम बोलि के लोग आनकेहू के आपन बना लेत बा। ढेली त खून ठहरलन। हमनीं का अमिरित के घरिया नइँखीं पियले कि अमर रहबि जा। वे मतलब क काहें माँथे कलंक क टीका लेत बाड़ऽ ? मुवलो पर ऊहे मुँहें आगि दींहन; पिंडा-पानी आ काम किरिया करिहँन।'

'तोहार कवनो कुसंच होखे त हमसे बतावऽ। हम तोहार उपाय करब। दस-पाँच दिन में बोवनी ओरियाले त चलल जाय कि बगसर गंगा-असनान होखे आ लीखि-पढ़ि के एकोर कइ द। आगे क ऽखरखसा टूटो।'

राजनरायन राय क ई बतकही खेदू का वड़ा जबून लागे। उनका मन में पाप भरल रहे। केहू क समझावल तनिको लाद में ना धँसे। कुछ देर का बाद बइठकी उड़सलि आ सभ केहू आपन-आपन डहरि नापल।

खेदू राय तोसकि तकिया लगवले पलंगरी पर बइठल गुड़गुड़ी पीयत रहलन। देंहि में भुड़ीदार बन वाली मिरजई, कपार में कनटोप, आँखि में चसमा लगवले दोहरि ओढ़ि के बइठल रहलन।

× × × ×

कातिक क भोर्रि, लोग बोवनी में बाझल रहे। ढेली दूइ घरी राति गइला टँड़वाँहीं ले बैल हँकले अइलन। ओसारी में हर-टांड़ि, हेंगा आ बीया क दउरा धरवाइ के गरुवारी करे लगलन। अकसरुवा आदिनी सभ काम अपनहीं सम्हारे के रहे।

काम ले खाली होइ के बखरी में गइलन की दू कवर भोजन करीं त ओइजा दूसरे तमासा लागल रहे। उनकर बूढ़ि मँहतारी आ ढेली बो भउजी रोवत-बिलखत रहली जा।

'का रे माई! ई कवन तमासा लगवले बाड़स?' माई सुसुकत आ अँचरा से लोर पोंछत लोटा क पानी आगा धइलसि। 'ए बचवा! खेदू क अनेति आ गारी फजिहति केतना सहीं जा। दूइ चारि दिन पर कवनो न कवनो अनखुन जोहि के झगरा ठानत आ बिरही बोलत बाड़न। इहे उनकर सखुनतकिया हो गइल बा। आजुवो झनकि के ठहरि पर ले थरिया पटकि के उठि गइलनि ह। कहत बाड़न कि 'हमरा के बासी रसोई देत बाड़ी स। दालि में माँड़ मेरावल बा आ दूध धिकले नइँखें। हमार हक-हीसा लेइ के हबेखत बाड़न जा। हम खेत महपातर के दे देबि तवन सबुर बा, बाकि तोहन लोग के पसर चरे खातिर ना रहे देबि।'

ढेली बड़ा लेहाजी रहलन। खेदू राय क दस गो फूहर-पातर सहि लेसु बाकी जबाब ना देसु। उनके बाप ले कम न जानसु। उनका खातिर सभ इंतिजाम रखले रहलन। खेदू राय का दुवार पर बइठल कटरावे-पागे के रहे। कबे-कबे भुखाली साहु का ठाकुरबारी पर बगसर क महंथ जी आवसु त कथा सुने आ दरसन करे जासु।

× × × × ×

आज क हालि सुनि के ढेली बड़ा दुखी भइलन। खाइल-पीयल का नीमन लागे? कइसहूँ दू-चारि कवर घोंटि के चउका पर ले उठि गइलन। बराबर कुछ न कुछ बखेड़ा खड़ा भइल रहे। सांप क बीलि तहाँ पूत क सिरहान, ढेली खातिर कुफुति रहे बाकी करसु का?

राजनारायन राय का दलानि में रोज बइठकी होखे। गंगा राय, काशी राय, रघुनाथ मिसिर, सोहावन भगत चउकिदार, सभ बइठल खेदू आ ढेली क बाति बतियावत रहल। एतने में बीड़ी पीयत ढेली पहुँचि के राजनारायन का ओरिचना बइठलन। 'मजे में बइठत काहें नइँखऽ?'-राजनारायन राय का ई कहला पर ढेली का लोर आ गइलि आ ऊ आँखि पोंछे लगलन। राजनारायन राय पूछे लगलन कि बाति का ह ढेली।? आजुवो कुछ खटपट भइल रहल ह का?'

गंगा राय मेंहो सरदार रहलन। ढेली क चाची परशुराम का माई से उनकरा भोजभात रहे। गंगा राय के भउजाई आ परशुराम का माई क नइहर एकही गाँव में रहल। एही कारन से भितरिया मेहरुवी मनसउदा

क सुनगुन गंगा राय कुछ सुनले रहलन। परशुराम क महँतारी चरित्तरबन का हरिकिशुन दास कऽ चेलिनि रहली।

गंगा राय कहलन कि तोहन लोग बेकार खेदू क पोंछि सुहुरावत बाड़। खेदू पोंछी पानी ना ठेके दींहन। हरिकिशुन दास उनकर कान भरले बाड़न। परशुराम क माई बुढ़िया कुटनी क काम करत बाड़ी। खेदू सोनहुली तसबीरि देखि रहल बाड़न। उनकर मन बत्तीस घोड़ा का बग्गी पर असवार बा। तोहन लोग का कहला समुझवला में कुछ नइँखे। ढेली सबुर करसु। इनकर बाल बच्चा अपना कमाई से ना जीहँन-खइहँन त पत्तल चटले क दिन काम चली?

२

"खेदू! धन-दउलति लेइ के न केहू आयल बा न लेइ के जाई। मरे का बेर भाई दयाद करधनि तक तोरि लिहन! धरमें संगे जाई। दान धरम करे के चाही। ऊहे न आखिर में आँटी। अब तोहरा ठाकुर जी का शरन में रहि के दूइ कवर परसाद पावे आ गंगा नहाये के चाही। आगे क डहरि बनावल न ठीक बा। एहिजा साधु महातमन क सतसंग बा। भगवान क भजन कइके परमपद पावे खातिर जतन करऽ। दखिनहा भूचड़न का संगे का कुक्कुरचोंथ कइले बाड़ऽ। उसरा टाँड़ पर जीव मति द। मरि जइबऽ त गोड़ घिसियाइ के बीगि दीहँन स। बबूर-परास का बन में फुँकइबऽ, गंगा से भेंट ना होई।

"दद्दुरा का दुबाइन क नइँखऽदेखत, कइसन कंचन चरति बाड़ी। इनकरो केहू नइँखे। दस बिगहा बेटी दमाद के दिहलो आ पनरह बिगहा ठाकुर जी का नावँ से रागभोग खातिर लिखाइल ह। धरती ले सोना दान कइला क बेसी फल ना होखे। एह जनम में जे धरती दान करी ऊ अगिला जनम में राजा होई।,, खेदू पगरी उतारि के महंथ जी का चरन पर धइ दिहलन। 'महराज! रउरा त ठाकुर जी का राग-भोग-सेवा खातिर कहत बानीं। ई हमार उदय भागि कि हमार धन भगवान का काम में आवे। हमार मन अब महिला ले उचटि गइल बा। ओइजा रहला में इज्जति नइँखे। हम त मन में इहे ठानि के चलल बानीं कि कतहीं कवनो मंदिर-ठाकुर बारी में लीखि के ओनिये मरि-हरि जाइब। रउरा नाहीं राखब त ई धरती महपातर का गरे मढ़इँहन बाकी ढेली आ उनका बाल बच्चन के हरघुमावे खातिर ना रहे देब। ढेली क हमरा सोरि कबारि के दम लेबे के बा। ढेली के भीखि ना मंगवलीं त जनेव गदहा का गर में बान्हि देब।'

'ठाकुर जी का मरजी आ साधु महातमा क दया। हमरो मन बा कि

गंगा नहाईं, ठाकुर जी क सेवा करीं आ तीरथ-परसाद पाईं। जगहि जमीनि ठाकुरे जी न देले बाड़न। सभ संपति उनहीं क ह त देवि केकरा के ? इहे चाहत बानीं कि राजनारायण आ गंगा न जाने पावसु। राजनारायण जवार क चउधुर आ हुँड़हा ठहरलन। जवार में उनकर दाब-हाँक बा। ऊहे आजकाल अवँती का बाबू साहेब क तसिलदारो बाड़न। जानि जइहँन त छत्तीस गो बखेड़ा रचिहन।" जवन रोगिया चाहे बयदा उहे बतावे। महंथ जी मने मन खुश भइलन। दावपेंच जानल आ मामिला मोकदमा लड़ल इहे त उनकर भजन रहे।

घबड़ाऽमति खेदू ! हम अइसन उपाय करब कि केहू पता ना पाई। कचहरी जाये क कवनो जरुरते ना परी। हम उड़ती चिरई का हरदी लगाईं ला। हमके केहू का सिखाईं ?'

महंथ जी का ठाकुरवारी ले पंजरे रजिष्टार साहेब क डेरा रहे। साँझि-बिहान रोजे भेंट होखे। अवसर अइला पर महंथजी उनके पंजीरी-परसाद भेजसु। ओही राति में सभ सलाह आ मनसउदा ठीक हो गइल। होत बिहान चतुरभुज बरम्हचारी साइकिल दउराइ के देवानलाल किहें ले टीकठ-फारम ले अइलन। खेदू राय का बेमारी क दरखास देइ के महंथ जी रजिष्टार साहेब के मठिये में आवे खातिर फीस जमा कइ दिहलन। पूरा माल मिलत रहे। कवनो जाँगर के कमाई खरच करे के रहे कि असकति लागित। चाबी क मारि मारल गइल। हाकिम-अमला-पियादा-चपरासी सभ रसगुल्ला छीलल आ दूध से कुल्ला कइल।

बाप दादा क कमाइल धरती। केतने पुस्त क जोगावल आ कोड़ल-कमाइल, खेदू क आज संग छोड़ि के चलि दिहली ! खेदू 'अँगुठा बोरि के अपने आपन हाथ काटि लिहलन। ठीके कहल बा कि ई, पिरथू, मानधाता बली, आ रावँन क साथ ना धइली त दूसरा क कब होईंहन ?

× × ×

देहाति-जवार क लोग जमदुतिया नहाये मथुरा जात रहलन। महँथ जी के मोका लागि गइल। खेदू राय क मन टुकटुकात देखि के उनका के जवार का जमाति का संगे मथुरा भेजि दिहलन। चरित्रर वन क कुछ अचारी बाबा लोग भी जात रहलन। खेदू खातिर सोना में सोहागा परि गइल।

पाँच-सात दिन में मथुरा-वृंदावन, नंद गाँवँ, बरसाने, गोबरधन सभ परिकरमा कइ के खेदू साधुन का जमाति में ओह लोग क खड़िया ढोवत

चित्रकूट चलि गइलन। एह किसिम से काशी होत बाइसवाँ दिने घूमि-घामि ठाकुरबारी पर आ गइलन।

महीना बीति गइल बाकी केहू पता ना पावल। महंथ जी कचहरी का अमलन के मिलवले रहलन। गाँव-जवार जानत रहे कि खेदू राय पड़ियारी का पंडित संगे मथुरा जी गइल बाड़न।

२

कले-कले थोरहीं दिन में भेद खुले लागल। लोग खेदू राय का करनी क पता पावल। जवार क जेही सुनल गारी दिहल। ढेली का कवनो टिशुना ना रहे, बाकी लोगन का कहला-सुनला से जवार क चारि गो चउधुरी बटोरलन। मुँखराव, पडियारी, चँड़ेश आ नागपुर के पंच लोग गंगा राय का दुवारे अइलन।

बोलवला पर पहिले त खेदू राय बड़ा कतरी कटवलन बाकी सोहावन भगत का समझवला पर अइलन।

मुंखरांव के कतवारू राय पूछलन—'खेदू दादा! ई का कइलऽ ह? ढेली क गरदनि ना कटलऽ, तोहरो संगही कटा गइलि। अइसन ना चाहत रहल ह।' नागपुर के राजनेति दादा बड़ा दुखी रहलन। रहि रहि के उनका आँखि से लोर बहे।

उहो कहे लगलन कि—'खेदू भाई! तोहार बाप हमार संगी रहलन। तोहारा के देखि के मोह होत बा। तूँ वंश में टांगी हो गइलऽ। रेंड़ का जरी धमोइ होइ के जमलऽ। अबही तोहरा हरियरी लउकलि बा, कुछ दिन का बाद जब अँचारिन क टोकना मले आ घाँटी काटे पैरी त मालुम होई।' राजनेति राय, राजनरायन राय क संगी रहलन। राजनरायन राय उनकरे गाँव क कथा उभारि के सभपंचन के सुनावे लगलन। 'राजनेति भाई! अचारिन क हालि तोहारा से छिपलि बा? तपोबन ले ओकर नावँ चरित्तर बन हो गइल बा। तीसो दिन ओइजा रंगरंग के चरित्तर हो रहल बा। शंख-चक्र से दागि के साढ़ बनावे में ओह लोग का देरी ना लागे। खेत-बारी लिखवावे के रही तबले खूब आदर रही। बाद में गारी-फजिहत सई आ गोईंठा गोबर करे के परे ला।

चंड़ेश के बंदिरी राय कहलन कि 'हमहूँ सुनलीं हूँ, आजकाल ओइजा क बड़ा सिकाइति बा''।

बसगित भगत कहलन कि 'बसवली हमार समधियान ह। परसो ओइजा ले अइलीं। मुनादासी बसवली क पड़ाइन रहली ह। दूइ चार बरिस ले साधुनि हो गइल रहली ह। बरिस दिन ले माधो दास का मठिया का हाता

में कोठारी बनाइ के रहत रहली ह। माधों कमकर क जाति। पहिले त पड़इन के मलकिन बना के चाभीदिहलन। कुछ दिन में जब रुपया आ गहना गुरिया कुल्हि मूँसि लिहलन आ मुनादासी खूँख हो गइली त लतियावे लगलन। अब मुना कहाँ जासु घर लें उपरवार फानि के गइले रहली। ओइजा ऊ हालि।

एतने ना, जब जब आगि-खढ़ पंजरा रही त उधियाइ के जरबे करी। मुनामाधो का दिन में झगड़ा होखे आ राति में मेल हो जाय। जब मुनादासी क गोड़ भारी हो गइल त दावा-दरपन होखे लागल। बाकी आखिर में मुना दासी असपताल में जाके परमपद पवली।'

× × × + +

खेदू मूड़ी नीचे कइले सभकर सुनत रहलन। लोग क कहल-सुनल उनका बरछी नियर लागे। अंत में सोहावन चउकिदार जरला पर नून छिरिक दिहलन। सोहावन बड़ा फठकरल न—"चउधुरी राउर मति बिगरि गइलि बा। हमन क बाप-दादा सात पुहुति ले एही में गलल-पचल। का सभई नरके गइल बा? गिरहस्त ले बढ़ि के साधु के बा? गोहूँ-वास मती, मेवा-मलाई उपराजि के जे राजा-रंक, साधु फकीर, पशु-पंछी सभके जियावत-खियावत बा ओके का मानल जाय। साधु लोग जवना पत्तल में खात बा अब ओही में छेद करत बा। ठीके कहाउति कहल जाला—'बाभन कुत्ता हाथी, तीनो जाति क घाती।'"

अंत में उखड़ा-उखड़ी हो गइलि। खेदू राय कहलन कि हमरा भाई भतीजा से कवनो काम नईंखे। केहू हमार पिंडा पानी मति करी। जमीनि हमार हम भाट के दे देबि दूसर क का लागे?

(३)

हरिकिशुनदास रंगसीसया महंथ रहलन। नेवार का पलंग पर हाथ भ ऊँच गद्दा त्रिछल रहे। तकिया-मंसनंद लगावल रहे। बिजली बत्ती आ पंखा, मसहरी सभ इलबास जुटल रहल। पूआ-राबड़ी, दूध-मलाई आ सेव अंगूर बिछिलहरि भइए रहे। चानी कटति रहे, दिनरात पाँचों घीवे में बूड़ल जानीं। छतीसो राग-रागिनी क दरबार होखे आ तबला-हरमुनिया, मिरदंग-सितार क बजारि सजल रहे।

मठिया में साधु-अभागत आवसु त ओह लोग के करंगी-करहनी के भात आ खेसारी के दालि मिले। ई कवनो नया रेवाज ना रहे। अँचारी लोग किहें बहरिया-भितरिया, बड़गल-तिगल केतना भेद बा के थाह पावे?

× × × × +

इहे कवीर क—'लडका बूड़े सीलि उतिराय' ह। किसान मजूर गली गली मरसु आ बाबा लोग इनरासन में बइठल मउज करे। धरम का नावें पर आज-काल अइसन जुलुम सगरे होत बा। बाकी अनेति ढेर दिन ना चले। महंथ जी क अँजोरिया मधिमाये लागलि। उनका दरबार में पूड़ी फराठा दूनों क सवाद लियाय। कबे पूड़ी भोग लगावसु त कबे मनफेर फराठा। पूरनवाँसी का चनरमा नियर महंथ जी छीजे लगलन। फूलबसिया पूड़ी आ रमेश फराठा रहलन।

(४)

ठाकुरबारी क धन ढोईं के फुलबसिया का दुमहला कोठा बनि गइल। रेडियो, बिजुलीबती, पंखा सभ सिंगार जुटे में देरी कवन रहे? मालपूवा-मलाई आ सेव-अंगूर ओकरा घर में गांजल रहे। कले-कले महंथ जी बदनाम हो गइलन। पाप क भंडा फूटे लागल। मन क लगामि ढील भइला पर दशो भुटिया घोड़ वासना का सड़कि पर सरपट दउरि के महंथ जी का रथ के गड़हा में गिराइ दिहलन।

पंचकोंस क मेला रहे। रामचउतरा का मयदान में महंथ लोग क खेमा गड़ल रहे। असावँ, पयकवली, घरवास डीह, सगरे क महंथ जुटल रहलन। कथा, सतसंग आ गाना बजाना भइल। राति का बेरा सभ महंथन का आपस क बटोरि रहे। असावँ क महंथ जी बड़कवा मानल जासु। उनकर सुभाव बड़ा सीधा आ सतजुगी रहे। महंथ नारायनाचारी हरि किशुन दास के बोलाईं के समझवलन कि 'साधुन क नाकि मति काटीं। पियास लागल त मोका से पानी पी लिहल जाला, गरदनि में घइली के बान्हि के लटकवले ना फिरल जाय। रउरा फुलबसिया के असथान से दूर राखीं।"

× × × ×

थोरहीं दिन का बाद महंथ जी के अठइसी (थयसिस) रोग धइ लिहलसि। दवाई बीरो हांखे लागल? डाकदर-बैद में रुपया बहुत फुँकाइल बाकी बेमारीं घटलि ना, बढ़ते गइल। देंहि सूखि के पीयर हो गइलि। मुँह ले कबे-कबे खून आवे लागल। कुछ दिन में उहाँ का एकदम खटि पर हो गइलीं।

मठिया क कारबार हरदेवाचारी देखे लगलन। महंथ जी मने मन पछतासु आ रोवसु। आखिर में बेमारी बिगड़े लागलि त साधु लोग सेवा से भागे लगलन।

एहिजा का केकरा से नाता बा। सभ झूठे लपिटाता। महंथ जी ठाकुर बारी क इंतिजाम बान्हि के हरदेवाचारी के महंथी लिखि दिहलन।

खेदू राय गुरू महराज के दुख देखि के कोना में बइठल रोवसु। अब ऊ खेदू राय ले खेदन दास बनि चुकल रहलन। कातिक महीना, अछय नउमी, मंगर का दिने दस बजे महंथ जी खेदनदास के छोड़ि के परमपद पवलन। महंथ जी का परमपद भइला क खबरि सवँसे चरित्तर बन में बिजुली नियर फइलि गइलि।

सभ साधु महंथ जुटलन। बिमान बने आ सजाये लागल। फोटो खींचे वाला बोलावल गइल। चंदन का लकड़ी क चिता बोझे के तइयारी होखे लागलि।

खेदू राय अब गंगा नहासु आ ठकुरबारी क काम देखसु। गाइ चरावल, गोबर-गोंइठा कइल, बैलन के सानी-पानी कइल-इहे उनकर रोज क पूजा रहे। दस बजे ले सभ धंधा से खाली होखसु त नहाइ के लिलार पर फटाका लगावसु। एही सनदि के देखवला पर त परमपद क फाटक खुले के आस रहे। पासा-सीरी आ साला-अयनक क पसारी वाली झोरी अबे बान्हते रहसु तबले अधिकारी-पुजारी लोग डाँक-जुरह लगावे। 'खेदनदास! चलऽ चाउर-दालि अमनियां करे आ साग सुधारे के हरज होत बा।'

'अइलीं सामीजी-तनी भगवान क नावँ लेत बानीं।' साधु लोग खेदू राय के बइठे ना दिहल चाहे। अधिकारी उनका पर बिगड़ते रहसु। उनकर कहनाम रहे कि किं कारज कइ के भगवान क परसाद पावल जाला।

खोभसन सहत्त आ काम करत-करत खेदू दुबराइ के अँठई हो गइल रहलन। अब बहुता त बेमारे रहसु। बाकी बेमारो रहला पर सारि सहोथहीं के परे।

उनका अपना करनी पर पछतावा होखे। मन में झंखसु कि 'बुढ़वा महंथ जी हमके गाढ़ में डालि के चलि गइलन। मन मिरिगा नियर टिशुना में परल, आगे ना जाने कइसे निसतार होई?'

ढेली क सोरि कबारे चलल रहलन, अब उनहीं क कबरति रहे। ढेली कबहीं उनकर जबाब ना देले रहलन, एहिजा उढ़रन क फजित भा बिरही बानी रोजे सहे के परे। अगल-बगल का मठियन आ मलाहन का घरे बइठि के रोवसु-कलपसु। अब के उनकर बयान आ अरजीदावा सुने? भगवान का कचहरी में उनकर मामिला फरियाये के रहे! पंच-परमेसर के ठोकर मारि के उठि गइला क फल पावत रहलन।

हरदेवाचारी नया महंथ रहलन। घर क एकदम कंक-बाँकुड़ा। एहिजे महंथ जी किहँ खासु-पीयसु आ संसकीरित पढ़सु। मधिमा पढ़ि के अछर कट्टू हो गइल रहलन। पुरुब जनम के करम कमाई कि महंथी हाथ लागि गइल। खखाइल रहलन, हबके क मोंका पा गइलन। गहुँवन का मरला डोंड़ के टीका दिहल रहे। डेढ़ सइ विगहा धान-चइती क नभ सुहेल खेत। पयदा पूरा होखे बाकी ओतना से ठाकुरवारी क खरचे ना चले। बखारि आ खजाना का धन में मूँस लागि गइल त ओँटे कइसे?

बुढ़वा महंथ का मुवला पर वसमतिया का घर क मानि-बीयरि बंद भइल त नयका महंथ जी का गाँव क सूमि खोदि के तइयार हो गइलि।

दरार फाटल धान का करइल खेत में पानी का थाहना लागे। रोहुँड़ा पक्का पिटाये लागल आ रेहन कबाला किनाये लागल। भाइन क बियाह ना होत रहे तहां तिलकहरू दुवार खांचे लगलन।

असाढ़ चढ़ते खेदू राय बेमार परलन। पहिले त मियादी बोखार धइलखि। पाछे ले सिरिहिनी हो गइलि। दावा-दरपन क कवनो इंतिजाम ना रहे। मरवाड़ी-असपताल आ आउरबूँद का खैराती दवाखाना से अपने टहरि-घूमि के दवाई ले आवसु। पाछे चलि के पवरुख थाकि गइल त के ले आवे? नेम से दवाई ना भइला से बेमारी बेकाबू होखे लागलि। चतुरभुज दास ब्रह्मचारी कबे रहसु त खेदू क कुछ खबरि लेसु। समय से सुबधान पानी दुलम हो गइल। दूसर सेवा करे का पंजरा के जाला?

सावन चढ़ते हरदेवाचारी रोपनी करावे ददुरा आ महिला चलि दिहलन, ओनहीं उनके पूरा महीना बीति गइल। पचासी बिगहा जमीनि त खेदू आ परशुराम क माई मीलि के महिले मे दिहले रहली। सावन चढ़ते मेघ उमड़ल से बीसन दिन बरिसते रहे। खेदू के रहे खातिर बुढ़वा महंथ क अठइसी वाली कोठरी मिललि रहे। बहुत दिन ले बेमरम्मत रहला से बरखा भइला पर चूवे।

ओही कोठरी में एगो झिलिंगा बँसहट पर फटहा टाट क टूक बिछाइ के खेदू परल रहसु। दस्त क बेमारी बिगड़लि त शरीर बेकाबू हो गइल। घर का कोना में फराकित होखसु आ बिहान भइला अपनहीं उठाइ के बीगसु।

हरदेवाचारी का कुटी में महिला का गंगाराय आ सतनारायन क लइका लोग रहि के पढ़े। भादो बदी चउथि सनीचर का दिने साँझि का बेरा जब लइका पढ़ि के अइलन त खेदूराय ओह लोग के बोलवलन।

कोठरी में बरखा क पानी चूइ के डबहा लागल रहे। बदुरी आ केशो

दादा क दुरगति देखि के रोवे लगलन। खेदू दादा क आँखि भी छलछलाइ के बहि चललि।

दादा का झिलिगा बँसहट का आराम कुरसी पर ले उठे क सक ना रहल। टाट, बँसहट खटिया आ पानी मेंले मइला चफनल-उतिराइल रहे। बदुरी-केशो मीलि के कोठरी साफ कइलन आ दादा क लूगा-कपड़ा बदलवाइ के फिंचलन जा। मेंटा में पानी धइ के ऊ लोग अपना डेरा से चलि गइलन।

पहर रात गइला बरखा नधियाइल आ गरजे-तड़पे लागल। कोठरी में चिराग तक न रहल। भादो क अन्हरिया अइसनि कि लात तर क ना सूझे। खेदू दादा का आगा त अइसहीं अन्हार छवले रहल। जेनिये ताकसु अन्हारे-अन्हार! सभ ओरि क डहरि बंद हो चुकलि रहली स। ठाकुर जी का नावँ पर खेदू क कान कटाइल आ उनका के दागि के साँढ़ बनावल गइल। अब ठाकुरो जी आँखि मूदि देले रहलन।

महंथ-पुजारी का हलुवा-पूड़ी उड़त रहे आ खेदू झिलिंगा पर झंखत परमपद क डहरि ताकसु!

राम-जानकी के मूरति धरम क ई तसबीरि देखि के पत्थल हो चुकलि रहे।

बेपरमान जल बरिसल। खेदू भींजत-किंकियात रहलन। खटिया तर बयतरनी बहति रहलि। करीब दूइ बजे क बेरा भइल होई। पँजरे पीपर का पेड़ पर उरुवा बोलत रहे। एतने में राति ढरकल जानि के सियारिनि फेंकरलि!

ओने अकाश में जोर से बिजुली चमकलि आ तड़तड़ाइलि। एही घरी ना जाने, नव में कवना दुवारि से खेदू बो का देंहि क बिजुली निकलि के अकास का बिजुली में समा गइलि। हिरामन सुगना का उड़ते पिंजड़ा उदास परि गइल।

होत बिहान सभ मठियन में बोलावा गइल कि खेदनदास क 'परमपद' हो गइल बा। घरी-दूघरी में सभ साधु भयवद्दी में बटुरइलन। बिमान सजाये लागल। महंथ जी भी दक्खिन ले आ गइल रहलन!

बिमान में चारो ओर लाल-पीयर कागज सटाइल आ पूरा सिंगार भइल। खेदनदास के नहवाइ के एक सइ एगारह क लमहर फटाका लगा दियाइल। गर में फूल क बीसन गजला आ तुलसी क माला गाँजि दियाइल। फोटो खींचेवाला पहिलही ले बोलावल रहे। महंथ जी खेदनदास का परमपद क तसबीरि खिंचवा लिहलन कि मोंका पर काम करी।

कहानी

लवङ्ग फूआ क सपना

—राजबली दूबे 'तरल' एम० ए०

मटनी आठ साल क नाहीं रहिल कि ओकर बाप आपन परान तजि दिहलें। एहि क ओंके चिन्ता नाहीं भइल। काहेके कि ओकर महतारी अबे जीअत रहल। भाई के आगे बाप क के लड़िका धियान करऽला। बाकिर आठ पूर होत-होत माइयो पर नम्बर लागि गयल। अबकी मटनी पर गाज गिरी गयल। जबन काकी मटनी के महतारी से चउबिस घन्टा कपर-फोरउवल फाने रहइं, उहइ अब मटनी क सरबस होइ गइलीं। मटनी जब काकी के छोट की आँखी से बड़ा-बड़ा आँसु क टोप झरत देखलेसि तऽ ओकरे मन में साचउ क गुदगुदी आइ गइल। ऊ अपने लड़िकई में भुलाइ गइल। काकीअइ के महतारी ऊ जानइ लाग।

बाकिर महतारी अउर काकी के पियार में पाखइ दुइ पाख में आँतर जनाइ लाग। जवन सोने क जन्तर मटनी के गरे में दिन राति लटकत रहल, ऊ काकी निकारिके अपने पेट पाछुना बेटवा के पहिराइ दिहलिन पुनिया रोज सबेर होत मटनी क बार सवाँरि देत रहल। अब मटनी के चारइ बजे से बरतन माजइ के होला। जबस काकी क लड़िका उठत जालें ओसस मटनी के सबकऽ करिखायल मोह धोबइ के परऽला।

पुनिया क ई बड़ा मन रहल कि ओकर बिटिया इसकूल में पढ़इ जाई। मटनी क बाबू बेमार होइके असपताल भरती रहलें। पुनिया शहर के असपताल जाबइ का करत, बाकिर जब ऊ सुनलेसि कि चिथरु मरत बाटेनि, ऊ रिन-करजा काढ़िके गइल अउर मरत-मरावत चिथरू कऽ मोह देखि लिहलेसि।

पुनिया असपताल में एक से एक सुन्नर मेहरारू ऊ अउर दूसर मेहरारु देखलसि। ओकर तऽ आई बाई भुलाई गइल। एक मेहरारू ऊ अउर दोसर मेहरारु असपताल कऽ जे मोह खोलि, लहङा पहिनि पटर-पटर जूता बोला वला अउर मरदन के दवाई बाँटऽला। ओही दिना से पुनिया के मनमें बईठिगा कि ऊ आपन बिटिया के पढ़ाई। लड़िका सब मरि-बिलाइ गयल रहें, फेरि एक मटनी रहिल जेपर पुनियाँ क साधि जगि गइल। कुछ

दिना चिथरु के दुख में ऊ पढ़ावई के कऽ बाति भुलल रहल। बाकिर जिउ जब कुछ सानत भयल त ऊ पढ़ई-पढ़ावईक रट लगावइ लाग। पुनिया से जे मिलइ ओसे इसकूल क हाल पूछइ, अउर अपने बिटिया के पढ़ावइ क बड़ लालसा ओसे बतावइ। एहर मटनी क काकी सनतो पुनियाँ क बात सुनि के जरि-जरि कुटकी होईं।

भगवानउ के कुछ दूसर अच्छा लगत रहल। ऊ पुनिया के थोर दिना में चिथरू क सेवा करइ भेजि दिइलें। मटनी छोट क त रहिल, बाकिर ऊ अपने माई क बात समुझत रहिल। ऊ अपने दुआरे से कुछ गदेलन के पढ़ई जात रोज देखइ। क ओकर मन त रहबई करल बाकिर अपने माई से इसकूल भेजई तक बाति सुनि के ऊ अउर-चेति गइल। पुनिया जब मरत रहल मटनी के सब लोग हटाइ दिहल। एक बाति ऊ अपने महतारी कऽ नाहीं भुलाइल कि पुनिया सनतो से कहत रहल कि बहिन के मटनी के अब तोहरइ भरोस बा। माई बाप तोहईं ओकर हऊ। एक हमार इच्छा बा कि तू मटनी के चार अच्छर पढ़ाई दिह। हमरे चूल्ही के बगले में कुछ ईंटा-पथरा गाड़ल बा। थोर बहुत खरच कइके मटनी क जिनगी बनाई दिह।"

पुनिया के मरतइ एक-एक समान सनतो हरावह लगलीं। धीरे-धीरे चिथरू क घर सून होइगा। ऊ गाइ बकरी अउर कुकुरन क डेहर बनि गयल। मटनी के पढ़ावइ क बाति जइसे सनतो के भुलाइ गइल। काकी क झाड़ सुनि के मटनी क पोटी काँपइ लगइ ऊ अपन मोह उभारी न सकई। बाकिर ई बात ओकरे मन में खटकइ कि ओकर माई मटनी के पढ़ावइ खातिर न जानी का का कहले रहिल। मटनी क जिउ काकी के व्यवहार से गाजर होइगा। छोट क मन बात त बड़ा-बड़ा सोचइ बाकिर पैर उभारइ में सहमि जाइ। सूतत की बेरी दुइ धार रोज रोवइ अउर माई क आँचर पकड़इ क सपना, राति में देखइ क मनसा नमसा करइ।

मटनी से जब काकी क चलत नाहीं सहन भयल, ऊ एक राति अपने घरे से चलि दिहलेसि। ओकरे परोस क रमकल्ली दादी घुरहुआ तारा में बुड़िके जिउ दिहले रहलीं। ओही तारा में आपन जिउ देवइ मटनी जाइ लाग। एक तऽ अन्हियरिया, दुसरे आन्ही चलत रहिल। मटनी के फरियान नाहीं। ऊ सामने चरत सांढ़ के भूत जानि के भागइ लाग। ओकरे भागे से सांढ़ भड़किगा। अउर दउड़ि के मटनी कऽ कचूमर निकालि दिहलसि। मटनी अचेत होइ गइल। सबेर होत जब ऊ तकलेसि त एक मयेदरे अपने के पउलेसि। पहिले त उ डरि गइल। पाछे जब ओके दूध अउर हलुवा

खाए के मिलल त ओकर जिउ सानत होइ गयल। ऊ सोचलेसि कि ऊ साचउ कऽ अपने महतारी के देस में पहुँचि गइल बा।

मटनी क ई सपना थोर दिना में बिलाइ गयल। जवन मेहरारू सेवा कइके ओकर घाउ ठीक कइलेसि, ऊ मटनी से बड़ा कठिन काम लेइ। मटनी के ऊ दिन भर गोड़ बान्हि के डोलावई अउर दरे-दरे भीखि माङइ। एक तऽ सांड़ क मारे से मटनी क पोर-पोर फाटइ दूसरे नइकी माई ओसे कोस दूइ कोस चलावइ अउर न चले पर अस चिकोटी काटइ कि जिअतइ परान मटनी कऽ निकलि जाइ।

मटनी कुछ दिन तऽ लङड़े लङड़े चलेसि। बाकिर जब ओकर पैर नीक होइगा ऊ लङड़े चलि न पावइ। ई नइकी माई के नीमन न लागइ। मटनी बेचारी काकी के घरे से भागइ क क़सूर सोचि-सोचि बहुत पछताइ। अब भागइ क कउनउ उपाइ नाहीं रहि गयल। काहेके कि मटनी क नइकी माई मटनी क हाथ-पाउँ अस लसरी से जकड़े रहइ जनू साचइ क मटनी क हाथ गोड़ बयलगाड़ी से कुचुलि गयल रहइ।

एक दिन मटनी छइलाइ गइल। ऊ लङड़ाइ के डोलब इनकार कइ दिहलेसि। केहु भाँति सुनबइ न करइ। एक ओरी नइकी माई दाँत। चिआरइ दुसरी ओरी मटनी हँकड़ि के बोलइ 'न डोलब न डोलब, न डोलब।' बडी आफत मटनी लिआइ दिहलेसि। लबङा फूआ के चारिउ ओरी से मनई घेरिके का हउ का हउ कहइ लगलेनि। लवङा फूआ मटनी के मारई अउर मटनी नाहीं-नाहीं क जाप शुरू कइले रहल। जब केउ पूछइ त लवङा फूआ कहइ दूध भात ई मांङऽता। दूध-भात भीखमंगिन क बिटिया माङइ ई बात सुनि के केतने चलल गइलेनि। बाकिर जे मटनी पर मारि परत देखलेसि ओकरे आँखी में पानी आइगयल। ऊ मारि बन्द कराइ दिहलेसि। ओहि दिना लवङा फूआ के दुइ-चार रुपिया मिलियउ गयल।

अब का बा मटनी पर रोज एँड़े-बेंड़े मारि परइ लाग। ऊ चारिउ ओरी जिद्दी लड़की के नाउँ से बदनाम होइ गइ। लवङा फूआ के जे जानत रहल ऊ त न बोलइ बाकिर जे ओनके झूठ साच से चिन्हारी नाहीं कइले रहल, ऊ ओनकर बिपति समुझि के ओनकर वाली दस-पाँच मिनट गाइ देइ। मटनी के लवङा फूआ अपने मौसी क नातिन बतावइँ अउर मटनी के पंगुल कहि कहि बुढ़ाई में माङइ क अच्छा रोजिगार पाइ जाएक मनमें खुशी मानइँ। ओनके सब लवङा फूआ कहइ। चार छ कोस में केउ-केउ जानइ कि लवङा फूआ के हउ, नाहीं तऽ सबइ दुसरे कऽ सुनत-सुनत ओनके माने

मनाए क फूआ मानि लिहे रहल। फूआ कऽ घर दुआर जाने बिना कउनउ अकाज तऽ पड़ल नाहीं, फेरि के-के फिकिर रहल कि ओनकर पुरखानी पूछत।

लवङा फूआ एक दिन मटनी से खूब चिढ़ल रहलीं। धमकि आवतऊ अपने कुटिया में आइके पसरलीं। मुनमुनात-मुनमुनात ओनकर मूड़ पिराए लाग। ऊ कसिके ऐंड़ा मटनी के मरली अउर कहइ लगली करिझौंसउ, खाली एक पसेरी कोयर करइ के जीअत बाटिन। हम पीसी, हम पोईं, हम खिआईं, हम कुलि काम करी। एनसे खाली हाथ गोड़ बान्हि के थोड़ दूर चलत नाहीं बनत।" लवङा फूआ मटनी क गोड़ हाथ बान्हिके राखइँ। ओनके ई डर लगल रहइ कि जहाँ मटनी क देह फरहर करब ऊ सब दिन वदे हम से लमहर होइ जाईं। मारे रिस के ऊ कुछु बनउलिन नाहीं। मटनी बेचारी भुखाइल रहिल! ऊ कइसे सनतोष करइ। ऊ भूखी क नाउँ लेइ झिहलेसि। अब काऽ फूआ क बूढ़ हाथ जवान मुङरी अस मटनी के पीठी पर परइ लाग। मटनी चिल्लान तऽ परोस भर बिन्नाइ उठल। बाकिर रोज क इहइ हाल हउ समुझि के केउनाहीं आयल। एहर लवङा कऽ कीच मारत मारत निकरइलाग। हारिके ऊ दीआ उठउलिन कि मटनी क मोहइ झउँसि देईं। हड़बडी में ओनहीं कऽ धोती जरइ लाग। आगि बुझावइ में ओनकर हाथ गोड़ जरिगा। बार तऽ मूड़े क जरासन अस होइगयल। लवङा चिल्लाइ के ऊधम मचाइ दिहली अउर ओनकी ओरी मटनी जब देखइ तऽ मारे डरके ओसे देखि न जाइ। परतह्वाइ चुरइन अस फूआ क देह होइ गइल। घायल होइके ऊ एक ओर परली। मटनी से भूख के मारे रहइ न जाइ। कवन दवाई ऊ लगावइँ। सुनले रहलीं कि जरले पर आलू कूँचि के छोपल जाला। आपन हाथ में दम रहल नाहीं। अब मटनी पर भरोस आयल। बाकिर मटनी क हाथ गोड़ बान्हल रहल।

कउनउ रंगे लवङा राति कलपि के बितवलीं। सबेर होत लवङा सोचली कि केहू परोसिन से आलु कूँचवावईं। उठइ लगलीं त उठावइ न किहल। अब भारी बिपति आइल। आपन पउरूख जवाब दिहलेसि। ओहर ई डर लाग कि मटनी भागी जाईं अउर सारी खबर गाउँ में जनाई देईं। आन्हइ जेतना अपने जरे क सोच नाहीं रहल ओसे ढेर मटनी से ओनकर चोरी खुलि जाएकऽ डर रहल। बूढ़ी रोवईं लागिन। ओनकर बिलाप कइके रोउब सुनिके के अस नाहीं रहल जे रोइ न दिहे होइ। बूढ़ी अस रोवली जनू सीता धरती में समाये खातिर रोवत बाटी। रोवत रोवत ऊ दिन चढ़ाइदिहलीं।

पास पड़ोस में ई बात सबके मन में उठल कि फूआ काहे रोवत बाटिन। का मटनी मर गइलऽ धीरे-धीरे मेहरारू लड़िका जुटइला गेनि। जसस भीड़ फूआ देखलेनि ओसस अउर रोवईं। जब ऊ सोचलिन कि गाउ भर पूछईं आइ गयलबा, ऊ सुसकत-सुसकत चुपइलिन गाईं-भर पूछइ लगल तऽ लवङा फूआ सबसे एही भाँति कहलिन 'अरे बहिनि, बड़ा भयानक सपना हम देखलेहऽ। एकठे देवी अइलिन। पहिले ऊ जीभि-काढ़ि के हमइ धिउरलिन। हमइ खाईं बदे दउरलिन। जब हम बहुत बिनती किहल त कहलिन कि हम खुश बाटी, बरदान माङ्। अरे बहिना हम माङि लिहल कि हमरे मटनी क हाथ-गोड़ सोझ होइ जाइ अउर हमार देह भले लूझ होइ जाइ। तबन बहिना साचउ हमार पुरी देहियाँ जरि गइल। अब हम कइसे माङब खाब''। ई कहि-कहि लवङा फूटि-फूटि रोवइ लगलिन। बहुतन के विश्वास त नाहीं परल। बाकिर एक मेहरारू पर देवी आवत रहलिन। ऊ कहलेसि कि मटनी क हाथ-गोड़ छोड़ि के देखऽ। कऽ अचरज क ठेकान नाहीं रहल जब देखल गयल कि मटकी के हाथ-गोड़ में कुछ ऐब नाहीं रहि गयल बा। अबतऽ सब फूआ कऽ बाति साच मानिके ओनके गोड़े गिरल। देवी में बड़ी शक्ती बा।. नास्तिकऊ सकरेलेनि। जय देवी के बोल से लवङा क मड़ई भरि गइल।

जबले गाउँ क लोग रहलें तबले मटनी लवङा कऽ मुह टुकुर टुकुर निहारत रहल। बाकिर जब ऊ सबके लवङा के मड़ई से हटल देखलसि तऽ अस भागी गइल कि लवङा फूआ के हाथे जिनगी भर नाहीं लाग। फूआ क सपना साचउ क सपना होइ गयल।

भोजपुरी साहित्य मासिक
सं० डा० जितराम पाठक
कॉलेज कोलोनी, आरा
शाहाबाद
एगो के दाम ।।०) सालाना ६)

मदारी

प्रो० विवेकी राय [गाजीपुर]

मदारी एगो गीत खेल का अन्त में गवलसि ।

गीत में गजब मिठाई रहलि । दुआरी-दुआरी घूमे वाला आ घाम में खेल देखावे वाला एह मदारी का गर में कइसन मिठाई आ लोच बा, ई कम अचरज के बाति नइखे । ऊ ढोल बजावे वाली मोटकी लकड़ी झोरी में धइ दीहलसि आ एगो पात्तरि लकड़ी निकालि के ढोल में से कमाल के बोली निकाले लागल । एकदम महीन, कटावदर आ खुन खुना ।

साँझि के नरम धूप, आदमिन के भीरि, खेला खतम भइला का बाद भी खेलाड़ी मैदान में जमल बा । लइका अनाज ले आवत बाड़न स । इनार पर पानी भरे वाला लोग लट्टू हो गइल बा ।

साच कहत बानीं गीत आ जिनिगी के एतना निगिचा से सटल-सटल हम कबहूँ ना देखले रहली हँ । ई मदारी आँखि मूँदि के तन-मन के सुधि भुला के गावत नइखे, जिनिगी के चित्र खिंच रहल बा । बड़े-बड़े गवइअन के गीत सुनलीं । एक बेर एगो बहुत बड़ संगीत-सम्मेलन में भी पहुँचि गइल रहलीं । बाकिर इयाद नइखे परत जे दूसर कवनो गीत हमरा के एतना परभावित कहले हो खँ स ।

हम समुझि नइखीं पावत जे असल में का बाति बा जे ई गीत एतना नीक लागता । एतना बुझाता जे एह गीत से भीतर कवनो चिजु खुल रहलि बा । साइति इहे जिनिगी के गाँठि ह । सुख दुख के परत ह ! गीत हमरा भीतर का बाबूपन के झकझोर रहल बा । अइसन बुझाता जे ऊ गीतिए मदारी बा आ ओके सुने वाला हमहूँ ओकरा रंग में रंगा के मदारी बनल जात बानीं । बरबस गीत ओठ पर आ जाता 'दिन जिन्दगी के जैसे भी गुजरें, गुजारना ।'

बाति ई भइलि की जइसहीं डायरी लिखे बइठलीं तइसहीं ई मदारी आ गइल । गाँव के इहे सिनेमा ह । बिना टिकट के, देखला का बाद कुछ द भी मति द । सिवाला का लगें मैदान में डम-डम डमडमाडम के

आवाज गूँजि गइलि। गाँव भर के लइका बिटुरा गइलन स। मदारी आँखि मूँदि के बजावत रहे आ गावत रहे।

'बाली रे बाली बालीये,
बाली-बालो रे खिलाडिये।'

मदारी के धोती कुर्ता त साधारने रहे, बाकिर ओकरा पगरी में बिसेसता रहे। कपड़ा कवनो बेसकमती ना रहे, बाकिर ऊ एह ढंग से बान्हलि रहे कि देखि के मन खुस हो जा। पगरी का नीचे गोल चेहरा का बीचें छोटी छोटी सुरमा लागलि आँखि बन कइके गावे लागे त जइसे जना जे दूसरा लोक में पहुँचि गइल बा। बाकिर ऊ रहे एही लोक में काहें कि ओके मालूम रहे कि खेल सुरू करे भर लइका अबहीं नइखन स बिटुरा गइल। जोर-जोर से ढोलक बजा के—जोर से गावत रहे—'बाली-बाली रे बालिये...।'

मदारी का कम्पनी में बस डेढ़ आदमी रहे। एगो ऊ आ एगो ८-९ बरिस के दूबर-पातर लइका। लइका का आवाज में खूब मिठाई रहे। जब तक मदारी ढोल बजा-बजा के लइकन के बिटोरत रहे, तबतक ऊ खेल के जोगाड़ करत रहे। अनाज के झोरी एक ओर कइके खेल के झोरी अलगा करत रहे। खेल के मैदान तइयार करत रहे। बीच-बीच में कुछ गावतो जात रहे।

लइकन के थपरी के गड़गड़ाहट जइसे खतम भइलि कि मदारी एगो कुलही निकललसि आ उलटि के पहिरि लीहलसि। ई का? एगो बड़हन भकसावन चिरई! नीचे से ऊपर तक रंग-बिरंग के पांखि आ ऊपर लमहर ठोर! लइका भागे लगलन स। फेनु मदारी के लइका गोड़ में घुघरूदार लाठी बान्हि के नाचि देखवलसि। आँखि बन कइके मदारी का पूछला पर चीजुन के नाँव बतवलसि, गिरह लगवलसि, आसन लगवलसि। सूई से जीभि छेदि दीहलसि। उड़े के बात चला के पेट में छुरा भोकवा लीहलसि। कहे लागल पेट खातिर......पेट खातिर ...आखिर ई खेल रहबे कइल केतनी देर के? भीख खातिर एगो मइलि चादर बिछाके मदारी कहलसि, 'खेलवाड़ी! तोरा पेट खातिर बाबू लोग अधेला-पइसा, रोटी, अनाज, सत्तू देई। दाता के घर फूले-फले, सूम के घर चाकी परे। जे खेल देखि के भागे ओकरा रतवन्हीं होय, बावी हय . .।'

डम डमा डम··· डन डमा डम......ढम डमा डम.....लइका घरे-घरे अनाज ले आवे लगलन स, बाकिर सयान लोग ओही जे डटल रहे। 'मदारी एगो कवनो गीत सुनाव!' लोग हुकुम दीहल।

मदारी गीत सुनावे लागल। "दिन जिन्दगी के जइसे भी गुजरें, गुजारना।' संसार से का सिकाइति बा? कवनो भगवान के का दोस देबेके बा? अपनो कवनो बस नइखे। भागि का तेज धार में जिनिगी के नाइ बहतिया, उके बहेद। हंसऽ मति आ रोवऽ भी मति। चुप चाप देख, न रहिजा त कुछ गा के मन हलुक कइल। सुख के जोखले बा। धन दउलति आ ठाट-बाट के बटखरा ना काम करिहें स। एक ओर एगो महाराजा के मन आ दूसरी ओर मदारी के मन। धन-दउलति के बोकला उतारि दीहल जाउ त भीतर केकर अधिका मीठि बा? ई मदारी गाँवें-गाँवें, गली-गली घूमत फिरत बा। बहुत चेहरा सोझाँ आवत बाड़न स। केतना डहर-घाट, खेत, बस्ती, ई देखले बा। रंग बिरंग का आदमिन से भेंट भइलि बा। केतना आजाद जिनिगी बा। केतना मस्ती बा एकरा जिनिगी में। असलमें एकरा जिनिगी में एगो जिनिगी बा जेके बनावे के नइखे। ऊ अपने आप बनि गइल बा। ऊ देस काल से ऊपर उठि गइल बा। ऊ जीविका का पाछा पाछा नइखे चलत। जीविका ओकरा पाछा-पाछा चलतिया। न कवनो जोर न जुल्म। खाली एगो खेल के बल बा। एगो साधारण आदमी केतना बोड़-बोड़ खेल खेलता, हत्या, डकैती, चोरी आ छल-कपट के खेल। कहाँ ई खेल आ कहाँ ऊ खेल? हम चाहत बानी जे जिनिगी के दिन जइसे बीत रहल बा ओइसे मति बीतो। हमरा मन का मोताबिक बीतो। एही हमरा खेल में हत्या बा; छल बा, कपट बा। हम खेल से पहिले पइसा चाहत बानीं। एही से ओमें सवाद नइखे। ई मदारी खेल देखा के पल्ला बिछा दीहलसि। मरजी देबे वाला. के! ऊ मस्ती में गा रहल बा। असल में ऊ कवनो दूसर गीत गाइत त आतना नीक ना लागित जेतना ई गीत लागत बा।

लड़का डालिन में, कुर्त्ता में आ अंगोछिन में आनाज ले आवत बाड़न स। उन्हनीं का एतना त गियान बटले बा कि चना चना का ऊपर राखीं आ गोंहूँ-गोंहूँ का उपर। देबे वाला आदमिन में केतना प्रेम बा। मदारी के दिहल जइसे भगवान के दीहल बा। एह पूजा के मरम ऊ लोग का जानी जे खड़ा खड़ा खाली गाना सुनत बाटे। ई ऊ आदमी ह जेकरा पाँखि जामि गइलि बाटे आ ऊ ई हिसाब लगा लेत बा कि दिन भर में खेल देखवला का बाद मदारी का केतना आमदनी हो जाति होई। ओह, ई हिसाब किताब जिनिगी के केतना घेरि ले ले बा। ऊ जकड़ि गइल बा। टूटि गइलि बा। एहींजे चारू ओर का बा? ई रहता ह जेमें ठेहुना भर धूरि जमलि बा। खर-पतवार आ गोबर गन्दगी भरलि बा। हवा के झोंका उठा-उठा के

मजाक करत बाड़े स। रहता पर धूर लागल बा। ई एगो गिरहत्त का दुआर पर ना ओकरा जिनिगी पर धूर लागल बा। पूजेरी लोग जेवना दिन शिवजी के जल ना चढ़ावेला ओह दिन पवन देवता एही धूर के उठा-उठा के सिवाला में फेंकेलन।

माटी का देवालिन में दरार फाटल बा। चारू ओर मनहूसी छवले बा। खँड़हर जइसन गाँव, टूटलि फूटलि जिनिगी, आ उखड़ल-उखड़ल जिनिगी के पाँव! माटी के ढहलि-ढमिलाइलि चरन पर बैल चुप-चाप ठाढ़ बाड़न स आ एही टूटही जिनिगी का बीचे केतना ठाट से खेल देखा के ऊ गा रहल बा आ एही से ओकर ई गीत 'दिन जिन्दगी के जइसे भी गुजरें, गुजारना, हमरा बहुत नीक लागत बा। मदारी एह से नइखे गावत कि गवला से ओके कुछ अधिका मिली। असल में ऊ आपन सुख आपन जिनिगी गा रहल बा।

ओकरा एह दुलम छन के लेके हमरा मन में किसिम किसिम के आन्ही उठतिया। जेकरा के मोसकिले से कहियो राति खानी खटिया मिलति होई, जेकरा दिन भर खेल देखावे के बा, जेकरा खातिर न कवनो तिहवार बा आ न परब ओकरा जिनिगी में ई एगो दुलम सुख के छन। आँखि मूँदि के सरग के सुख लूटि रहल बा। गाना खतम क के झोरी उठाई आ चलि देई। आजु इहाँ काल्हि उहाँ। केतना आजाद जिनिगी बा एकर। सोचत बानीं कि का हमरा जिविका अइसनि बा जेवना से केहू के कवनो किसिम के दुख ना होत होखे? हमरो जिनिगी का खेल में भी कवनो अइसन पवित्तर छन बा जहवाँ ठहरि के मस्ती में गा लेईं—

'दिन जिन्दगी के जैसे भी—
गुजरें, गुजारना।'

जन-कवि भिखारी ठाकुर
ले० श्री महेश्वर प्रसाद
मिले के पता—
भोजपुरी परिवार, पटना-३
दाम डाक सहित ४) रु०

बन्नी माई आ कवि

—प्रो० उमाकान्त (हाजीपुर)

बन्नी माई के ओठ काँपल, "तू का चाहतारऽ?"

कवि के आंख रसे रसे ऊपर उठल आ बन्नी माई के आँख से होत माई के मरम में समा गइल। 'हम बरसात चाहतानी। हमरा मन में बरसाती भाव उमड़ के घुमड़ के हमरा के बेचैन करदेले बा। सुनीला कथन के मरम भेदी बनावे खातिर ओह चीज के सामने रहल जरूरी हऽ, जेकरा के कहे के होखे।"

माई के गंभीर आवाज गुंजल। "पर ई त ह गरमी के समय। एघरी लोग दउनी करतानऽ। उनका एघरी पानी ना चाहीं, अन्न के सुखावे खातिर गरमी चाहीं। उ का कहिहें?

कवि चुप रहल।

दुखी मन से माई इन्नर भगवान के इसारा कइली आ गरमी के चल जाए के हुकुम सुनवली। गरमी परा गइल आ पानी के मुसलधार धार बरगद जइसन समूचा गाँव पर छितरा गइल।

खेत, गाछ-बिरिछ, घर-दुआर, अन्न के कोठा, सब पानी में डूब गइल। लोग दउड़ल कवि के पास पहुँचल, पर कवि तऽ अपनां में मस्त बरसाती कविता लिखे में मगन रहल।

समय बीतल।

कवि के एक दिन बुझाइल जइसे ओकर मन अब गरमी के ताप के भाव के अनुभव चाहत बा। अब ओकरा कविता के किताब में गरमी के चित्र जरूरी रहे। उ मन में बन्नी माई के गुहरलस आ गर्मी के बुलावे खातिर बिनती कइलस।

बन्नी माई के गंभीर आवाज पहिले जइसन गूँजल, "देखऽ कवि! अब समय गरमी के नइखे, पानी के आइल। गरमी पड़ी तऽ सुखार हो जाई। पहिले ही लोग के खेत पानी में डूब के सड़ गइल। जे कोठी में अन्न रहे इहो पानों में दह गइल। केतना के तऽ घरो दहार में भँस गइल। अब सब केहू के बीच बीच में धूप आ तनी तनी पानी चाही। ना भइल, तऽ जियहू

के ठेकान ना रही। अबही तऽ लोग भीतरे से लास बा, बाद में तऽ खाली लासे रह जाई लोग।"

कवि पहिलही जइसन चुप रहल।

खाली ओकर आंख बन्नी माई के मरम के कुरेदत रहलि। माई निरास पहिले जइसन बरसात के जाये के हुकुम देली आ गरमी के आवे के कहली।

गरमी आइल। चारो ओर ताप के आग लहके लागल। आग के चिनगारी धरती के धिपावे लागल। खेत सुखा गइल। धीरे धीरे धरती के छाती दरक गइल। एगो हरियर पतई के निसान ना रहल। लोग के खाये खातिर अब जानवर रह गइल। ओकरो धीरे धीरे भूख के राछस पेट में निगल गइल। मन मे आग, तन में आग धीरे धीरे आंख में क्रोध के लहर उठे लागल। सब लोग बेचैन फेरु कवि के पास पहुँचल, पर कवि गरमी के यर्थार्थ चित्र खींचे में डूबल रहल। सब कर अकुलाहट, बेचैनी, भूख से सेंकल उनकर देह के बिनती कुछो ओकरा के अपना ओर ना खींच सकल।

कुछ दिन और बीतल।

कवि के मन गरमियों के चित्र से अघा गइल। अब कुछ आउर नया भाव ओकर मन खोजे लागल। एहीतरे बिना कुछो सोचले ऊ बन्नी माई के गोहरलस। अबकी ओकरा अचरज भइल जे बन्नी माई ओकरा मन में ना उभरलीं। लाख उ बन्नी माई के मरम कुरेदे के कोसिस कइलस पर लागे जइसे मरम काट हो गइल हीखे। अबही ऊ एह मरम से निकले के सोचते रहे कि ओकरा बन्नी माई के आवाज उहंवा से आवत सुनाई पड़ल जहवा खेत के एगो किनारे सब लोग निरास बन्नीये माई के गीत गावत रहे।

बन्नी भाई कहत रहली, "अपना पर बिसवास छोड़ देला, दोसर के सहारा जीये चाहेला ओकर इहे हालत होज़ा। तू लोग खाली भगवान के सहारे जीये के चाहलऽ। पानी भइल तऽ बाँध-बांध के रोके के कोसिस ना कइलऽ। सुखार भइल त कूँआ खद के पानियां निकाले के कोसिस ना कइलऽ। हाथ पर हाथ धइले बइठल रहलऽ। घबड़इलऽ तऽ ओह कवि के पास दउड़ल जेकरा जनता से कवनो कामे नइखे। जे जनता के समस्या के गीत ना गा के आपन मन के सुख करे वाला गीत गावेला। तू ओकरा लगे

गइल ऽ जो मन से दउड़त रहल पर जेकर तन हमेशा सूतल रहल जब कि मन उचित दउड़ावे खातिर पहिले तन के ठीक रूप से दउड़ावे के पड़ेला।"

कुछ देर चुप होके बन्नी भाई फेरू कहली, 'अबो कवनो समय नइखे बीतल। जे बीतला पर रोये ऊ मूरख। हाथ पर हाथ धइले जे बइठे आ जेकर लइका ओकरा काम ना कइला से भूखे मर जाय, ओकरा के भगवानो ना माफ करलेन। अबहुँओ से तू लोग के अपना काम में लाग जाये के चाही। आ ई कवि जे अपना ला जीयेला जेकरा समूह से कवनो मतलबे नइखे, एकर मूड़ि तऽ मुहा जइसन तूड़ि के तू लोगके भूंइया में गाड़ देबे के चाहीं। जहँवा सबके सवाल होखे उहंवा एगो के बात ना सोचल जाला। आ अच्छा काम करे में भगवानो दीवार होखस तऽ उनका के भहरा देबे में कवनो दोस ना हऽ।

बन्नी भाई के कथनी सुनि के कवि के जइसे आत्म बोध हो गइल। ओकरा बुझाइल जइसे आज ले ऊ अँन्धारा में भटकत रहे आ भाव सुख ला जे कइलस ऊ सब खेत में रेत के खेती करेके समान कहल जाई। बन्नियो भाई के खाली अपना ला काम लेके ऊ अधरम के कइले बा। जरूर ओकरा दोसर जनम में कवनो नरक होखे तऽ नरक होखी।

ओकरा बुझाइल जइसे लाखन सूखल आंख अब ओकरा मरम में घुसे लगलन। आ सब चिल्ला चिल्ला के जइसे कहत होंखऽ, "ते पातकी हव स। तेंही हमनी के अपना चमत्कार देखा के भरमवले रहस। हमनी के अपना काम से हटा देले रहस। तोरे कारण हमनी के खेत डूबल, लइका भूखे मरलन, बहु-बेटी अपना इज्जत के बाजार में टके भाव लुटा देली। तोरा जीये के कवनो हक नइखे।"

हकबका के कवि के हाथ अपने आपन लिखल पोथी के पकड़ लेलस आ पैर लोग के नगीच दउड़ गइल जहंवा लोग फेरू से नया उत्साह से खेत जाते के जोगाड़ लगावत रहे। दउड़त दउड़त कवि खेते में जाके गिर गईल। पोथी के पन्ना छितरा गइल। माटी से सनल कवि जब उठल तऽ लोग के बड़ा अचरज भइल। लाग देखल कि कवि बैल के टिटकारी देवे लागल रहे आ हल ओनही चलावत रहे जेने जेने ओकर पोथी के पन्ना छितराइल रहे। एतने ना उ सब के अपना पीछे आवे के संकेत करत एगो जगउनी गीत गावे लागल रहे, जेकर भाव एहतरे रहे,

ए भाई! जागऽ।
ए भाई! सब केहू धरती के पूजा करऽ आ पाछे पाछे आवऽ।

ए भाई ! सबसे अच्छा गीत मेहनत के गीत हऽ। सबसे अच्छा धरम सबके सुख देबे वाला धरम मानव धरम हऽ, जे जाति-पांति आ भेद-भाव से अलग रहता।

ए भाई ! सबसे अच्छा कवि जन कवि हऽ, जे जनता के समस्या के कविता लिखेला। ओकरा के बूझेला अपना कवित से हमेस उत्साह देला।

ए भाई ! जागऽ।

ए भाई ! धरती के पूजा करऽ आ पाछे पाछे आवऽ।

सब केहू के घिरना के भाव जे कवि ला जागल रहे ऊ हल के नोक का साथ लाग के धीरे धीरे माटी में सना गइल। सब केहू कवि के पाछे पाछे बैल के टिटकारी देत ऊहे गान गावत चल पड़ल। सबसे अधिक अचरज के भाव उ लोग के तब जागल जब उ लोग देखलस कि कवि के पाछे पाछे साछात बन्नी माई चल रहल बाड़ी। एक हाथ से उ खेत में बीज गिरा रहल बाड़ी आ उनकर दोसर हाथ कवि पर फूल बरसावत बाटे।

भोजपुरी ब्याकरण
ले० पं० रासविहारी राय शर्मा
एम० ए० साहित्यरत्न
पु० दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती
राजगुरू मठ; वाराणसी
दाम २) रु०

समुझ के फेर

—चतुरी चाचा

'भादो के अन्हरिया राति, गधबेरि डहरे में हो गइल। बस्ती से दूर नदी का किनारा पर पीपर का पतई हहरइला का मारे राति अउरी भकसाबन हो गइल रहे। राति खानी ऊरुबा बोलि बोलि के आपन हाजिरी दे दसन। कुल्ही नौ गो मइजल कान्हि पर लदले बिना दायें बायें तिकवले तीर का नीअर तीर का ओर हुकले चलि आवत रहलन। आठगो आदमी दूनों मइजलि अपना कान्हीं पर लेले रहलन आ एक गोड़ा वारी वारी से कान्हि बदलवावे खातिर पाछा पाछा टुघुरत टुघुरत चलि आवत रहे। ओह पार दियरा में केवनों मड़ई में से एगो दीया के टेम्ही भुकभुकात रहे। ऊपर बदरी के हड़हड़ भड़भड़-हेठा नदी के फफाइल-भुंइया गोड़ तर के किछऊ लउकत ना रहे।'

तीर पर ले जाके मइजल उतारल लोग। पांडे पड़ाइन दूनों बेकति के मइजल एके लगे सटाइ के धइल गइल। आखिर एह लोगन के दाह दिहल जाई कि कांचे दहबा दिहल जाई एही पर विचार होखत रहे। पांड़े पड़ाइनि का त आगा पाछा केहू रहल ना कि मुंहे आगी देऽ। ऊ त गाँव का लोगन के मेहरबानी रहे कि ऊ दूनों बेकतिन के कान्ही पर लादि के असमसान घाटि ले चोंहपा दिहल लोग।

पता नाहीं पांड़े आ पड़ाइन के, के गनना बनवले रहे कि जिनिगी भर कबों दूनों बेकती में पटरी ना रहल। ऊ चलसु तीर घाट, ऊ चलसु मीर घाट। ऊ कहसु कि दिन भइलबा त ऊ तुरन्ते झपटि देसु। कहसु कि बे, के कहत बा? राति नू भइल बा। नइख देखत जोन्ही लउकत बा। कहला का माने ई दिन राति मिलाइ के चौबीस घंटा में एक न एक बेर जरूरे दूनों बेकती में जरूरे लोहा लागि जा आ टोला परोसा मनसायन हो जा। कबों कबों त चूल्ही के आगियो बुताये के नौबत आ जाया। सतुए घोरि के काम चलावे के परे। आजु ना जाने कइसे दूनों मइजल एके संगे चुप चाप लगवले रहे। लोगन का एही बाति के अचरज रहे।

'अनगुतहां दस बजे ले पांडे बाबा के केवाड़ी ना खुलल त टोला परोसा में तरह तरह के चर्चा होखे लागल। जुग जमाना बिगरि गइल बा

कतों बाम्हना बाम्हनिया के केवनों जान से मरलसि त ना ? आ दूनों बेकती आपुसे में लड़ि झगरि के माहुर जहर त ना खा घललन स। इहे कुल्हि सोचि के केवाड़ी ढकचावल लोग बाकिर केवनो खांखि ढेकार ना रहे। अन्त में लेंढा लोहार बोलावत गइलन आ केवाड़ी तुराइल। भीतर जा के देखो लोग त दूनों बेकति अपना अपना खटिया पर प.ल हउवन। एके संगे दूनों बेकती के कइसे बिना केवनों बेरामी हेरामी के मौअत हो गइल सभका एही बात के फिकिर रहे। केहू त दूनों बेकती का एके संगे मुअला खातिर ओ लोग के बड़ा भगिमान माने। केहू कहे कि एह लोगन के अखरेरि जान गइल हवे। केहू का एह बाति के सन्देह होखे कि जरूरे ई किछु माहुर जहर खइले बाड़न स। बाकिर अब किछुऊ सोचल बेकार रहे। माटी के जल्दी जल धरवला के काम रहे। पुलिस पियादा जानी त बहि से बूड़ा होखी। गाँव के धतुरो रहेला त एक दिन कामें आवे ला। छबीला टोला में का नौ गो आदिमिन के बटोरि ले गइलन। दू गो टिकठी बनल। एही कुल्हि आहु जाहु में इची अबेरि हो गइल।

'पांड़ेबाबा का घर में थाती रहबे का कइल कि मजे में काम किरिया होखो। दू गो झिलिंगा बसंहटि रहली स जेवना के बाधी रोज पांड़े जी सुनुगाइ के गांजा के चीलम पीअत रहलन। लूगा का धरि के सिअल बिछवना नांवे एगो लेवा रहे जेवना के पड़ाइन खाली अपना खातिर बनवले रहली। हीत नात का अइला गइला पर कबों काल्हि के ई बिछौना दुआर पर लउकि जात रहल हवे। जहिया से पड़ाइनि एह घर में बहुरिया बनि के अइलि तहिया से आजु लेके कुल्ही लूगन के नमूना केहू देखल चाहो त पड़ाइन के ई लेवा उभारि के देखि लेउ। एही कुल्हि जोगाड़ खातिर पड़ाइने लेवा के धोबी काहें ना जाये देंस की पाट पर पटकते ओकर तारतार अधिआइ जाई। जब कबो लेवा मइल बुझा त आपन आ पांडे बाबा के पुरान लूगा धोआइ के ऊपर से खोलि चढ़ाइ देसु। ए से ऊ तहदरज हो जा। धोववला के अब केवनों कामें ना रहि जा। एकरा अलावा घर में एगो टुटहा तावा, फुटही लोहा के कराही, तमलेट के पचकल लोटा थरिया-एगो काठ के डोकी, जेवना के मेढ़ि घाम खात खात चिहरि के दांत चिआरि देले रहे। ईहे कुल्हि बरतन के थाती रहे। अनाज नांवें पतुकी में थोरे गेहूं के चोकर, मेटा में बजरा आ कहंतरी में थोरे लेतरी धइल रहे। पचकल तमलेट का लोटा पर हाड़ा अइसन लूझल रहलन स जइसे सरकारी सस्ता गल्ला का दोकान पर पंच भकठल गेहूं

का पाछा मारि करत बा। बाति ई रहे कि सांझे के शीरा ओरल रहे ओमे आ ऊ ठीक से दोकानि पर खंघरावल ना रहे।

गांव के लोग भेर लगाइ के कफन कीनि ले आइल। दस पांच रुपया खातिर के किफायत करे जाउ। विचार भइल कि मुंहे अगियो दे दिहल जाउ। छबीला का मुंह में पतलों के लूक थम्हाइ के सभे मुंहे आगी देबे खातिर घोरिआवे लागल। जब पांच हाली हो गइल आ पतलो के आगि जइसहीं धन्हकलि कि छबीला मुंह पर आगी धरे खातिर निहुरल। एही बीच में पांडे बाबा के लासि सगबगाइल। कफन हटाइ पांडे बाबा बोललन—'अबो उठबू कि का कहत बाड़ू ? चल उठऽ घरे चलऽ तूं ही पांच गो खइहऽ हम हीं चारि गो खाइब। भला तूंही बड़ रह हम ही छोट रहबि।'

सबका बुझाइल जइसे सपना देखत होखे लोग। कतों मुर्दा उठि के बइठेला ? केहू का देहि में कटले खून ना रहे। तब ले पड़ाइन उठि के बइठलि आ कहली—'त मानत बाड़। अब हमरा बखरा पांचि गो, तोहरा बखरा चारि गो।'

'हां हां चलबो त कर। जल्दी कर ना त हई लोग चलि जाला।

चारि गो आ पांचि गो के बखरा सुनते नवो जना के हवाइये गुम हो गइल। मुअला पर प्रेत केहू के थोरे चीन्हेला ? धोती खुटियाई के जे एके डांड़े भागल लोग त गंवही आ के थिराइल लोग। आगा आगा ऊ लोग भागल आवे आ पाछा पाछा पांडे पड़ाइनि पोंछिआवत आवसु। जब पाछा तिकवे लोग त पांड़े बाबा हांक लगावसु कि तनी खड़ा हो जा हमनियों के सुनले जा जा। बाकिर ऊ काहे के ? ऊ लोग आपन जीव लेले हकासल पीआसल चलि जात रहलन। घरे गइला पर के आगी आ पत्थर छूएला, तर ताबर केवाड़ी खोलाइ के अपना अपना घर में ढूकि के किल्ली दे दिहलन।

'जेहे सुनल सेहे अब बाति ना तिखारल। तर ताबर लरिकन फरिकन के भीतर लुकवाई के भीतर से केवाड़ी दे दिहल। गाँव में ढुकला पर कतों चिरईं चुरुंग के पता ठेकाना ना रहे। पांड़े आ पंड़ाइनि सभसे पहिले अपना टुटही पलानि का ओरि गइलन। देखसु त ऊ उजारि पजारि के धइ दिहल रहें। अब ओमे रहही के केकरा रहे ? भादों का अन्हरिया में अब कहां लुकाउ लोग। गांव में अब घर घर के केवाड़ी ढकचाइ

आइल लोग। बाकिर केहू केवाड़ी ना खोलल। झंख मारि के कफन बिछाइ के फेड़ा तर कइसहूं राति काटल लोग।

बिहान भइला जब जगरम भइल आ गोरुन के नादे लगावे के जूनि भइल। कतों पांडे पड़ाइन के सुनगुन ना मिलल त एने ओने झांकि के पंच केवाड़ी खोलि के बहरा भीतर होखे लागल। गांव बहरा किछु जाना कुल्ला कलाली करे खातिर चललन। जब आदमियो के आहट मिलल त पांड़े पड़ाइन दूनों बेकति उठल लोग। आ बतियावे खातिर जइसहीं आगे बढ़ल लोग कि कुल्ही गंवहां डांड़ छोड़ि के भागि चलल। पांड़े बाबा बहुत कहलन कि हम किछु करबिना तनी हमार बाति त सुनिल जा। बाकिर के सुनेला। सभका अपना अपना जान के परल रहे। कबों केहू का होश में अइसन थोरे भइल रहे कि मुर्दा असमसान से जी उठल होखे। भूत प्रेत के किस्सा झूठ थोरे कहल जाला।

गांव में फेनू हलचल मचि गइल। गनीमत इहे रहे कि दिन हो गइल रहे। विचार भइल कि लउरी आ भाला लेके लखेदा डालल जाइ। ना त रहल कठिन हो जाई। सभे बिटुराइल। गांव के सगरे लउरि आ भाला निकसलन स। एके हाली लखेदा परल। फइलवें भइल पंच डांक दुल्लइ करसु। निगिचा चोहंपे के केहू का फरह ना परे। पांड़े आ पड़ाइन आपुस में सोचल कि अब जनात बा कि गांव में रहे ना पइबि जा। बाप दादा के डीह छुटि जाई। भागल पराइल ऊ लोग कोतवाली का पुलिस कीहां चोंहपल। सरकार आ पुलिस पियादा के भूतो दूत किछु ना करेला। पंच निराश होके फइलवें से तमाशा देखे लागल।

पांड़े बाबा रपोट लिखवलन कि गांव के लोग हमके गांव से उजारि के खेदत बाड़न, हमार कई पुहुत के बाप दादा के बनावल डीह छूटत बाटे। सरकार मदद कइके दियवाइ देउ। हम अकेल जात बानी त लउरि आ भाला लेके लखेद लेत बाड़न। गरीब बाम्हन का रपोट पर कोतवालो साइब का खीसि बरल। सिपाहिन के बोलवलन। अपने घोड़ा पर चढ़लन। पाछा पाछा सिपाहिन का संगे सगे पांड़े आ पड़ाइनि दूनों जाना घर का ओरि चलल।

कोतवाल साहेब के देखते सभे आपन घर दुआर छोड़ि के सरेहि का ओर भागल। केहू जनेरा के खेत में, केहू उखी मं, केहू रहरि आ जोन्हरी का खेत में लुकाये लागल। कोतवाल साहब गांव का गोंड़इत के बोलवलन। ऊ बेचारा हिलत कांपत जान तरहथी पर लेले आइल। ऊ फइलवें से कहलसि—'सरकार जान बकस पाईं त एगो अरज करीं।

कोतवाल साहब कहलन—'कह का बाति हवे ?,

गोंड़इत कहलसि—'सरकार जेतना गांव वाला रउरा से नइखन डेरात ओसे अधिका ऊ लोग डेरात बा एह पांड़े पड़ाइन से। एह लोगन के हाथ बान्हि के फेड़ा में बान्हि देईं त हमनी का रउरा निगिचा आइबि जा।

'ऊ काहें ? कोतवाल साहब पूछलन।

'सरकार! ई लोग काल्हिये मू गइल रहुअन। घाट पर जब निचल्हांव देखुए लोग तबे से हमनी पर टूटल बाटे लोग। हमनी का नौ जाना एह लोगन के मइजल ले गइल रहुईं जा। अब लोग आपुस में बतियावत बाड़न कि पांच गो तू खइह आ चारि गो तू खइह। कतों मुर्दा जीयेला सुनले बानी ? जरूर ई प्रेत हवे लोग। फइलवें से जेवन पूजा पाठ कही हम गांव वाला लोगन से दियवाइ देत बानी बाकिर हमनी के निगिचा जनि बोलाईं ना त जान ना बांची!—गोंड़इत कहलसि।

गोंड़इत के बतियावत देखि के दू चार गो अउरी टांठ आदिमी गते गते लुकि छिप के फेड़ा का अलोता, आ के खड़ा होके बाति सुने लगलन कोतवाल साहब पांड़े बाबा से पूछलन—'का बाति हवे महाराज ?'

पांड़े बाबा कहल शुरु कइलन—'बाति बिलकुल सही हवे। बाकिर हमनी का कबों मुअल ना रहली हवीं जा।

'तब का भइल हवे ?'—कोतवाल साहब पूछलन।

पांड़े बाबा कहलन—'बाति ई भइल कि हमरा पड़ाइन का ठेकुआ खाये के मन कइल। हम उधार पइंचा गोंहू आ सीरा आनि दिहुईं। हमार पड़ाइन देखही के अइसन बाड़ी। बड़ी गिहिथानी बाड़ी। कूटि पीसि के पिसान तेयार कइली आ कराही में कोइना के तेल बोझि के ठेकुआ पकवली। कुल्ही नौ गो ठेकुआ भइल। अब बखरा के तरे लागो। पड़ाइन कहसु कि हम मेहनत ढेर कइलीं हवीं हम पांच गो खाइबि। एने हमार कहाव रहल हवे कि नाहीं, हम मरद बच्चा हवीं। खाइबि ना त जीअबि कइसे ? आ टहल धन्हा कइसे करबि। बहुत हरतुज कइला का बाद ममिला ना फरिअउवे। ठेकुआ का पाछल हमरा घर में झगरा लागि गइल। हमनी का दूनो बेकति कोहनाइ कोहनाइ अपना खटिया पर आ के सूति गइलीं जा। फेनु ना जाने पड़ाइन का मन में का अउवे ऊ हमरा कगरी आ के कहुईं—'देख हमनी का दूनों बेकति सूतीं जा। जे ढेर देर ले सूति ऊ पांच गो जे अगते उठी ऊ चारि गो ठेकुआ खाई।'

हमनी का दूनों बेकति ठेकुआ का उमेदि में राति खानी आसा टीसुना छोड़ि के खटिया पर आ के सूति गइलीं जा। बिहान भइल लोग बिटुराइल। केवाड़ी खोलावल लोग। हमनीं में से केहू ना खोलल। केवाड़ी तुराइल। मइजल बनलि। घाट पर गइलीं जा। हमनी का दूनों बेकति जगले रहुवीं जा। बोलत एह खातिर ना रहलीं कि उठल साबित हो जाईं। बाकिर जब अन्त में ई लोग मुंहे आगी देवे लगुए आ जनुईं कि अब जान ना बाची हमहीं उठि के पड़ाइन से कहुईं—'उठ! हे महामाया! तूं ही पाच गो खइहा। हम ही चारि गो खाइबि। कइसहूं जान त बांचो।'

हमार जागल देखि के पड़ाइन अगराइ उठुईं। हमनीं के उटल कहीं कि गांव के लोग हमनीं के छोड़ि के भागी अउवे। रउरा बिसवास ना होखे त गोंड़इत के भेजि देईं नौ गो ठेकुआ ओही तरे नादी तर तोपि के धइल बा। मंगा के देखि लीं।'

गोड़इत धवरल गांवे गइल। नादि ओदि त फोरा कूंचा गइल रहे। ठेकुआ के गठरी कुकुर घिसिअवले जात रहे। गोंड़इत तबले मोका पर चोंहपि गइल। सब का आगा गठरी खोलाइल त नौ गो ठेकुआ भइल।

कोतवाल साहब कहलन कि—'सभ केहू अपना अपना घरे जाउ? केवनो बाति नइखे। कुल्हि समुझ के फेर रहल हवे।'

बेसा

—लव शर्मा "प्रशांत" (चम्पारण)

खुशबुपुर महल्ला रामपुर शहर के एगो कोना पर बा जेकरा के शहर के लोग निमन से जानेला। इ उ महल्ला ह जहवां साँझि खानि धन दउलत नीलामी प चढ़ जाला आ ओकरा बदला में देह बिकाए लागेला। इ उ महल्ला ह जहवाँ एके इशारा पर जवानी नाचे लागेला, बेजान कठपुतली नियर आ ओतहीं हाथ पसरले भिखार लोग डाँट देहल जाला!

आखिर अइसन काहे?

खालि देह के आगि बुतावेला। बनल जवानी लूट लेहल जाला लेकिन उ चिकारी ना पार सकेला। चिकारी पार ना सकेला।

आखिर अइसन काहे?

आपन पेट के आगि बुतावेला। असल बात इ बा कि जिनगी से भी जियादा कीमत इहां जवानी के बा। कुछ मजबूरी ए लोग के इ काम करेला मजबूर कर देहले बा। जिनगी के एके गो भूल बराबर ला सराप बन जाला। कुछ अइसने सराप के लेके आज काल के पतुरिया लोग जी रहल बा।

साँझि के बखत !

खुशबुपुर एगो अजब खुशबु से गमक रहल बा। केनहुँ से सारंगी के आवाज आ रहल बा त केनहुं से तबला के ताक......धिना... धिन। केनहुं से मीठ-मीठ गीत! इहे महल्ला का पछिम ओर के एगो मकान में अभईं कुछए दिन भइल "बेला" नाम के एगो नौची (छोकड़ी) आएल बा आज काल बेला बाई कहल जाला। बाई, प महल्ला में आवेवालियन के नाम का आगे रोकते-रोकते भी लाग जाला। बेला बाई देखे में सदेह परी निहर लागेले। ऊँच सीना, गोर सुनर चेहरा, पातर कमर, करिया-करिया मेघ निहर केश, पातर-पातर लाल होंठ आ शराबी आँख! बेला उ महल्ला में आवतहीं चरचा के विषय बन गइल। लेकिन उ भले समय के फेर में पड़ के पतुरिया बन गइल रहे, तबो उ आपन औरत के संस्कार के भुलवले ना रहे। उ अपना इहाँ समाज-सुधारक, टोपीवाला लोग आ धार्मिक संस्था से लागवाला लोग के देखि के मने-मने बड़ा दुखी होत रहे। बेला रोज देखत रहे—पतुरिया लोग के दरवाजा पर बहुते भिखाड़ जियादा भीख के आश से फाटल चेथरा में लपेटायल जेकरा में से एगो अजब महकदार गन्ध निकलते रहे, खड़ा बाड़न स। दोसरा ओर उ देखे चहेता लोग के। उ लोग कपड़ा अइसन पहिर के आवे साइत उ लोग अपना शादी में भी पहिरले होईं कि ना ए में सन्देहे रहें। बेला के आपन इज्जत इ समाज के ठिकेदार लोग के हाथे लुटावल तनको ना सोहात रहे। लेकिन उ मजबूर रहे। शुरू में समाज-सुधारक आ बिदेआरथी लोग से बात कइलस त उ लोग साफ इनकार क गएल। उ लोग के कहनाम रहे कि उ लोग अपना बेरादरी में मुँह देखावे के लाएक ना रह जाईं। उ लोग के बाल बच्चा के साथ कोई भी शादी ना करी।" तब उ ओह लोग पर बरिस परे—"आ इहवाँ राति खानि छिपके हमनी के इज्जत लूटल लोग त ताहनी के बेरादरी तोहनी के कुछुओ ना कहे, कुछुओ ना करे बलुक तोहनी के बेरादरी के सरगना लोग भी राति खानि हमनीं किहाँ मुँह लुका के आवलन। "एतना सुनला का बाद उ लोग के मुँह बन्द हो जात रहे। कुछ दिन के बाद

बेला इ सवाले उठावल बन्द क देहलस आ उ अपने खूद एगो अइसन सवाल बन गएल जेकर जवाब ना रहे बेरादरी का आगे ।

× × × ×

आज सितम्बर के दस तारिख ह । एगो नवजवान बेला के कोठा पर चढ़ रहल बा । उ देखे में बड़ा सुनर आ सोभाव से बड़ा पक्का मालूम दे रहल बा । उ कुछ सीढ़ी के पार क के बेला बाई के कोठली के खिड़की के नजीक पहुँचल आ भीतर के ओर देखे लागल । उ देखलस—बेला बाई एगो अधेर आदमी के साथ पलंग पर बाटे । नवजवान के मुलायम हिरदया कशमशा उठल । आजुकाल के बेरादरी के प्रति ओकर दिल बिद्रोह करे पर उतारु हो गएल ।

कुछ देर के बाद उ अधेर आदमी बेला के कोठली से निकल के बहरा चल गएल । ओकरा तनिए देर के बाद बेला भी निकलल । एगो नवजवान के बाहरा देख के उ पूछलस—

"सरकार के नाम जान सकिले ?"

"ए गरीब के लोग रघुननन कहेला; आ हमहुं का ए परी के नाम जान सकिले ?"

"काहे ना; ए लौंड़ी के नाम बेला ह ।"

"तूँ जइसे पुरनमासी के चनरमा निहर बाड़ ओइसहीं तोहर नाम बा । केतना सुनर नाम बा !;तूँ फूलो से जियादा मुलायम बाड़ । नशो में भी तूँ कवनो कम नइखु ।"

"कहल जाव, हम अपने के का सेवा कर सकीले ?"

"तू बात पचावे के चाहतारू ! साँचो, तूँ बहुत्ते सुन्नर बाड़ बेला रानी !"

"तारीफ के मेहरबानी !"

"का तू आपन गिरहस्थी ना बसा सकेलू !"

'इहाँ जे भी आवेला, उ तनिये देर ला आवेला आ ओतनहीं देर में इ कुल्ही बात कह जाला । लेकिन केतना लोग निभावेला ? अपने भी इ बात कहिके हमर दिल दुखावेके चाहतानी !"

"आजु से तूँ हमर भइलु, सिरफ हमर ?"

'आ बेरादरी ?"

"बेरादरी के डर हमरा नइखे ।"

"ओह ! हम सपना देख रहल बानी की होश में बानी ?"

“ना, इ सपना ना ह ...” कहिके उ नवजवान बेला के अपना हिरदय से लगा लेहलस आ फेर कहलस—

“आपन कहानी सुनाव बेला, हम सुने के चाहतानीं।”

“त सुनीं—रामपुर जिला में मोहनपुर नाम के एगो गाँव जंगल से सटल बाटे। उ गाँव कबहु धन से भरल रहे आ सुख के नदी बहत रहे। उहँवा के लोग अकाल के नाँव जानते ना रहे। उहे गाँव में एगो बुढ़िया रहत रहे जेकर काम लोग के गलती रास्ता देखावे के रहे। ओकर काम एतना सधल होत रहे कि कभी लोग के ओकरा पर शक ना होत रहे। उ गाँव के लड़कियन के बहका-फँसा के बेचत रहे आ बहुत आराम के जिनगी बितावे। गाँव के बगलें में जंगल भइला के वजेह से लोग समझे कि लड़की के कवनो जंगली जानवर उठाके ले गएल। रामपुर एगो बड़का शहर रहे। उहँवा चार गो सिनेमा घर रहे जवना में दूगो के मालिक लड़कियन के बेपार करे। उ लोग के एजेन्ट हर गाँव में भरल रहे। इ बुढ़िया भी उहे सब के आदमी रहे। उ सुन्नर आ जवान लड़कियन के फुसला के सिनेमा देखावे ले जाए आ ओतहीं से ओकनी के गाएब क देहल जात रहे। मोहनपुरगाँव के उ बुढ़िया एक दिन हमरा के आ हमर छोट बहिन कमला के देखलेहलस। ओ समय हमनीं जवानी के पहिलकी सिढ़ी पर रहीं स। हमनीं के पीछा गाँव के छवारिक लोग हमेशे देखल जात रहे। बुढ़िया हमनी के बोलउलस आ कहलस—

“तनि सिनेमा देखे के मन कर रहल बा। बहुत दिन हो गएल सिनेमा देखला। आज साँझ के जाएके बिचार कइले बानीं। तोहनीं का भी चलऽ ना? साथ रही; हम त बुढ़िया हो गइनीं। तोहनियो सिनेमा कभी देखले ना होइबू लोगनीं। जानतारू लोग, सिनेमा में का देखावल जाला?”

“ना!” हमनींका जबाब देनीं

“हमनिये निहर चलत-फिरत फोटो देखावल जाला। चलबुनू तोहनियो का?” एतना कहिके उ हमनीं ओर तकलस।

“चलब काहे ना चाची! तूँ हू चलबे रे? हम कमला से पुछनीं। हम बुढ़िया के जाल में फँस चुकल रहीं।

“चलब काहे ना दीदी! जहँवा तूँ जइबू उहाँ हमरा जाए में का डर बा? कमला जबाब देहलस।

“अच्छा त ठीक रहल। बाकि अभईं केहु से ना कहिये स कि सुनर चाची का साथ सिनेमा देखे जा रहल बानी। अइले पर कहिय स। हम सब सहियार लेहब; केहु कुछुओ ना कही।

"ठीक बा ।"

ओहि दिन साँझि के हमनों दुनू बहिन सोरहो-सिंगार कइनी स तब घरे बजारे जाए के बहाना बना के सुनरी चाची का साथ चल परनी स । बुढ़िया हमनी के भरल-पुरल देह अंगुठिया केश आ गठल छाति देखि के बड़ा खुश होत रहे, लेकिन ओ समय हमनी ओकरा दिल के छल-कपट के ना समझ सकनी स । उ हमनी के जंगलिये राहता से ले जात रहे काहे कि मुख राहता से ले जइला पर लोग के देखे के डर रहे ।

चलते-चलते हमनी का रात के साढ़े सात बजे शहर पहुँचनी स । सुनरी चाची हमनी के ए गो होटल में ले गइली आ ओतहीं हमनी का भर-पेट खइनी स । उहँवा से हमनी के सिनेमा में ले गइली आ ए गो बैठका (Waiting room) में बइठा के आपने एक ओर उठके चल गइली । कुछ देर बितला के बाद एगो बड़ा खतरनाक किसीम के आदमी बेशकिमत कपड़ा पहिरले हमनी के लगहीं आ के खड़ा हो गएल आ हमनी के घूर-घूर के ताके लागल । हमनी साफ देखनी —ओकर आँख बहुत कुछ चाहत रहे । कुछ देर के बाद उ चल गएल आ ओकरा जातहीं सुनरी चाची आ गइली । उ हमनी के सिनेमा के ए गो अन्हार कोठली में ले जा के बइठ देहली । एकरा तनिए देर के बाद सिनेमा शुरू हो गएल । हमनी का बाड़ा अचरज लागल । हमनीका देखनी हमनिए निहर जान-परानवाला आदमी बेजान कपड़ा के परदा पर चलत-फिरत रहे गाँवन के भी कुछ फोट लउकल । एही समय में एक-ब-एक पीछे से चार आदमी आ के हमनों दूनू बहिन के मुँह में कपड़ा ठूस देलस आ काँन्हा पर लाद लेहलस । सुनरी चाची कुछुओ ना बोलली आ एक ओर खाड़ा हो गइली । हम तकनी त उ हमरा के देख के हँसे लगली । हम सब कुछ समझ गइनी । लेकिन अब का हो सकत रहे ? धनुई में से छूटल तीर भाल। फेर धनुई में लवट के आ सकत रहे ? ओकरा बाद ओही अन्हार कोठली के नीचे बनल तहखाना में हमनी के बन्द कर देहल गएल । ओ तहखाना में अउरो बीस-बाइस छोकड़ी रहन स । सिनेमा के दूसरका खेल खतम भइला पर हाथ में दारू के बोतल ले के सिनेमा के मालिक आ सिनेमा के दोसर काम करेवाला लोग ओही तहखाना में आ गएल लोग । ओ तहखाना में बहुते छोट-छोट कोठली रहे जे में बहुते लड़की स बन्द रहे । हम अभइँ इहे सब सोचते रही कि सिनेमा के मालिक हमर हाथ पकड़ के पलंग के ओर खींचे लागल आ दोसर आदमी लोग भीतर के पहिलकी लड़कियन के खींचे लागल । उहँवा पचीस-तीस आदमी के लाएक बिछौना पहिलहीं से लागल रहे । सब केहू अपना-अपना पसन्द

के लड़कियन के जबर्दस्ती बिछौना ओरि खींचे लागल। हम चिचियात रह गइनी आ अपना इज्जत के भीख माँगत रह गइनी लेकिन दारू आ वासना के निशा में आँन्हर उ लोग पर एकर असरे ना पड़ल। हम लाचार रहीं। अपन इज्जत के रछेआ करे लाएक हमरा पास शक्ति ना रहे। सिनेमा-मालिक के गोदी में हम तड़पत रह गइनी। ओकर चूम्मा हमरा आगि निहर लागत रहे। एही समय में उ राक्षस हमरा के पानी पियावे के बहाना से दारू पिया देहलस। हमर होश बिलाए लागल...बिलाए लागल। हम एकदम बेहोश हो गइनी। जब होश आएल त हमर सब धन उ डाँकू लूट के चल गएल रहे। हमरा पास कुछुओ ना बचल रहे। हम भोकार पार के रो पड़नी लेकिन हमर रोआई सुनहींवाला उहँवा कवन रहे? ओह दिन के बाद सिनेमा-मालिक रोजे हमर देह के साथ खिलवाड़ करे लागत। चार महीना के बाद जब हमरा से उनकर मन भर गएल त सात सव रोपेआ में उ हमरा के एगो चकला में बेच देहलन। अब त हमर हालत पहिले से भी खराब हो गएल। हम चकला के एगो मामूली बेशवा बन के रह गइनी। उहँवा हमरा रोगी, बूढ़ आ फूहर लोग से भी रोपेआ मिलला पर उ लोग के मन रखे के परे। इ सब के चलते मोका पा के एक दिन हम भाग गइनी। हमरा के केहू भी रहेला एक बित्ता जमीन तक ना देहलस तब मजबूर होके हम इहे रूप बजार के शरन धइनी आ आज हमरा के सभे बेला बाई के नाम से जानेला। बस, इहे बा हमर कहानी।

बेला के कहानी सुन के उ नवजवान बड़ा खुश भइल आ ओकर हाथ पकड़ के कहलस—

"अब इ हाथ हम जन्म भर ना छोड़ब"।

"साँच"? बेला पूछली।

"हँ, साँच"!

"कहीं अपने के घर के लोग"?

हमर ए दुनियाँ में कोई नइखे। जियादा शक मत कर आ शादी के तइयारी कर।

ओह! हमर भाग ..." कहि के बेला उ नवजवान के छाती से लाग गइली।

जिनिगी के मोह आ तियाग

—मणीन्द्र भूषण त्रिपाठी 'मधुर' (बलिया)

आज से बहुत दिन पहिले नीत शास्त्र के बड़हन पंडित चाणक्य अपना नीति दर्पण में लिखले बाड़न कि "माता बैरी पिता शत्रोर्येन बालेन पठ्यते।" माने उ महतारी आ बाप शत्रु हऽ जे अपना लड़िका के ना पढ़ावेला। अबका जमाना में भले दू चार आदमी एह बात के खियाल क के अपना लड़िकन के पढ़ावत होखसु बाकि ढेर आदमी त एगो दोसरा का देखा देखी अपना लड़िकन के जगह जमीन बेंचि के भी पढ़ा रहल बाड़नि।

जुड़वानपुर का सुखारी सिंह का केवनो बात के कमी ना रहे भगवान नगद उनके हर हैसियत देले रहलनि। चारि गो हर त चलते रहे दुआरे पर आटा तेल वगैरह के मीलि से भी हजारन रुपया के आमदनी रहे। एकरा अलावे बाहर से मटर के कारबार से भी आमदनी अउरी बढ़ि गइल। कहे के मतलब इ कि एह घरी में लछिमी उनका घरे गोड़ तूरि के बइठल रहली।

भीतर से मन रहलो पर भी पहिलका लड़िका भगवन्त के पहलवानी की ओर झुकाव देखि के मिडिल पास कइला का बाद सुखारी सिंह आगे पढ़े खातिर जोर ना दिहलनि। बाकि जसवन्त जे उनकर छोटका लड़िका रहलन प्राइमरी स्कूल पास कइला का बाद उनकर बुद्धि विचार देखि के बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय में पढ़े के भेज दिहलनि।

एहतरे त एडमिशन परिच्छा [दशवां क्लाश] पास कइला का बाद से तिलकहरू सुखारी सिंह के दुआर खांन्हि के फेंक दिहलनि स। बाकि जइसन कि लइको के राइ रहे एम० ए० पास कइला का बाद ही कहीं विआह करे के तय भइल। रुपया पैसा का बारे में सुखारी सिंह का उपर जुग जमाना के ढेर असर ना पड़ल रहे। अपना लड़िका का विवाह के बारे में उनकर कहनाम रहे कि भले तिलक कम बेस मिलो लेकिन जइसन हमार लड़िका पढ़ल लिखल सुघर सुकान्त बा ओइसने लड़की भी मिले के चाहीं। उ एह बात के अच्छी तरह से जानत रहलनि के एह में गड़बड़ी भइला से ओह मरद-मेहरारू के जिनगी जवाल हो जाले।

एम० ए० के इम्तहान दे के गरमी का छुट्टी में जसवन्त घरे अइलनि आ एही छुट्टी में इलाहाबाद के महावीर सिंह के मनभावती नाँव का लड़की से आढंरी लगन में बड़ा ढंग ढवार से वियाह हो गइल। मनभावती भी एही साल इलाहाबाद विश्व विद्यालय से अंग्रेजी से बी० ए० पास कइले रहली। शुरू से शहर में रहला से शहरी चाल ढंग भेस भूषा त होइये गइल रहे पच्छिमी सभ्यता के बू बास भी निका के भरि गइल रहे। ससुरा में अइला पर इनका मन मुताबिक समाज त पूरा-पूरा ना मिलल बाकि आगे के आगम सोचि के पूरा-पूरा सबूर राखसु।

जुलाई के महीना शुरू रहे। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय खुले में अबहीं आठ रोज के देर रहे। एहि बीच जसवन्त अपना साथी के सादी के सनेश पाके कुछ दिन खातिर कलकत्ता चलि गइलनि। साथी का इहां त कवनो परकार के कमी भा तकलीफ ना भइल बाकी घरे लवटे का समय रहता में खइला पिअला का गड़बड़ी आ हवा पानी बदलला से तवियत कुछ खराब हो गइल। एगो कहावत ह "हिले रोजी बहाने मउअति", कहे के मतलब इ कि केतनो दवा इलाज भइल बेमारी बिगड़ते गइल। आखिर सबका राइ से पटना अस्पताल में भर्ती भइलनि।

इ मसल मशहूर ह कि चिता मुरदा के जरावेले आ चिंता जियते के अइसने कुछ फेरवट में जसवन्त निका के गली गइलनि। केतनो दवा दारू कइला पर कुछ असर ना भइल। देह में खून के एतना कमी परि गइल कि अब तब लागल रहे। बहुत जाँच परताल का बाद डा० विशम्भर नाथ झा बतलवलनि के नया अदमी के एक पौंड खून निकाल के अगर इन का देह में टटके दिइल जा त इनकर बेमारी बिना शक सुबहा के सब दिन खातिर सरकि जाई।

जसवन्त के पिता सुखारी सिहं जे पहिलहीं से अपना औरत का साथ मोह का मारे आइल रहलनि से ई दूनो बेकति अपन खून देवे खातिर तेयार हो गइलनि, बाकी पैंतालिस बरिस से अधिका उमर रहला से डा० साहब एह लोग के खून ना लिहलनि। फिर त सुखारी सिहं अपना जेठका लइका भगवन्त आ पतोहू मनभावती के भी एह मौका पर बोला के कुछ बात कहलन। भगवन्त त जइसे सुनते ठा हो गइलन। हँ नाहीं कुछ जबाबे ना दिहलनि। संगे २ मनभावती भी जे जसवन्त बाबू के मेहरारू रहली मन मधुआइ के कल से कहली कि दोसरा का जिनगी खातिर हम अपना सोना अइसन शरीर सेंतिहे, में सुई से ना न खोंभवाइबि।, एकरा बाद आके अउरियो बेकति से सुखारी सिहं बारी बारी से पूछलनि बाकी केहू तइयार ना भइल। अउरी लोगन के इनकार कइल त ओतना ना अखरल बाकी 'तन धन धाम धरनि

पुर राजू, पतिविहिन सब शोकसमाजू’ कहे वाली मेहरारू के आजु के सन्तान के मुँह से अइसन कठोर जबाब सुनिके सब दाँत तरे अँगुरी दबाबे लागल।

डाक्टर साहब सुखारी सिहँ आ जसवन्त के महतारी के एक हप्ता अउरी ठहरे के कहलनि। आ अउरी सभ आगा पाछा सोचत आपन आपन घर के डहर धइल। भगवान के बहुत लमहर बाँहि ह। एगो संस्कृत के श्लोक के कुछ हिस्सा ह ‘क्षणार्द्ध’ नैव जानाति दैवं कि करिष्पति’ यानी ई कोई नइखे जानत कि थोरही देर बाद का होई। ब्रह्मचारी कृपालानन्द जे सुखारी सिहं का इहां बहुत दिन से आवत जात रहलनि सुखारी सिहं का गांव गइलनि त गावं का बाहर ही समाचार पूछला पर सब हाल मालूम हो गइल। अब कहलन कि दुआर पर गइल ठीक नइखे शीघ्रं शुभम् भवति ई देह दोसरा का उपकार खातिर ह, व्यास जी के ई बचन उनका तुरन्ते याद हो आइल कि परोपकार पुण्याय। बाबा तुलसियो दास कहले बाड़न कि ‘परहित सरिस धरम नहि भाई’।

ब्रह्मचारी जी पटना अस्पताल के डाक्टर से आके तुरन्ते भेंट कइलनि। जब उनका अइला के समाचार जसवन्त सिहं के महतारी पवली त गिरत परत दूनो ढेकति आके भोकार पारि के रोवे लगलनि। ओह लोग के केहूतरे समझा बुझाके डा० विशवम्भर नाथ झा से अलग जाके कहलनि कि हमरा शरीर से जेतना जरूरत होखे खून निकाल लिहल जाया। बाकी ई भेद अबहीं केहू के बतलाबे के ना चाहीं। ब्रह्मचारी जी के अलग कमरा में लेजाके डाक्टर साहब जेतना जरूरत रहे ओतना खून निकाल लिहलनि फिर ओह खून के जसवन्त का शरीर में सुई से पहँचावल गइल संगे दोसरो दवा दियात रहे। एकर फल ई भइल कि थोर ही दिन में जसवन्त के चेहरा चिकन चाकन लउके लागल। शरीर में चले फिर के कुछ काबू भी हो गइल। एने ब्रह्मचारी जी भी खाये पिये के पूरा पुष्टई पवला से पट से रेंगरा गइलन। बाकी जसवन्त का अबले इ मालूम ना भइल कि इ जीवनदान देबे वाला के रहल ह। एह बारे में बहुत उजुग (उत्सुक) देख के डा० साहब कृपालानँद के तियाग के कुल क़िस्सा थोड़े में बतला दिहलन। ओह घरी ओह त्याग मूर्ति के दर्शन के लालसा जसवन्त का मन में उमड़े लागलि बाकी अबही मजबूरी रहे।

बाबा तुलसी दास कहले बाड़न कि ‘जा पर जाकर सत्य सनेहू सो तोहि मिलइ न कछु सन्देहू’। जेवना ट्रेन से ई सभे आबे के रहे ओही ट्रेन में ब्रह्मचारी जी भी रहलन। गाड़ी में चढ़ते जसवन्त के नजर ब्रह्मचारी जी पर परल। देखते पैर पकड़ि लिहलन आ आँखि में आँसु भरि के कहलनि ‘नहिन नाथ उऋण मैं तोरे’ जसवन्त सिंह का मन में इ बात बराबर बंउडियाइल करे कि जिनिगी के मोह आ तियाग एही अवसर पर असली लउकल ह।

हिलकोरा

राम नाथ पाण्डेय (सारन)

सांझ के बेरा रहे।

सभे अपना अपना कार से निहंचित होके सुसताये के फिकिर में लागल रहे। अदमी जन के के गनो चिरई चुरूंगो हाली हाली आपन पांख डोलावत अपना अपना खोंता में धावल चलल आवत रहीनस। चारो अलंग एके नियर बुझात रहे।

ना हड़हड़। ना पटपट।

दिन के हल्ला गदाल वन भ गइल रहे।

अदमी जन।

पेड़ पउधन।

सभ के सभ अलसागइल रहन स।

दिन भर के थाकल मन। सांझ आवते किछ हरिआ जाला। ना जाने काहे? कबो कबो त सोचला पर इहे बुझाला अदमी भर दिन जिनगी के खरज करेला आ राति में उकरा के फेर से जोगावेला। जो अइसन बात ना रहित त हात भीनसहरे अदमी के नस नस नया जोस से भरल ना बुझाइत ना ओकरा में नयापने लउकित।

सांझ आ विहान अदमी के जिनगी के उतार चढ़ाव के पइमाइस हवनस। भार होखते अदमी लड़े के तइयारी में जुम जाला। मन ना जाने केतना तरे के झंझट पटपट में पर जाला।

बाकिर सांझी के बेरा आवते बुझाला कपार पर के सगरी झंझाल उतर गइल होके। घन झंझट के घेरा तुड़ के बहरा इकस जाला आ सभ किछ बिसार के राम के दुनिया में अमा जाला।

ना चिन्ता।

ना फिकिर।

दिन भर के वकड़ झकड़ से लड़त भीड़त जब सांझ के बेरा आ जाले

त हमरो मन पर के बोझ उतर जाला आ हम अपना मन के हरिअर करे खातिर नदी के किनारा चल दीला।

गाँव के सटले नदी बहेले।

पक्का घाट बा। शिवाला, घाट के सटले बा।

सांझ के बेरा रहे।

हम नदी के किनारा चल आइल रहीं।

शिवाला के उपर के पताका फड़ फड़ फहरात दुनिया के फटकारत रहे। ललकारत रहे। कहत रहे। एक दोसरा से का चिपटाइल बाड़। तनी हमरा ओर ताक।

हमरा नियर शान से उपर फहराये के चाहत होखे त हमरे अइसन जाड़ा, पाला, घाम, बरखा आ अन्हर झक्कर के नीचे अंकड़ के तनल खाड़ रह। घबरा जन।

झुक जन।

झूके वाला हरमेशा झूकते रही।

फड़_फड़_.....फऽड़ . ऽ......ऽ... .

हमरा बुझाइल शिवाला के पताका हमारा पर ठठाके हँसत होखे।

खल् ...खल्..…खल ..ऽ......ऽ ....नदी के हिलकोरो हँसे लगलींस। हमरा थोड़का घड़ी ला खीस बर गइल। बुझाइल इ कुल्हि हमरे पर हँसतारीनस।

हमत इहां आइल रहीं अपना मन के हलुक करे। दिन भर के हारल थाकल मन के हरिअर बनावे। बाकिर इहा के रंग ढंग देखते मन चटके लागल।

छप् छप् . छप् ...छप्......

नदी के हिलकोरा खिलखिलात आवत रहलीं स। शिवाला के सीढ़ी पर आपन मुरी पटक के लउट जास।

त का नदी के हिलकोरो शिवालाके पताका के लोहा मान गइल बाड़ीन स।

थाकल सुरूज के मुंह पर केहू लोहू पोत देले रहे। टप टप टप टपकत सुरूज के मुंह पर के लंहू नदी के धार में घोरात रहे। थर थर थरथरात लोहू के चमचमात धार नदी के पानी के लोहू लोहवान कइले रहे। जवनां के देखला पर बुझात रहे जइसे केहू सुरूज के नरेटी में छुरी घोंपले होखे आ उ छपिटात होखस।

गते गते बेयार बहत रहे।

गाछ बिरीछ गुमसुम ठार भइल नदी के पानी में छपिटात सुरूज के देखत रहलन स।

सभकर मन भर गइल रहे। करेजा फाटे फाटे भइल रहे। तले ले ना जाने केने से रात गते गते घुसुकत घुसुकत आवे लगली आ अपना अंचरा में सगरी सहोरे लगली। अपना कोरा में सभ के लुकावे लगली।

हम चुपचाप घाट के सीढ़ी पर बइठल कुल्हि खिलकत देखत रहीं।

नदी के उछलत कुदत हिलकोरा।

जवन थोड़के देरी पहिले चम चम चमकत रहे। अब अन्हरिया के अंचरा तरे आपन मुड़ी घुसिअइले करीखा से सराबोर भइल जात रहें।

फड़ फड़ ..ड.....फ ऽ ऽ..,..

नदी के धार में एगो डेंगी चलल आवत रहे। दूर, बहुत दूर करिया परछांहीं नियर।

नदी के धार में डेंगी डोलत रहे।

मंदिर के सीढ़ी पर हमार मन डोलत रहे।

जिनगी के नावो त एही तरे डोलेला। कबो किनारे किनारे त कबो मझधारे मझधारे। डेंगिये अइसन कबो कबो त अन्हर तुफान में बुझाला अब बूड़ल तब बूड़ल। अब उलटल तब उलटल। त कबो गते गते बहुत बेयार जोरे छप् छप् छपात, बहत जाला जिनगी के डेंगी नदी के धार संगे। नदी के डेंगी नियर।

छप् छप् छप् छपाक छप् छप् छपाक् छप नदी के किनारा सुनसान भइल जात रहे।

खट् खट् आपन खड़ाँऊ खटखटावत पुजेरी जी नदी में नहा के चल गइलन। आरती के बेरा भइल आवत रहे। हमरा देह के रोंआ रह रह के गनगनाये लागत रहे। करेजा धुकूर धुकूर करे लागल रहे। हमरा मन में डर समाइल जात रहे। हमरा में भीतरी कमजोरी बढ़ल जात रहे। हम जेतने अपना करेजा के आंवक में ले आवे के कोरसिस करीं ओतनेउ वे आंवक भइल जात रहे। ओतने ओकर धुक धुकी बढ़ल जात रहे। हमरा मन में आइल हम धउड़ के इहाँ से जाके भगवान भोला नाथ के गोंर पर गिर जांईं।

हम उठ के ठार भ गइली।

छप् छप् छपाक् छप् छप्

थोड़के देरी पहिले जवन डेंगी बड़ी दूर लउकत रहे उ अब एक दमें निजिका आ गइल रहे। ओकरा अगारी हिलकोरा लगला से जवन आवाज

होखत रहे साफ सुनात रहे। सांझ के बेरा खतम भ गइल रहे।

रात के गोर अगाही बढ़ गइल रहे। लोहू में तर भइल सभ किछ अब करीखा से पोता गइल रहे। बुझात रहे रात रानी के करेजा इ कुल्हि लोहूं लोहूआन देखके ना अराइल होखे आ उ खूना खराबी के तोप देले होखस।

अन्हरिया में दूर के कवनो चीज का लउकत रहे।

छप् छप् छपाक् छपाक छपाक छप् .

डेंगी धावल चलल आवत रहे। अन्हरिया के मारे ओमें के बइठल केहू लउकत ना रहे।

हमार उठल गोर अपने मने रुक गइल हम सीढ़ी पर फेरू बईठ गइनी। देह के सिहरावन बढ़ गइल। उ थर थर काँपे लागल हमरा लिलार पर पसीना छूटे लागल।

छप् छप् छपाक् छपाक्…छप्…

टन…टन…डिब…डिब—डम…डम डिब…डम डिब..डिब…

शिवाला में आरती सुरू भ गइल। डमरु के आवाज नदी के लांघ के ओह पार टकराये लागल।

डमरु के आवाज होखते डेंगी में जइसे केहू जान फूंक देले होखे। छल छलात नदी के पानी में उ तुफान अइसन बढ़े लागल। आज ले हम कबो कवनो डेंगी के एतना तेज चलत ना देखले रहीं। उहो धार के उलटा।

छप्—छपाक्—छपाक्—छप्—छप्—

डेंगी अब एकदमें पंजरा आ गइल। ओमें अकसरे एगो मेहरारू के बइठल देख के हमार करेजा पिपर के पिअराइल पतइन खानी काँपे लागल।

बाप हो बाप।

अइसन उमड़ल भादो के नदी। ना डांर ना पतवार। ना कवनो दोसर खेवइया। इ मेंहरारू कवना जतन से उतना तेज डेंगी खेवत चलल आवतिया।

छपाक् —छपाक्—छपाक्—

डेंगी घाट से आके टकरा गइल। उजर धब धब लुगा पहिरले ओमें के मेहरारू झटाक दे ओमें से उतरल आ हाल्दी हाल्दी मंदिर कावरी चल गइल।

डमं डम डम डिब..डिब डम डिब डिब .

टन...टन...टननन...टन...टनन . .

मंदिर के कोना कोना घन्टा आ डमरु सबद से गूंजत रहे। धूप आ अगरबत्ती के गमक से चारो ओर अंलग के हवा गमकत रहे।

पुजेरी जी हाथ में आरती बरले भगवान भोला नाथ के देखावत रहनी। ओकरा अंजोर में उहाँ के चउरा लिलार पर पोताइल चनन धब धब चमकत रहे।

उहाँ के आँख मुनाइल रहे।

मंदिर में गाँव के लोग भरल रहे। सभे आँख बन कइले भगवान भोला नाथ के धेयान लगवले रहे।

हम कब मन्दिर में चहुँप गइनी हमरा ना पता चलल। अतने बुझाइल जइसे केहू हमरा के सीढ़ी पर से उठा के मन्दिर में फेक देले होखे।

हम चकचिहा के अपना चारो अंलग देखनी।

पुजेरी जी आँख मूदले ओठ से "जय शंकर" "बम बम" के आवाज इकासत रहीं।

सभे धेयान लगवले रहे।

केहू केकरो ओर ताकत ना रहे।

डेंगी से उतरल मेहरारू आपन मुड़ी गरले हाथ जोरले ठार रहे। हम ओकरा ओरी ताके लगनी। बाकिर ओकर चेहरा ना लउकल।

हम सोचे लगनी।

उजर धब धब लुगा में जरूरे चान नियर एकर चेहरो होखी।

तनी मुरी उठा के ताको त पता लागी।

डब..डब डब डिम डिम डब डब .डब...

डमरु बाजत रहे।

फेरु पुजेरी जी शंख फूंक के आरती के खतम होखे के खबर सभकरा के दे देनी।

हर हर बम बम महादेव के आवाज से शिवाला भर गइल।

सभे आपन आपन मुड़ी धरती पर से उठा के जब तकलख त हमार गोर तरे के धरती घूमे लगली। हमार माँथ झनझनाये लागल।

डेगी पर के मेहरारु के देखते हमरा अचरज के ठेकाना ना रहे। हमरा देह में थरथरी समा गइल। डेराये वाला सपना देखला पर जवन हालत होखे ला तवने हालत हमार भ गइल रहे।

"सुखिया।"..

हमरा बुझाइल जइसे चक्कर खा के हम गिर पड़ब। हमरा मन में आइल चिचिआ के हम सभकारा के चाल करीं आ कहीं घेर ली लोग भागे ना पावे। इ सुखिया . . हिय सुखिया।

'सुखिया।"

हमार जिनगी के तार तार झंझना गइल।

"सुखिया"।

जवन हमार जिनगी के टेम रहे। उठत। बइठत। सुतत जागत हर घड़ी हमरा आंखि के अगारी नाचत रहे। हमरा हरमेशा बुझात रहे। सुखिया बिना हमार जिनगी मुरझा जाई। सुख जाई।

ओती घड़ी भरल जवानी रहे।

हमरो, सुखियो के।

भादो के भदराइल नदी खानी। ना ऊँचे के ख्याल ना नीचे के। ना ठांव के ना कुठांव के। ओती घड़ी दुनिया के हम अपना अगारी किछु ना समुझत रहीं।

ना केकरो डर रहे।

ना केकरो लाज।

हिरदेया में जवानी के जोश हरमेशा छल छल छलकत रहे।

आंखि में दारू के खुमारी नियर खुमार हरमेशा झलकत रहे।

बांह में काबू रहे।

राह रोके वाला के करेजा दरमसे के मन छपिटात रहे।

सुखिया सुनर रहे।

चान के अंजोरिया नियर।

गमगम गमकत रहे।

गुलाब के फूल नियर।

गांव के जवानी ओकरा अगारी आठो पहर आंख बिछवले रहत रहे। ओकरा खातिर लोग आपन जान जान ना समुझत रहे।

सभे ओकरा के अपना घेरा में घेरे के चाहत रहे बाकिर उ केकरो पकड़ में ना आइलि।

अइबो कइलख त हमरे।

हम ओकरा के एक दिन एही शिवाला के सीढ़ी पर घेर के पूछनी। सुखिया ते हमरा के छंड़ त नानू देबे।

"ना"। सुखिया कहलस। हम भगवान भोला के सोझा झूठ ना बोलबि। तोहरा के अपना जिनगियो से अधिका जोगा के रखब। बाकिर

तूहूँ त धोखा ना नू देब" ।..

"ना" । हम कहनी ।

"बाकिर..बाकिर"..

हमार पसेना छुटते गइल । हमार चक्कर बढ़ते गईल । माथ अइसन बथे लागल बुझाय जे अब फाट जाई ।

हमरा इयाद पड़ गइल ।

हम सुखिया के धोखा दे देनी । अपन बात न राख सकनी । सुखिया हमरा जिनगी के हरियर बना देले रहे बाकिर हम ओकरा के अपने हाथ से उजाड़ पजाड़ के नोच नाच देनी ।

जवानी सांचो आन्हर होले । ओकर सुखो बाड़ा तेज होले । साथे साथे उ बड़ा डरपोकां होखेले । लोग अनेरे कहेला जवानी में कवनो डर-भय ना रहे ला ।

"एक दिन रात के बेरा रहे । एही शिवाला के एगो सीढ़ी पर बइठल हम सुखिया जोरे चान के अंजोरिया के सुख लुटत रहीं ।

अइहसीं नदी उमड़ल रहे ।

"सुनतार" । सुखिया गते से कहलस ।

"का" । हम पूछलीं ।

"किछु" ना ।...सुखिया सकुचा गइल ।

"लजात काहे बाड़े । ." हम पूछनी ।

"तू बाप बने जातार ।...सुखिया कहके नदी कावरी ताक के मुसकाइल ।

हमरा बुझाइल जइसे कतहीं बम फाटल होके । हमरा आंखि के अगारी अन्हार छाव लेलस । अब का होखी । गाँव जवार का कही । हमार पराने सुखे लागल ।

घबरा गइल । सुखिया पूछलख ।

"सुखिया । हमार जवानी के जोस ना जाने कहंवा हेरा गइल ।

"काहे । " सुखिया पूछलख ।

"अब का होखी । गाँव हमनी के कांचे चबा जाई" । हम कहनी ।

"गाँव के एतना डर समा गइल हो । पहिले त कहत रहल जे हमनी के राह में जवन आइ तवना के राहे लगा देब" । सुखिया कहलस

"ओती घड़ी हमरा किछु ना बुझात रहे । गाँव में रह के गाँव के छाती पर चढ़ल अधिकई होखी । गाँव पछाड़ के जान ले ली" ।...हम कहनी— "अब ते आपन राह धर" । ..

"सांचो" ।...सुखिया पूछलख ।

"हूँ" ।...हम कह के उठ गइनी ।

आछा त ल हम आपन राह धरतानी । जेकरा भरोसे जिये के उहे भाग चलल त अन्न का करेके बा । कह के सुखिया धधा के नदी में कुद गइल ।

आज दस बरीस पहिले के कुल्हि बतिया हमरा इयाद पड़े लागल ।

त का सुखिया आजो जिअतिया । मंदिर में ओकरा के देख के एगो सवाल हमरा मन में उठल ।

"सुखिया" अपना सोझा सुखिया ठार भइल देख के हमरा मुंह से इकस गइल ।

आवाज सुनते सुखिया नदी कावरी भाग चलल । हमरा ओरी तकबो ना कइलस ।

सुखिया ! सुखिया...चिचिआत हमहूँ ओकरा पछारी धउड़ पड़नी ।

छप् छप् छगाक् छट् छपाक्

डेंगी पानी में भाग चलल ।

हम धड़ाम दे पानी में कुद पड़नी ।

सुखिया सुखिया...चिचिआत...

मत आव मत आव...सुखिया चिचिआये लागल ।

तू पानी में अगारी मत बढ़ । .भादो के भरल नदी बिया । तोहरा के चबा जाई । खा जाई । लील जाई । लवट जा...लवट जा...

छप् छप् छपाक् .

डेंगी अगारी भागल जात रहे ।

हम पानी में उब डूब होखे लगनी चिचिआत..सुखिया सुखिया...

मान जा मान जा मत आव मत आव...

हम हरसाल आजुके दिन आरती के बेरा आपन बात दोहराईला । . का भूला गइल, आजे के दिन नू हम तोहरा कहला मोताबिक आपन राह धइले रहीं, जवना राह में गांव के डर भय नइखे.. तू लवट जा...मत आव...

सुखिया सुखिया सु...खि.. या...

ल...व..ट...जा ल...व ट...जा .

सु खि या...सु खि....

काठ के हाँड़ी

प्रो० बच्चन पाठक 'सलिल' (जमशेदपुर)

जब बस चक्रधर पुर से छूटल, पाँच बजत रहे। जून के महीना। अबहीं बरखा शुरू ना भइल रहे। अमस के मारे जान जात रहे। जगंल से आवत हवा भी बुझाइ कि देंह झँउसि दीही। माला अपना बेग से रूमाल निकलली आ गरदन परले पसेना पोंछली। मने मने बुद बुदइली "आठ बजे ले टाटा नगर पहूँच जाइबि।"

माला जमशेदपुर कॉलेज में दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर रहली। एम० ए० पास कइला के बाद ऊ एहिजा कॉलेज में सीधे आगइल रहली। मिलन सार, हँसमुख आ अकेले में गम्भीर रहे वाली माला के सब लइका लइकी लोग माला दीदी कहे। उनकर सुन्दर सुभाव अच्छा पढ़ाई आ सीधा सादा जीवन के कारण छात्र आ सहयोगी-सब लोग आदर करे। राति खा ऊ एगो गर्ल्स होस्टल में रहसु आ ओहिजे एगो छोट कमरा में रहि के होस्टल-सुपरिन्टेन्डेन्ट के काम करसु।

माला के उमिर अब तीस एकतीस बरिस होत रहे। बाप त उनका पढ़हीं का बेर मरि गइल रहले आ दू साल पहिले महतारी भी चल बसल रही। माला अब सब तरह से अकेले रहली। माई कइहाला कहले रही कि बेटी हम त अब पाकल आम भइलीं। अपना आगा तोर शादी विआह देखि लिती त मन हलुक हो जइत। हमरा खातिर त तेंही बेटा-बेटी बाड़िस। बाकिर माला बिआह ना कइली। हँ, अपना महतारी के सेवा ऊ कवनो बेटा से कम ना कइली। महतारी खाँटी भोजपुरी बूढ़ि रहली। पचपन छप्पन बरिस का उमिरि में भी माथ पर ले लूगा ना उतारत रहली रोज नहा धोके तुलसी के जल देके आ शिवजी के पूजा कके १२ बजे १ बजे खात रहली। उनुको के माला होस्टल में रखले रहली। माई छूआछूत माने वाला रहली। ऊ होस्टल के मेस में खाए पर तैयार ना भइली। अपने रसोई बना ना सकत रहली। एहसे जबतकले ऊ जीअली, माला उनुका के अपने हाथे रसोई बनाके खिअवली। कवनो पार्टी में जाए के होखे, त माला रसोइ बनाके घर में धके, माई के सहेजि के तब जासु। खाए-पहिरे में जवन सुख माला अपना माई के दिहली, तवन सुख बुढ़िऊ के माला के बापो ना देले रहले।

माला के बाबूजी आरे जिला के एगो गाँव के रहे वाला रहले। ऊ पटना म्युनिसिपल कारपोरेशन के एगो स्कूल में पढ़ावत रहले। आमदनी कम रहे। बाकिर थोड़े बहुत पइसा ऊ माला के शादी खातिर जोरले रहले। उनुका मरला पर माला के शादी त ना भइल, बाकिर ओह पइसा से आ कुछ अपने ट्यूसन क के तथा रेडियो प्रोग्राम क के माला एम० ए० पास कर गइल रहली। ओकरा बादे दूनो महतारी बेटी टाटा आगइल रहे लोग।

एह घरी माली हालत खराब ना रहे। माला के माई अपना सवांग का जीयता भरि में अपना नैहर, ससुरा से लेके भरि पटना तक ले आइल रहलि। तिरिथ बरिथ कहाँ से करिती। बाकिर माला का प्रोफेसर भइला का बाद हर छुट्टी में माई के कवनो ना कवनो तिरिथ में ले जासु। दूनो जानी रामेश्वरम्, पुरी, गंगा सागर, अयोध्या आ हरिद्वार आदि घूमि आइल रहे। माला के माई के देखि के एक हाला प्रोफेसर तिवारी के माई कहले रही—"ए बहिनी, हमरो रउरा लेखा एगो बेटी रहित आ ई लइका राम उफरि परि गइल रहिते त नीमन रहित। मेहरि के कहला में आइके हमरा के कुछ गदनवे नइखे करत। तिरिथ बरिथ का कराई पाँच गज बस्तरो दुम्ह भइल बा। आ इनकर रानी चाहेली की अबहियों हम काछते रहतीं।" बुढ़िया के बात सुनिके माला के माई के जहाँ तकलीफ भइल रहे, ओहिजे अपना बेटी पर घमंड भइल।

त माला के माई भी मरि गइलि। माला अकेले। बाकिर कॉलेज के पढ़ाई, होस्टल के काम आ सार्वजनिक सेवा से उनुका फुरसते ना मिले आ अपना अकेलापन के ढेर एहसास ना हो। अबहीं तकले ई रहस्य बनल रहे कि माला दीदी शादी काहे ना कइली। अबहियां प्रोफेसर मेहता, ठीकादर चन्दन ठाकुर आ राम कुमार बाबू वकील लोग उनका प्रणय के भिखारी रहे। बाकिर केहू के हिम्मत ना रहे कि माला से कुछ कहीं आ माला के त जानू दीन दुनियाँ के परवाहिए ना रहे।

आजु माला चक्रधर पुर "समाजवादी महिला सम्मेलन" में भाग लेवे गइल रहली। बड़ा उत्साह रहे उनुका मन में। मेहरारू लोग के कवनो संस्था में ऊ दिल से काम करसु। 'भोजपुरी महिला मंडल' के ऊ जमशेद पुर में स्थापना करवले रही। उनुके वजह से अब बंगला में रहे वाली मेम साहेब लोग भी अपना भासा आ संस्कृति से प्रेम राखत रहे। टाटा घरन में रेडियो बाजे का बेर फिलमी गीतन के साथे छठि के गीत भी सुनल जात रहे। बंगाली, मराठी आ मद्रासी मेहरारू लोग भी अपना सभा में माला के नेंवतत रहे।

सम्मेलन में माला बड़ा उत्साह से गइल रहली। छोटानागपुर के सब शहर के पढ़ल लिखल महिला लोग आइल रहे। माला अपना भासन में सादगी, से आत्मनिर्भरता के संदेश देसु। बाकिर सम्मेलन में खाली वासना, फैसन आ घमंड के राज रहे। एही से माला बड़ा उदास हो के लवटत रहली। ऊ सोचसु कि अइसन मेहरारू का समाजवादी बनिहें। नगरपालिका मैदान, चक्रधर पुर में सम्मेलन भइल रहे। शरबती दोपट्टा फहरात रहले स। प्रदर्शन के गंध आवत रहे। फजूलखर्ची के ठाट रहे।

हजारी बाग के कमला सैमुएल। लइकन लेखा बार कटवले, भभूत लेखा पाउडर मलत घरी घरी रिष्ट वाच देखत रहली। चाइबासा के मिसेस रूंगटा—केरा के गाछ नीयर गोड़ आ ओइसही उघरल बाँहि—मेहरारू लोग से ढेर 'गैला' देखे आइल मरद लोग से बतिआवत रहली, धनबाद के मिस कनक शर्मा बुझात रहे कि २० बरिस आगे के फैशन के अगवानी करे के भार उनुके पर दियाइल बा। माला कहले रही—सभा सम्मेलन क के, कोकोला पी के आ फैशन के मॉडल देखा के हमनी के उद्देश्य पूरा ना होई। उनुका लेक्चर से ढेर डेलिगेट लोग खिझी गइल रहे ओह लोग का 'पर्सनल क्रिटिज्म' के महँक आवत रहे।

अतने में बस झटका के साथे रूकल। ड्राइवर घड़बड़ाइल रहे। ऊ कहलस कि अगिला चक्का फाटि गइल बा! दोसर चक्का नइखे। रउरा लोग उतर जाईं। जब दोसर गाड़ी आई त जाइब सभे।

रात के ६ बजत रहे। आकाश में बदरी लागल रहे। जंगल झन झन करत रहे। चाइबासा १० मील पाछे छूटल रहे। आगे दस पाँच कोस तक सड़क पर कुछुओ- चट्टी भाँ गाँव गिरान ना रहे। यात्री लोग सड़क पर उतरि के राम राम करत रहे। टाटा से आवेवाली टैक्सी ना रूकलिऽ। ड्राइवर जानसऽ कि सब पसिंजर चाइबासा पहुँचावे के कहिहें। केहु मानी ना। बड़ा गोलमाल होई।

माला देखली कि एगो नव युवक लगिए खड़ा होके सिगरेट पियता। उनुका ओर बार बार ताकता। बड़ा उनुका नागवार लागल। ओकरा ओर तकली। चेहरा जानल बुझाइल। लगली सोचे ई के हऽ

ओह जवान के नाम कलाधर रहे। पटना के रहे वाला। लइकाईं से लेके माला के पटना छोड़े तक एके मुहल्ला में ऊ लोग रहत रहे। कलाधर एम० बी० बी० एस० क के डॉक्टर हो गइल रहे। एह घरी साल भर से टाटा नगर रेलवे अस्पताल के इंचार्ज बनि के आइल रहे।

कलाधर सोचलन कि कइसे बात शुरू करीं। अतना दिन पर भेंट होता। का जाने माला चीन्हतारी की ना। 'तू कहीं कि रउरा भा अपने कहीं।' अइ ना मोका पर अंगरेजी बड़ा काम करेले। एह भासा में छोट बड़के लेहाज के जरूरत नइखे। कलाधर बोलले—"हलो माला, हाऊ आर यू।"

अब माला चीन्हली-अरे ई त कलाधर ह। तब प्रोफेसर माला आ डॉक्टर कलाधर पटना के लइकी लइका हो गइल लोग आ लागल लोग बतिआवे।

बस चलल। माला के मन अतीत में भटके लागल। बाबू जी आ कलाधर के बाप वकील साहेब साथी रहे लोग। बाकिर साथी होखे खातिर बराबर के खाली अकिल आ गुन ना, बोरबर पइसो चाहीं। दुनों घर में आवा जाही रहे। वकील साहेब आ माला के बाबू जी में अपना सामाजिक दर्जा से कुछ फरक मन में होई, बाकिर माला आ कलाधर में फरक ना रहे।

माला बी० ए० ऑनर्स कइली। कलाधर के एम० बी० बी० एस० में दू साल बाकी रहे। आवा जाही लागले रहे। कभी सिनेमा देखे, कभी गाँधी मैदान घूमे आ कबो बोटिंग करे गंगा के किनारे दुनो जाना जाइ लोग।

माला के बाबू जी एह जोड़ी के देखि के खुश होखसु। एक दिन ऊ वकील साहेब से बात चलवले। वकील साहेब कहले कि देखीं पंडित जी, माला हमरा लइकी लेखा बा, बाकिर हमार पतोहू बनी। उपस्वास्थ्य मंत्री के लड़की से कलाधर के बिआह के बात-चीत होता। दस हजार रुपया नगद मिली आ पास कइला पर कहीं नीमन नोकरी। रउरा कीहां बिआह क के हम अपना खंदान के कवन तरक्की करबि।

माला के बाबूजी, ई अपमान ना सह सकले। चलि बसले। माला के ई हाल मालूम रहे। कलाधर अपना बाप से अतना डेरात रहले आ 'कैरियर' के अतना चिन्ता रहे कि ऊ उपस्वास्थ्य मंत्री कीहाँ बिआह के बिरोध ना कइले। एक दू हाली माला कीहाँ ऊ अइले आ आपन सफाई देवे के कोशिश कइले बाकिर माला डॉट दिहली। "कलाधर तोहरा अपना बाबू जी के बात मानहीं के चाहीं। आ हमरा गाईं के के बा हम त शादिए ना करबि ना त एह बूढ़ि के के देखी।

दस बारह बरिस पर ई भेंट भइल रहे। ११ बजे बस टाटा नगर स्टेशन पहुँचल। कलाधर कहले कि तोहार त हास्टल बन्द हो गइल होई।

आजु एहिजे रहिजा। माला मानि गइली।

दोसरा दिन सबेरे माला एगो दू बरिस के लइकी के खेलावत रहली। कलाधर के लइकी रहे। ओकर माई साल भरि पहिले मर गइल रहे।

कलाधर आ माला में ढेर बात भइल। कलाधर कहले कि माला, हम तोहरा के आजु ले ना भुलाइल रहीं। बाबूजी के दबाव से हम बिआह कइले रहीं, बाकि हमनी दूनो बेकत के सुभाव में पूरुब पच्छिम के फरक रहे। पटल ना। हमनी का दस बरिस पाछा जाके फेनु से आपन जिनगी ना शुरू कर सकीं। एह लइकी के भी जीवन बन जाइत।

माला लइकी के चूमत बाेलली—"कलाधर, औरत साहसी मर्द चाहेले तोहरा से हम विबाह ना करबि। स्नेह पहिलहूं रहल हा अबहियों रही। स्नेह त औरत के गुन ना ह, चरित्र के अंग ह। जइसे काठ के हाँड़ी आगी पर दू हाली ना चढ़े ओसहीं प्रेम के आँच पर प्रणय के बात बार बार ना होला, हम शादी ना करबि, बाकिर तोहरा लइकी के आपन लइकी लेखा पोसि पालि जरूर देबि।"

ओही घरी दरवाजा पर टैक्सी लागल। लइकी के लेत माला टैक्सी का ओर चलली। कहली—"बाबू, पिता जी के 'टाटा' कहित दऽ।"

सपना बिखरि गइल

—गणेश दत्त 'किरण' (बक्सर)

आगरा में सायर लोग अपना-अपना कलम के कमाल देखावल बाकी आकिल के गीत जेबुन्निसा का करेज में एगो अइसन चिचिरी पारि दिहलसि कि ओकर खाइल पियल दुलम हो गइल। जेब, जब से गीत सुन लसि ओकरा इहे बुझाई जो केहू का प्यार के हँसुआ ओकर करेज खँखोर रहल बा आ ओह करेज खँखोरला में दरद नइखे। एगो अइसन गुदगुदी बा जे इहे मन करत रहत बा कि हमेशा केहू प्यार के हँसुआ से अइसहीं करेज खँखोरत रहीत। रात-दिन जेबुन्निसा खातिर एक हो गइल। आँखि के नीन्द हवा हो गइल आ आकिल के गोर-गार सुन्नर मुह के तस्वीर बुझाइ जे अगवे झुलि रहल बा आ ओहि दिन वाला गीत गा रहल बा। "क्या जेब देते हैं सितारे आसमानी रंग पै"।

आजु ले संसार के जीव इहे बुझत आइल कि प्यार में सुख होला। बाकी साच पूछल जाइ त प्रीत के लगन लागि गइला पर आत्मा अइसना

फँसरी में अझुरा जाले कि जतने सझुरावे के मन कइल जाई, ओकर गाँठ ओतने बरियार होखत जाई। का जाने काँहे दो तबो मनवाँ एनिए धउरेला। जानेला, कि ई एगो अइसन खरउरिया ह कि पानी के रूप खाली बालुए पर चमकि के रहि जाला। केहू के तरासि नू आजु ले बुतवले बा नू बुताई। बाकी लोग जानियो के अनजान बन जाला आ सिरगा मतिन ओकरे पाछा सधि दुपहरिया में डँउकत फिरेला।

आकिलो जब से जेबुन्निसा के मुसायरा में देखले तब से उनका इहे बुझाइल कि ओकर रूप लुत्ति लेखा मधुमाँछी बनि के इनका गतर-गतर में बीन्हि दिहलसि। इनको नीन्द हराम हो गइल। लाहौर का सुबेदारी पर लात मारि के अब ऊ रात-दिन जेबुन्निसा के छापा बनावल करसु। एने जेबो त दिल्ली के बादशाह औरंगजेब के दुलरूई बेटि रहे। बादशाह के बेटी कवना बात के कमी? औरंगजेब के सितारा ओह घरी समूचे हिन्दुस्तान में चमकत रहे। प्रेम एक ओर ना होला। प्रीत के आग एके अस दूनो ओर धधकेले। एक हाथे थपरी ना बाजे।

संजोग अइसन जुटल जे औरंगजेब कवनो काम से लाहौर आइल। साथे में परिवारो रहे। आकिल पर बादशाही रोब रहबे कइल। खूब आदर मान भइल। आकिलो इ देखा दिहल चाहत रहन कि हम बादशाह के कतना खरख्वाह बानी। बादशाह गद्-गद् हो गइले। कले कले दिन ओइसे सरकि गइल जइसे उमर सरकि जाले। एक पाख बीत गइल। बादशाह जब आगरा लवटे के इच्छा कइले त अकिल के मन मुरझा गइल। कहले—"सरकार! अबहीं अतना कवन अकुताई बा? राज-काज त रावा एकबाल पर अन्हेरे लट्टू अस नाच रहल बा। अबहीं कवनों अकाज नइखे। एक आध महीना अबहीं रहल जाउ। बाद में किछु हवा-पानी बदलि गइला पर चलि जाइल जाई।

"बात अइसन बा आकिल! कि एगो मराठा सरदार शिवाजी हमरा के सुख से सूते नइखे देत। एगो ना एगो खुटचाल करते रहत बा। हमरा किलन पर कबो-कबो ओइसे झपट्टा मारि के निकलि जात बा, जइसे बाझ लावा का दल पर झपट्टा मारि के निकलि जाले"—औरंगजेब कहले।

आकिल बोलल—"सरकार! राउर नाँव के डंका देसे में ना बिदेसो में बाजि रहल बा एगो शिवाजी मतिन पहाड़ी लुटेरा अपने के का बिगारि सकत बा। अबहीं कम से कम आठो दिन त ठहरल जाई"।

ए तवले त धावन आई के सलाम कइलसि। हाँथ में एगो पाँती थम्हाई के एक ओर कोना में दुबुकि गइल। ओकरा पर लिखल रहे

दिल्ली के सामी!

रावा हाली दे आईं। शिवाजी के उत्पात बढ़ि गइल बा। एह मराठा मूस के दबावे खातिर साइस्ता खाँ गइल रहलन हा। भारी लड़ाई का बाद शिवाजी हार के जंगल में लुका गइल हा। बाकी एहि बीच अइसन घटना घटलि हा जे लिखत कलम काँपि जात बिया। आपन हारल आ मेहरारू के मारल केहू से ना कहे के बाकी बे कहले रहातो नइखे। किला पर अपना दखलदहानी का बाद ओही किला में निरभेद साइस्ता खाँ सूतल रहले हा। शिवाजी बराती के भेस बना के चलल हा भारी चकमा देके एक बा एक मये बराती किला पर धावा बोल दिहले हा स। भागतो भागत शिवाजी साइस्ता खाँ का हाथ के तीन गो अंगुरी अपना तरूआरि से काटि लेलसा। एह घरी किला पर शिवाजी के अधिकार बा। अपने का जतना जल्दी होखे चलि आईं।

औरंगजेब का जइसे घुमरी चढ़ि गइलि। ओही दिन ओकर डेरा डंडा कबरि के आगरा का ओर सरकल। जेबुन्निसा लागलि बाप से घिघियाये आ अवरू थोरे दिन रहे के हुकुम ले लेलसि। जहाँ जेबुन्निसा रहति रहे; आकिल रोज-रोज टहरे खातिर ओनिये निकलि जासु। जेब का अटारी के खिड़की फुलवारी में खुलति रहे। आकिल रोज खिड़की तर जाईं के खड़ा हो जासु त जेब के चान नियन मुह मधुरी का बँवरि के बादरि हटाइ के झाँके, इहे बुझाई जे अँजोरिया उगि आइलि।

प्रीत के फँसरि अवरू मजबूत होत गइलि। आकिल अब जेबुन्निसा का अटारी में जाई के नीत एगो आपन लिखल गज़ल सुनावे लगले। बाकी जीव धक-धक करते रहे। रहे त आखिर बादशाहे के बेटी!

आकिल आ जेब का बीच के कड़ी रहे नीलम। कवनो बात के कोर कागद पर टाँकि के जब नीलम का हाथे जेबुन्निसा आकिल कीहा पठावे त आकिल पढ़ला से ना अघासु। नीलम के महीना बढ़ि गइल। लाहौर के सुबेदार आकिल के ओकरा पर विसेस छोह हो गइल।

दुपहरिया पारा अस ढरकलि। अभी दिन रहे। जेबुन्निसा के जीव फुलवारी में जाये खातिर ललचि गइल।

आकिल का संगे जब जेबुन्निसा हरसिंगार का गाँछि तर बइठि के गुप-चुप बतियावत रहे त पँजरे दू गो कान ओह फुसफुसहटि के ध्यान से सुने के कोसिस करत रहे।

"हमनी के बात नीलम कुल्ही जानत बिया। जबले इ मगन रही, सब

ठीक बा बाकी जाही दिन एकरा कवनों बात के अमनख लागी, ई आकास-पाताल एक कइ दी। सब गुड़ माटी हो जाई" ।---आकिल बोलल

"कहनी जब चार कान से छव कान में जाले तहाँ कल्यान ना होला" जेबुन्निसा कहलसि।

आकिल बोलल" कवनो किसिम के चिठी अब आजु से नीलम का हाथे ना आवे के चाही"

जेबुन्निसा कुछु कहे के चाहते रहे कि ओठ पर अँगुरी का इशारा से आकिल चुप रहे के कहले। जेब समुझि गइलि। बाद में दुनो आदमी ओइजा ले चलि आइल।

नीलम दुनो आदमी के बतियावल निगिचे का झुरकुटी में बइठि के सुन लेले रहे। बात सुन के ओकर मुह तमतमा गइल। दुनो हाथ के मुठी अचके बन्हा गइल आ बुद बुदाइलि—"अच्छा! अब देखबि कि ई फुलवारी क दिन हरियर रहेले"।

नारी के हठ एगो हठे ह। ई हठ लोहा पर के पारल लकीर ह। मेटे ना। जिद्द पर जब नारी उतरि आई त ऊँच-नीच ना बूझी। ऊ कवनो काम करि सकेले। नीलम के नारी वाला भाव जागल आ ऊ बदला लेवे के बाट जोहे लागलि। घरे आइ के नीलम अइसन भेस बनवलसि कि जइसे किछु सुनलहीं ना होखे। दू-चार दिन का बाद कहवलसि कि हम अनमनाह बानी। चार दिन के छुट्टि मँगलसि आ आगरा में हाजिर।

औरंगजेब बोलल— नीलम! जेब आ गइलि का? हम त आवे के सोचते रहलीं हाँ। कवन अकुताइ भइल हा कि सभ आ गइल?" आ नीलम जब कुल्हि बात बतवलसि त औरंगजेब खीसी दाँत पीसे लागल बोलल—"छोट मुह से बड़ बात? लौंड़ी के हतना धिधिरिक? जो ते ई बात साबित ना करबे त खाल में भूसा भरवा देबि।"

"हम परतछे देखा देबि सरकार! छोट मुह बा जरूर, बाकी बड़ बात ना करि सकबि सरकार? हुजूर के निमक खात बानी एह से ना रहि गइल हा। आइ के समाचार देलीं हा मालिक! बात झूठ होई त जवन दुरगति होई कइल जाइ। दोहाई माई बाप के।

आ औरंगजेब ओही दिन आगरा से लाहोर खातिर रवाना हो गइल। रात साँय-साँय करति रहे। तवना पर कुचकुचवा के बोली ओकरा के अवरू भकसावनि बनावति रहे।

थप .. थप . थप .. थप . ।

जेबुन्निसा के केवारी केहू थपकावल। पलंग पर से असकतियइले जे

उठलि आ बोललि—"के ह ? एह मधु रात खा केवारी बजावत बा।"

"हम हईं बेटी"—औरंगजेब बोलल।

जेबुन्निसा का पाँव तर के धरती धसे लागलि। हाँथ काँपे लागल आ काँपते हाथ में ऊ केवारी खोल देलसि। औरंगजेब जब भीतर आइल त एक नजर सगरे डललसि। एगो चिरई के पूतो ना रहे। खीसी लाल हो गइल तबले नीलम पानी का टब का ओर इशारा कइलसि।

"अइसना पूस-माघ का जाड़ में एह टब के कवन काम बा बेटी!" औरंगजेब बोलल।

"टब वजू करे खातिर धइले बानी बाबा!" जेबुन्निसा कहलसि "हम नइखीं चाहत कि हमार बेटी एह जाड़ में ठंढ़ा पानी से वजू करो। एह से बेमारी हो सकति बा। गठिया त धइये ली। नीलम! टब के पानी आग पर गरम कइ दे।" औरंगजेब बोलल।

"ना बाबा! पानी गरम के कवन काम बा। हमरा गरम पानी के कवन काम बा? हमरा गरम पानी नीक ना लागे। ठंढ़े ठीक बा—जेब बोललि।

"ई नइखे हो सकत। हम कुरान शरीफ के किरिया खाके कहत बानी। खुदा के बात तकले हम ना मानबि। अपना बाल-बच्चा के जिम्मेबारी हमरा पर बा।" जेबुन्निसा गोड़े पर गिर परलि। औरंगजेब के बज्जर के छाती विघलल ना। आ देखत-देखत टब आग पर चढ़ा दिहल गइल। औरंगजेब फलाँवांहटि गइल।

जेबुन्निसा आँखि बचाइ के टब में झाँकि के कहलसि—"आकिल हमार किरिये; मुह से बकार मति निकले पावे।"

"प्रान त जाइये रहल बा। हम तोहरा पर बदनामी के टीका ना लागे देबि। तू निफिकिर रह।" आकिल बोलल।

आकिल के देहि उसिना के रहि गइल। पह फाटे का पहिलहीं आकिल के लाश कबुर में चलि गइल रहे। बादशाह जेबुन्निसा से आगरा लवटे के बहुत कहले, बाकि जेबुन्निसा ना सँकरलसि। सोग में करिया लँहगा पहिन लिहलसि। बादशाह आगरा लवटि आइल।

रोज अब जेबुन्निसा सँझलौके आकिल का मजार पर घीव के सँझवति बारे लोहवान जरावे आ नीर ढरकावे। आगरा से महतारियो आइल आ समुझवलसि कि बेटी! दोसर सादी कइले बाको ऊ ना मानलि। ठीक एकइस दिन का बाद ओही बेरा एने पह फाटल आ सूरूज के पहिली किरिन जब धरती पर उतरलि त देखलसि कि ओने आकिल का मजार पर जेबुन्निसा के लाश परलि रहे। सोना में सानल सपना बिखरि गइल।

इहो ह च्वानियें कटल

माधव पाण्डेय 'निर्मल' (दखिनी शाहाबाद)

खखाइल जेठ के बउराइल आन्हीं हहास बन्हले फेंड़ रूख उखाड़त-पखाड़त जब हमरा बगइचा में ढुकल त मउराइल आम त हरहरा के ढेर लाग गइल। कतना डाढ़ पात गिर के खइर लाग गइल आ धूर गर्दा से त बुझाइल कि आन्हार हो गइल। जे भइल ठीके भइल बाकी एके चीज बेठीक हो गइल कि बेचारा बिरीछ पासी के डाँड़े टूट गइल। उनकर मड़ई उखड़ के उड़िया गइल। कवनो बात ना, फिन सोन के कासी आ ऊख के पतई काट-बटोर के नाया बना लियाई, बाकी साल भ के खाइब-खोराक, लुगा-फाटा आ देह-नेह प त बिपत पर गइल? आन्हीं आइलि सब कुछ उड़ा-पड़ा के ले गइल। ई ठीक बा सबके बगइचा में ओडियन आम गिरल, बाकी सबके का बिगड़ल, सबके पास ठाकुरजी खेत बधार देले बाड़े। एने उजरलन बिरीछ जे कि मूअत जीयत दू सै रोपेया लगा के बगइचा किनले रहन कि कम-से-कम छवो महीना के छुटी क लेब।

"हाय-हाय ई त डाँड़े टूट गइल बाबू, अब का होई"—हाँथ में बोतल लेले बाबू के गड़ही अस आँख के कुइयाँ में झाँकत लखपतिया बोललि। बिरीछ अपना दुलरूई बेटी केऽ डभ डभाइल आँख आ भरभराइल बोली देखले-सुनले बाकी कुछुओ ना जवाब देले, कुटी काटे वाला ठेहा खुदे ठेहा बनल बइठल रहले। लखपतिया अबहीं आपन मड़ई ना देखले रहे, अबहीं त गाँव में से करूआ तेल लेके आइलि। केसवर साव के दोकाने में रहे तलिंग ले आन्हीं आ गइलि आ सउदा-पताई ले के दोकान से बाहर आइल त आन्हीं खतम हो चलेल रहे। ओकरा का बुझाव कि फेंड़-के-फेंड़ उखड़ के गिर गइल होई, मड़ई उड़ई सब उखड़-पखड़ गइल होई।

लखपतिया अइसनो कबहीं ना देखले रहे कि ओकरा आँखी में लोर छलछला जाय ऊ डभडभा जाय आ ओकर बाबू दुलार भरल हाँथ से ओकर माथ न सुहुरा देस। जब मंड़ई देखलस कि उधिया के घँसेटात एक बिगहा दूर पूरूबारा खेत में चितान परल बिया आ मुरूदाघटिया प ठाढ़ चार गो खाम्ही अस थुम्हीं लेले खाम्हा बाड़े स त ओकरा से ना रहाइल। बोलल—"बाबू अइसन त आन्हियें ना। कबहूँ आइल रहे। हमरा

इयाद आवता कि माई एक दिन अइसनके आन्हीं के काथा कहत रहे जवना में नाना के देहियें प एगो महुआ के डाढ़ गिर परल रहे।" ओकरा का मालूम कि गरीबी के साँढ़ केहू के लहलहात जिनिगी के फसल चर जाला त ओकरा प का बीतला। बिरीछ के लड़का जब मू गइल तबे से बेचारा गरीबी से लंगवटा कस के लड़ भिड़ रहल बा। अबहीं कवन एही साल त फागुन में लखपतिया के तेरह पूजल ह; छोड़िके नू बिया। बाप के लाड़े-दुलार में रह गइल।

देखलस कि बाबू के कठेया मार देले बा कुछ बोलते नइखन त लखपतिया फफक के रोये लागल। अब भला बिरीछ से थम्हाव, उठ के बोतल हाँथ से लेके नीचे रखले आ आपन दुलरूई बेटी के लगले धिरिजा बन्हावे—" तोहरा का होइल, तू काहे रोये लगलू। ठाकुरजी के किरिपा से फिन मड़ई बन जाई, फिन अगहनुआँ अमरूध हो जइहें स, जब भगवान मुँह चिरले बाड़े त आहार देबे करिहें; तोहरा का सोचेके बा। एह तरह से दुख आ दुलार के गंगा-जमुनी धार के संगम के कछारन से टकरात पानी से उजरल भविष्य के लखपतिया के खेत बाप पटावते रहन तबले लोटा-डोरी लटकइले एक हाँथ में उजर लुगा के चिट बन्हले काँच बाँस के बाती लेले रघुनाथ राय आ गइले। रोपबाँस के सिपावा-अस धूर चढ़ावे से कसल देंहि नया मरकीन के गमछा लेले नवछेंटिहा जवान रायजी के देखते बिरीछ "सलाम मालिक" क के आपन टुटही माची ले आइले आ मालिक के बइठे के कहले। लखपतिया त उन्हका के देखते ओहिजा से घँसक के मउराइल आम बटोरे लागल।

'ना-ना, हम माची प ना बइठब। तोरा मालूम नइखे कि हमार बाबूजी के इन्तिकाल हो गइल अबहीं दसवों नइखे भइल ?"—कनखी से लखपतिया देने ताकते बोललन। आन्हीं से बगइचा उजरला के सब दुख भीतरहीं दिरिखा प धके बिरीछ रायजी के दुख में सामिल होखे खातिर लगले जीभ पटके—"च-च-च-च, बुढ़बा मालिक मू गइलीं ! हाय-हाय कतना नीक अदिमी रहीं, घटल-बढ़ल जबे दुआर प गइलीं कबहूँ मालिक ना त कइबे ना कइलीं। भगवानो निमने अदिमी के खोज करेले। सतर के लतर लागल बा हमार खोजिये नइखे होत।"

"सँउसे गाँव-जवार में बाबूजी के मूआला के खबर तितिकी-अस फैल गइल आ तोरा ई आज सुनाता ?"—रघुनाथ राय अचरज में बोलले।

बिरीछ बचाव कइले—"आह मालिक बचिया खातिर लइका देखे में नू

आजकाल्ह रातदिन एक कइले हईं। हैंठार देने पाता लागल रहे। ओनियें नू निकल गइल रहीं त आज लवटलीं, एही से नू हम ना जनलीं।"

"का भलहू, केनियों........"

"हँ-हँ, 'दिपऊ बाबा सुन लेले, एगो बड़ा निमन लइका ठीक हो गइल बा। मालिक, मत पूछो लइका ह कि चीज ह; इंटरेंस पास क के कउलेज में पढ़ता। ऊ का बिआह ठीक होखे के रहे? चार गो अमरूध के बगइचा, पाँच बिगहा धनहर खेत आ लइका आग नीयन गोर। ई दीनउए बाबा के किरपा ह।"

राय जी से ना रहाइल, बोलले—"सपना का देखताड़े, आरे अइसन घर-बर तोरा-अस दलिदर के भेंटेला? चुपचाप उहे बतइले हईं ओकरा से आँख मूंद के क दे, बड़ी सुख होबहिस।"

बात अइसन रहे कि बेचारा गरीब पासी के का मालूम कि राय जी जवन आपन घुरना बनिहार से बिआह करावल चाहत रहन ओकरा में उनकर भीतरे वाला बनइला सूअर-अस एगो निठाह टिसुना काम करत रहे। ऊ त लखपतिया के कमरियाइल आम-अस जवानी आ गोर भभूका चेहरा में आपन राछसी पियास खाती पानी के सोता ताकत रहन। राय जी के खेयाल रहे कि ऊ बिआह क के ले आई त हमरे सेवा टहल में नू आपन मरद जोरे आइ जाई। एने बिरीछ दोसरे चाहताड़े। राय जी त बड़ा फेर में परले कि सब सब गुर गोबर हो जाई। कहाँ अमरूध के बगइचा ससुरा पासी के पचासे रापेया में हरेक साल दें दिहीं ना, हमार परजा रहल आ आज हमार सब सपने भिहिलावे ले ले बा। सोचते बिचारत राय जी फिन कहले--"कारे सचहूँ ऊ हैंठार में ठीक क ले ले!"

बिरीछ—''हँ मालिक, झूठ कहतानी, ऊ त लइकवा के बाप आरज समाजी भ गइल बा, कहलस कि हमरा तिलक फिलत नइखे लेबे के, लइकी नीमन चाहीं। हम कहलीं कि लइकी देखलीं रावा, बड़ी सुन्नर बिया। बस ममिला ठीक हो गइल।'

राय जी—''अच्छा छोड़ ई बात, बताव कारज के घर बा हमार रुपेअवा कब दें ताड़े।"

अतना सुनते बिरीछ प जइसे पहाड़ टूट गइल होखे। लगले गिड़गिड़ाये -'मालिक, अबहीं कहाँ। कतना बचा खुचा के सात से रापेआ दस बरिस में जुटइलीं। ओह में से दू सै के बगइचे लिया गइल, एन बचिया के बियाह। ना, एह साल कहाँ होता।"

रायजी से एह घरी रहाव। लखपतिया के बोलइले आ पूछले कि बताव तोर का बिचार बा। ऊ त हकबका गइल कि का पूछ ताड़े। फिन ना जाने का मन में आइल कि चल देले।

पनरहवाँ दिन बिरीछ लइका के बाप के इहाँ गइल त ऊ सुखले बिगड़ के खूँटा हो गइल—हतेयार कहीं के, मिरिगियाह लइकी से बिआह क के लइकवा के फाँसी देब। हो ना सके, ना शादी होई। विरीछ बहुत कहलन बाकी के सुनेला।

फिन त पहाड़े नू टूट गइल। दुख-फिकिर में धरे आवते बेचारा बेमार परल आ चारिये दिन में ओकरो खोजी ऊहे भगवान क लेलन जे ओकरा मालिक के कइले रहन। लखपतिया के हाल? का कहाव ओकर आषाढ़ के कुचकुच भकसावन रात आ बदरी के लोर से भींजत घुरना के दुआरी प......।

चमर ढोल बाज गइल। राय जी से उनकर संघतिया शीतल राय पुछलन "का हाल चाल बा" त जबाब मिलल—'चानी कटता।'

गोबरधन जी

ले०—रसिक बिहारी ओझा "निर्भीक" (जमशेदपुर)

कद में गोबरधन जी बावना अवतार भगवान हवे। सउँसे देह के बाता-बाता गीना जाई। ठोकच बइठल चेहरा पर नाक, कान, आँखि खाली नांव भर के निसान लेखा बनल बा। गोबरधन जी के ढाँचा देखही में हाड़ के ठटर लेखा लागेला। बाकिर हवे उ काड़ा पानी के जवान। पैंतिस साल के उमर में छव लइकन के बाप बाड़े। लइकन के पालन-पोसन के चिंता इनिका तनिओ मनी ना रहे। उ कहेलन जवन भगवान इन्हनी के मुँह फरले बाड़े उ जरुरे दाना दीहें। ओकरा चिंता से हम काहें मुईं? अपना भाग से जीहें-खइहें स। हमका कवनो भखवटी भाखि के मँगले रहलीं हा?

गोबरधन जी के खइला से ढेर प्रेम पीअला से ह। खाए मिले चाहें मत मिलो बाकिर पीए के मिलल चाहीं। उ एगो प्रेस में मसीन मैन बाड़े। कतने जगे के नोकरी एह पीअले के चलते छूटि गइल। मंगर के बन्दी के दिन जब हप्तावारी मिली त ओह दिन केहू के धइले धरइहें ना पीअला के बाद बाँचल पइसा के दान करत फिरिहें। नासा के मस्ती में बीच सड़क पर हाथ दूमत गीति गावत चिलात चलिहें—"हम टाटा का राजा हैं। हमरा राज में केहू भूख से नहीं मरने सकता है। केहू

भले फाँसी लगाके मर जाउ। हम उसका जिम्मेवार नहीं हैं।" लइकन के दल उन्हूका पीछे-पीछे, हू लि लीली करत फीरी आ उ बांचल पइसन के लूटावत फिरिहें। कबो-कबो बिना वोजह के ठेनि बेसाहत फिरिहें। कबो कवनो राही से लागि जाई त, दू चार तबड़ाक पड़ि जाई। बाकिर फि भी होश में कहाँ अइहें। जब-तब सबेरे आदमी देखी कि नाली में मस्त गाढ़ नीनि में सुतल बाड़े। कवनो कुकुर महाराज उनुका के होस में आवे खातिर जल के धार दे दे भरपूर कोसिस करत बाड़े। हप्ता भर के कमाई एक दिन में साफ हो जाई। फेरु फांकाकसी चली। चूल्हा महाराज उपास रहिहें। पेट पीठि में सटल रहीं। हवाई मुँह प उड़त रही। पेट में मूंस कूदत रहीं। बिना हवा बेआर के हरिअर फेड़ लखा ढहल रहिहें। इन्हीका 'फ्रेंच लीभ' (बिना अनुमति के छुट्टी) से प्रेस के मशीन छुट्टी मनाई। फेरु गरज भी दाया बस प्रेस के मालिक आपन काम निकाले खातिर दाना पानी दीहें त गोबरधन जी उठिहें आ काम प जूटिहें। ह दफा प्रन होई की अबकी मंगर के पैसा ना दियाई। बाकी गोबरधन ज आपन दांव-पेंच लगा के निकालिए लिहें।

जब आदमी समुझाई कि गोबरधन जी जब उरा पीअहीं के बा त एक दू पाव काहें ना पीहीं आ आछा तरह से खाके आराम से सूतीं त उ कहिहें—'बाबू एक दू पाव पीअला प बीड़ी के दूगो कस लगवला ले लागेला। पीअला के कवनो हिसाब ना ह। हमार बाप पीअहीं में म गइल हवे। हम उनुकर लइका उनुकर नांव हँसारो कइसे कर जाईं ढेर पीअला से उल्टी होखे लागेला। उल्टी से काफी तकलीफ होला।' एह प आदमी कही कि फेरु रउरा जानि के तकीलफ मोल काहे लीहींला उ जबाब दीहें—"बाबू पीएला आदमी मस्ती खातिर। पीके घर में सूतल से कवन माजा आई। जबले आदमी भर पेट चिचिआ-चिचिआ के दि के गुब्बार ना निकाले तले आनन्द कहवां आई। बाबू आदमी कतना खु हाल होइत जब सभे नासा के मस्ती में हरदम रहित। ओहीजा कव डर ना चिंता, ना लाज ना परवाह। सरग के सुख। हमरा बुझाला कि पगला ढेर सुखी बाडे स बाबू। उन्हनी के ना पीए के पइसा के जरूर ना कवनो गम ना परवाह। चौबिसो घंटा मस्ती में टर।"

जवना दिन गोबरधन जी के मेहरी के खत घर के दुरदासा लइक के खाए पहिने के तकलिफ लिखल आई त ओही दिन अदबदि पीहें। भले करजा उधार लेबे के परो बाकिर इ ना कर पइहें कि उ पइसा घरे भेजि दी। फेरु नासा के मस्ती में दिल के गुब्बार निकाल फिरिहें। लात खात फिरिहें। कवनो सोचल-समुझावलन काम ना कर पाई

अँगूर

—(डा०) स्वर्ण किरण

सुधा आ कुरैसा दूनो जानी अस्पताल के जनाना वार्ड में भरती हो गइल।

दूनो के घर आमने-सामने रहे। दूनो दू जाती के लोग-सुधा हिन्दू, कुरैसा मुसलमान-बाकिर काफी आम-दरफ। दूनो के पति अमीर। एह से एक एक गो नोकर भी रखा गइल रहे। घर में आउर कोई ना रहे। लड़ाई, आ देश खातिर कुरबानी के चरचा सुन के सुधा आ कुरैसा दूनों के इच्छा भइल कि लइका रहतन स त हमनिओ के लड़ाई में भेजतीं जा बाकिर होतहीं ना रहे। इनकर पतिलोग बहुत खुस रहन आ समझावत रहन कि लइका नइखे होत त कवनो बात के फिकिर करे के का जरूरत। ई लोग आबादी के समस्या प लिखल मार्गरेट आ० हाइड के किताब के हवाला भी देत रहन कि आगे के चालीस बरिस में दुनिया के आबादी दुगुना हो जाई आ आबादी में बढ़ती जवन दर से हो रहल बा एही दर से होत चल जाई त अगिला-छः सात सौ बरिस में खाली खड़ा होखे के जगह बाँच जाई। सुधा आ कुरैसा ई माने के तइयार ना रही। ई लोग जबसे नेताजी के भाषन सुन के आइल रहे जवन रमना मैदान में भइल रहे—तबसे आउर परेशान। जबरदस्ती आपन-आपन सवाँग के कहके अपना के लोग भरती करवावल कि लइका होखे खातिर अपरेसन करवाईं। सुधा के पति कहलन कि अब लइका पैदा होई तक बतक सयाना होई कि लड़ाई में जाई—तब तक लड़ाई चलते रही? दोसरा के देख के इरखा ना करे के चाहीं। बाकिर सुधा मनली ना आ कहली कि लड़ाई में ना जाई त एह से का, आपन घर रह के भी त आपन देस के मदद पहुंचाई। कुरैसा के पति कहलन कि एकर कवन गारंटी बा कि लइके होई आ ऊ मुल्क खातिर जान देबही वाला होई, त कुरैसा कहली कि एह से का। लइकियो होई, त का ओसे देश के फायदा ना पहुँच सकी? आ दूनो जानी के हार मान के अस्पताल में लावहीं के पड़ल।

संयोग कि दूनो जानी—सुधा आ कुरैसा के सीट, अस्पताल में आमने-सामने मिलल।

दूनो जानी के अपरेशन भइल। दूनो के मरद हाजिर। दिनभर छटपटाहट रहल आ दिन भर दूनो जना अगोरले रह गइले। साँझ के बेर

छटपटाहट कम भइल। देखते-देखते आठ-नौ बाज गइल। सुधा कहलीं कि हमरा अंगूर खाये के मन करता। मेम साहब खाली फल खाये के बतवले बाड़ी। सुधा के पति कहलन कि जा!त बानी घर नोकर से सबेरे भेजवा देब। कुरैसा अंगूर खातिर कहली त ना बाकिर इनकर मरद ई सोच के कि हमहू कुरैसा खातिर अंगूर नोकर से सबेरे भेजवा देवें—आपन घर चललन।

बाजार अस्पताल आ घर के ठीक बीचोबीच पड़त रहे। दूनो आदमी बाजार से अंगूर कीन लेलन। अंगूर वाला दूनो आदमी के एक एक पाव अंगूर ठोंगा में दे दिहल स।

दोसरका दिन सबेरे कुरेसा के नोकर अंगूर के ठोंगा लेके पहिले पहुँचल कुरैसा देख के बहुत खुस। सुधा कहली कि अंगूर के फरमाइस कईलीं हम पहुँच गइल तोहरा पास पहिले आ थोड़ा इरखा के भाव जागल। नोकर अंगूर के ठोंगा विस्तर के बगल में रख देलस, आ कुरैसा के कहला से, एक लोटा पानी कल में से ले आइल। कुरैसा ठोंगा में से दू-चार गो अंगूर खाये खातिर निकलली त एगो अचानक हाथ से लाग के फूट गइल। पिल्लू देख के मन भिन्ना गइल। कुरैसा के पति नौकर के रस गार के देबे के कहले रहन अब ऊ कइसे गारो? कुरैसा मने मन कहली कि अंगूर आँख में पट्टी बाँध के किनलन हाँ। ठोंगा के साथ नोकर के ऊ ई कह के बिदा क देली कि एह में बिटामिन जादे बा।

तब तक सुधा के भी नोकर अंगूर के ठोंगा ले के आ गइल। कुरैसा के अंगूर देख के इनका छनक बर गइल आ ई बिना पानी मँगवले एगो अंगूर फोड़ के देखली त ईहो खराब। इनको मन भिन्नाइल कि अंगूर बेचे वाला केतना बेईमान आ ठग बा। खराब चीज काहे बेंच रहल बा; ए से त रोग फैल जाई। आ ऊ नोकर से अंगूर के ठोंगा अइसहीं भेजवा देली कि अंगूर नीमन नइखन स। नोकरो देखबे कइलस।

कुरैसा के पति अंगूर के ठोंगा के देख के आ नोकर के बात सुनके फेंक देलन आ दूगो रुपया देके कहलन कि जो, बाजार से बढ़ियाँ अंगूर फेरु कीन के दे आव, आ कहिहे कि एह में बिटामिन नइखे हाँ, फोड़ के देख लीहे कि ऊहो खराब त नइखे। ऊ मने मन कहलन कि साला, ठगई आ बेइमानी बड़ा बढ़ गइल बा बाजार में। हम यकीन प अंगूर कीन लेलीं त हरामजादा अंगूरवाला धोखा दे देलस। नोकर रुपया लेके चल आइल आ नीमन अंगूर देख के कीनलस आ फेरु ठोंगा लेके कुरैसा के पास चल

आइल। कहलस कि मालिक दोसर भेजववलन हाँ आ कहलन हाँ कि एह में विटामिन नइखन स।

सुधा के पति जब नोकर से अंगूर के खराबी के बात सुनलन त ऊ खुद उठके बाजार अइलन। अंगूरवाला के पास अंगूर के शिकायत कइलन त अंगूरवाला माफी माँगे लागल आ कहलस कि एह में हमार कवन कसूर बा, चलाने अइसन आ गइल, आ हम त काल्हे एकरा के छोड़वली हाँ, हमहूँ जात बानी चलानी भेजनेवाला के पास शिकायत करे—एक-दूगो आउर आदमी शिकायत कर गइल बाड़न। सुधा के पति दोसरा हिआँ से नीमन अंगूर एक पाव किनलन आ लेके अपने सुधा के पास अइलन।

सुधा आपन पति के देख के बड़ा खुस। ई आवते कहलन कि अंगूर वाला भी बड़ा दुखी बा; हम शिकायत कइलीं त बड़ा लज्जित भइल आ लागल माफी माँगे। जल्दीआजी में हम काल्ह देखलीं ना एह में हमरो गलतिये बा। सुधा एगो-दूगो अइसहीं खइली, बड़ा मीठ लागल। बाकी अंगूर के रस गार देल गइल। सुधा पीके निहाल हो गइली।

बारह-एक बजे के लगभग जब नोकर घर पहुँच गइल कुरैसा के पति अइलन, कहलन कि तोहार खाला आ गइलीअब तोहरा पासबराबर रहिहन। थोड़की देर बइठ के फेरू घर चल गइलन। कुरैसा के अंगूर के पिल्लुअन के इयाद आइल आ लागल कि एह प मक्खी भिनभिनात बाड़ी स। एही प ना आपन पति के चेहरा प भी मक्खियन के भिनकल दिखलाई पड़ल।

सुधा के पति दू घंटा तक सुधा के पास बइठल रह गइलन। चलेके बेरु कहलन कि जात बानी तोहार जेठानी के पास तार कर देबे ताकि तोहरा लगे बराबर रहस। खाली हमरा आ नोकर से काम नइखे चलत। इनका अफसोस भी भइल कि पहिलहीं से कोई के काहे ना बोलवलीं। सुधा कहली कि उनका बोलवला के का जरूरत बा। काम लही जाई, कबहूँ नोकर, कबहूँ रउआ आ जाइब त कवनों बात के हरजा ना होई। कुरैसा के खाला आ जइहन त हमरो जरूरत के पूरे कर दीहें।

सुधा के पति जाये लगलन त सुधा कहली कि जेठानी जी के पास तार मत करब; का जाने ऊ बुरा मान जास। आ इनकर मन के भँवरा आपन पति रूपी फूल के बहुत करीब चल आइल। इनका बुझाइल कि इनकर पति फूल ना, अंगूर के रस हवन। अंगूर के मिठास इनका भीतर आ बाहर, सब जगह छा गइल।

सम्पादक के विचार

के ना कहल कहनी ?

कथा आ कहनी के बात कवनो नाया ना ह। सिरजना के पहिलके रात से चालू कहनी के चरखा के तार आज ले ना टूटल, ना टूटी। ब्रह्मा, बिसुन, महेश, राजा-रानी से काना-कानी तक के नाँव नानी के कहनी के नायक-नायिका के रूप में ना जाने कि कतना बे सुनाई पड़ल।

रिग्वेद हमनी के सभ से पुरान पोथी ह। कहनी के झाँकी रिग्वेदे मे मिले लागेला। वेदन के बाद ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आ पुरानन मे त कहनी के ढेर के ढेर आपन जोत जगा रहल बा। रामायन आ महाभारत का कहनी से खाली बा? रामायन-महाभारत के पाछे संस्कृत-साहित्य के कहनी में रसे-रसे लोक-रस के सवाद मिले लागल बा। ओइसे त बुधे भगवान के जबाना में कहनी के महल खड़ा हो गइल रहे, बाकिर ओकरा बादो कहनी के लतर कम नइखे लहसल।

आजुले दुनिया में जतना कहनी गढ़ाइल, ओह सभन के देह-धाजा दुइए तरह के पावल जाला—नीति के कहनी आ लोक के कहनी। नीति के कहनी सभ से जादे जीव-जनतु से भरल बा। छांदोग्य उपनिषद् में 'सत्य-काम कथा' के भीतर एगो बैल आ राजहंस से उपदेश लेवे के बात पावल जाला। संस्कृत में 'पंचतंत्र' एह खातिर अगरेसर मानल जाई। एकरा अलावे तन्त्राख्यायिका, सरल ग्रन्थ आ हितोपदेशो देखहीं में आवेला। 'पंचतंत्र' के असली रूप त अब सामने ना रह गइल बा, बाकिर ओकर कटावलो-बढ़ावल कलेवर कमजोर नइखे। पंचतंत्र के दुनिया के ढेर बोलियन में उलथा कइल गइल बा, भोजपुरियो भाई लोगिन एकरा ओर आपन अँजोर फैलावस। सुनलीहां केहू भाई एकर अनुवाद करतारे।

लोक-कहनी के खजाना में वृहत्कथा, कथासरित्सागर, बेताल पंचविंशतिका, सिंहासनद्वात्रिंशिका, शुकसप्तति, उपमितिभव प्रपंचकथा, परिशिष्टपर्व, अवदानशतक, दिव्यावदान, जातकमाला, ई सब एक से एक रतन जगमगा रहल बा।

हिन्दी में भारतेन्दु के उगला के साथ कहनियो उगल। एहसे पहिले बेताल पचीसी, सिंहासनबतीसी, आ अइसने-अइसन संस्कृत के कहनियन के

उलथा कइल गइल रहे। गोकुलनाथ के 'चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता' भरसक हिन्दी के कहनी के सभ से पहिला पोथी मानल जाई। लल्लुलालजी, सदलमिश्र आ ईशाअल्ला खाँ के नाँव केकरा से अलोत बा? साँच पूछल जाय त खाँ जी के 'रानी केतकी कीकहानी' कहनी हिन्दी के सभ से पहिलका कहनी कहाई।

'प्रसाद'जी के जबाना में हिन्दी-कहनी के खेती आउर लहलहा उठल। प्रसादजी के छाया, प्रतिध्वनि, इन्द्रजाल, स्वर्ग के खँड़हर, ढेर के ढेर कहनी हिन्दी साहित के अनमोल धन बा। जी० पी० श्रीवास्तव, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, ज्वालादत्त शर्मा, आचार्य श्री चतुरसेन शास्त्री, कौशिकजी, गुलेरीजी वगैरह के कहनी भी कम इनरजाल ना फैलवलस।

प्रेमचन्दजी के जवाना त कहनी के कियारी में केशर उगा देल। ओकरा बाद फेरु के ना कहनी प लोभाइल? पन्त, निराला, महादेवी वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, अश्क, मुक्त, रेणु वगैरह भी कहनी के नखड़ा-तिला से अपना के ना बचा सकलन। बाद के आगे बढ़ल जवाना त कहनी लिखे वाला लोगन के अतना लामा कतार खड़ा कदेल कि ओ प आँख ठहरावल मुसकिल बा।

एने एक जुग से जादे समय से लोकभाषा में भी कहनी के धूम मचल बा। भोजपुरी कहवाँ पाछे रहल। भोजपुरियो जवान भोजपुरी कहनी के झंडा लहरावे लगलन। आचार्य श्री बनारसी प्रसादजी 'भोजपुरी' हिन्दी-भोजपुरी दूनो कहनियन के खचहूँ आचार्य बानीं। उहाँ के भोजपुरी के व्यंग्यकहनी के रंगत देखते मन-परान अघा जाला। स्व० आचार्य शिवपूजन सहायजी के 'मुण्डमाल'कहानी का जोर के कहानीभोजपुरी में कुन्दन सिंह केसरवाई बा।उहाँके प्रतिभा के का बखान करीं। महाराज कुमार दुर्गाशंकर प्रसाद सिंहजी अकेले भोजपुरी के सभ कियारियन के अमृतधारा सेपटा रहल बानीं? वृन्दावनजी के कवनो कहनी अइसन ना मिली, जवना के पढ़ि के मन ना अगरा उठे। पाण्डेय नर्मदेश्वर सहायजी हिन्दी भोजपुरी के मानल कवि आ सम्पादक हईं, बाकिर उहाँ के कहनी के कलम भी ओसहीं मजल बा। उहाँ के 'मुसलमानिनि' आ 'हरताल' आ 'नवरतन' कहनी हमर कथनी के सबूत बा। श्री भानुजी आ राधिका देवी श्रीवास्तव के जुगल जोड़ी कहनी के काया के कम ना चमकावल। 'जेल के सनदि' लेके'सुमनजी'आपन जे सुगंध फैलवलन ओकरा से के ना मस्त भइल। रमेशचन्द्र झा, राम सिंह, विवेकी राय आ 'विधुरजी' के कहनी में भी मामूली मिठास नइखे। मधुकर सिंह के कहनी में भी बड़ा मधु बा। एकरा अलावे कतने अइसन कहनी के कलाकार बाड़न, जिन-

कर नाँव आदर के साथ लिआईं। सभ मिला जुला के देखला प मन के पूरा भरोसा हो रहल बा कि भोजपुरी-कहनी के खजाना एक दिन जरूर भरपूर हो के रही। श्री रामनाथ पाण्डेय प्रो॰ उमाकान्त, 'वेसुध' जी, किरण, बेकार भोजपुरी, काश्यपजी अशान्त जी, निभरम जी, गिरिजेशजी, सलिलजी, निर्भीकजी, मधुरजी, लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी, सुन्दर जी, स्वर्णकिरणजी, अपना कहानी में सोना के किरिनिजाले बिछा देले।

एक ओर जहाँ जोर-जोर से भोजपुरी नाया-नाया कहनी सिरिजा रहल बा, उहाँ दोसर ओर एक जमाना से भोजपुरी इलाका के कंठ-कंठ में छिटाइल पुरान कहनियन के बटोरे के काम भी पूरा लगन के साथ होखे के चाही। लोककंठ परल कहनी में जे संस्कार भरल बा, ओकर छान-बीन कईल भी बड़ा जरूरी बा। ई काम भोजपुरी के जश आ मान बढ़ाई दूनो खुशी के बात बा कि एने कुछ बरिस से भोजपुरी में पत्र-पत्रिका निकाले के बड़ा लगन लागल बा। एह सभ काम में एह लगन से बड़ा हित सधी। भोजपुरी संसद वाराणसी से एगो मासिक कहानियाँ भोजपुरी पत्र निकलता।

एह पाँतियन के लिखे बइठते बक्सर से भाई विश्वनाथ सिंह जी के चिट्ठी पहुँचल। डिग्री कालेज, बक्सर के प्राचार्य विश्वनाथ जी फेरू भोजपुरी के मैदान में उतर रहल बानी भोजपुरी त्रैमासिक 'नवरतन' के साथ। उहाँ के हिन्दी-भोजपुरी के मरम पहचाने वाला, पूरबी-पछिमी दूनो ढंग के परख के धनी विद्वान हईं। हमरा पूरा भरोसा बा, 'नवरतन' के अँजोर चारूओर फैल के भोजपुर-भोजपुरी आ भोजपुरियन के चमकाई।

जय हिन्दी, जय भोजपुरी।

निवेदन

“प्रणयी”

अँजोर का 'कथा-अँक' के एकरा पाठकन आ लेखकन का हाथ तक पहुँचा के बहुत खुशी हो रहल बा। करीब आठ महीना भइल, हमनि बिचार कइलीं कि अँजोर के एगो कथा अंक निकालल जाय। हमनि का बिनती पर भोजपुरी के साहित्यकार से एक से एक बढ़िया रचना एतना आइल कि एह अंक के कलेवर बढ़ाइओ देला पर ऊ सब एह में ना अँट सकल। जे भाइअन के रचना हमनि एह में जगह का कमी से ना दे सकलीं ह वोह लोग से हम माफी मांग रहल बानी। हमनि अगिला अंकन में वोह सब के निकालब। हमनि का पास एह अंक वास्ते कुछ लोक कथो आइल रहे। अब हमनि सोच रहल बानी कि अच्छा त ई होई कि अँजोर के एगो अलग 'लोक कथा' अंक निकालल जाय। हमनि वोह

रचना भेजे वाला सब लेखकन के धन्यबाद दे रहल बानी। हमनि वोह लोग के एह वास्ते बहुत आभार मानत बानी। ई भोजपुरी वास्ते शुभ लच्छन बाटे आ अब बहुत जलदी भोजपुरी साहित्य के दिन फिरी एह में कवनो संदेह नइखे। लेखकन के रचना त बहुत बड़हन बा आ ऊ एतना उमदा बा कि ओकर प्रकाशनो जरूरी मालूम हो रहल बा। साँच पूछीं त अइसन रचना 'अँजोर' वास्ते एगो समस्या बन जाला। एक ओर त वोह रचना का प्रकाशन के लोभ आ दोसरा ओर जगह के कमी। अँजोर तीन-तीन महीना पर निकलेला आ अगर वोह सब के खंड-खंड करके छापल जाय त पाठक लोग का पढ़े में अनान्द ना मिली। हमनि सोच रहल बानी कि वोह सब रचना के कइसे प्रकाशित कइल जाय। अगर लेखक भाई लोग छोटहन रचना भेजे त अँजोर पर ई बहुत बड़ा किरपा होई। प्रधान संपादक श्री पाण्डये नर्मदेश्वर सहाय का दोसरा-दोसरा काम में अनुरागल रहला से ई अंक समय पर ना निकल सकल आ प्रूफ के जहाँ तहाँ गलती रह गइल। उनका के एह वास्ते माफ कइल जा सकेला। 'अँजोर' वास्ते त ऊ "मियाँ जी के मियाँ जी आ बजनिआ के बजनिआ" बाड़न।

—गणेश चौबे

सप्ताहिक भोजपुरी वार्त्ता
सं० आचार्य्य प्रतापादित्य एडवोकेट, श्री कपिलदेव
बेतिया हाता
गोरखपुर—उ०-प्र०
एक अंक क दाम १० पै० सालाना ३ रु०

संमति

'अँजोर' के जुलाई ६५ के अंक बड़ा नीक लागल। कविता, कहानी, समालोचना, निबंध आ लेख, एकांकी, अनुवाद, समीक्षा आदि सब कुछ एतना कम पन्ना में अचरज के ही बात कहल जा सकेला। ईश्वर चहतन, ई मासिक बन जाइत। भोजपुरी कामायनी के अनुवाद, 'सोहराब आ रूस्तम' के अंश मन मोह लेलस। बड़ा अच्छा काम हो रहल बा। १९५०,५१ के जैनकॉलेज इयादि आ गइल। Sohrab & Rustam आई० ए० में प्रो० डी० कुमार पढ़ावत रहन। ओकर पंक्तियन में जवन कसक रहे अनुवाद में भी दिखलाई पड़ रहल बा। 'कामायनी' त एम० ए० के अब भी पाठ्यग्रंथ बा। आशा बा, पूरा अनुबाद मूलके साथ बाद में पुस्तकाकार भी छापल जाई।

'भोजपुरी शब्दकोश' में 'खोंप' 'खोवसन', 'खोम', 'खोभार', 'खोर' 'खोरेहा', 'खोल', 'खोह' के बाद 'खँखड़' 'खंता', 'खंती' के स्थान थोड़ा खटकल। हिंदी कोशन में अनुस्वार से युक्त वर्ण के स्थान पहिले देल गइल बा।

'मानस-कोश' के लेखक महोदय भी बहुत बड़ा यज्ञ पूरा कर रहलन बाड़न बाकी इनकर संकेत एगो संदेह खड़ा क देलस। गीता प्रेस से जवन 'मानस पीयूष' निकलल बा ओहमें, आउर लोग जवन संकेत देलन ओहमें दोहा के पहिले के आठ चौपाइन अइसे कहीं कहीं आठ से बेसी भी संख्या बा। के दोहा में ही मान लेलन इनका अनुसार 'अकेले' शब्द के संकेत १-१५६ (३) ही रहे के चाहीं आ एही शुद्ध मानल जाई। हाँ 'अरविंद' जी के संकेत 'प्रयोग' के रूप में जरूर कहल जा सकेला। हमरा इहाँ से परिचय नइखे आ इहाँ के पता भी मालूम नइखे ना त कुछ आउर सुझाव देतीं। [छोटे मुँह बड़ बात खातिर त क्षमाप्रार्थी ही समझल जाई।] 'अउर', 'अउरउ' शब्द के बाद 'अइले' 'अइसिहुँ, अइसउ, 'अइहहि' के स्थान ना मिले के चाहीं। मालूम पड़ता कि अभी प्रयोग के रूप में शब्दन के खाली जमा कइल जा रहल बा। जहाँ तक हमरा इ याद बा, पटना विश्वविद्यालय के डा० राजाराम रस्तोगी मानस के शब्दन के सप्रमाण संग्रह कइले बाड़न, 'तुलसीदल' [मानस प्रेस, इब्राहिमपुरा, भोपाल (म० प्र०)] में भी ओने 'मानस मुक्ता' नामक मानस कोश (तीन खंड में पूरा) के विज्ञापन छपल रहे, हम त एकरा के मंगवावे के सोचत ही रह गइलीं। ई सब से कुछ लाभ उठावल जा सकेला।

भाषा के प्रति का दृष्टिकोण बा, लेख, एकांकी आ कविता पढ़ला से सभ मालूम हो जात बा। भाव के कीमत प शिल्प के ऊपर ध्यान नइखे देल गइल—ई बढ़ियें बात बा। बाकिर जमाना के अनुसार चलल भी कम बढ़ियाँ बात ना कहल जा सकेला। बिना डोरी के चंग के सरल शब्दन के प्रयोग, जगह जगह पर व्यंग-विनोद, मुहावरा-कहाउत कहानी के बड़ा प्रभावक बना रहल बा। सोटन सिंह के भाषा भी जबरदस्ती कान पकड़ लेत बा। (काश, ई एकांकी प्रहसन) पूरा पढ़े के मिलित आधा पढ़ के भूख उखाड़ दीहलस। बंगला भाषा, आ चारमन (चेयरमैन) सबंधी चुनाव प व्यंग्य लेखनीय सफलता के सूचक बा। ब्रजकिशोर जी के समालोचना अलबत कुछ अजीब सा लागल। भोजपुरी के शब्दन के अभी प्रयोग आ शैशव-काल ही पल रहल बा शायद एही से एकर भाषा में जहाँ-तहाँ अटकाव अइसन महसूस भइल। 'बल्कि' खातिर—बाकिर, बाकी, शब्द भोजपुरी में चल रहल बा। इहाँ के 'बलु' लिखले बानी, जहाँ कंठ खातिर 'कण्ठ' घंटा खातिर 'घण्टा' के प्रयोग इहाँ के कइले बानीं उहाँ 'लोग' के लाघव रूप में लोक, नंबर खातिर नमर—'भोजपुरी में गृहस्थ कवि लोके नमर ढेर नइखे आं लोका परचार खातिर मोका 'मिलल'—सांत रहला प भी खातिर 'सान्त रहला पर भी' आदि के प्रयोग कइले बानीं। लुप्ताकार अ (ऽ) के प्रयोग कहीं भइल बा, कहीं ना। असल में एकर प्रयोग के उठा ही देबे के चाहीं। बँगला, अँगरेजी भाषा सबके ठीक-ठीक शुद्ध-शुद्ध पढ़े ना आ सके बिना ओकर नस आ विलक्षणता (Idiosyncrasy) जनला से, ओइसहीं भोजपुरी पढ़ेवाला भी, कहाँ accent, कहाँ ठहराव' देबे के चाहीं जान ही ली। 'साहित्य' के बिगाड़ के 'साहित्त'—स्थानीय रंगत भा तद्देशीय सौरभ (Local colour) के द्योतक जरूर बा बाकिर आलोचना भा समालोचना लिखल जाला—जवन पढ़निहार आदमी खातिर ही खास के लिखल गइल बा। अइसन प्रयोग नाहियें रहित, भा होइत, त अच्छा विदेशी शब्दन से जइसे भोजपुरी के भंडार भरल जा सकेला, तइसे संस्कृत से सीधे तत्सम शब्द लेके भी काम चलावल जा सकेला। एह से बाद में चल के भोजपुरी भाषा के साधु रूप भी हो जा सकेला। भोजपुरी भाषा के एकरूपता प कुछ विचार 'भोजपुरी साहित्य' में गणेश चौबे जी रखले बानी हमहूं कुछ रखे के चाहत बानीं देखीं, कबतक रखल जा सकेला।

—स्वर्णकिरण

"अँजोर" के नियम

१ "अँजोर" में छपे खातिर जे भी रचना भेजल जाय ओकर प्रतिलि
अपना पास जरूर राख लिहल जाय।

२ कौनो लेख, कविता, प्रश्न, चित्र आदि के छापे या ना छापे के आ का
छाँटे के पूरा अधिकार सम्पादक के रही।

३ "अँजोर" में बिना नाँव गाँव के मुलाहिजा कइले, रचनन के उत्तम
पर अधिक ध्यान दीहल जाय।

४ पन्ना के एक ओर लेख लिखाये के चाहीं, भाव आ भाषा पर ध्यान
राखहीं के चाहीं। जहाँ तक होखे लेखन के काया छोटे होखे के चाहीं।

५ "अँजोर" के गाँहक कवनो अंक से बनावल जा सकेला। जवना मही
में दाम आ जाई ओही महीना से गाँहक समझल जाई।

६ स्थायी गाँहक भाई चिट्ठी-पत्री लिखत खानी आपन गाँहक संख्या ज
लिखसु। एक बरिस के चन्दा भेजि के जे गाँहक बनिहें उहे भाई स्था
गाँहक कहइहें।

७ रचना, मनीआर्डर, व्यवस्था सम्बन्धी पूछताछ के पत्र सम्पादक के प
से भेजे के चाहीं।

८ आलोचना खातिर पुस्तक के दू प्रति भेजे के चाहीं।

९ टाइप कइल रचना ठीक हो तब भेजे के चाहीं।

घोषणा-पत्र

१ प्रकाशन-स्थान—पटना।

२ प्रकाशन की नियतकालिका—त्रैमासिक।

३ मुद्रक का नाम—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय।

४ राष्ट्रीयता—भारतीय।

५ पता—सालीमपुर अहरा, पटना—३।

६ प्रकाशक का नाम—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय।
राष्ट्रीयता—भारतीय।

७ पता—संचालक, भोजपुरी परिवार, पटना-३।

८ समाचार पत्र के मालिकों और कुल पूंजी से एक प्रतिशत से अधिक
वाले का नाम और पता—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, पटना-३।

९ मैं पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, इसके द्वारा घोषित करता हूँ कि ऊपर
गये व्योरे जहाँ तक मेरी जानकारी और विश्वास है, सही हैं।

ह० पाण्डेय नर्मदेश्वर सहा

एह प्रति के एक रुपया पचास पैसा] [सालाना साढ़े तीन

मुद्रक :—यूनियन प्रेस, पटना—४

७

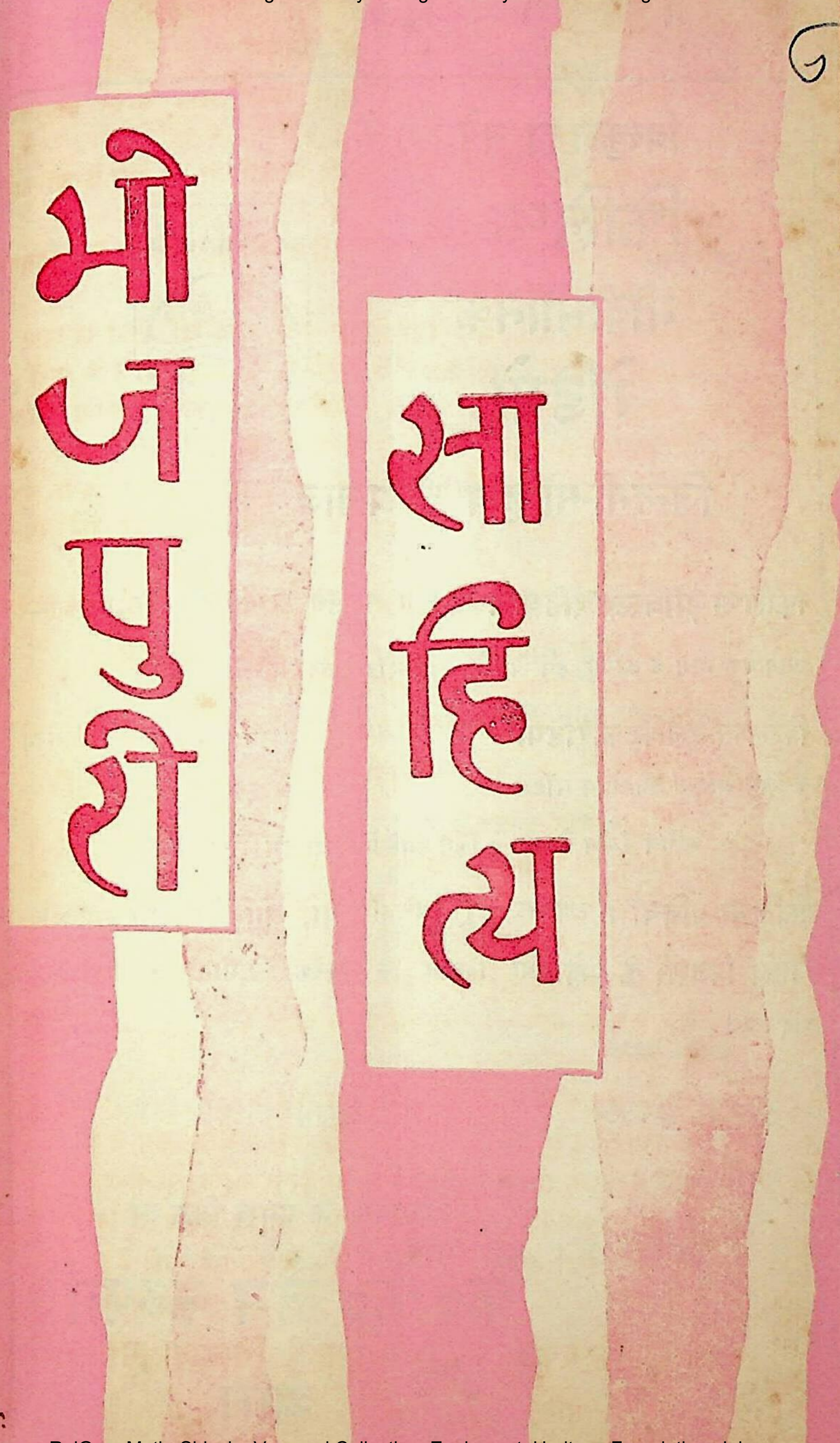

भोजपुरी साहित्य

बिल्कुल ही नये ढंग के

फिलिप्स
नोवोसोनिक
रेडियो

PHILIPS

जिन्दगी-सी हू-ब-हू आवाज

फिलिप्स ट्रांजिस्टर रेडियो : टेबुल या पार्टेबुल अपना सानी नहीं रखते— अत्यधिक मांग के कारण, हमें खेद है, सभी मॉडल सदा प्राप्य नहीं होते।

फिलिप्स इलेक्ट्रिक रेडियो : मधुर आवाज और आधुनिकतम डिजाइन के लिये अत्यन्त लोकप्रिय मॉडल—

सचित्र रंगीन कैटलग के लिये हमसे मिलें या हमको पत्र लिखें।

फिलिप्स बत्तियाँ : फ्लोरेसेंट ट्यूब बत्तियाँ उषा, ओरियेंट, कैसेल्स औं रैसिल बिजली के पंखे तथा बिजली के प्रत्येक सामान के लिये हमें याद रखें।

शाहाबाद के प्रमुख विक्रेता

के० के० जैन कम्पनी

आरा

भोजपुरी साहित्य

मासिक पत्रिका

वर्ष : १, अंक : ९ मार्च, १९६६

कहानी

बुरबक १ गोपाल शरण ओझा

बूझ २ चन्द्रदीप ओझा

परलय क पानी ४ विवेकी राय

सफरी ९ मधुकर सिंह

उड़नी बइठनी माँखि ११ सर्वदेव तिवारी 'राकेश'

केकरा पर करवि सिंगार १७ राम वृक्ष राय 'विधुर'

बकरी चरवतीस २१ दण्डी स्वामी विमलानंद सरस्वती

भीख २६ सूर्यदेव राय

एक बीता घाम २९ विजेन्द्रलाल 'अनिल'

बाझ ३५ रंग जी पांडेय

भोजपुरी कहानी ३९ चित्तरंजन

६ बरिस २५ रुपया
जिनिगी भर १०१ रुपया

एक बरिस ५ रुपया
१२ बरिस ५१ रुपया

सम्पादक
डॉ० जितराम पाठक

व्यवस्थापक
लक्ष्मण त्रिपाठी

कार्यालय
प्रोफेसर कॉलनी, के० जी० रोड, आरा (बिहार)

टैलीग्राम—नवीन विज्ञान

फोन—कारखाना : २
निवास : ४७१

नवीन विज्ञान, आरा

स्टील फर्नीचर
लकड़ी के फर्नीचर
साइंटिफिक एपरेटस
लैबोरेटरी फिटिंग्स
टाइपराइटर्स
सोफा कम बेड
फोम रब्बर कुशन
स्टील स्प्रींग कुशन

नवीन का अर्थ है क्वालिटी

नये डिजाइनों के

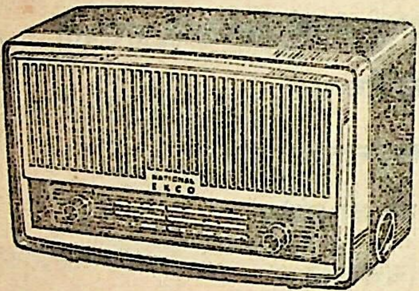

रेडियो सेट
और
ट्रांजिस्टर
के लिए
तथा

बिजली के अन्य
सामान
के लिए पधारें।

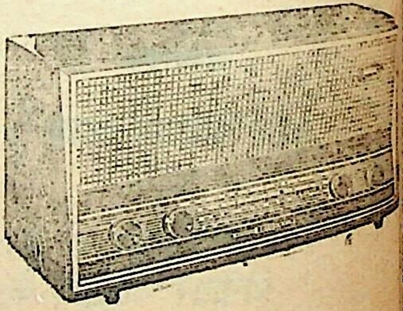

अजन्ताज ● रमना रोड, आरा

दूगो व्यंग कहानी

बुरबक

गोपाल शरण ओझा

मु० पो० निमेज, शाहाबाद

दूगो सूट-बूट के फोटास बन्हले (जरूर कवनो हाकीम-सुबा होइ लोग) बतियावत रहे—'मर्दे, हमार त चपराती एकदम उजबुक बसंत मिलल बा।'

दोसरका जाना उनका से कम ना रहले, अगर ऊ जीन रहले त उहाँ का भूत से कम ना रहनी, बोलिये त उठनी—'अरे यार, तहरावाला से त हमार वाला बीस बा।' बातचीत के लारि में बुझाइल की ऊ आदमी अपना में लड़ बइठिहें। भइल कि दिन मोकर्रर कर दिहल जाय कि कवना दिन एह बात के जाँच होई कि कवन चपरासी बुरबक आ उजबुक के इतिहास में फस्ट करत बा। दूनो आदमी के विचार से एतवार दिन तय भइल। दूनो हाकिम एके आफिस में आसन लगावल लोग। पहिला जाना अपना चपरासी के बोलावे खातिर टुन से घंटी दबा देहले। बिजुली के करंट अइसन चपरासी भीतर चल गइल। सलामी दे के आपन जी-हुजुरी जनवलसि। उहाँ का हुकुम दिहनी, "लो, दस रुपया का नोट और मेरे लिए कार खरीद लाना।" 'जी, अच्छा हजूर', कहला के बाद चपरासी दशटहिया नोट ले के निकल आइल। साहेब अपना संघतिया से कहलन कि "देखल, कतना बेवकूफ बा?"

उनकर दोस्त कहलन कि तू अपने के फेर में पड़ल बाड़! आरे हमारवाला त एकरो से बनल बा। तनिको एकरा से कम नइखे, बीस समुझ। ऊ इनकर बाँहि पकड़ि के अपना आफिस में ले गइले। आ ठीक ओंसहीं टुन से घंटी बजा के अपना चपरासी के बोलके कहे ले—"जरा देख आवो तो हम क्लब में बैठे है?" 'जी हजूर', कहि के

(बाकी पन्ना ८ के नीचे पढ़ीं)

बूझ

चन्द्रदीप ओझा

उच्च विद्यालय, निमेज, शाहाबाद ।

रामलाल के उमिर तीन बीस, बाकी उनकर घरनी छतीसीए रहलि । बिआह पछुता रहे । बेजोड़ भइला से ऊ बेजोड़ रहली । रामलाल पर उनकर बड़ा चाँप चढ़ल रहत रहे । जइसे मदरसा में मनसी जी का मने से लइकन लोग का चले के होला ओइसही रामलाल उनका से बार भर एने ओने ना जासु । रामलाल के मन हमेशा उलिटा गघइला से अब तब हो गइल रहे । बाकी बुढ़ौती में करेसु का ?

सावन आइल सुहावन । चारों ओर हरियरी लउके लागलि । बाकी संगे-संगे पानी पन जंजल से निकसे पइसे के राहो बन्द हो गइल । रामलाल का बड़ा दुख रहे । सोचे के बात बा "बाढि आ ऊ बूढ़ा ।" बाढ़ बूड़ा के भेंट हो गइल रहे । बाकी ऊ ना बूझत रहली । तान तुरे के आदत त उनकर पहिलहिं के रहें, एह घरी गोड़ भारी भइला से औरू उतान हो गइल रही । आगा ही लउकत रहे, भरल पूरल कोंख । रामलाल के कपार खइले रहली कि हालि नइहर पहुँचाव । एहिजा हलुआ बनाई ? सेवा के करी ? रात दिन अ खन कइले रहली । रामलाल क समझावसु, बाकी ऊ सोक ना धर अन्त में रामलाल कपार पीटी के क कि चल, बाकी असवारी ना मिली, पै चले के होई । करनी कसार आ अ कइसे जाईं ? कहली कि तू हरदम क काका कइले रहेल, काका एक खातिर घोड़िया ना दीहें ?

रामलाल काका के घोड़ी त अइले । बाकी ऊ रहे दिऊरही अ हरही । ओकर एगो मुँखिओ, रईस के हूरा से हमेशा खातिर हो गइल रहे । बेचारी के एके अजोर रहत रहे ।

आगे आगे रामलाल उनका घोड़ी तेकरा पीछे चलली ऊ विघा सुजनी बिगरलि रहे । रामलाल ओकर लगाम छोड़ी के पेशाब लगले । अतने में ओकरा हेयावी

मोका लागि गइल। ऊ हरिकल ना रहे, परिकल रहे। बाकी जइसही खेत में मुड़ुकी आइलि कि एगो बउचट खेतवाह बोंग चलाइ दिहलसि। लागे के घोड़ी का त लागि गइल रामलाल बो का। फेनु अब का कहे के, जवन होखे के बाकी रहे तबन बीतल। रामलाल हें हें करत पहुँचले तले ऊ सूर बन्हले रहली।

रामलाल कहले कि अब लौट चलीं ना। ऊ जाति सुभाव ना छोड़ली। कहली कि पाँच गो भला माना बटोरबी तबे एह पगर जरना के चौक बइठे देबी।

बेचारू रामलाल का झख मारी के पंचाइत बटोरे के परल।

पंच लोग पंचाइत कइल कि जे जेकर जवन नुकसान कइलेबा ऊ ओकर पूरा कइ देउ। खीसी भूत लालाबो का इन्साफ साफ ना बुझाइल, बाकी रामलाल बूझि गइले। कहले कि ए लछीमी अब घरे लौट ना तऽ हमरा से हाथ धोअ। "हमरा से हाथ धोअ" पर उन कर पटर खुलल। कइसहूँ रोअत गावत लौटली।

बाकी रामलाल का पंच लोग का भेंटाइल "बुरबक के भंइस बिआ गइल" सोचले कि कुछ लाभ उठावल जाउ। कहीं से थोरीका गहूँ ले के गाँव में बानगी देखावे लगले। कहसु कि भाव बजार से दोबरी बाकी आधा दाम आगाही। जेकरा लेवे के होखे आधा दाम आज जमा कइके काल्हु हथिनापुर के सरपंच के दुआर पर चलि आओ। गहूँ के कनटरउल रहे। रामलाल का रुपया के थाह लागि गइल।

दोसरा दिन सबेरे गँहकी लोग घोड़ा बैल आ बोड़ा लेइ लेइ पहुँचल लोग। रामलाल डंडी पसेरी लेके बइठले। पसेही त ठीके रहे, बाकी गहूँ के पलरा उलिटा। ओकरा पर जाताना चढ़े ओतने पर जब रामैराम करे के काम लगवले तब गँहकी लोग रोकल साहु गँहकी के झंझटि ओरि आवे फेनु ऊहे पंच लोग पहुँचल। कहल लोग कि तू गँहकी के बात रही नूँ महाजन के, करवटिये पलरा पर जोखाउ। रामलाल भाई तऽ पहिले से जानत रहले। खाली राम रमाई के रुपया झरिआइ के चलि अइले। पंच लोगन के बधाई और भगवान के दुहाई दिहले।

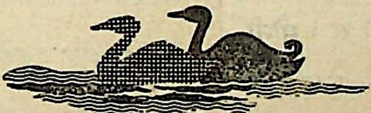

परलय क पानो

विवेकी राय

हिन्दी-विभाग डिग्री कालेज गाजीपुर

निचाटि राति। बारह बजे वाला रहे। हम एह परतीछा में बइठल रहलीं कि अब धरती डोली, अब असमान से अँगार बरिसी, चाहे कवनो ओरिं ले बाँस भर पानी उमड़त आई। पुरुब, पछिम, उत्तर, दखिन, चारू ओरले हरिकिर्तन क अवाजि आवति रहे। कहीं चउबिस घन्टा क कहीं अड़तालिस घन्टा क, कहीं महीना भर क हरिकिर्तन ठनाइल रहे। बुझा, धरती पर एक दिन खातिर सतजुग उतरि आइल बा। गाँव-गाँव में भगती जागलि रहे। मउवति क अनजान डरि सब का मन में छवले रहे। जहाँ चार जना बटुरा लोग त बतिआवे, आठ गरहि बटुरात बाड़ी स''''ना जानी का होई ?•••आ ओह दिन गरहि बटुरा गइली स। पहर भर दिन चढ़ले एके जगह आठो बाटुर हो गइली स। मौनी जी कहले रहलन ओह दिन कुछ होके रही। अमवसा के राति क बारह बजे जवन कवों ना भइल तवन होई। सजग होके सब सुत्तो''''गोरू-बछरू स बाहरे बान्हीं। हमार पड़ोसिया दीनाना जी ओ दिन सीढ़ी खटिया तर राखि सूतल रहलन, काहें कि जइसहीं परल क पानी आई त चट दे ऊ बड़ेरा चढ़ि जइहन। खाली हमहीं जाग रहलीं। रहि रहि के अखबारन क लोगन क कहलि बाति आँखि लटकि जा। सुरुज भगवान मेड़ा जइहन''कुल्हि गरहि उनुकरा के खा दउरिहन स। बचि जइहन त जइहन ना त दुनियाँ में लय ला जाई। बिन्हाचल पहाड़ फ जाई। ओकरा फटला क अवा कलकत्ता ले सुनाई''''कहीं-कहीं खे में से धूँआ उठी आ हरिनी बनि वनस्पति माई ई कहत भागि चलि कि हमरा के गंगा जी का तीरे बता चढ़ावजा।•••कहीं-कहीं महुआ गाँछि से बेसमय में महुआ चूवे ला आ तनिके में कुल्हि महुआ अंगार

जइहन स। आ एगो सुघर कहनी कहलि जा :—

एगों अदिमी धोती कीने खातिर बजारे जात रहे। कहाँ क, के रहे, कब जात रहे ईं, कुल्हि लीखल बेकार बा। बीचे रहता एगो बगइचा परल। ऊ एगो गाछि का नीचे पहुँचल तबले अवाजि आइलि—"रुक जो"

अदिमी ठमकि गइल। ऊपर देखलसि त केहू ना लउकल। फिनु ऊ आगे बढ़ल, बाकिर जइसहीं फाल डललसि कि तइसहीं फेनु ऊहे अवाजि—"रुकि जो रे, बड़ा जरूरी काम बा"

"बाकिर तूँ के हउव? लउकत काहें नइख?"

हम केहू होखीं, तूँ हमार एगो काम करु"

"कह कवन काम बा?"

"तूँ बजारे धोती खरीदे जात बाड़े न?"

"हँ त"

"त एगो धोती हमरो खातिर लेले अइहे"

"बाकिर हमरा पास में त खाली एगो पाँच रुपिया क नोट बा जेतना में एकही धोती मिल सकेले।"

"त का करीं, एगो धोती हमरा खातिर जरूर लेले अइहे"

"कइसे ले आइबि...।"

"बक-बक मत करु। जो आ धोती किनले अइहे"

ऊ बेचारा ओहिजा ले चलल। बजारे त आजु पहुँचही के रहे, आ बजार में धोती ना बिकाति होखे ईं कइसे हो सकत रहे। कुल्हि होखही वाला रहे, जेवन ना होखे वाला रहे ऊ ओकर नोट...पाँच रुपिया क एगो नोट दूगो कइसे हो जाई....एकदम दोबरी। बाकिर देखीं ईसर क मरजी। साचों जब ऊ नोट निकललसि त दूगा पाँच रुपिया क नोट कड़कड़ात निकललन स...एकदम टटका नोट...असली नोट। ओकरा बगइचा वाला क बाति खियाल परलि। रोआँ भर-भरा के खड़ा हो गइलन स। करेजा सनसनाये लागल। लिलार पर पसीना क ठोप चुहचुहा अइली स। ई बड़ा अब कठिन रहे कि ऊ एकही धोती लेके लउटे।

जब ऊ आपन धोती चदरा में गठिअवले आ अनजान बाबा क धोती हाथ में लिहले गाँछि तर पहुँचल त ओकरा ई ना बुझाइल कि धोती कइसे आ का कहि के दीं। खूब ऊ जोर से चिचिआइल—"ल हो आपन धोती"

गाँछि क पतई खड़खड़इली स।

कुछ सुरगुम मिललि आ एगो बड़ा नरमि अवाजि आइलि—"तनी उपरा चढ़ि के दे जा"

"नाही निचहीं ले फेंकत बानी"

"फेंकु मति, दे जो"

"डर लागता"

"डेरो मति कवनों हम भूत हईं, हम त देवता हईं"

"कवन देवता हईं महराज"

"हम समय देवता हईं"

"रउरा के दण्डवत"

"जीउ। ऊपर आके धोती दे जो"

ऊ अदिमी धोती खूँटि के गाछि पर चढ़ल आ एगो डँहनी पर जाके बोलल—"अब लेईं"

"नाहीं रे, तनी ऊपर चढ़ि आव।"

ऊ फेनु थोरे ऊपर चढ़ल "अब लेईं"

"तनी अउरी ऊपर चढ़ि आउरे।"

एह तरे ऊ अदिमी ऊपर चढ़त गइल। राति हो गइलि। अन्हार लपेटे लागल। डर का मारे ओकर जीव सोंकता हो गइल, बाकिर देवता क बाति टारो त कइसे टारो। ऊ फेड़ का सबका ले ऊँच डाढ़ि पर चढ़ि गइल त कहलसि—"महराज, लेईं नात हमार जीव सासति में परल बा"

"डेरो मति, खाली अब तनी पुन पर चढ़ि आउ। हमरा महिमा से तं भार हलुक हो गइल बा"

"अच्छा लेईं एहू पर आ गइलीं आपन हईं धोती लेईं हमरा छुट्टी देईं।"

"छुट्टी कइसन? धोती कइसन हम त दिगम्बर हईं रे।"

"तब महराज, हमके रउरा करबि?"

"तो के कुछु देखाइबि। धोतीं एगो बहाना रहलि ह।"

"का देखाइबि महराज?"

"तूँ खुद अपना चारु ओर देह

आ ऊ अदिमी अपना चारू देखलसि, आ जवन कुल्हि ऊ देखल करेजा दहला देबे वाला रहे। ओके अचम्भा का समुन्दर में देबे खातिर काफी रहे। पीपर का नियर ओकर देहिं थर थर लागलि।

"ओह, का कहीं महराज। ओर आगि लागलि बा। लहरि अ चूमति बाड़ी स। समुन्दर क पहाड़ नियर उमड़ल चलल बा। पहाड़ टूकी-टूकी होके छि बाड़न स। बरफ क आन्ही च बा। धरती काँपति बा। लोहू

बा। लोगन का चिचिअइला से कुल्हि दिसा काँपति बाड़ी स। कहीं कुछ पागल लोग आपसे में जूझत बाड़न स। सभ्यता खण्डहर होति जाति बा। बिजुली चमकति बा। कान फाटत बाड़न स। सतियानास क ज्वालामुखी फूट रहल बा। अंगारन क बवण्डर पृथिमी के तोपले चाहत बा। अब नइखे देखल सपरत महाराज...ई कुल्हि हमरा के काहे के देखवलीं ह।"

"सुन ई कुल्हि आठो गरहि का बटुरइला क फल ह। अइसने कुल्हि होई। अब तूँ जा सकेले।"

ई त रहलि कहनी चाहे अफवाह, जेवना का मोताबिक संसार लय हो जाई। इ ना हम कहि सकीं कि एहमें साँच क हाथ केतना रहे, बाकिर लोग का मन में जेवन डरि हो गइल रहे ओकर ठेकान ना रहे। हमरो करेजा दहसत रहे। एही खातिर बइठि के परलय क पानी खोजत रहलीं। परलय क पानी आवे वाला रहे। नीचे क धरती ऊपर होखे वाली रहे। कहे-सुने में त ई बाति चिकारी नियर लागति रहे, बाकिर के अइसन रहे जेकर करेजा ना धड़कत रहे। मेला ना लागल रामरेखा घाट पर जहाँ लाखन मरद-मेहरारू नहात रहलन ओहिजा मेला का दिन इनल-गिनल अदिमी लउकलन आ पण्डा लोग दिन-भर माछी मारत मारत रहि गइल ह जा।...आ देखीं इहे लीला कि परलय क पानी चलिए आइल।

ठीक ओही घरी हल्ला भइल कि पछिव ले एक ताड़ ऊँच परलय क पानी उमड़ल आवत बा। हम सोचलीं मौनी जी क बाति अब साच होखे जाति बा। हल्ला अइसन फइलल कि पछिम टोला में परलय क पानी क परतीछा हमरे नियर कोठा पर बइठि के शिवपरसाद बाबू करत रहलन। उनुकरा कान में हरहराइट क अवाजि पछिम ओर ले आइल। ऊ अपना पड़ोसिहा बाँके लाल से कहलन—"पछिम का ओरा ले बड़ा जोर क हरहराइटि सुनाति बा" उनकर ई कहल थोरकी दूर पर पलानी में बइठल सकलराम जी सुनलीं त बाँके लाल से पूछलन कि शिव परसाद बाबू का कहत बाड़न? बाँके लाल जबाब दिहलन—अरे महराज, पछिम का ओर ले बुझात बा कि हरहरात पानी आवत बा।"

ई बाति सुनि के सकल राम चिचिआये लगलन। हे भइया......

अरे भाग जा हो...भाग जा...एक ताड़ ऊँच पानी पच्छिम ले आवत बा... जल्दी भाग जा...।" आ हमरा टोला आवत आवत ई बाति अइसन हो गइलि जइसे खुद शिव परसाद बाबू अपना आँखि से पानी देखि के भागत आँवसु।

एक ताड़ ऊँच पानी...गाँव का गोइड़ा आ गइल बा...जल्दी भागि चल जा...।

अब का रहे! हलहल मचि गइलि। लोग भागे लागल। एही हल्ला में हमार पड़ोसिहा दीनानाथ जी खपड़ा पर चढि गइलन आ देखते चिचिअइलन—"अरे भइया! खाली पानी नाहीं आगि क दूगो लुकाड़ गरिजत आवत बाड़न स...इहहे ला न, अब त गाँव में पइठि अइलन स।"

गाँव भर में भागल-पराइल मचि गइल। एही बीच में एगो जीप हमा दुआर पर आके खड़ा होगइलि। आ लोग जानल कि परलय क पानी हरहरात रहल ह ई हरहराहट ए जीप क रहलि ह। आ ऊ लुकाड़ ओकर आगे क दूनो बत्तिन क रोसन चमकति रहलि ह। आगे झण्ड लहरात रहे ऊपर लाउडिस्पीकर भोंपा बान्हल रहे। एक जाना आगे बढ़ि के पूछलन, काहें से कि ई सा रहे कि वोट माँगे ऊ लोग आइल बा "रउरा सभे कवना पाटी क हईं जा?" "हमनी का कांगरेस पाटी क हईं जा!"

●

(पन्ना १ के बाकी पढ़ीं)

बेचारा बहरी निकलल। दूनो जना खूब रंग लूटत रहे लोग।

राम जी के मरजी, दूनो चपरासी दोस्त रहलेस। दूनो एके लगे जूटि के कहत रहलेस, 'भइया, पूछ मत, हमरा हाकिम से तोर हाकिम अच्छा होई।' त ऊ धुरियाईले मुँहे जबाब दिहलसि कि हमरा वाला से तोर वाला अच्छा होई। अच्छा खराब के लेके बुझाइल कि ऊ गिधवा मिसान क दिहेस।

अपना अपना हाकिम के गुन ऊ कहे लगलेस। सुन, हमार वाला हाकिम अतना चपाट बा कि एक ठो दसटकिया नोट दे के कहता कि एग हवागाड़ी खरीद ले आव। ओका अतना ना बुझाइल हाकि आज अतवार बा। सब दोकान-दउ बन्द रही।'

'बस कर बुझाइल। अतने से घबड़ा गइल बाड़। हमार सुनब त हवा गुम हो जाई। हमार वाल बोला के कहता कि चपरासी, दे त आव कि हम क्लब में बानी ओह जाहिल का ई ना बुझाइल कि आफिस में फोन काहे खाति लागल बा। ऊ ओहिंजे से पू लिहित की ऊ कहाँ बा।'

●

कहानी :—

सफरी

मधुकर सिंह

घरहरा, आरा (बिहार)

एगो मरद-मेहरारू । लाइन में खाड़ रहन । उनकर एगो जवान लड़कियो रहे । पहिला बस छूट गइला के बाद बुझाइल जे ऊ लोग बेचैन बा ! लड़का हरमेस भीड़ से बचल चाहत रहे। पीछे से लोग ठेले त ऊ सिहर-सिहर जाय । ऊ आपन छाती के दहिना अँकवार से घेरले अगिला भीड़ के रोकले रहे ।

मेहरारू के कपार प गठरी कवनो हलुक ना बुझाइल । तबो ऊ उतारत ना रहे। बारी-बारी तीनों टोवस कि कपरा प बा कि ना । मदरा घरी-घरी छँवड़ी का ओर ताके आ गुखाए लागे । तबो छँवड़ी डेरइला लेखा बुझाय ना ।

मुंह लुकान ले इहे मजमा रहल । बस आवे आ चल जाय । बुझाय जे एह तीनों जाना के परालबध में आजु बस नइखे । भउगी सिसके लागल । मरदा ताके आ आँख गुंड़ेरे । मतारी के चुप करावे के ओकरा मोका ना मिले । अँकवार घेरले-घेरले ओकर बाँह चढ़ गइल । तबो मुदा भीड़ कमे ना । बाप जब आगे गइल त ओकरा कुछ सहारा मिलल । पीछे घूमके मतारी के चुप करावे लागल । अँचरा उठा के मतारी के लोर पोंछत रहे ।

अन्हार भइला प पीछे से कवनो सीधे हाथ लफा देलस । खाली ऊ सिसकल । बाकिर मतारी के नजर ना पड़ल ।

छँवड़ी के चेहरा लाल हो गइल । अन्हार में ओकरो ना बुझाइल होई । तीनों के हाथ एके बेर मतारी के कपार प गइल त धक से लागल । ओकरा कपार से मोटरी गाएब रहे ।

तीनों ओहिजे थस दे बइठ गइलन स आ लगलन स भोकार पार-पार के रोवे । लाइन टूट गइल आ ओकनिए के चुप करावे लागल । जतने लोग समुझावे उतने तेज रोव स ।

बाकिर भीड़ का करेन भी कवनो जमल ना रहे। ओकरो अदमिए के रहे। एह से सभे आपन डियूटी समझल जे ऊ तीनों अंजान इदिमी के मोसिबत में हाथ ना बँटावल अनेआव बा। कुछ लोग थाना में सनहा करे गइल।

तले बस आ गइल। एह बेर लोग पहिले एही तीनों जाना के चढ़ा देल। फेर पाछा से अपने ठूंसाए लागल। भीड़ का मारे कनडक्टर नकिया गइल। ऊ ड्राइवर के मना क देलस। आ दूनों नीचे उतर के टहरे लगलन स। लोग समुझल जे बीड़ी पिए खातिर उतर गइल बान स।

भीड़ का मारे सकसा गइल रहे। पैरों बदले के जसन ना। मरदा-मउगी दूनो कसहूँ छुँवड़ी के घेरले रहे। छुँवड़ी अँकवारी में मतारी के कसलेलस। सभकर नजर ओकनिए प रहे कि कवनो तकलीफ त नइखे। तकलीफ त एतुना रहे जे गतर-गतर कबरल जात रहे। तबो कवनो आदमी आपन हाथ छुंवड़ी के छाती प ले पहुँचा देले रहे। सकफक में मिजाज पर गइल।

घंटन बस ओहिजे ठाढ़ रहल। ड्राइवर कहे जे जबले आदमी बस के छावनी से ना उतरी, तबले इंजिन के एको डेग घुसुकल मुश्किल बा।

गते-गते लोग छुंवड़ी के मता
का भीरे से घींच लेलस। मतारी
मरदा से ना कहलस। बाकिर छुंव
रह-रह के चिलाए। लोग खम-
हो जाय।

बस कसहूँ ससरल। लोगन
मिजाज में मिजाज आइल। इची
लागल त मरदा-मउगी के मन
टनमनाइल। बाकिर प्राण ओएही ठं
रहल गइल। मोटरी का अपसोसे या
अवहत रहल। छुँवड़ी के इ हा
देखलो प मोटरी का अपसोसे फुर्सत
मिलल जे ओकर तनीं जान बचाईं।

छुँवड़ी के अबके बुझाइल
ओकर चोली अब कवनों काम
नइखे। माई पूछो त का जवाब
एकरे डर से ऊ काँपे लागल। अ
पहिर के चलल रहे। एह साल अ
सोला सकेला। ऊ कसहूँ अँचरा
तोप देलस।

दोसरा के मोटरी टो-टो के ऊ
कर स। कबो-कबो मउगी के होखे
कवनो के गले से घींच लीं। तब अ
वाला खातिर अपसोस ना रही। सां
एगो के घींच लेलस आ ओहो प
गइल।

ओकर खुशी के ठेकाना ना

[बाकी पन्ना १६ के नीचे पढ़ीं]

उड़नो-बइठनो माँछो

सर्वदेव तिवारी 'राकेश'

अध्यापक–महाराजा कॉलेज, (आरा)

रामरतन अपना कॅलेजिहा सँघतिया बीरू के कनखिये से लगे बोलाइ के उनुका कान में कुछु ए भाव से फुसुफुसइले कि सभकरा साफे बुझाइल कि अबो बखेड़ा बेबढ़ले ना रही। बीरू रतन के बाबू जी के कान से आपन मुँह सटाइ के जसहीं कुछु कहे के चहले कि ऊ पहिलहीं से कुल्हिये समुझला-जनला अस बरा उठले—एइजे नानू देखिहें। समझे इज्जति होला। कवनो बात कायदा से कहल जाला। तम्मू में चल लोग, हम कहीं-सुनी ले नू।"

रतन उठि के जूता पहिरे लगले। पिताजी के कहनाम से उनुकरा मन के बात झँवाइलि ना अउरी फरिछाइलि; तँवाइलि ना अउरी तिंताइलि, सोझिआइलि ना अउरी अझुराइलि। बात के गिरहि जँतइला से अउरी कसाते गइलि रहे अब कियो चमरगाँठ अउरी चँउरइबे कइलि। ऊ अरुअइला पीठा निहन मुँह कइले उठले आ जूता पहिरि के असवारी में जाइ बइठले।

भीखू सिंह के छोटकी लइकी के अजु बराति आइलि रहे। अपना अवकाति से पाँच डेग आगहीं बढ़ि के तिलक-दहेज के कउल-करार भइल रहे। हित-नाता, भर-भवद्दी, गाँव-जवार, टोल-परोस सभे नेंवताइल रहे। बड़ा समकठा जुटल रहे। भीखू हिम्मत जवरियाइ के खरचा पलास देले रहनि। छत के मुड़े के चारू कोना भोंपू अवंज लेसले रहन स। दुआर प एगो सुघर बनल मचान पर रोसन-चउकी आपन हाफ धुनले रहे।

बरिआतियो साँचों के आइलि रहे। तीस गो हाथी, आठ गो ऊँट, बावन गो घोड़ा, तिनि पालकी आ आठ अँसवारी, दू जोड़ा बाजा, तीनि तम्मू आ तीनि गरोह नाचो रहे। साँझि खा घोड़-दवल होखे लागल त पाँच कोस के जवार अँड़े-बच्चे-सहित लटकि आइल रहे। डेढ़-दूइ घंटा जमि के घोड़ा हरिगा भगले स, हाथी चिघरली

स आ ऊँट बलबलाइले स। बाजा वाला राग-हाथ फेरि-फेरि कमाल के फाट देखवले स।

बरिआति जब दुआरे लागे चललि त खोरी में परे वाली कुल्हिये दुआरि से मेहरारूहि के झझकारत राग देह-मन के रोआँ गनगनावत रहे :—

'आपन खोरिया बहार ए कवन बाबा, दूलह आवसु आजु रे,

झारि गलइचा बिछाव ए कवन भइया दूलह टारसु पाव रे।' दुआर-पुजाई के बेरा लाउडस्पीकर, दू-दू जोड़ा बाजा, रोसन-चउकी, मेहररूई गीति आ पंडित जी लोग के मंत्रोच्चार के बीचे ले चिरत बन्दूकन्हि के ठाँय-ठाँय घाँय-घाय एगो दोसरे माहौल मँडरवले रहे। एके संगे अतना कन फरवा-रागन्हि में डूबल कवनो भुलाइल आनन्द के सभे पकड़े में बुझा कि अझुराइल बा। थोरे देरि खातिर रतन के बाबुओ कुल्हिये भुलाइ के एगो सपना में डूबि गइल रहन। बाकिर जब रतन भीरू के बोला के कुछु कहले, तबे ओहू बेचारू के सपना टूटि गइल। ऊ अब साँचो के धरती प खड़ा रहले, जवन तवा निहन जरति रहे। सइ-सइ बिछी के टूँड़ गड़त रहे।

कहे के त ऊ जोरे से कहि दिह कि 'तम्मू में चल लोग हम कही-सुनी नूँ' बाकिर उनुका साहस के चेट दी परे लागलि। तबों सोचले कि मी सिंह का ई काम त करहीं के परी। मों मोताबिक दिहले से ना तू हो जाइ पँसघा-बटखरा के फरक बा। लइ कॅलेजिहा बा। जब ऊ ए ही बात ए जिदिआइले बा त ऊ काहें ना करिहें ना करिहें त·········। ऊ सँभरले अ बेटिहा के पंडित जी से गवें कहि दिहले "दूलहा आ उन्हुकर दू जाना सँघति कनिया देखे के चाहता लोग। रउ मालिक से कहि के पहिले एकर इन्तजा करा दीं, ना त······।" आगे कहाइ ना बाकिर पंडित जी बूझि गइले।

दुआर प जलखई-वाइ के बा बराति तम्मू का ओरि सरकलि मेहरा अउरी जोर से गावे लगली स।

बरिअतिया चललि पराई-
ए री! ना, ना, ना।
अब गदहा का छाने छनइबो-
ए री! ना, ना, ना।

अगिली दोसरकी दुआरि से अउ जोर से सुनाइल—

भागल जाले, भागल जाले,
भागल जाले रे,

हमरा भइया के सार–
ससुर भागल जाले रे।

आ रतन सरकत अँसवारी में बइठल मने-मने कउँचत जात रहे—'देखीं हमरा के गदहा का छाने के छाने ला।' ई ना होई कि बेपढ़ल आ कुचकुचवा लइकी से हमार केहू गाँठि जोर दी। ओ आदिमी का झूठ बोलला के का परे आ भा बोललहीं होखे त देखहीं-देखावे में का हरज बा।'

भीखू सिंह का घरे हलचल मचि गइल। पहिले त लोग जानल कि एह बात में कवनो दम नइखे, बाकिर जइसे-जइसे बतरस बढ़ल ओइसे-ओइसे बात के बतंगड़ में बाते बाते बात धन्हाइ गइल। केहू आँचि त केहू टाँचि जाके बतिआ देइ। केहू लगाहि बोलि आवे, त केहू टिमोली मारे। केहू गभिया मारे त केहू मेहना, करखा-करखी, हुमचा-हुमची बढ़ते गइल। रतन अपना जीदि से जवो भरि घुसुके के तेआर ना रहनि। कँलेजिहा इआरो लोग आगी के खरहे रहे। जबे दवँक तनि सेराये लागे कि ऊ लोग दू बून घीव चुआ देसु।

रतन के बाबू जी जिअते मुअल जात रहन। तिलक से लेके दुआर-पूजा तक ऊ बड़ा-बड़ा उतजोग क के रतन के मनवले आवत रहन। उनुका बिसवास रहे कि एही तरे एह गाड़ी के ढँकेलि ले जइहें, बाकिर एहिजा आ के ओकर चाका अतना गहिड़ार धँसि गइल कि उनुकर कवनो अकिलि काम ना करति रहे। ऊ रतन के समुझावे खातिर उठा ना धइले। बाकिर पथल प के चिचिरी के मेंटा ना सकले, करिया कमरा के साफ ना क सकले।

रतन के दूनो ओरि के सभे समुझावल-हित-नात, गुरू-उपरोहित, भाई-बन्धु, बूढ़-जवान, बाकिर सभ बेकार। ऊ सभ के बात तारवा प धइले जासु। भीखू सिंह बेचारू सभ किरिया-कहट खा-खा के सफाई देसु-बबुआ, हमार लइकी चान ह, चान। तोहरा से ओकरा कवनो मेल नइखे, बाकिर भावी के का कहीं। आजु तक ले अइसन कबो भइल नु देखनीं नु सुननीं। ई अभिभो के बात कइसे हो सकेला। इज्जति प बाटा मति लगाव····।"

"देखीं बाबू साहेब, राउर लइकी चान ह, त चान के छिपाइ के के राखेला। देखाइ काहें नइखीं देत। बिना देखवले अउरी कवनो तीसी तेल ना भेंटाई।" रतन के एगुड़ा सँघतिया के बात अँड़रे बसाइ उठलि। तले दोसरका कटइला प नून मलि दिहलस—

"अइसन उजुबुक त गाँवे ना देखनीं, दूआर! केहू अपना होखे वाली पत्नी के देखले चाहता त एमें केहू का एतराज होखे के चाहीं।"

"खैर, छोड़ भाई! बाबू जी जवन गुनले रहले हा, तवन करत-करावत बाड़े। ना त हम एहिजा आइले काहें के रहितीं।" रतन ढेंकरले।

बाबू जी तड़ाकदे बेलि उठले—"त, हम का तोहार बुराई गुनले रहलीं हाँ। आरे, होस करु बबुआ, ढेर बउराये केना। ते अपना कवना बहिन के मुँह देखाइ के बिहले बाड़े? अपने निहन दोसरो के मजबूरी के समुझे के चाहीं......।"

"किरिपा क के अपना अकिलि के कमाल रउवा रहे दीं। हो गइल हमार बिआह। बीरू, चल अब चलीं जा।" रतन फट-से कहले आ तड़-से तमतमाइ के चले खातिर उठि गइले। लोग ध के बइठावल।

बइठे के त उ बइठि गइले, बाकिर तमासा उड़से लागल। सभे घबड़ा उठल। नचनिया, बजनिया भा अउरी पवनिया आपन-आपन साँगह सरिआवे लागल। जवन आजु तक ना भइल रहल हा उहे होत अपना आँखी से देखि के भीखू के भिहिलाइल भाव भरभराये लगले स। बानी के कठरुन्ह हो गइल, देह के कठया मारि दिहलसि, टके प टँगाइल आँखि में लोर लरुआ के छलछला उठल। ऊ अपना के एग अथाह समुन्दर में गचकत पवले, जवना में चारू ओरि से उठत चारि-चा बाँस के बउराइल लहरि चटकनि आव रही स आ सूँस-घरिआर लीले खाति दाँत बवले रहन स आ ओहनी का बीचे ऊ अपना जान प नटिका नधाइल देखि के अबे-तब में 'जय जय सियाराम होखे जात रहन। 'कुसुमी के हर लागल हाथ तँवा जाई' ई सोचते उ फेंड़ के कटला डेहुँगी अस धाँइ-से रतन का गोड़ पर पगरी ले ले गीरि परले आ उनुका मुरुछा आ गइल। बेटिह ओरि के सभकरे आँखि गिलाइ गइल। केहू सुँसुके लागल, केहू फूँका फारि दिहल। रतन के बाबुओ डबडब गइले। उड़सहरि थथमि गइलि। भगाहटि बेलमि गइल। बाकी रतन के सुर सेराइल ना, बलुक गिलाइल आँच फेंकत बरि उठल—"रउआ सभ बात काहें नइखीं बूझत? जिनिगी से खेलवाड़ काहें करतानी? हम हजार बार कहि चुकनी कि जवले पढ़ला के सरटफिकेट आ लइकी के रूप ना देखावल जाई

तवले नहछू के पानी जाउ भा गुरहथी हो जाउ रतन बिआह का चउका पर ना बइठिहें।"

"आपन हारल आ मेहरी के मारल हम केकरा से कहीं दादा। ओह," कहि के उनुकर बाबूजी कपार ठोकले। एही हूम-जूम आ ऊमचूम में सभे डूबल रहे कि एक ओरि के भीड़ि चिरत कुसुमी आ के खड़ा हो गइलि। ओकरा सँगे ओकरा बड़की बहिनि के देवर रघुराज रहन, जे असवे इंजिनियरिंग के इम्तहान देले रहन। रघुराज आगे-आगे आ कुसुमी पाछे-पाछे। उहे हरदी लागल देह, पुरान लुगा, खूलल माथ, भिंजल आँखि आ काँपत देह। उमिरि सोरह-सतरह, रंग धप-धपगोर, जवना पर हरदी, सोना पर अउरी पानी चढ़ावत रहे, नाक-नकसा अइसन कि देख निहार के घरनिहार लागे, दुहड़िया देहि प्रलथरल-गदराइल, जवानी सचहूँ "सुन्दरता कर सुन्दर करई" के परतोख बुझात रहे। कवनो बनाव-सिंगार नाहिंओ रहला प ऊ रंभा आरति से रतियो भरि कम ना लागति रहे। उ ऊ फूल बूझाति रहे जवन अबे-अबे टटके फूटल होखे बाकी भँवरा के ओप मँड़राहूँ के हिम्मति ना परल होखे। ऊ आवते अपना बाबूजी के सँभरलसि। बराति में सन्नाटा छा गइल, जइसे एकाएक सभके धुकधुकी बन्द हो गइल होखे। हजार-हजार आँखि दुइ आँखि पर बिछिलाये लगली स। सभे मन ही मन अगराये लागल कि अब का, अब त रतने मधिम परि गइले। बाकी केहू के जीभि ना हिललि। बोलले त रतन के बाबुये—"अब का मुड़ी नववले बाड़, देख, पूछ। हो गइल कि ना आँखी में काजर, बीरू। हम धूप में बार ना पकवले रहनी हाँ। बोल बीरू, बोल। बड़ा बिछिली प धकिआवत रहल हा। अब बाछी काहें मरल।"

"एँ, एँ, त हमरा के...का कह तानी। कह हो......र......त........न भा...ई। ठी...ठी.......ठीके त बा। त...त...त होखो...आगे के टोटरम।" बीरू बड़ा मुसकिल से दबले जबान कहि गइले। रतन लजाइले बीरू से गवें कुछु कहले आ बीरू फेनु सँसरले—आ.......हँ......पढ़लो के सबूत देखि लिआउ...।" कुसुमी बीचे में बरीसि उठलि—"हम कबो के फेल ना हईं आ हिन्दी-संस्कृत में, केहू के पंच बदि के, अपने सम कुल्ही सँघतिया एक सँगे बहसो कइ लीं। हम इसकूल के मुँह

नइखीं देखले, तबो...। ऊ अउरी ना जाने का-का कहिति बाकी कहि ना गइल । उ अपना दिल के आन्हीं-बवंडर के बेग के रोके में डूबि गइलि । फेनु सभ सभकर मुँह ताके लागल । रतन-बीरू पर नौ-नौ घइली पानी परल रहे । बेहयो का कबो लजाये के परबे करेला ।

अबकी पारी के चुप्पी के तुरले बेटिहा के पुरोहित जी—"रघुराज बाबू, त अब चलीं, बबुई के लिया चलीं। दुलहो के धनुस टूटल नू। बिरति भइलि । अब आगे के काम देखाउ ।" तले कुसुमी के बेकाबू होत दिल के बान्ह टूटि के बेपरद हो गइल । उ गरिजि उठलि—"अब कहाँ चलीं, महाराजी, । अब बिआह ना हो हम इन्हिका पसन्न भले होईं, इ हम रत्तिको नइखन भावत । चाम ची वाला चमार के सँगे हमार गाँठ जोराईं, बाबू जी । आ रउवा घबड़ मति करीं । हमार बिआह एही लग आ आजुए होई ।" इ कहि के रघुराज सिंह के हाथ पकड़ि के उनक आँखी में आँखि डालि के तिक लागलि । रघुराज अगराइ के अ गरला-अस हँसि दिहले । सभकर सप एके सँगे झनझनाइ के टूटि गइल केहू का लाल लउकल केहू करिया । रतन के थोबर मुँह पर ए माँछी उड़ि के बइठे आ बइठि के उ लागलि रहे ।

[पन्ना १० का बाकी पढ़ीं]

अरदा के घरी-घरी धकियावे । बाकिर मरदे बुझत ना रहे । मउगी गते छँवड़ी का ओर बढ़ा देलस । छँवड़ी अँचरा के मोह—लाज छोड़के मोटरी सँभरलस । आ घरी-घरी टोवे लागल । ओकरा अतुना खुशी त रहले रहे कि आपन मोटरी अब भुलाइल नइखे ।

बाप अभी ले मोटरी के बारे में जानत ना रहे । एह से ओकरा छंवड़ी के चिन्ता लागल रहे । ऊ एक जाना के हाथ पकड़ के बइठल रहे जे बस लगते इनका के मारब । मउजी कान भीरी मुँह सटा के कुछ कहलस त ऊ जेकर हाथ धइले रहे ओकर छोड़ दलस और मेहरी के कस के पकड़लस ।

ऊ तीनों फाटक का मुँहे घुसं लगलन स । छंवड़ी खातिर त मुसी हो गइल । बाकिर एक चीन रहे एने कावर कवनो अइसन अदमी रहे । अब जे कवनो हाथ आवे त ह के दाँते ध लेवे ।

मोटरी के छाती का अन्दर दबव से ओकरा निफिकिर हो जाए के मो मिलल । रह-रह के इहो बुझाए अपना मोटरिआ से जादे माल ए में होखी ।

बस जब लागल त सबसे पहि ओकनिए के तीनों उतरलन स । अ एक सुरुकिये चल देलन स । कई जा उतरते ओकनी के खोजल, बाकिर ओ अन्हार में कतहुँ पता ना चलल ।

केकरा पर करबि सिंगार

रामवृक्ष राय 'विधुर'

अमरूपुर, गाजीपुर।

जवार में केहू के मजाल ना रहे कि भोला पहलवान का सोझा खड़ा होखे। जब ऊ कवनो बाति पर खिसिया के सनकी हाथी नीयर खड़ा हो जाँसु त नीमन-नीमन नवहन के साँसि फूले लागे। मीठू-ओस्ताद का अखाड़ा में बइठक करे लागँसु त उनुका गोड़ का नीचे गड़हा हो जा, पसेना से जमीनि भींजि जा, बाकिर थाकँसु ना। मीठू ओस्ताद भोला के होनहार देखि के, छाती फुला के कहँसु–'ईहे एगो पट्ठा बा कि हमार नाँव उजागर करी।'

सचहूँ के भोला पहलवान ओस्ताद के नाँव चमका दिहलन। जब दशहरा मेला में भूलू पहलवान जवार भर का पहलवानन के हाँकि दिलइन आ हाथ मिलावे खातिर केहू तइयार ना भइल त भोले पहलवान अखाड़ा में उतरलन। भूलू नवछेटिया पहलवान भोला के देखि के हँसि के कहलन, 'सुनले रहलीं हँ जे एह जवार में नीमन-नीमन पहलवान बाड़न स। हमरा ई मालूम ना रहल ह कि हमार नाँवे सुनि के सभ लँगोटा धइ देईं।'

भोला अखाड़ा के माटी हाथ में लीहलन आ छरकि के अखाड़ा में आ गइलन—"गुमान ना करे के चाही। गुमान भगवानों का ना नीक लागेला।' भोला सलामी लेके पैंतरा बदलि के कहलन।

"हम गुमान नइखीं करत। बाकिर बाघ आ बकरी में लड़ाई कइसनि ?

"काहें, तहरा मालूम नइखे जे हाथी के मउवति चिउँटी का हाथ में होले ? मैदान में आव तब पता चली, हम मीठू ओस्ताद के पट्ठा हवीं।'

भूलू आपन देहिं बटोरि के ताड़ी ठोंकि के भोला से हाथ मिलवलन। हाथ मिलवते अँकवार में दाबि लीहलन। बाकिर एह से पहिले कि ऊ भोला के ले के नीचे गिरँसु, लोग देखल कि ओह दइत अइसन पहलवान का नीचे भोला

थोरे तिरिछा भइलन, आ उनुकर लंगोटा धइ के उठावे लगलन। भूलू के गोड़ उठि गइल। देहि का भारी बोझ से भोला के मुँह लाल हो गइल। थोरही घरी में भूलु के अपना कान्हि पर उठा लीहलन आ ओइँजे से लंगी देके फेंकलन त भूलू चारू पाँवें चित्त हो गइलन।

जवार में भोला के नाँव बाजि गइल। गाँव के मुखिया निहाल ५०) इनाम दिहलन।

× × ×

ठुमरी भोला के देखलसि त देखत रहि गइलि। कसइली नियर कसलि देंहि, केदली का खम्भा नियर जाँघि, बीछी का टेंगुरा नियर अँइँठलि-अँइँठलि मोंछि। गर में गुलबन्द नियर लपिटाइल लँगोट। कउड़ी नीयर बड़ी-बड़ी आँखि। भोला के सूरति ठुमरी के आँखि में गड़ि गइलि। ठुमरी उनुका सूरति पर एक दम लट्टू हो गइलि।

मेला का दू-तीन दिन बाद निहाल का घर में डाका परल। गाँव भर के आदमी बिटुराइल रहे। बाकिर केहू के फरह ना परे कि आगे बढ़ो। जइसे जना जे सभ का थथमा लागि गइल बा। एही बीच में भोला के आवाज सुनाइल—खड़ा का बाड़ जा। तमा
देखे आइल बाड़ जा?'

ठाँय! ठाँय!!

दू हाथ लउरि चललि कि डाकु
के दल जहें से तहें काई नियर फां
गइल। भोला घर में पइठि गइलन
निहाल के माई छाती पीटि-पीटि रोवा
रहली। ठुमरी एगो घर में कोठिला
आड़ाँ लुकाइलि रहे। ओकर देहिं
का मारे पीपर का पतई नीयर थर-थ
काँपति रहे। मन धुवां हो गइल रहे
भोला के देखि के जीव में जीव परल

“अब का डेराइलि बाड़ू।” भो
ठुमरी का निगिचा जाके कहलन। ठु
आँगन में आ गइलि, ‘आरे बा
बाप! करिया-करिया भूत नियर रहु
स। देखि के रोवाँ फूटे लागत रहुवे
ठुमरी भोला का आँखि में आँ
डालि के कहलसि, ‘तहरा के देख
हँ तब जीव में जीव परल ह।’

× × ×

डकइती का बाद भोला के इ
अउरी बढ़ि गइलि। गाँव के न
उनुका के दिनभर घेरले रहँस। नि
का दुआर पर साँझ-सवेरे दूनो
बइठकी जमे लागलि। निहाल
कुल्हि लइका भोला से घुलि-

गइल रहलन सँ। ठुमरी एकदम मुँहलग्गू हो गइलि रहे। कहीं डहरी-डाँड़े भेंट होखे त 'बम भोला' कहि के रीगावे। बाकिर भोला कुछु बोलँसु ना, मुसुकिया के आगे बढ़ि जाँसु।

काँचे उमिरि में भोला जवार का कुल्हि पहलवानन के पछारि के काफी नाँव कमा लीहलन। मीठू ओस्ताद के पगरी उनहीं का कपार पर बन्हाइलि। देहात का हर गाँवन से नवहा उनुका अखाड़ा पर जोर करे खातिर आवँ स। भोला के लेके बरहना गाँव के नाँव जिला भर में फइल गइल।

× × ×

दूसरा साल फेनु दशहरा के मेला लागल। धान के पौधा माथ पर मउर बान्हि के हँसे लगलन स। जइसे जनाजे धरती सोना के चादर ओढि लेले होखे। गाँवन में जेवना साल खेती सुतरेले, तिहवारनों में रंग आ जाला। जनाजे मेला में मये देहाति उमड़लि आवतिया। आदमिन का मारे सावाँ-सुधि ना रहे। अंग पर अंग छिलात रहे। दूकानों हर साल से अधिका आइलि रहली स। चारू ओर रस के बरखा होति रहे। कहीं हुरुका पर नाचि होति रहे, त कहीं बिरहा जमल रहे। का सोहासित लागत रहे—जनाजे सरग उतरि आइल बा।

ठुमरी मेला देखि के लवटति रहे कि भोला के देखि के कहलसि, 'एगो हमार काम करब ?'

"एगो ना, सइ गो !' भोला ठाढ़ हो गइलन, 'कवन काम बा, कह ?'

'कुछ ऊ ना। अइसहीं टोकि दीहलीं हँ, 'ठुमरी हँसि के कहलसि, 'गाँव पर कब चलब ?'

भोला बिना कुछ जवाब दिहले—आगे बढ़ि गइलन।

× × ×

सूरज डूबि गइल रहे। पछिवँ के अकाश लाल रंग में रंगा गइल रहे। मेलहरू मेला देखि के लवटत रहलन सँ।

'आ दूर करु ! चलत-चलत पाँव पिरा गइल। अबहीं केतना दूर गाँव बा ?' जोखनी बाँया हाथ के कँहतरी दहिना हाथ में लेके पुछलसि।

'चलि आईं। कउवा खोंच का बारी में आगइल बानीं जा।'

'केइ, ठुमरी ?'

'हूँ।'

'तूँ निहाल के लइकी हविसि नूँ, बचिया!'

'हूँ।'

'तोरे नूँ पर साल अतरवना बिआह भइल ?'

ठुमरी कुछु ना बोललि। कमला जेवन ओह गाँव का प्राइमरी बालिका विद्यालय में अध्यापिका रहलीं—कहली, 'हँ, इनहीं के बिआह पर साल भइल।'

'बाची का करम में आगि लागि गइलि! कहाँ १६ बरिस के सुघर-सुभेख लइकी आ ४५ बरिस के अरनाठ बर! जइसे बनाला जे निहाल का आँखि में काचा बइठि गइल रहे।

बतिआवते चलते बरहना गाँव निगिचा आगइल। ठुमरी घरे पहुँचलि त देखलसि कि ओकरा दुआरा पर बहुत आदमी बइठल रहे। सुखारी कहत रहलन, 'भाई, गजब हियाव के आदमी रहलन ह। जवार-पथार हाय-हाय करत बा।'

भोला के मुअल सुनलसि त ठुमरी के देहि एक दम सुन्न हो गइलि। ओकरा लेखे दुनिया में अन्हार हो गइल। देहि पर के गहना जइसे जना जे ओकरा खातिर बोझ हो गइल बा। हाथ के चूरी फोरि दिहलसि।

दूसरा दिने सवेरे ओकर भाई चूं से खाली हाथ देखि के पूछलसि, 'चूं का हो गइलि रे? चूरी एहवात मेंहरा के सुहाग ह! जाके पहिरि ले।'

ठुमरी के आँखि सलोर हो गइल स। दूसरी ओर मुँह कइके कहलसि 'का होई चूरी पहिरि के। अब ए दुनिया में हमार के बा जे देखी?'

जिरिया ठुमरी का ओर घूमि देखलसि। ठुमरी आँखि से साव भादो का बदरी नियर पानी बरिसत र

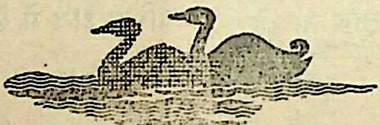

बकरी चरली स

दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती

शिवाला, वाराणसी

राजा क डुग्गी सुनि के रातभर में हुड़होर मचि गइल रहे। बहुत लोग अचरज में बूड़त-उतिरात रहे, बाकी कुछ माने मतलब ना समुझे। कुछ लोग का लालच का मारे जीभि ले लार तपकत रहे। केतने लोग मन का वेगवान रथ पर चढ़ल वासना का सड़कि पर सरपट दउरत रहे।

राजा क डुग्गी रहल कि हमरा पाँच गो पोसुवी बकरिन के अन्नगुतहाँ ले साँझि का बेरा तक जे भरपेट चराइ के ले आई ओकरा के हम इनाम आ खुशवखती में आधा राज दे देबि, बाकी साथहीं ईहो शरति बा कि जे चरावे खातिर बीरा चबाय ऊ समझि ले कि भरपेट ना चरा सकला पर ओकरा फाँसी चढ़े के परी।

बहुत लोग पहिले त राजा का वाँरपना पर ठठा के हँसल कि राजा सनकि गइल बाड़न कि बकरिन का चरवाही खातिर आधा राज देवे के तइयार बाड़न।

लालच बहुत लोग के आसन डिगा दिहलसि। वासना का फेर में परि के वहकल बहुत लोग मन का चंचल रथ पर चढ़ि सड़कि पर सरपट दउरि परल।

साधारण आमदनी आ नफा देखि के लोग सनहक में नाकि थुथुन बुड़ावत बा, आधा राज मिले वाली बाति सुनि के अनघा लोग बकरिन का चरावे का फेर में परल। बकरी बड़ा खधोरि रहलि स। केतनो हरियर आ मोलायम घासि चरावल जाय उन्हन का सुखाइले रहँ स।

बकरिन के चराइ के ले अइला पर राजा का भरल दरबार में सभका आगा जाँच होखे।

राजा के लोग अन्हेरे गवाँर समुझले रहे। हरियर घासि आ मोलायम पतई लेइ के जइसहीं राजा उर-उर करसु कि बकरी दउरि के कुदुरावे लागँ स।

बस राजदरबार क हुकुमे त ठहरल। तुरते चरावे के जिम्मा लेबे वाला हाजति ढुकावल जाय आ आपन फांसी क दिन गने लागे।

जब हजारों पंडित आ चतुर सरदार, बुझनइक चउधुर आ बहादुर लोग जेहल चलि गइल त राजा के मनेजर साहेब सोचलन कि लोग बहुत सूढ़ बा। हम थोड़े मेहनति में सहजे बकरिन के चरवाइ लेबि। बे हर्रे फिटिकरी क आधा राज मिलि जाई; बाल-बच्चा बहुत दिन ले सूचित होइ के कंचन चरिहन।

ईहे सोचि के मनेजर साहेब बग्घी गाड़ी पर चढ़ल, चशमा डँटवले बकुली लेइ के मनेमन गाजत नोकरन से पाँचों बकरिन के घासि का जंगल में लियवा ले गइलन। बकरी दिन भर हरियर आ मोलायम मखमली घासि चरि के अघाइ गइली स। आखिर में बइरि-मकोहि आ किसिम किसिम के ढुसगर पत खियावल गइल। जब उन्हन क लाद फूलि के कोंहड़ा नियर हो गइल आ कुछऊ ना खा सनि त मनेजर साहेब उन्हन के लियवले दरबारे पहुँचलनि।

दरबार का बेरा पर आज भार भीड़ि जमा रहे। खलक का साध र कि देखीं अब का होला। राज मनेजर क पछ-पलइ करे लनि कि इनसाफ होला।

बकरी पइलहीं नियर दरबार खड़ा कइल गइली स। जइस अवाँसी में मोलायम घासि लेइ राजा...'उर-उर, कइलन कि बक दउरि के घासि खाये लगली स अंत में मनेजरो साहेब के ना अथाह भवँर में परि गइलि। राज ईमानदार रहलनि। उनका सभे एक नजरि से देखे के रहे! मनेजर क माँकल पयँतरा भुलाइल आ 'सभ धान बाइसे पसेरी का भा में'—वाली पगडंडी धइले जेहल पहुँचलनि।

एतना लोगन के ई हालि देखल पर बूढ़ा देवान साहेब का बोध ना भइल आ ऊ बकरन के चरावे के

बीरा चबइलनि। बकरी देवान के चरावे के मिलली स। देवान बड़ा बूढ़ बुझनइक आ जुग-जमाना के देखले रहलनि। उनका अपना अकिलि पर पूरा भरोस रहे।

अनगुतहाँ का बेरा ऊ बकरिन के अपना नोकर आ दुइगो नातिन का संगे लिया के जंगल बधारि के डहरि नपलनि। लोग पुरुब जनम का वहुत पुन्नि से राजा होला। अनेक जनम के संचित कर मे भागि बने ला। परालबधि दूसर ह का? 'छत्तीस चकारे चउधुर, छप्पन चकारे चोर आ लाख चकारे...राजा!'

× × ×

देवान साहेब बकरिन के दूपहर ले घासि खियवलनि। ओकरा बाद उन्हन के टुसगर पतई दियाइलि। एतने ना सँझिली बेरा खुदी-भूसी, चोकर हलुवा आ पेड़ा तक उन्हन के भरपेटा दियाइल।

बकरी दरबार का समय पर हाजिर कइल गइली स। देवान साहेब खलक ले फरफा उन्हन के खूँटी गाड़ि के पगहा में बन्हवा दिहले रहलनि। उन्हन का सूचित होई के पगुरावत रहली स।

हर बेरि नियर दरबार लागल। राजा अपना समय पर अइलन। लोग सजग रहे। राजा का लोग का कान खड़ा कइला क परवाहि ना रहल।

अपना मुट्ठी में सुरस हरियर घासि लिहले कुरसी पर बइठल जइसहीं राजा उर उर...पुकरलनि कि अनरथ भइल। लागल चसका छूटो कइसे?

हरदम ले बेसी अफनाइल बकरी खूँटी कबरले, कवनो पगहा तोरवले-लोगन के धाँगत-काँड़त माँकि के राजा का पँजरा पहुँचली स आ जीभि लपका के छन भर में घासि खाइ गइली स।

राज में सगरे तहलका मचि गइल। जेही सुनल ओकर धोती-पायजामा ढील होखे लागल। लोग का केतनो सोचला पर ई ना जनात कि राजा क बकरी कइसन हई स कि हजारों पंडित गुनी मनेजर देवान सभके फाँसी चढ़वली स।

आखिर में दूर देहाति क एगो बाभन सुनि-समुझि के राजा का दरबारे पहुँचे क मनसूबा बान्हि के

आगे बढ़ल। बहुत गुनला-मँथला पर ओकरा पूरा भरोस हो चुकल रहे कि हम जरूर बकरिन के चरावे क बाजी मारि लेबि। ओकर मन बेदाग रहे। ऊ बहुत दिन ले साधु-संत क झोरा ढोवले आ सतसंगति कइले रहल।

बहुत लोग बाबाजी के रोकल समुझावल कि बाभन के जाति लालची आ बेसबुरी। एतना लोग चराइ के उजियावल त तूँ चलल राज लेबे।

बाबाजी केहू क कुछ ना सुनलनि आ भगवान क नावँ लेइ के राज-दरबार में गइलन। बिना चिंता-फिकिरि के शांत होइके ऊ बकरिन के चरावे खातिर ले अइलन।

(२)

बाबाजी बकरिन के लेइ के गंगा जी का रेता में गइलन जहाँ एकहू तिनका खढ़ भा घासि आ गाँछ-पात के ठेकान ना रहे। पचासन बिगहा का रेता का बीचे खूँटी गाड़ि के बाबाजी पाँचो बकरिन के लमहर रस्सा मे बान्हि दिहलन। एक ओर दरियाव लहरात रहे आ ओकरा दूसरा ओर आखिर में हाथ में एक मुट्ठी घासि लिहले अपने बइठलन। बाबाजी अपना बगल में एगो मजबूत सटकार चाभुकि रखले रहलनि। दूपहर तक त ऊ बकरिन के अइसहीं रखलनि हाथ में हरिय मोलायम घासि के अवाँसी लेइ के उपरी बेरा उनका बइठि के उ उर...करते बकरी वे सबुर भइल दउरली स। बाबाजी सजग होइ के बइठल रहसु। बकरिन का पहुँचते ऊ चाभुकि लेइ के मारे लगलनि बकरी भागि चलली स।

कुछ देर पटइला का बाद फे बाबाजी 'उर......उर.......' कइ के बकरिन के बोलावे लगलनि। फे का घाव का आगा पीठि क घा का जनाय? बकरी 'उर' सुने पहुँचि के घासि कुटुके लगली स बाबाजी खेलाड़ गोंइयाँ रहसु बकरिन के; चाभुकि उठाइ के पु नेछावर कइलनि। उनका त बकरि क 'उर उर...' क बेमारी अ ओकर दवाई मालूम रहे। ए 'उर उर' का रोग के छोड़ावले जरूरी रहल।

बाबाजी साँझि तक अइसहीं 'उर' कइ के पुकारत आ चाभुकि से मारत-मारत बकरिन के बेदम कइ दिहलन।

आखिर में ई हालि हो गइल कि जइसहीं 'उर उर...' कइल जाय बकरी घासि पतई कुछ ना देखँ स, बस 'उर' सुनते रसरा पगहा घिसियावत बहुत दूर भागि चलँ स। आखिर में जब बाबाजी का पूरा बोध हो गइल कि इन्हन के 'उर...उर......वाली बेमारी छूटि गइलि तब उन्हन के लिहले साँझि के दरबार का बेरा राजा का देवढ़ी पर जुमलन।

लोग नतीजा जाने खातिर बहुत बेचैन ना रहे। सभका मालूम रहे कि जवन रोज होत बा ऊहे होई। बाबाजी अकासे चकती-पेवन ना लगा दीहन राजा त परिकल रहलनि। उनका का पता रहे कि ई बाभन उड़ती चिरई के हरदी लगावे वाला ह।

परिकल चोर भुसहुले धावे। सभा का बाहर पँजरे खूटी में बकरी बान्हल रहली स। राजा एक अवाँसी हरियर दूबि लेइ के जइसहीं उर उर....पुकरलनि कि पाँचो बकरी उर उर सुनि के पगहा-खूँटी उखरले माँकत मिमियात दरबार-घर ले बहरा भागि निकलली स। बाभन सजग होइके बकरिन के चराइ चुकल रहे। बकरिन का 'उर उर.....' क रोग छूटि चुकल रहे।

(३)

देहि क पांचो ग्यान इंदिरी आँखि, कान, नाकि, जीभि आ तचा इहे पाँच गो बकरी हई स। आतमा राजा ठहरल। ओकर राज तीनि लोक चउदहो भुवन ले बिराजत बा।

इंदिरी एह देहि का चोला के छोड़ि के, अपना बूझ-बिचार, टिशुना-वासना का मोताबिक फेर दूसर चोला अवाँसेली स। देहि आतमा राजा क राज ठहरल। शबद, रूप, रस गंध आ अरस-परस ईहे एह बकरिन के हरियरी आ सुरस सवदगर लेहना-चारा ह। जे एह बकरिन के चराइ के

[बाकी पन्ना २८ पर पढ़ीं]

भीख

सूर्यदेव राय

जैन कॉलेज (आरा)

हम बार बार डेरा चले के कहत रहलीं बाकिर अभय आ रणधीर कुर्सी छोड़े के नामे ना ल स। चपरासी भी क्लासन में ताला लगा के अपना अपना डेरा पर चलि गइले स। कॉलेज में एको अदमी ना लउकत रहे। हमार मन अकुता गइल रहे। दिन भर क्लास लेत लेत मन थाकि गइल रहे। समझ में ना आवत रहे कि दिन भर कुकुर अइसन भूँकला का बाद भी एहनी का कहां से बहस करे के शक्ति बाचल बा। बहुत कहला-सुनला पर दुनू अँग्रेजी विभाग के छोड़लन स, बाकिर गेट पर पहुँच के फेर खड़ा हो गइलन स आ बात करे लगलन स। अभय बाँया हाथ से गेट पकड़ि के कहलस—'का जमाना आ गइल ? गरीबन के भर पेट खानो नइखे मिलत।'

हमरा मुँह से निकल गइल—'दिन भर क्लास में बकला से आ पेट ना भरल ह ?'

हमरा बाति के अनसुना करि रणधीर जवाब दिहलस—'दी लीह, बहुत जल्दीये ए देश में वि होई। कब तक अदिमी आपन दबा के बइठ रहिहन ?

'जब तक तोहरा अइसन ने रहिहन'—हमार मन खीझिया रहे। रणधीर हमरा ओर पीठ करि खड़ा हो गइल आ अभय हम बात पर बिना ध्यान दिहले रण से कहलस—'दोष खाली सर के नइखे। हमनी का भी अपना 'शीश महल' में बन्द कइ लेले ब जा। दूसरा के साथ का होता, जाने के हमनी का फुरसते नइ अगर दोसरा के दर्द समझे ला जा त सब दुख दूर हो जा 'ठीक'—रणधीर जोश के कहलस—'दर्शन बघारे वाला

बहुत बाड़न बाकिर सचहूँ के गरीबन के सहायता करे वाला कगो बाड़न ? हम त कहत बानी कि जब गरीब खइला बिना मरत बाड़न स त हमनी का खाये के का अधिकार बा ?'

तब तक एगो भीखमंगा आ के हाथ फइला दिहलस—'दू दिन खइले हो गइल। चलि नइखे जात। बाबू, कुछू खाये के.....' हमनी का पलटि के देखलीं जा—अधेड़ उमिर के एगो अदिमी दाँत चियरले खड़ा रहे। कपड़ा का नाम पर बस एगो फाटल धोती कमर में रहे।

'जा, आगे जा'—अभय बायाँ हाथ झटकारि के भीखमंगा से कहलस आ रणधीर का ओर घुमि के फेर बात शुरू कइल चहलस। रणधीर मुसुकाइ के अभय से कहलस—'काँहे नइख दे देत ? बेचारा दू दिन से खइले नइखे।'

अभय तुरत भीखमंगा का ओर मुड़ि के कहलस—बाबू से माँग। बाबू ए शहर के सबसे बड़ सेठ हवन।

भिखमंगा रणधीर का सामने आके हाथ फइला दिहलस। रणधीर हँसि के भिखमंगा से कहलस—'तोरा के बहकावता। हम त एगो गरीब मास्टर हईं। ऊहे सबसे धनी अदिमी ह।' फेर रणधीर अभय का ओर मुड़ि के गँभीर होके कहलस—'काँहे नइख दे देत ? बेचारा तबे से हाथ फइलवले बा।'

भीखमंगा अभय का सामने आके हाथ फइला दिहलस।

अभय भौंहा सिकोड़ि के भीखमंगा से कहलस—'मूरख, समझो में नइखे आवत। हमनी का बस मास्टर हईं जा। पइसा लेके थोड़े चल रहलीं हँ जा। जा, आगे देख।'

भिखमंगा ओहीतरे कबो अभय का सामने हाथ फइलावे त कबो रणधीर का सामने। हम चुपचाप दुनू के नाटक देखत रहलीं। तबतक अभय हमरा ओर इशारा करिके कहलस—'असली सेठ त अभी चुप लगवले बा।'

भीखमंगा हमरा ओर मुड़ि के तकलस। हम तुरत कहलीं कि ए घरी सचमुच के पइसा नइखे ना त तू लोग अइसन नाटक ना करतीं। भीखमंगा का हमरा बात पर शायद

बिश्वास हो गइल। हमरा सामने ना आइल। ऊ फेर अभय का सामने हाथ फइला के बिनती करे लागल। अभय झुँझलाइ के दस रुपया के नोट निकललस आ भीखमंगा का ओर बढ़ा के कहलस—'का चाहत बाड़े? दस रुपया के नोट दे दीं? जो भाग, फुटकर नइखे।'

भीखमंगा के डाँटि के अभय नोट तह करे लागल।

तब तक भीखमंगा कमर से छूरा निकाल के तान दिहलस आ देखते-देखते अभय का हाथ से छीनि के एक ओर भाग गइल।

हमनी का त हक्का बक्का गइलीं जा। मुँह से शब्दो निकलल। बहुत देर बाद रण का मुँह से निकलल—'का जमा आ गइल?' अभय आगे ब कहलस—'तू का समझत बाड़ हम डेरा के दे दिहली हँ? बेचारा गरीब रहल ह। हम ओके देवहीं खातिर नोट निकल रहलीं हँ, नाहीं त अइसन छूरा बहुत देखलीं।'

हम चुपचाप दुनू के साथ आ बढ़त गइलीं।

●

(पन्ना २५ के बाकी पढ़ीं)

भूखि मेंटावल चाहल ओकर सोरि कबरले जानीं।

इंदरी रूपी बकरी केतनो हरियरी चरिहन स बन्हन का सनतोख ना होई। बिसय-भोग से के कब तिरपित भइल ह?

धन-दउलति सुख-भोग के सतरंगी टिशुना हरदम हरियरे रहे ले। एकर सोरि पताले ठेकलि बा। केतनो खोद-खाद करीं अनेक मन ले एकर असर रहे ला।

ई बकरी केतने खेत ख आ जंगल सोपह कइली। शासन-संजम क चाबुकि उठा ओकरे नाइ किनारे पहुँच मतलब ई ठरहल कि जे टि के जीतल ओकरे बकरी चरली उहे आतमा का अमरपुर नगरी राजगद्दी पावल।

●

एक बीता घाम

विजेन्द्र लाल 'अनिल'

बगेन, शाहाबाद ।

सितिया, एगो टुटही बंसखट प, पुरूब ओरे मुँह क के, गाल प हाथ धइले बइठल बिया । खोरी में जब केहू के खोंखल-खंखारल सुनाता, ऊ दुआरी के ओरे तिकवे लागतिया, आंगना में केहू नइखे आवत, त ओकर उजरका आहुम अइसन धप्-धप् गोर चेहरा, अमावट निअन झुरा के करिया हो जाता ।

ओरिआनी के नीचे एक बीता घाम बा—मउराइल सेनुरिया आम लेखा ललछहूँ । सितिया के नजर एह घरी ओही एक बीता घाम प बा । ईहो गते-गते भागल जाता । छन-दू-छन में भागिए जाई ? ···'ऊ' ना अइहन । ···आ, तब सितिया के डबडबाइल आंखिन में लोर ना थम्हाई । आंचरा भींजि जाई ।

···आजु तीन-चार दिन से अइसहीं होता । सांझि के बेरा, रोज, अइसहीं, ऊ खोरी के ओरे कान आ घाम के ओरे आंखि लगा के बइठेले । जइसे जइसे घाम घुसुकल जाला, ओइसे-ओइसे ओकर करेज खोंखराइल जाला । जब ओरिआनी के नीचे एक बीता घाम रहि जाला, त ऊ एके टके ओकरा के ताके लागे ले, जइसे ऊ ओकर आखिरी उमेद होखे, जइसे ऊ ओकरा फुलवारी के अकेला आ आखिरी फूल होखे, ऊ कुम्हिला जाई, त ओकर चंगेली खलिहे रहि जाई, जुग-जुग के आस-विसवास हेरा जाई ।

ऊ चाहेले एह एक बीता घाम के सनूकी में बन कर दीं, जबले ई आंखि के सोझा रही, तबले उनुका आवे के उमेद रही, बाकी रोज ई भागि जाला, जइसे एकरा पांखि लागि गइल होखे—झन से उड़ि जाला; मन से बिना कवनो हावा-बतास के सितिया के तिलंगी कटि जाला, भरना ओकरा हाथे में रहि जाला, आ तिलंगी·········,

आजु सात दिन हो गइल उनुकर चिट्ठी अइला । लिखले रहन—"हम

दू-चार-दिन में आइब ! तू अहथिर से रहीह ।"—चिट्ठी बांचते, सितिया के आंखि में सरसों के पीअर-पीअर अनगिनित फूल खिलि गइलन सा ओकर तरवा जमीनीं प परते ना रहे । बुझात रहे, सीतला महरानी बे-मँगले, ओकरा खोंइछा में सात-जोड़ी लुचुई, सात गो गुलउरा, एक पोथा सेनुर··· आ एगो 'लाल-लाल बबुआ' डाल देली । टोल-पड़ोस में सभ के से उनुकर चिट्ठी देखवलसिं । केहू-केहू खुश भइल, केहू मुँह बिजुका लिहल—"हुँह, बुझाता दुनिया ऊपर इनिके भतार बहरा से आवता ।····अंइठल चलत बाड़ी ।"

बुढ़ियन के त पइसो भ ना सोहात रहे सितिया के अगराइल । ऊ त एकरा के देखते भुनभुनाए लागस—"···ईहे कहाला कलजुग । एगो हमनी के रहीं जा । मरद के बात मुँह से निकाले के पहिलहीं जीभि कटि जात रहे । एगो आजु काल्हु के बबुई लोग बा । बेसवा अइसन, ना लाज बा, ना हाया । झोंटा उघारि के, खोरी-खोरी छिछिआइल चलत बाड़ी । ···'ए फलनिया, ऊ आवत बाड़न, देख ना, चिट्ठी आइल हा····'—तोरा चिट्ठी में बहरका लगावो ! ई कवन चालि ह ? चिट्ठी आइल त ओकरा के बकसा में बन क के घर तोर भतरा आई त टोल-पड़ोस देख करी,···आ तेहूँ ओकरा जरे········ पहिलहीं से का ढिंढोरा पीटत च तारे···। बुझात बा, अपना, बाप नाँव प पिण्डा पारे जा ताड़ी···।"

सितिया ई सभ सुने । सुनि-सु के ओकर कान पाकत रहे । ओकर म करे, कि एह बुढ़ियन के लुआठी दागि देउ । इहनी के जवले जीहन दोसरे के कुचरई में रहिहन स, अप सासन चलइहें स—अपने आंखि दुनिया संसार के देखिहन स । अप चाल के नीमन कहिहें स । ई देखिहें स कि जमाना काहाँ गइल ई बा सोचिंहें स कि हमनी के त बु पुरनिया भइनीं जा, राम-नाँव लेवे बेरा आइल, आपन सुकुत बना खातिर पूजा-पाठ करीं जा, बस खा इनिकर कुचरई, त उनुकर सिकाइत बुझाता, जवानी में ई लोग ना अप मरद संगे हँसत-बोलत आ सुतत-बइठ रहे । बिना कुछु कहले अतना लइक फहका हो गइलन स का···?

बाकी, ऊ मुँह से कुछुओ कहे । अपना जीभि प ताला लगा दे

रहे। दिन-रात उनुके धेआन में रहें। बिआह के दिन से लेके बहरा जाये के बेरा तकले उनुका से जवन-जवन बात भइल रहे, उनुका संगे जवन-जवन नीमक जबून काम कइले रहें—ऊ सभ ओकरा आंखि के सोझा घूमत रहन स....।

......भगवान खुस रहन कि ओकरा 'उनुका' अइसन मरद मिलल-हजार में एक। ऊ कतना पेयार करत रहन ओकरा के। ऊ तनी सरदिआतो रहे त, अपने हाथे, ओकरा चानी प करूआ तेल छोपे लागत रहन। कवनो चीज्हु, कतहीं से ले अइहें त ओकरा के खिअवला बिनु उनुका कले ना परी। परब-तेवहार के बखत, राति खा, अपना हाथे से, ओकरा मुँह में पूआ आ मिठाई कोंचि देत रहन। ऊ इचिको उदास हो जात रहे, त उहो आपन मन मारि लेत रहन।....फेनु, गोदी में बइठा के ओकरा के चूमे-चाटे लागत रहन, गुदगुदावे लागत रहन। अतनो प ऊ महंटिया जात रहे, ना हँसत रहे, त ऊ कतना करून बानी में कहत रहन—

“तू काहे उदास रहत बाड़ू...?...तोहरा कवन दुख बा ?...का हम तोहरा पसन नइखीं ?...”

“तब ओकरा हँसहीं के परत रहे। कहहीं के परत रहे—“काहां उदासल बानीं। रावा त अनेरे का-का हो कहे लागीं ला। भाला, रउआ अइसन सुनर, सभ गुन के आगर मरद पाके केहू काहें उदास रही ?...मुँह से का कहीं। रउआ के पा के हमार छाती गज भ के हो गइल बिया। हमरा बुझाला, ओह जनम में हम बाड़ा पुनि-परताप कइले रहीं, तबे रउआ अइसन देवता हमरा मिललन।”

ऊ हँसे लागत रहन। कहत रहन—“तू त लगलू हमरा के बनावे। भाला, हमरा में का बा ? पढ़ल-लिखल असे-तस बानीं, नोकरी-चाकरी का जाने कहिया ले मिली।...आ, भगवान हमरा के गढ़लहूँ रहन, उँघाते खा। एक त करिखाही हांड़ी लेखा रंग, ओह प कोंहड़ा निअन अनगढ़ल मुँह। सांच पूछ त, हम बाड़ा भागओला बानीं कि तोहार बाबू जी अइसन कवल के फूल हमरा अइसन ठूँठ के हाथ में दे देलन।

उनुकर बात सुनि के ओकरा अजबे किसिम के गुदगुदी उठे लागत रहे। बुझात रहे, केहू चोली में हाथ लगा के गुदगुदावत होखे। अतना पढ़ल-गुनल

आ सुनर अपना मरद के मुँह से अइसन बात सुनि के कवना मेहरारू के हिरदया ना जुड़ा जाई ? कवना तिरिया के कलसा के पानी ना छलके लागी ? ऊ चोन्हा करे लागत रहे—

"देखीं,......अइसे कहब त हम आपन जान तेआगि देबि। रावा त अइसन बात कहींला कि...,...आ हँ...ई कवन बानि ह ? हर घरी हमरे बड़ाई। देखबि जे नोकरी-चाकरी करे लागबि तबो अइसहीं हमरा के मानबि। ओह घरी त कवनो 'मेम' के साथे मउज करबि। हमरा अइसन अनपढ़-गँवार के के पूछी ?"

ऊ सितिया के अँकवारी में बान्हि के, ओकरा कसमीरी सेव अइसन गाल आ ओड़हुल के फूल अइसन लाल-लाल ओठन प, पेयार के मोहर लगा देत रहन। कान में फुसफुसाइ के कहत रहन—

"तू हमार परान हऊ। तोहरा के भुलइला के माने ह अपना जान से हाथ धोअल। चाहे हम एहिजा रहीं, चाहे सात समुन्दर टप्पू पार—तोहरा के ना भुलाइब। तोहरा आगा, इनर के परी अइहन, त उनुको प हम थूकि देबि।...हमनी के जनम-जनम के साथी हईं जा। भले सुरुज पुरुब के बदले पछिम में उगे लगिहें,...आ धरती सुरूज के बदले चनरमा के चा ओर घूमे लगिहन, बाकी, हम जबले जीअत रहब, तोहरा के ना छोड़ब।... हमनी के पेआर बरसाती नदी ना ह जवन थोरे घरी उमड़ि के, फेनु ठनठन बाले, ई गंगा ह, आगे बढ़ि के समुन्द के रूप ध लिही, सूखी ना।...."

....ऊ कबो ओकरा से खरूआ के ना बोलल रहन। कवनो गलति हो जात रहे त डांटि के ना, दुलार से समुझा देत रहन। ऊ मानि जात रहे आपन गलती। अइसे, राति में, कबो कबो मरद मेहरारू ओला झगरा त होइए जात रहे, बाकी ऊ झगरा बिन पंच-पंचाइत के, भोर होखे पहिले सझुरा जात रहे।

सितिया के उहो दिन इआद पर रहे, जब ऊ पहिले-पहल ससुरार आइ रहे। दुइ बरिस त भइबे कइल। ओह घरी ओकर सासुओ जीअत रहीं। उ मिसिरी के डालिए-रहीं, पतोहि के बेटियों से बढ़ि के मानत रहीं। बरो कहिहें—

"दुलहीन, तोहरा के पा के हमार घ अंजेर हो गइल।...एगो बेटा रहलह छरछना के। टूअर-टापर रहलह

लोग-बाग कहे कि फेंकि द एकरी के छूरा प । बाप के संगे इहो भरकी लगवना चिरारी प चलि जाउ,.........बाकी हम बबुआ के ना फेंकनीं । सेइ के रहनीं, उनुकर गूह-मूत कछनीं । आपन पेट काटि के, अपने बेलंग रहिके, हम अपना असोक के पढ़वनीं-लिखवनीं । उनुका के ई ना बुझाए देनीं कि ऊ बिना बाप के बाड़न ।...आजु पढ़ि-लिखि गइलन, बी० ए० एमे० पास क गइलन तसभे कहेला—'फलाना बो अइसन मतारी ना मिली दुनिया में खोजला प...'...एगो पतोहि के देखे खातिर आंखि तरसत रहे । उहो सरधा पूरा हो गइल । अब एके चाह रहि गइल बा । बबुआ के कवनो बढ़ियाँ नोकरी लागि जाइत, आ माता दाई तोहार गोद भरि दिहिती । हम अपना नतिया के गोदी में बइठा के, राम-राम करत रहितीं..."

......उनुका बबुआ के नोकरी लागल, बाकी तब जब ऊ एहिजा से उठि गइली । सितिया के, ई सभ इआद परेला त अउरी कलेस होखे ला । मन करेला, दइबो के दु-एगो गारी सुना तो ।..

...कतना खुस भइल रहन ऊ ओह दिन जब उनुका सेना में भरती होखे के 'कमीसन' मिलल रहे । आंगना में घउगल आइल रहन, आ कोरा उठा के ओकरा के घुमरी-परउआ खेला देले रहन । बलाते, ओकरा मुँह में एके प एक कई गो रसगुल्ला ठूँस देले रहन । ओकर मुँह चलते ना रहे । खुसी के मारे आंखि लोरा गइल रही स । ऊ कतना अगराइल के कहले रहन—

"सितू, अब हमनी के दुख दलिद्दर भागल ! अब मउज के दिन आइल !"

ओकरा मुँह से निकलि गइल रहे—

"आजु आमा जी रहितीं,
त कतना खुस होखितीं ।"

उनुका आंखि से ढर-ढर लोर गिरे लागल रहे । ओकरा अपने प बाड़ा खीसि बरल रहे, काहे खुसी के बेरा अइसन बात मन परवलसि ?... का करो, अब त बात मुँह से निकसि गइल रहे, कइसहूँ सँभरलसि । ऊ अपना अंचरा से उनुकर लोर पोंछि के कहले रहे—

"रावा चाल्हांक होके, काहे अइसन काम करत बानीं । मुअल-जीअल कवनो आदिमी के हाथ में थोरे बा...।"

......एकरा थोरहीं दिन के बाद उनुका चलि जाये के परल अमृतसर ।

पहिले-पहिल मरद-मेहरारू के संगे गइल ठीक ना रहे, एसे ओकरा के नइहर पहुँचा के ऊ गइल रहन। जाये के बेरा, दुनो बेकति के आंखिन में गंगा-जमुना बढ़िया गइल रही। ना उहे एकरा के छोड़े के चाहत रहन, ना इहे उनुका के। बाकी मरद के कठकरेज होखहीं के परेला। ऊ ओकरा के समुझवलन—

"तू रोइह-धोइह जनि। हम लगहीं, आ के तोहरा के लिया जाइब। तोहरा बिनु हमरा से रहले ना जाई।"

...का जाने काहे, ओकर मन ना करत रहे उनुका के छोड़े के। ऊ उनुका गरदन में आपन दुनो हाथ डालि के, उनुका मुँह भीरी आपन मुँह सटा के, पूछले रहे—

"हमरा के भुलाइब ना नूँ?... हमार किरिया खाईं...त....।"

ऊ ओकरा कपार प हाथ, ध देले रहन....आ दुनो गाल प गरम-गरम सांस छोड़िके, रूमाल से आंखि पोंछत, घर से निकलि गइल रहन। जबले, ऊ आंखि से ओझल ना भइलें, तबले ऊ उनुका के ताकत रहे।

...दिन बीतते ना रहन स। राति पहाड़ लेखा हो जा स। बुझा कि केहू ओकरा करेजा प सिलवट चलावत बा।

पहिले हपते-हपते चिट्ठी आवत रहे, एकरा बाद पखवारा प, आ तब महीना भर प।...ओकर मन संकाइल रहे। ऊ सोंचे, काहे उनुका के सेना के अपसर होखे देलस। दोसर कवनो नोकरी करत रहितन, त ऊ उनुका भिरी जरूरे चलि जाइत—ऊ ना बोलइतन तबो। अब, अइसना जगे, जहां ऊ देस के दुसमन से लड़े के तेआरी करत बाड़न, कइसे जाउ।...

अभी ऊ का जाने का का सोचित। त ले केहू आ के ओकरा पीठि प हाथ धइल। ऊ चिहा गइल। तकलसि पीछे फिरि के। सुरुज के आठ बरिस के छँवड़ा खाड़ा रहे, हाथ में एगो हरिअर लिफाफा लेके। कहलस—"थोरे देर भइल, डकमंसी बाबू दे गइलन हां!"

ऊ लिफाफा देखते बूझि गइलि कि उनुके चिट्ठी ह। खोलि के पढ़लसि। लिखल रहे—"इमरजेंसी के वोजह से छुट्टी ना मिलल। अब आइल मोसकिल बा।"

हाथ से लिफाफा नीचे गिरि गइल। चिट्ठी प कई बूंद लोर गिर गइल। अछूरि भिटिके लगली स।

ओकर आंखि गते से ओरिआती के ओरे उठि गइली स। अब ओहिजा एको अँगुरी घाम ना रहे।

बाझ

रंगजी पाण्डेय

महाराजा कॉलेज, आरा।

आफिस का दुआरी प घंटा भरि से खड़ा रहला से गोड़ दुखा गइल त ओहिजे बईठि गइलि। आजु फजिरहीं से एही घन-चक्कर में रहि गइलि। बेमार बेटा के खोजो-खबरि लेवे के तनीआसा फुरसति मिलल—साहेब के डेस पर से गइला का बाद। दुर-दुरवले कहल ढेरि बढ़िआ होई। फजिरे त साहेब बी० डी० ओ० जी का संगे बाझले रहि गइले।

'भाई तोहनी के आगा हमनीके के पूछेला। काहाँ राजा भोज, आ काहाँ भोजवा तेली।'

सप्लाई अफिसर से ना ठटाइल। उहो साफे-साफ कहले—'मने-मने गाज तार नू। तोहरे त बड़ा कम चलल बा कि। कित कलक्टर ना त बी० डी० ओ०। दोसरो के राज बा? बइठले पानी काटे के बा।'

'सुनलहा नु हमनीके नाया पदवी। ब्लॉक डिस्ट्रक्शन आफिसर कहा तानी जा।'

लाद से हँसला का आवाज से बाहर के बरमदा ले गुंजि उठल। जबे-तबे चमच आ तस्तरी का खड़खड़ाहट का संगे बोतल आ कप के आहटो मिलि जा।

'घोड़। हाथी जात रहेले आ कुत्ता भुंकत रहेले स। दोसरा के तरक्की देखि के केना सिहा? बाकिर बाड़ तोहनिओ का। जेने देख तेने हरिअरिए चरे के बा।'

'चालनि हँससु सूप के जिन्हिका सहसर गो छेद। तोहनी किहाँ त साँचो के बरिसता।'

फजिरही से बइठकी जमल रहे। सप्लाई आफिसर के आफिस जाए के बेरा होगइल। बेचारू का अइसन्हि कामन्हि का बोझ का मारे नहहू-खाहू के बेरा ना मिलत रहे। बी० डी० ओ० साहेब 'प्रणाम' के बाद कहले—'अच्छा चल। आइब। आफिसे में गप-सप चली। बाकिर एस० डी० ओ० साहेब

से कहिके अधिके माल दिआ दिह। गुर ना परी त मिठ कहाँ से होखी।'

जाड़ के अँकवारी में बन्हले बेचारी कोना में अवरू सटकल जात रहे। आवते-आवत साहेब के नोकर के डाँट मिललहिसि। सुटुकले रहि गइलि। दोकाने-दोकाने मारल चलला के बाद बुझि गइल रहे कि बिना राशनकार्ड के ओकरा करिमन के पथ नाहिंए मिली। अपना बेटा के आँखि का पुतरी निअन मानत रहे। बाकिर दसे दिन के बेचारी ओकरा के भिखइनि बना देलसि। बिना परमीट भा राशन कार्ड के गरीबो किनिए का सकतिआ?

गरीबी के आँच ओकरा खातिर नाया ना रहे। बाकिर कबे चुल्हा के उपास परे के नउबति ना आइल। अबकी त ढीबीरिओ बारि के राति-बिराति कुछ कइल परमे सनेह हो गइल रहे।

थोरही बाद बोति निअन बरत दुगो जाना बाहर अइले। लमकू त चलि गइले, बाकिर मझिलू लवटि अइले। कई दिन से रोज-रोज हाजिरी देला से समझि गइलि रहे कि इहे साहेब जी हवे। ऊ खूब बुझत रहे कि जइसन आपन दुःख तइसन दोसरा के दुःख। बेचारू कुकुर के बेमारी से अपनही बड़ा तंग रहनि। हई डाक्टर त हउ दवा। जब देख तब चंगे प चढ़ल। बड़ा साहस क के परसो मुँह खोललसि।

'पहिले गेट का बाहर चलु। कुकुर का बेमारी से जान प नउबति आइल बा आ ई करकरहटि मचवले बाड़ी।'

'बाबुजी! लइका बेमार बा। खइला बिनू मरि जाई।'

'हम खिआवे के जिमा लेले बानी? तोहरा निअन ढेरि गरीब एहिजा बाड़े।'

आँचर से आँखि पोंछत चलि गइलि! साहेब के कुत्ता के आराम होखे खातिर राति भरि देवता लोग के गोहरवलसि। काल्हुओ ओकरा कुछ ओइसने जबाब मिलल रहे। आजु सोंचि के चललि रहे कि आठानो बिठान परि के राशनकार्ड ना त परमीट त लेबे करी। आखिर साहेबो आदमि हवे। पीघलबे करिहें।

'ते अभी जान नाहिंए छोड़लिसि।

'मालिक तोहरा के धने-पुते बनवले रहसु। भीखि माँग ताना। आजु बुढ़िअ के उघार कद।'

'ई आफिस ह? डेरा ह डेरा आदमी हईं कि जानवर। फजिरे काम करत-करत जान चलि गइल।'

'एगो अवरू कद बबुआ। भगवान् तोहरा के अवरू फरइहें-फुलइहें।'

'भगवान का करिहें आ ना करिहें ओसे तोरा का मतलब बा? चलु। राह छोड़ु।'

साँचों के आँचर पसारि देलसि।

'आँचर पसारि के भीखि माँग तानी। तीन दिन से उपासे बानी। बेटा के पथे भरि लिखि दीं।'

'ऊ मरिओ जाइत त जान छूटित।'

'राम-राम। अइसन ना कहेके।'

बुढ़िआ कुछ कहिति, बाकिर जानत रहे कि माहुर के घोंट घोंटिए गइला में कुशल बा।

'उपरी बेरा आफिस में मिलिहे।'

'आइबि का बड़ा आस लेके आइबि।'

आ, आफिस का दुआरी प चपरासी हरदम एके बात रटें—'का कपार खइले बाड़ू। साहेब अपना साथी का संगे लन्च कर तारे।'

बुढ़िया लन्च निअन बड़हन चीज के कबे नावे ना सुनले रहे। ओकरा त रट लागि गइल रहे कि साहेब उपरी बेरा बोलवले बाड़े। बाकिर चपरासी त बुढ़िया निअन मुरुख रहे ना। ऊ लन्च के माने खूब बुझत रहे। सले केंवाड़ी खोल के झाँके आ ओठंघा के पति बेरा कहे—

'का कपार खइले बाड़ू। साहेब अपना साथी का संगे लन्च कर तारे।'

केंवाड़ी फांफर होते बुझि गइलि कि फजिर ही वालू लमकू साहेब के साथी हते।

'बबुआ! तोहार-बुढ़िआ माई आइल बिआ।'

'देख। राति-दिन अइसने मुढ़न्हि से काम परे ला।'

बि० डि० ओ० साहेब का इआदि परि गइल।

'एकरा के त फजिरहू तोहरा डेरा प देखले रहनी हा।'

'आजु कई दिन से जान खइले बिआ। एहिजा काम करत-करत तनी लन्चों के फुरसति नइखे लागत।'

'हमरा त अइसन देहाती मुरुख-अवरू कपारे बाड़े स। डेरा से सटले आफिस रहलो प दू-चार घंटा परिवार का संगे मन बझावे खातिर समय निकालल बड़ा कठिन होला।'

'हम त झर हेटि देबे जी अबगे त आइल रहले हानू जीट में। बुझात रहल हा कि प्रोफेसरे होखसु। एकइए झड़प का बाद मुँहे सुख गइल हा।'

'मुँह लटकवले सोझे दुआरि के राह लेलेहा।'

'बबुआ, तोहार बुढ़िया माई बड़ा आस लगा के आइल बिआ।'

'कार्ड बनावे के भा परमीट देवे के बेरा बीति गइल। मशीन हईं? काल्हु अइहे। सकेरे। इन्सपेक्टर साहेब से दरखास लेके भेंट कइले अइहे।'

बुढ़िआ का धक् से लागल। गीर परलि।

'करिमन, करिमन, करिमन, क…रि…'

दुनो जाना का मुँह से संगही आवाज आइल।

'चपरासी?'

भीतर आवहे साहेब कहले—

'देखु। नखड़ा पसरेल बिआ। निकालु बाहर।' गौर से निहारि के चपरासी काँपे लागल।

'बुझा ता कि मरि गइलि।'

दुनो जाना अकुतइले उठले। बात ठीके रहे।

'रोगी बुझात रहलि हा।'—सप्लाई के साहेब कहले।

'थाना में फोन क द।' ना त जंजाल तोहरे कपारे आई।' वि० डि० ओ० साहेब नेक सला देले।

श्री मानस मुद्रण
रमना रोड, आरा
में
सस्ता, बढिया आ शुद्ध
छपाई खातिर आईं

भोजपुरी कहानी

चित्तरंजन

जमालपुर, विक्रम, पटना

कहल जाला कि खरबूजा के देख के खरबूजा रंग बदलेला। एगो रघुबंस बाबू प त वेद में भोजपुरी सब्दन के 'खोज' के भूत सवारे रहे, एने दूर के कउड़ी लावे के फेर में कुछ लोग भोजपुरी कहानी के नाता रिगबेद आ हितोपदेस से जोरे खातिर कमर कस लेले बाड़ें (अंजोर, कथा अंक : संमति) असहीं कुछ लोग भोजपुरी कहानी के इसटौक बढ़ावे के लोभ में दादिओ नानी के कहानी हँथिआवे खातिर बेहाल रहेलें। हमरा ना बुझाए कि एह सभ बातन में कवन तुक बा? भोजपुरी कहानी के साथे रिगबेद के कवन ताल मेल बइठी, दादा? फूलवंती रानी' भा सोरह सेर दूध खाऊँ रे' से इसटौक कइसे बढ़ी। एह में त उल्टे हवे बन जाए के खतरा बा। बहाव से कट के फेंका जाए के होखी।

भोजपुरी कहानी के इतिहास जादे से जादे पनरह बरीस पुरान बा। पनरह बरीस के इतिहास के फैलाव कम होखी; बा भी। इ सीमा भोजपुरी के सभ गद्य-रूपन के साथे बा। बाकिर इ इतिहास छोट होखे प भी, अधूरा होखे प भी बन्हल नइखे। हमनी के इ दावा भी नइखे कि भोजपुरी कहानी भा भोजपुरी साहित्य के इतिहास पूरा बा। साँच बात त इहे कि इतिहास कबो पूरा ना होखे, उ हमेशा पूरा होखे के राह में होला। धार के पूरा भ गइल के का अरथ होखी?

१९४२ में भोजपुरी के छपाई सुरू होखे के साथे भोजपुरी कहानी भी छपे के सुरू भइली स। ओकरा पहिलहूँ कहानी लिखात होइहें स, बाकिर कवनो छपल कहानी भा कहानी के किताब ना मिले। एने अंजोर के 'कथा-अंक' में स्व० सिवपूजन सहायजी के एगो कहानी छपल हिआ बाकिर हम इ ना बता संकीं कि उ मूल भोजपुरी कहानी ह कि अनुवाद आ मूल ह त कब लिखाइल

रहे ? रघुबंस सिंह के कहनाम बा कि 'सुमन' जी के 'जेल के सनदि' भोजपुरी के पहिला कहानी संगरह बा । भोजपुरी के पहिली कहानी कवन रहे आ केकर रहे हमरा समझ से बतावल मोस्किल बा कठिनाई इ बिआ कि पहिले कहानी के नाम प ढेर लोककथा छपली सा अब एह बात में कवनो तुक नइखे कि 'सबसे नीमन ठेठ पाल' के भी हमनी कहानिए मानीं ।

'भोजपुरी' के जमाना (१९४२-४८) में जवन कहानी लिखइली स ओह सभ के का खूबी बा ? ढेर कहानी दादी नानी के हउ स । कुछ कहानी इतिहास के खास कर के भोजपुर जनपद के इतिहास के जानल मानल लोगन का बारे में आ कुछ देस परेम, छूआछूत, दहेज आ बाल बिआह के बारे में । बाकिर इ सभ कहानियन में एगो बात पावल जाला । कहानी 'भर बीतन' के होखे चाहे कुँअर सिंह के चाहे मंगल पाँड़े के सभ के बुनावट एके बा । एह दौर के सभ कहानी फलैट बाड़ी स । एक चीज के सेंटर में रख के एक सांस में लिखल गइल बाड़ी स । इ सभ कहानी डरीर के एक छोर से सुरू होखेली स आ उरीर के एगो खास दोसर छोर प जाके खतम । कहानी
भीतर भा अगल-बगल देखे-समझे
बजाए नाक के सीध में बढ़ल जाला
एह लेल एह कहानियन में 'नार
सिसटम' के कवनो दरसन ना हो
हाथ पैर, आँख, मुँह, छाती या
पूरा मिली । एह कहानियन में
भीतरी दुनियाँ नइखे, जे बा से ना
बा । कवनो भीतरी तनाव ना देखब
चाहे अनुबम काहे ना पटकात होखे
हकीकत ना सैसकार के सोनहुला संस
ढेर के ढेर बाहरी डिटेल आ क
बाचकी टेम्पो—सट दौर के कहानियन
खास खूबी इ ।

का कारन बा कि जवन जमाना
हिंदी में 'गदल' आ 'धरती अब
घूम रही है' लिखात रहे ओह जम
में भोजपुरी में 'भर बीतन' आ '
नीमन ठेठ पाल' लिखाइल । ह
खेआल से एकर खास कारन
परंपरा के अभाव बा । रांगेय 'रा
भा 'मार्कण्डेय' के पासे त जब
आ अगेय के बिरासत रहे, गां
देबी आ बनारसी प्रसाद भोजपुरी
परम्परा के कवन बिरासत मिलल
इ भोजपुरी कहानी-रचना के दौ
एगो बड़ नाजुक घन रहे ।

एहीजे भोजपुरी कहानीकार भरम गाइल । उ लोक-कथा आ दादी नानी के कहानिए के आपन परंपरा मान बइठल । एकरा पीछे ओह पाठक के डर भी काम करत रहे जवन पाठक 'हीरामन तोता' से ना कभी आगे गाइल रहे ना बढ़े के चाहत रहे । नतीजा इ बा कि ओह दौर के सभ कहानीकारन में कथावाचक भा दादी नानी बइठल बाड़ी । 'सुमन' बनारसी प्रसाद 'भोजपुरी', 'भोंनु', राधिका देवी, 'नाथ', पांडे' नमर्देश्वर सहाय, विवेकी राय, आ वेकार भोजपुरी—इ लोग एह दौर के जानल-मानल भोजपुरी कहानीकार बाड़ें । बाकिर एह सभ लोग के ओह जमाना के कहानी 'एगो रहन राजा' के तेवर में सुरू होली स ।

'प्यार के भरम' 'भोजपुरी' के दौर के सबसे पोपुलर कहानी बिया । 'बेकार भोजपुरी' के एह कहानी के काफी चरचा भइल । प्यार के देह ना होखे, भरम होला; ओकरा में पावे के ना देवे के महात्तम ह; ओकर खूबी देखावे में ना छिपावे में बा—एही चीम प इ कहानी लिखाइल रहे । सांचा त जरूर 'आदर्शवादी' रहे बाकिर एह कहानी में भोजपुरी कहानीकार पहिला बार मन के परतन में पइठल रहे ।

× × ×

सन साठ के आस-पास में भोजपुरी कहानी प एगो संकट आइल । छपास के संकट । 'भोजपुरी' बंद हो जाए से कवनो नियमित प्रकासन के माध्यम ना रह गइल एह तेल भोजपुरी कहानियन के छपाई आ पढ़ाई बंद रहल (छपाई बंद रहल त लिखाई भी बंदे होखी !) बाद में ओझा जी आ सलिल जी जमसेदपुर से एगो संग्रह निकललें । 'विधुर' के 'खैरा पीपर कभी ना डोले' निकलल । फेर गवें गवें त 'अंजोर' 'माटी के बोली', 'भोजपुरी कहानियाँ', 'भोजपुरी साहित्य'—कइ गो मैगजीन हो गइली स । 'भोजपुरी कहानियों' के साथे एगो बात खास मारका के बा । भोजपुरी में एगो खास विधा के जब पत्रिका निकलल त उ कविता के ना कहानी के रहे । का पिछला कुछ बरीसन में भोजपुरी के लेखकन आ पाठकन के झुकाव कहानी के ओर बदलहा ?

जहाँ तक संख्या के सवाल बा, पिछला तीन चार बरीस में भोजपुरी में नीमन बाकिर अतना कहानी लिखइ-

लीहा स जिनकर संग्रह निकालल जाए त उ सौ किसित से अधिके में जाई। बाकिर एकरा साथे एहू सच बा अस्सी परसेंट भोजपुरी कहानीकार अबहियों पुरान कहानी लिखताड़ें। 'खैरा पीपर कभी न डोले' इ मथेले बतावत बा कि विधुर जी प से अभी नानी के जादू नइखे उतरल। सलिल जी के संग्रहों में कवना नया कहानी नइखे। अइसन नइखे कि एह कहानीकारन के कहानियन के पात्र लोक-कथा भा सात समुन्दर पार के बाड़ें। एहू बात नइखे कि एह कहानीकारन का कहानी में आज के जिनगी के झलकना मिलेला। अब भर बीतन आ ठेठपाल ना सुमन, बंदना (जोगियामार : गिरिजेस) आ मनिकांत (चीठी के अरथ : रंग जी पांडे) बाड़ें। बाकिर खाली नामें बदलल बा। कथावाचक अबहियों मौजूद बा। लाम आ उबा देवे वाला बाहरी डिटेल, बीच-बीच में 'ब्रहमवाक्य' थीम के सतही 'ट्रीटमेंट' आ कहानीकार के आँख प संस्कारी चसमा—अइसन कहानियन के खास बात बाड़ी स।

चाहे उ कहानी बासमती चाउर (ईश्वर चंद्र सिंहा) होखे चाहे 'केकर का गति होई (मुखराम सिंह) चाहे झुनियां (मदन मोहन लाल) तीरथाटन (ईश्वरी प्रसाद गुप्त) हे हमार नीलम परी (सलिल) सम कहानी सतहीं संघर्ष के कहानी हइस। एह सभ कहानिय लोग आ चीजन के बाहरी रू आपन पुरान संस्कारी आँख से दे गइल बा।

बात तनी आउर साफ होखे ला 'सलिल' के 'सीजफायर' के लेखि एह कहानी में बी॰ ए॰ पास, एं इंडियन, मिस सैमुअल भारती हिन्दु पाकिस्तान-जंग के चरचा करत के 'हस्त रेखा विज्ञान' प उतर अइलां प्रोफेसर साहेब बड़ा इतमीनान उनकर हाथ देखे लगलें। आपन परेमी के घर प एक मेहरा देखली आ दरवान से सुनली कि जी आजे अइली हा।' पढ़ल भारती जी, कन्वेंट में टीचर होखे भारती जी, बड़-बड़ इंटरनेसनल डिसकस करेवाली भारती जी के से थाह लग गइल कि उ 'भाई 'बीबी जी' हई आ हमार परेमी द निकल गइल। ओने गरेजुएट भुवन बी॰ ए॰ के भी हालत कम नइखे। समस्या के कारन खो

बिना उहाँ का आपन पाहुन जी का ामें खटाखट चीठी पोस्ट करे में भिड़ ाइल बाड़ें। आ चीठी के मजमून भी अतने लाजवाब बा—'ओह बेवफा के ाम प नदी में डूब मरब।' के कही कि इ कहानी आज के भाव बोध के कहानी बेया 'प्यार के भरम' तक में बात अइसन भोंडा आ कहानी अइसन फलैट इखे ओहू कहानी में समस्या परेम के ा बाकिर समझदारी के ना त अतना वाला बा ना प्यार के डोरी अतना मजोर ना प्यार के विज्ञापन अतना छुला। पूरा कहानी पढ़ जाईं, आज जिनगी आ एकर तनाव, आज के ात आ एकर कहे के तेवर गाएब बा। लिल' कहीहें कि इ कहानी गलत-हमी आ संजोग के ह। हमार बिनती ा—गलत-फहमी आ संजोग आज के हानी के विषय नइखी स। आज के हानी अनुभव आ समझदारी के कहानी । आ अइसन कहानी भोजपुरी में भी खात बाड़ी स। उदाहरन खातिर ागि के लहर' (जितराम पाठक) उटहल (रामनाथ पाठक) घीम ावाज (विजयमोहन सिंह) आ मुआर मधुकरसिंह) के लेलिहीं। रउरा पढ़ीं पाइब कि एह कहानियन के दुनियाँ 'सीजफायर' के गढ़ल दुनियाँ न आपन अनुभव के दुनियाँ बा जहाँ किछुओ नीमक में मिरिच नइखे लगावल गइल, कवनो रोमानी उछाह नइखे। इ सभ कहानी जीभ से ना आँख से कहल गइल बाड़ी स। भाषा आ कथ दोनों मोरचा प इ सभ कहानियन में नया जमीन तुड़ाइल हा। 'तबें तेतरी फोकस में उग गइल, कंच उमिरिया जोतिया में तेतरी लउके लागल'—'आगि के लहर' के भासा इ 'तीरथाटन' के ना। एह कहानियन में डिटेल आ बरनन के कहीं गुंजाइस नइखे। आ डिटेल ना कहीं-कहीं त कहानी से मूल प्रसंगे गायब बा। पूरा 'घीम आवाज' पढ़ जाईं, कहीं अमला के बिआह के जिकिर तक नइखे बाकिर रउरा अनुभव करब कि सुरू से अंत तक लें उ मौजूद बा।

नया भोजपुरी कहानी भी मूलरूप से गावें के कहानी ह। बाकिर नया भावबोध के कहानी। अब इ बोध भगजोगनी (सिउटहल) के भी भ गइल बा कि 'मुखिया कुल उपरे-उपर छाली घींचत बाड़न स। आ गाँव में सरज के पैंट पहिनले (ग) रामसेवक जी पहुँच चुकल बाड़ें। घर-घर नइखन रह गइल। हर घर में खिड़की बा आ

हर खिड़की से हर घर में मेहरारू के मनावत नगीना बाबू चाहे जोतिया से ‘परेम’ के ‘कमाई’ के हिसाब पूछत ओकर माई तँतरी के ‘ना देखब’ के अन्दाज में देखल जा सकेला। कहीं कवनो उछाह के चीज नइखे। सब कुछ गड़भड़ हो गइल बा। बाप बा कि दोसी नइखे तबहूँ ओ दोसी होखे के एहसास में आँख नइखे उठा सकत। भाई बिया कि दिन-दिन साबुन के टिकिया अस घुलल जात बिया। भाई बाड़ें जे हितनाता भ गइल बाड़ें। सभ लोग एक दोसरा से टूट रहल बाड़ें। कतना गडभड हो गईल बा। कहे के कुछ कहा जात बा कुछ। बाप आपन अधेड़ आ कुँआर बेटी के ‘रामचरित मानस’ थम्हावत झूठ बोल देता कि ‘मोट अच्छर वाला तहरा भाई खातिर ले आइल रहलीं हाँ। तहार भाई पढ़िहें (धीम आवाज : विजयमोहन सिंह) आ घुटन अतना अधि कि अदमी अकबका के पूछत ‘साँचो रे दुनियाँ में अइसन दवाई नइखे जे आदमी खा के भर बउराइल रहिब? (मुअ मधुकर सिंह) इ दुनियाँ घुटन निरासा के दुनिया ह। जहाँ खाली देखनिहार रहब’ (आगि लहर) कहके कुछ लोग अपना ढाढ़स देता आ कुछ ‘जो ससुर (मुआर) कहके मुँह फेर ले बाकिर एकरा बावजूद इ दुनियाँ के आपन दुनियाँ ह, आज के दु इ आ इ सभ कहानी हमनी के कहानी हइ स, आज के कहानी स। भोजपुरी में अइसन ढेर के जरूरत बा। एकरा खातिर भो पाठकन में अनुपोपुलर होए खतरा कहानीकारन के उठा चाहीं अब ‘हिरामन तोता’ के में ही भोजपुरी साहित्य के कल्यान

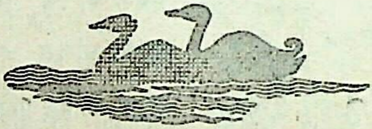

आपन कथ

प्रेस के दिक्कत आ परेशानी के चलते भोजपुरी साहित्य के ई अंक कुछ देर से रउआ सबकिहाँ पहुँच रहल बा। उमेद बा कि एकरा खातिर अपने सभ क्षमा करबि।

भोजपुरी साहित्य के कहानी विशेषांक एह से निकालल जा रहल बा कि पाठक वर्ग देखे कि भोजपुरियो साहित्य में आधुनिकता के भोगल आ लिखल जा रहल बा। आधुनिकता हमनी के करम-तकदीर बा। ओकरा के ओढहीं के परी। ओकरा से टूटला पर हमनी के पीछे छूटि जाइबि जा। कटल बा हटल संभव भी नइखे।

भोजपुरी साहित्य के नया कथा रूप के बानगी लीं। एह में रउआ लोक-कथा के तर्ज या कथनी ना मिली। एकर तेवर अपना युग के भोगल स्थिति के अबगा रहल बा।

भोजपुरी के कुछ कथा लेखक लोग कहनी कहे ला। लोक कथा लिखेला। भोजपुरी साहित्य अब लोक-कथा से आगे बा एकर प्रमाण एह विशेषांक में देबे के कोशिश बा।

संरक्षक

१. श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, मैनेजर, बनबार कोलियरी, पो० कूजू जि० हजारीबाग ।

२. श्री शिवकुमार त्रिपाठी, महाशक्ति आयुर्वेद भवन, तरी मुहल्ला, आरा

३. श्री शिवशंकर मिश्र, एडवोकेट, एम० पी० बाग, आरा (शाहाबाद)

४. श्री जीतन प्रसाद तिवारी, ग्राम तरी-मझगाई, पो० वेलहर, वाया सुलतानगंज, जि० भागलपुर ।

५. श्री रामसुन्दर त्रिपाठी, मु० घुरहूपुर, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद ।

६. श्री जगतानन्द, एडवोकेट, एम० पी० बाग, आरा (शाहाबाद) ।

७. श्री सत्यनारायण लाल, व्याख्याता, राज्य शिक्षा संस्थान, पटना-६ ।

८. श्री रामखेलावन सिंह, मैनेजिंग डाइरेक्टर, श्री कृष्ण आयुर्वेद भवन (प्रा०) लि०, आरा ।

९. श्री रामदेव सिंह, एडवोकेट, आरा ।

१०. श्री रामरूप उपाध्याय, करनामेपुर, परसौंढ़ा, शाहाबाद ।

११. श्री ब्रह्मेश्वर ओझा, बँसवर, रघुनाथ पुर, शाहाबाद ।

१२. श्री ऋषिकेश तिवारी, मु० पो० निमेज, शाहाबाद ।

१३. श्री ईश्वर दयाल दुबे, मैनेजर, टाटा मालकेरा कोलियरी, मु० पो० मालकेरा (धनबाद) ।

१४. श्री दामोदर प्रसाद बैजनाथ गुप्त, मेन रोड, झरिया ।

५. श्री चक्रधारी सिन्हा, ऐडवोकेट, बक्सर (शाहाबाद)

विशेष चन्दादाता

१. श्री केशव त्रिपाठी, मु० एकडार, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद ।

२. श्री प्रधानाध्यापक, मा० विचकनी पो० दल्लू पुर, जि० शाहाबाद ।

३ श्री शिवपूजन राम, मु० एकडार, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद ।

४. प० हरिहरनाथ उपाध्याय, वैद्य, काशी रसायनशाला, के २०/६१ राजमंदिर, वाराणसी ।

५ श्री विश्वेश्वर प्रसाद, बक्सर, शाहाबाद ।

६ श्री रामसूरत मिश्र, तरी-मँझगाँई, बेलहर, भागलपुर ।

७ श्री कैलास प्रसाद गुप्त, विकास पदाधिकारी, जीवन बीमा निगम, आरा ।

पंजीयित सं० २३ (१८/६५-V
डाक पंजीयित सं० पीटी० ४१

विशेष चन्दा ।

८. श्री जगन्नाथ चौबे, जबहाँ, हठीलपुर, शाहाबाद ।
९. श्री बलभद्र सिंह पारस सिंह, लाल बाजार, झरिया ।
१०. श्री विश्वनाथ प्रसाद राजेन्द्र प्रसाद, मेन रोड झरिया ।
११. श्री सूरजनाथ सिंह पारस सिंह ऐण्ड कंपनी, झरिया ।
१२. श्री सकलदेव सिंह ऐण्ड कंपनी, झरिया ।
१३. श्री लखन लाल अर्जुन प्रसाद, लाल बाजार, झरिया ।
१४. श्री बचन साह, बोरापट्टी, झरिया ।
१५. श्री दिगविजय चौबे, मु० पो० गोसाईंपुर, शाहाबाद ।
१६. श्री ऋषिकुमार मिश्र, मु० पो० रघुनाथपुर, शाहाबाद ।
१७. श्री रामदेव मिश्र, चन्द्रपुरा, हठीलपुर, शाहाबाद ।
१८ श्री यदुनन्दन मिश्र, खैरा कोलियरी, पो० कुसुण्डा, धनबाद ।
१९. श्री कुमार दीनानाथ सिंह बड़हरा, गोड्डा, सं० परगना ।

अधिक सफेद और चमकीली धुलाई के लिये
स्पेशल जागृति बार साबुन
और
जागृति सरसों तैल
अपने पास के दूकानदारों से खरीदें ।
निर्माता
केशरी इन्डस्ट्रीज, आरा
यहाँ 'प्रकाश देव धूप' भी तैयार होता है । एक बार परीक्षा करें ।

श्री लक्ष्मण त्रिपाठी व्यवस्थापक द्वारा
श्री सरस्वती प्रिंटिंग वर्क्स लिमिटेड, आरा खातिर
भोला प्रिंटिंग प्रेस, वाराणसी में छपवा के प्रकाशित ।

६

भोजपुरी

साहित्य

फरवरी, १९६६

बिल्कुल ही नये ढंग के

फिलिप्स
नोबोसोनिक
रेडियो

PHILIPS

जिन्दगी-सी हू ब-हू आवाज़

फिलिप्स ट्रांजिस्टर रेडियो : टेबुल या पोर्टेबुल अपना सानी नहीं रख अत्यधिक मांग के कारण, हमें खेद है, सभी मॉडल सदा प्राप्य नहीं होते।

फिलिप्स इलेक्ट्रिक रेडियो : मधुर आवाज और आधुनिकतम डिजा के लिये अत्यन्त लोकप्रिय मॉडल—

सचित्र रंगीन कैटलग के लिये हम से मिलें या हमको पत्र लिखें।

फिलिप्स बत्तियां : फ्लोरेसेंट ट्यूब बत्तियां, उषा, ओरियेंट, कैसेलस रैलिस बिजली के पंखे तथा बिजली के प्रत्येक सामान के लिये याद रखें।

शाहाबाद के प्रमुख विक्रेता

के० के० जैन कम्पन
आरा

भोजपुरी साहित्य

मासिक पत्रिका

वर्ष : १, अंक : ८ **फरवरी, १९६६**

६ वरिस २५ रुपया
जिनगी भर १०१ रुपया

कविता

गीत	१	नरेन्द्र मणि मंजुल
पहिले आउर पीछे	२	इन्द्रदेव मिश्र
कवन जमाना आइल	४	बेकार भोजपुरी
नैट बेवान	५	चन्द्रशेखर मिश्र
तू ही पतवार हो	३५	ब्रजभूषण पाण्डेय
केहू ना सोचे	३६	विजेन्द्रलाल 'अनिल'

निबन्ध

सबद्न के चाल आ पंडित के समुझ	६	रघुवंश नारायण सिंह

कहानी

मुआर	१२	मधुकर सिंह
जिनगी के परेम	१६	विजय
टूटत फेड़ बिखरत डेहुँवी (नाटक)	२१	सूर्यदेव राय
नइहरवा छूटल जाय	३७	पुरुषोत्तम कुमार पाठक
अभागिन	४१	मदन मोहन पाठक
सीज फायर	४५	बच्चन पाठक 'सलिल'
आपन कथ	४९	संपादक

एक वरिस ५ रुपया
१२ वरिस ५१ रुपया

संपादक **व्यवस्थापक**

डॉ० जितराम पाठक **लक्ष्मण त्रिपाठी**

कार्यालय

प्रोफेसर कॉलनी, के० जी० रोड, आरा (बिहार)

भूल सुधार

फरवरी के बदले भूल से भीतर के पेजों पर जनवरी छप गया है। पाठक सुधार लें।

व्यवस्थापक

टेली ग्राम—नवीन विज्ञान

फोन— कारखाना : २१३
निवास : ४७१

नवीन विज्ञान, आरा

स्टील फर्नीचर
साइंटिफिक एपरेटस
टाइपराइटर्स
फोम रब्बर कुशन

लकड़ी के फर्नीचर
लैबोरेटरी फिटिंग्स
सोफा कम बेड
स्टील स्प्रींग कुशन

नवीन का अर्थ है क्वालिटी

नये डिजाइनों के

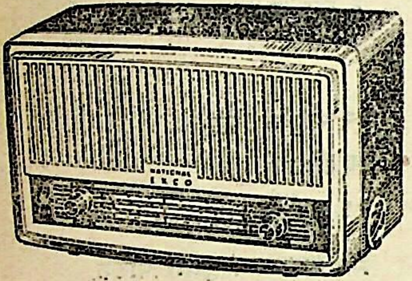

रेडियो सेट
और
ट्रांजिस्टर
के लिए
तथा

बिजली के अन्य
सामान
के लिए पधारें।

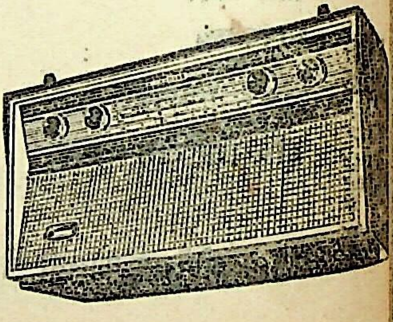

अजन्ताज ★ रमना रोड, आरा

गीत

नगेन्द्र मणि मंजुल

दुइ घरी रतिया से ठरवे धरतिया सितिया से कांपे परान
बहियां पकरि के जगावेले ननदिया उठ भवजी भइल बिहान
पगुरावे बयला भंइसिया रंभांइलि करेला पड़रूवा गुहार
भदई के पुअरा अगहनी के अंटिया हरिअर घसिया उतार
सुखल खोइखवा के मधुंरे लहसिया कउड़ा के आइल सुतार
दुइ चारि मनई के कवन संघतिया रोरी बिना टिकुली उघार
ओनवल बुनिया से बहरी दुअरिया भीतरी लगे ला अँधियार
कुहुकेला मोरवा लागला चुहिचुहिया खुलि गइलै पुरूब दुआर
गिरल अँजोरिया अकास फरियाइल छुटल किरिनिया के वान
बहिंया पकरि के जगावेले ननदियां उठ भउजी भइल विहान।
गउंवा के पुरुब महुअवा के गछिया लरकि के देले अंकवार
चिरई चुरुगंवा के खोतवा वना के वदरा फरेला गुलनार
अंगिया के पातर मुँहवा के ढुरहुर निंदिया के मातल प्यार
जेकरे ए लोरवा से भीजे ले सनेहिया ओहि बिना जिया अधार।
पोखरा के दंतिया से बोलुए सुरुगवा जागि गैलैं लरिका सेयान
वहिया पकरि के जगावेले ननदिया उठ भवजी भइल विहान॥

६, डायमन्ड जुबली हास्टल, इलाहाबाद

* * *

पहिले अउर पीछे

इन्द्रदेव मिश्र

अइसन एगो रहल जमाना,
बनल रहीं सगरे मरदाना,
जरतो रहे चिराक घीव के,
खूब रहे आराम जीव के,

सब कुछ आपन फूंकि तापि अब 'खूसट' नाज धराईंला।
पातर दिनवा देखि देखि अब अँखियन लोर बहाईंला॥

मेवा मिसिरी दूध मलाई,
पेड़ा भी जब छिलि के खाईं,
केतुका चीजु के नाम गिनाईं,
किसमत के हम वीर कहाईं,

बीतल दिनवा के सबूत में, आंकुस लेके धाईला।
हाथी के मत याद दिलाईं, अंखियन लोर बहाईला॥

कई रोज बिन खइले बीतल,
नुन पानी से जियरा सीतल,
घर के भेद कहाँ तक गाईं,
घरनी के हम का समुझाईं,

भीतर मुसरी डंड करत बा, बाहर किछु कह लाइँला।
बीतल बतिया सोचि सोचि के अँखियल लोर बहाइँला॥

सूखल चना चबाइ चबाई,
तब तक चोला कसमस जाई,
पापी पेट पहाड़ भइल बा,
देह सूखि के हाड़ भइल बा,

पाभर सतुआ चाटि चाटि के हपता खेपि ले जाइँला।
आगिल बतिया सोचि सोचि के अंखियन लोर बहाईंला॥

जहाँ पीठि से पेट सटल बा,
सोरह आना बजर परल बा,
घर में हाहाकार मचल बा,
धर्म ईमान कहाँ बाचल बा,
आटा में जल घोरि घोरि के लइकन के फुसलाईंला ।
दूध कहींला मुंह से बाकिर अंखियन लोर बहाईंला ॥

खेलत बा खुलि के लाचारी,
चारो ओर बढ़ल बेकारी
भूखे जीव के नरघट लागल,
ताल ठोंकि के मरघट जागल,
आंखि के आन्हर नाम नयन सुख झूठो के कहलाईंला,
चना चबेना बा सपना अब अंखियन लोर बहाईंला ॥

दुनिया के सब रीति देखि के,
खुदगरजी के प्रीति देखि के,
घर घर के अनरीति देखि के,
झूठे सब के जीति देखि के,
आपन जियरा कवनो विधि से अपने आप निभाईंला ।
धरम करम के मरम ना जानीं, अंखियन लोर बहाईंला ॥

प्रधानाध्यापक
उच्च विद्यालय, कोरान सराय
(शाहाबाद)।

*

कवन जमाना आइल

बेकार भोजपुरी

आपन राज भइल हम बुझलीं,
दुःख अब दूर पराइल,
अंगरेजन से नाता टूटना,
सुख के दिन नियराइल।
बाकिर बात भइल सब उलटा
सब कुछ वा उलटाइल,
चोर चलत वा सीना तनले
साधू डरे लुकाइल—भैया कवन०—
सतवन्ती के रोवत देखलीं,
वेश्या के मुसुकाइल,
इजतदार के गुमसुम देखलीं
लंगन के अफानइल—भैया कवन०—
जे जहवाँ मलिकार बनल बा,
तहवें वा अगराइल,
बिना टिकस पढ़वइया चललें,
अनपढ़ वा पकड़ाइल—भैया कवन०—
चाउर, चीनी, सावाँ सतुआ,
ऐके भाव बिकाइल,
कोट पैंट वालन के देखलीं,
छूछे बूट चबाइल—भैया कवन०—
रासन काड लेइ हम देखलीं,
बड़कन के छिछिआइल
तेल किरासन खातिर देखलीं,
हाथी पर छिछिआइल—भैया कवन०—
जेकरा के अधिकार मिलल,
ऊ स्वारथ में अझुराइल,
नेता चलस भलाई खोजत,
जनता रहस सँकाइल--भैया कवन०—

— डुमराव, शाहाबाद

*

नैट बेवान

चन्द्र शेखर मिश्र

की तउ राम कमान से छूटल,
जेट जयन्त हते बरियाईं।
ऊपर नीचे कभी अगले-
बगले झपटै फेरि काटइ कवाई।।
नैट अखेट करै असमान में,
खूबमची घमसान लड़ाई ।
बान समान बेवान लखान,
उड़ान भरइ हनुमान की नाईं।।

*

आयल पोंछइ माई क लोर अरे वंगलोर लई वक पाँती।
गोलन के धुआँवा में उड़इ, जनु बेध अन्हार दिया कै बाती।।
छाइ रहे, मड़राइ रहे, घहराइ रहे बदरा बरसाती।
नेटन की करनी लखि जेटन पैटन दूनउँ क फाटलि छाटी।।

सन्मार्ग, वाराणसी

सबदन के चाल आ पंडितन के समुझ

रघुवंश नारायण सिंह

कहल जाला कि एक बार इन्द्र महाराज सबद सासतर पढ़े खातिर वृहस्तति जी किहाँ गइलन। वृहस्पतिजी कहलीं कि सबदन के पढ़ लेला पर नू सबद सासतर पढ़ब। तब इंद्रजी सबदन के पढ़े लगलीं। पढ़त पढ़त जब बहुत दिन हो गइल तब ऊहाँ का फिर सबद सासतर पढ़ावे के कहलीं। एह पर वृहस्पतिजी कहलीं कि सबदवा पढ़ल हो जाई तब नु ओकरा सासतर के पढ़ाई होई। इन्द्र जी पूछलीं कि कबले ई खतम होई तब उहाँ का कहलीं कि खतम का होई एकर कवनो ओर छोर बा; ई त अनंत ह।

कहे के मतलब कि सबदन के पढ़ल, लिखल आ समुझल कवनो खेल ना ह। इहो हरि अनंत हरिकथा अनंता नियर अनंते बा। हमनी का अपना थोरा जानकारी पर केहू के कुछ कह देत बानी आ अपना के परम चतुर मान लेत बानी। सबदन के चाल बड़ा टेढ़मेढ़ आ पेचदार बा। कहीं कुछ अरथ बात कहीं कुछ। लिखावट में भी हेर फेर होत रहेला। केहू हिरसिन से लिख देल त केहू दिरघिन से लिखल। देवनागर में तीन-गो स बाड़न सा एहनियों के खेलवाड़ विचित्रे बा। वेद में कुछ, संस्कृत में कुछ आ हिंदी में कुछ आउर।

सुहवा वैदिक सबद ह

डा० कृष्णदेव उपाध्याय एम० ए० पी० एच० डी०, अपना किताब, "भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन", के प्रस्तावाना के पन्ना ७ पर लिखत बानी—लोक गीतों में व्यवहृत शब्दों के द्वारा हिंदी के कुछ शब्दों के विकास की परंपरा को हम वैदिक संस्कृत से जोड़ सकते हैं।××× लोकगीतों में सौभाग्यवती स्त्री के लिए 'सुहवा' शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह संस्कृत के 'सुभगा' शब्द से निकला है, यह बात भाषा शास्त्र वेत्ताओं से छिपी नहीं है।

हमार कहनाम बा कि 'सुहवा' 'सुभगा' से नइखे बनल ई त अपने एगो हइये ह। रिगवेद में 'सुहवा' सबद एक जगह ना कई जगह आ कई रूप में आइल बा। एही से हमार इहो कहनाम बा कि वेद के बेपरमान

सबद सोझे भोजपुरी में जइसे के तइसे आ गइल बाड़े स, संबंध भा परंपरा जोड़े के बाते नइखे। पहिले सुहवा देखीं त फेर आउर देखब :—

आे व्यमह्व आ रथमद्या दंसिष्ठमूतये।
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी आ सूर्यायैतस्थथुः (ऋक।८।२२।१)

एह मंत्र के तूर के पढ़ी :—ओ इति। त्यं। अह्वे। आ। रथं। अद्य। दंसिष्ठं। उतये। यं। अश्विना। सुऽहवां। रूद्रवर्तनी। इति रूद्रऽवर्तनी। आ। सूर्यायै। तस्थथु : ॥

एकर अरथ आर्यमुनिजी सुहवा = शोभनाह्वानौ = सुखकारक आह्वान वाले लिखले बानी। श्रीरामगोविंद त्रिवेदीजी अपना हिंदी रिगवेद के पन्ना ६४७ पर एक अरथ सुंदर आह्वान वाले लिखले बानी। दोसरका मंत्र में :—

पूर्वायुषं सुहवं पुरुस्पृहं भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम्
सचनावन्तं सुमतिभिः सोभरे विद्वेष समनेहसम् (ऋ ८।२२।२)

एहू में सुहवं के अरथ आर्यमुनिजी सुहवम् = सुखकारकाह्वानम् = सुखप्रद आह्वान वाला लिखले बानी। त्रिवेदी जी भी शोभन आह्वान वाला लिखले बानी।

भोजपुरी लोकगीत में बिआह के बेरा जब बर से कन्या के हाथ धरे के कहल जाला भा ऊ नेग जब होला तब ओही घरी मेहरारु अपना गीत में 'आंगुर धर सुहवा तोहार ए' गावली स। अब एह अरथ के वैदिक अरथ शोभन, सुंदर आ सुखकारक से मिला के पढ़ीं तब पता चली कि भोजपुरी वेद के कतना नियरा बा।

लगे हाथ एही पहिला मंत्र के अह्वे आ मंडल ८, सूक्त ८ के मंत्र ६ के 'अह्वत' के भोजपुरी के "उनका चल गइला पर बड़ा 'अह्वे' ला आ उनका चल गइला से बड़ा 'अह्वत' बा" के मिलाईं। एह में विवरन आ उच्चारन त एक्के बा अरथे खींच खांच के उहे बा। एही मंत्र के सुमतिभिः के 'राम गति देहू सुमति' से मिलाईं। एकरे भुज्यु = भोज = सब का पालक के देखीं। ऋक् ८।२०।२६ के क्षमा आ आतुरस्य के भोजपुरी के छमा आ आतुर के सोझा राख के देखीं। ओहते (ऋक् ८।७ ३१) जुहाव (ऋक् ८।६।१०) भोजपुरी में ओहते रहीं, जोहते रहीं बा कि ना ?

नाव, नौजवान, राय वोगैरह वैदिक हवेस

डा० वासुदेव नंदन प्रसाद एम० ए०, पी० एच० डी०, हिंदी विभागाध्यक्ष गया कालेज, अपना 'आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना" के

पन्ना ३४-३५ पर विदेसी के लिस्ट देले बानी। ओह में फारसी सबदन के सूची में नाव, नौजवान, राय वोगैरह सबद देल बाड़े स।

वेद में युवान सबद आइल बा युवति भी। एकरे से जवान बनल ओही में नव उपसर्ग लाग के नौजवान हो गइल। ई फारसी के कहसे भइल अगर ई रिगवेद में पचासों जगह आइल बा। ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विंदते पतिम (अ० ११।६।१२)।

ओसही राय सबद भी रिगवेद में अनेक बार आइल बा। शिक्षा इंद्र राय परु ऋचिषम। अवा नः पार्ये धने (ऋक्०८।६२।६) ई राय, राये, आदि कई तरह से आइल बा। राय के अरथ धन, ऐश्वर्य आ अधिकार बा। अइसने लोग के अंगरेजी राज में राय के उपाधि देल जात रहे। वैदिक काल में एही से इंद्र राय कहल गइल बा। वेद में ई बहुत बेर आइल बा। तुलसी बाबा भी एकर भरपूर उपयोग कइले बानी। राय, राव, राउ, रउओ, रउरो, एही से बनल बा। राजपूत आ भूमिहारन का नाँव के अखिर में ई एही धन सम्पत्ति का ओजह से जोड़ाला।

एष ते देव नेता रथस्पति शं रयिं
शं राय शं स्वस्तये इषः स्तुतो मनामहं देव स्तुतो मनामहे
(ऋक० ५।५०।५)

रिग वैदिक काल में नाव बहुत चलत रहे। तुग्र के बेटा भुज्यु रहन। ऊ नाव पर आपन सेना साज के समुद्र के एगो टापू दखल करे चलल रहन तले नाव समुद्र में मरा गइल। भुज्यु डूबे लगलन त अश्विनी कुमार अपना नाव पर जवना में सैगो डाँड़ लागल रहे—छान के बचवले। एह तरह से वेद में नाव के चरचा बहुत बेर आइल बा। एह से "वेदा नावः समुद्रियः, (ऋक् १।२५।७) नाव ई यथा समुद्रियम्, युष्माकं नावा वसवः (ऋक् ८।१८।१७) में आइल बा।

अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो न कुतश्च नोनः
त्वमेव विद्वान न बिभाय मृत्योर आत्मानं धीरम् अजरम् युवानम्
(अ०१०।८।४४)

अच्छुत (ऋ० ५।७८।६) अच्छा कर्तारं (ऋ० ८।१६।१०) असानो (ऋ० ६।१०।१६) इदं हर्म्यं (ऋ० ७।६५।११) ओसही उपर के अकामो, धीरो, अमृत रस, तृप्त, विद्वान, मृत्यु, आत्मा, अजर, युवान् वोगैरह सबद भोजपुरी में चले वाला बाड़े स। एह में अच्छुत, असानो कहनो अकामो,

धीरो, युवान हिंदी के छोड़ के भोजपुरी में एही रूप में आ गइल बाड़न स। एहनी के सूची पत्र तेआर करे खातिर समय आ साधन दूनों के जरूरत बा।

इहाँ भोजपुरी में चले वाला कुछ सबदन के एह खातिर देल जाता कि विद्वान पाठक लोग एकनी के पढ़सु, समुझसु, सोचसु आ कहसु कि एहनी के पुरखा पुरनियाँ के रहे आ एहनी से साहित के सिरजन होके भासा के सोभा बढ़ी कि ना ? सबदन के चाल का बारे में अतने कहल काफी बा कि इनकर रूप बरोबर बदलते रहेला। ऊचारन बदली त बिवरन के बदले के परी, समय का झकोर में अरथो बदल जाला। अरथ बदलियो देल जाला। हरिजन के अरथ गांधी जी बदल देलीं। अब ऊ हरि के जन ना रह के एगो जात हो गइल। ओसही झरेलो के अरथ बदलल। वद के अरथ उच्चारन भेद से बदल जाई। वद माने बदमास मगर जब व आ द दूनों के भरपूर उचारन होई त ओकर अरथ कह हो जाई। एही से सबदन के चाल टेढ़मेढ़ कहल गइल बा। अब सबदन के सूची देखी।

अकबकाइल = घबड़ाइल

अँकरे = पहिलौंठी, खाली

अकसर = अकेल, अकेला, अब तब

अगुआ = आगाड़ी जाये वाला, बिआह ठीक करे खातिर जे पहिले जाला, बंगला में घटक कहाला।

अगुआन = नेता, आगा चले वाला

अगवढ़ = काम के पहिले देल गइल मजूरी के हिस्सा, ऐडवान्स

अँगऊँग = नया अनाज जब खेत खरियान से आई त बाबाजी खातिर कुछ निकाल देल गइल

अगरासन = अग्राहार, खाए का पहिले कुल निकाल देल गइल अन्न

अगोरल = रखवारी कइल

अगरवटा = ठेकुआ बनावे खातिर चिह्न काटल लकड़ी के साँचा

अचेत = बेखबर, बेहोस

अजगुत = असंभव, अजब

अनभावत = बेमन के, बेभाव के

अनगढ़ = बेगढ़ल, बेबनावल, रुखर

अनमुनाह = फरिछ भइला के कुछ पहिले

अनभुआर=अनजान जगह पर मन ना लागत होय

अनमनाह=तबीअत ढीला होय

अनसावँग=जोगाड़ ना बइठे, साँवग ना होय

अनगुताह=सवेरे, प्रातः काल पराते

अमनरव = जबून मान लेल

अगवार=ओसवनी में हवा से उड़ के आगा चल गइल अन्न

अनफठ=बेहिसाब, बेमतलब के

अनकसावन = जहाँ आदमी निश्चिंत ना होय, मन ना लागत हो।

अन्हेर=जादती कइल, बेबुझ के काम

अलगरज=निष्ठा, विसवास, प्रेम ना होय

अलचार=बिबस, परीसान

असकत=आलस

अबेर=देरी, कुबेर

अनेर=बेमतलब के

अनेत=टेढ़ चाल चलल, बरिआरी कइल

अनस=जब हल्ला गुल्ला पसन ना परे

अनसावन=मिजाज अकुता जाय, मन ना लागे

अनधितल = असवधान, अचके में

अरिआवल=राह धरावल, आर बतावल

ओरिआवल=फरिआवल, फसिला कइल

औगार=दवा के, गड़ा के हर चलावल

ओगार=धान के खेत या गाय के थान से पानी आ दूध गारके निकाल

ओछ, ओछा, ओछाई=छोट, छोटा, छोटाई, छोटिहई

बालू के भीत अटारी के धावन, ओछ की प्रीति कहाँ निबही है।

उलटन=क्रांति, सभ कुछ बदल जाय

उजुग = सजग, जागल रहल

उजागर = रौशन, प्रकाशमान
नैबत = संयोग, तमासा
डी भी = अंकुर
अँखुआ = बिआ अँकुरे खातिर फुटेला
वेहँड़ = राह भुला गइल भा साथ छूट गइल
बयेखरा = कवनो काम खातिर हड़बड़ाइल
पसंघा = पार्श्वचर, पासंग, संघतिआ
पैसार = पहुँच, आमदरफ्त
परेह = कढ़ी
पैवस्त = खूब रम जाना, घूलल मिलल
पेहम = एकाकार, एमदम घूलमिल जाना
पगार = बाग बगइचा के रखवारी खातिर जे खाँवा देल जाला जमशेदपुर में मजूरी मिले का दिन जे लइन लागेला उहो पगारे कहाला
पैसारी = बिसाती, छोट छोट ढेर वतुसन के दोकानदार
पसेरी = पाँच सेर तउले के बटखारा, मन के आठवाँ हिस्सा
पतछावा = अफसोस

एह में देल सबदन के जे अरथ देवे के कोरसिस कइल गइल बा ऊ खाली कोरसिसे ह एह से ओकरो पर धेआन देवे के काम बा कि सही बा कि गलत। ओह तरफ माने का ओर भी ढेर सबद बाड़े स जवनन के पता ठेकान खोजे के बा।

भोजपुरी कार्यालय, पटना।

कहानी

मुअार

मधुकर सिंह

रतगराहे आजकाल नींन टूट जाला। आ बुझाला जे कवनों तूफा तिनडोरिया का संगे उठल आ नजर मिलावते गायब हो गइल। तड़तड़ा उ उठेला और सरिआ के अंगवछा से मुँह लपेट ले ला। बाकिर त आँख कई तह अंगवछा के छेद के बाहर ताके लागेला। आकाश में भूचा तूफान आ समुन्दर खउलता।

आजो ऊ उठि के बइठ गइल। कतही कुछ ना रहे। खाली भकु अन्हार। आ तिनडोरिया डूबल जात रहे। हाथ लफा के टोवलस बैला मुरदा अस पड़ल रहे। माथा टोवलस, त पगुरात रहे। संतोस भ कि अभी ले बेमार नइखे परल।

अंगना में आइल त अन्हारे में मेहरी धान फटकत रहे। ढिबरी पूछलस त केतहूँ फेंका गइल रहे। खीझ के समुझा लेलस कि जाए जब किरासन तेल, अपना राज से उठ गइल त ढिबरी का होई। ऊ मेह से सटके बइठ रहल आ कहल चाहत रहे कि चल होने सुतीं जा, आ ढेर रात बा। अकेले डर लागी। नींन नइखे परत। बाकिर दोसर ब पूछा गइल, 'कवचीं फटक ताड़िस' ?

'मुआर त' ? ऊ खखुआ के जबाब देलस।

'काहे खातिर' ?

'त का करीं ? मेहरी के मुँह खुल गइल, 'का हव घर में जे फटक खाली मुआरे नूं ? पीट देली हाँ कि जाड़ा के रात में सुते के बा तकलीफ बा। ठंडा से नींद नइखें आवत।

'हं रे ! मुआर में इहो कम गुन नइखे। मुआरे बिछवना, मुअ ओढ़ना। ह नूं'?

'आ खरची नइखे चलावत का ? मऊगी फेरु खखुआ के बोलल।

'देना, थोड़ का सा बेला के डाल दीं। फजीरे से कुछो खइले नइखे। मर जाइ त हतेआ लागी ?

'आ भूखले छंवड़ा-छवड़ी मर जइहें स त ओकर केकरा हतेआ लागी ? केकर-केकर हतेआ बचइब' ?

'इहो ठीके कहत बाड़ि स रे। कह के ऊ खाड़ा हो गइल।

मेहरी बुझलस जे मुआर उठावे चललन। ऊ बोलल, 'जा दुआर प रखल बा। जवन बुझाए तवन कर ग। बैल के खिआ द, भा लइकन के बिछवना बनाव। तीन गो बोझा मिलल। इहे एक पसेरी धान भँइल'।

दुआर प मुआर रखल रहे। हिंम्मत ना भइल जों एको तिरिन छूओ। खाली करेजा धके मिसे आ रह-रह के मुक्का मारे। तिनडोरिया का ओर ताके, बाकी ऊ तूफान काहाँ बा ? खूबे दाँत किटकिटावे आ अपने हाथ हबक लेवे।

मेहरी के सब लउकत रहे। उ ओहिजे से बोलल। 'ई का कर ताड़ हो ? बउरा गइल का' ?

'बउरा जइतीं तक काहे के ? सांचो रे, दुनिया में कवनो दवाई नइखे जे आदमी खा के जिनगी भर बउराइले रहित ?

हेने आव ? मउगी डपट के बोलल।

'अमरफल देवता लोगिन के चाहीं, बाकिर आदमी खातिर कवनो बउराफल चाहीं। सांचो रे, कांहा मिली ?

मेहरी ओकरा भीरी आके सट गइल। 'चल, उठ। उघारे बाड़। ठंडा मार दी'।

'ऊ रजवा के बेटा सुकवार, सुकुमार होके जब अमरफल खातिर सात समुन्दर पार ललकी परी के इन्दरासन तकले चहुँप गइल त हम गिरहथ के बेटा होके बउराफल ना लेआ सकीं, ?

'काहाँ मिली' ? मउगी भी सोचलस कि तनकि भ हमरो मिल जाई।

'ईहे त पता नइखे।

'तब के बताई' ?

'ईहो नइखीं जानत'।

मउगी ओकरा के धके उठावे लागल त ऊ रोवत रहे। थोड़ का देर ले ओकरा कठमुरकी लाग गइल। कवनो उकिते ना खुले। जमीन बुझाए

जे धसल जाता नीचे। आ अमाइल जातिआ। घूमके फेनु पकड़ लेलस 'मरद बच्चा होके, केहू रोवेला भला? तब कइसे बउराफल ले अइ हमरो के कइसे देब सब?

मेहरी ओकर लोर पोंछत रहे। ओकर हाथ ध लेलस आ अ अंगवछा से पोंछे लागल। 'त का कह ताड़े रे, बैला बेंच दीं?

'कवनो लिही ना। बन पड़े त बेला द भा गऊशाला भेज द। द रोपेआ में त कवनो ना पूछी'। मेहरी कहलस।

'दस रोपेआ कम ना होखे रे। कसाई के दे दीं त बीस-पच मिल जाय'।

'कसाई अब भंइस लेतान स, गऊ ना।'

'बाकिर कवनों सुनी त का कही'?

'का कही? रात के आके ले जाई। बाकी देखिह, रोपेआ न गिना लिह'।

सारी घर में बैल हंकड़त रहे। 'ना रे। गऊ माता होली, बूढ़ कसाई का खूँटे! अब ले कुछ ना कइलीं त अब का करीं।'

'त आछा बा कि बेला द'।

'कइसे बेलाईं? छाती फाटे लागता'।

'तब हम का कहीं।' मेहरी ओकरे लगे बइठ गइल आ कहे लाग 'गवत बिनु बैल दू दिन से उपासे बा। कसाई के हाथे बेंचल पाप लाग करजा गुलाम कोई देते नइखो आ सरकार के पासे आँखें नइखे। त दे मुआर। इहो खा जाव'।

ओकरा कुछ हिम्मत भइल। 'हं रे! ना होई त, इ चार दिन केकरो से मुआर मांग ले आइब, सुते खातिर। बैला के कुल्ह खि दिआव, ना त टटाके मर जाई'।

'रहे द, अब फजीरे दिआई। आज देल। य त तुरते अ जाई। बा नूं?'

ऊ मुआर के छू-छू के पंजीआवे लागल। सोचत रहे, भिनसहरा उ पहिला काम इहे करब जे बैल के एक पांजा खिआ देब। लइका-फ भा अपने—सब कोई घामो खाके जी सकेला।

दूनों बेकत उंठके ओसरा में अइलन। आ एगो चटाई ढँ सुतलन, त सनसना के हावा छेदे। मेहरी आपन अँचरा अवरी स लेलस। लुगा एकदम खुले-खुले हो गइल, तबो ओकर देह ना ढँप

थर-थर कांपत रहे। दूनो एके-दोसरा के कस के चाँप लेलन स। बाकिर आँख ना सटत रहे। हावा मारते जाए।

'हावा कान में समाता रे? जल्दी तोप।

'आउर सट जा!

'हुई पीठिओं। सराक दे लुगा खींच के पीठ ढँपलस। 'बस, रहे दे अभी। तनिका सा आउर सट जो ना। हँ, बस तनिका सा।'

रस्सी बरला लेहवा दूनो यह पांजर से ओह पांजर छटपटात रहन स।

दुआर प चर् चर् के आवाज सुनाइल। बैला तुराइल कार्रें? ऊ पूछलस।

'जाए द। खाय देउस। आज खइलस, भा काल्हु। एके बात बा। कइसन चर् चर् खाता हो?'

तनी हाँक दे रे, नात एके दिन कुल्ह खा जाई।'

'हम कइसे जाईं। लंगटे त बानी।'

'तनी जो ना?'

मेहरी उठके वेलावे गइल। 'बाप रे! ऊ चिलाइल, 'ईत साँढ़ ह हो!

'केने रे? उठके दउड़ल।

साँढ़ दूनो के देखते गुरनाइल।

'भाग, ना त चीर दी।'

'ईत ब्लाक केहरे। तुरा गइल बा।'

'रह। भाला ले आवतानी!

'बाप रे! भाला से के मारी रे फाँसी प लटकवइबे का?

'सब त खाता?'

'खाये दे? केकर हिम्मत बा, सरकारी साँढ़ मारे के? घर दुआर कुल्ह नीलाम हो जाई।'

दूनो वेकत आके फेरु सुतलन स। मेहरी अभी ले आपन लुगाना सम्हरलस। आ ओकरा के अँकवारी में दबवले पड़ल रहे। साँढ़ चर्-चर् मुआर चबावत रहे। 'कब ले ससुरु खइहें? बड़ले कतना बा। पंजे भर नूं आउर! जो ससुर खाजो, जतना मन करे।' कहके ऊ मुँह फेर लेलस।

धरहरा, आरा
(बिहार)

जिनिगी के परेम

विजय

मनोहर दुअरा पर जब अइलन, त एगो बात इयाद पड़ल। चट देना अगना में फेरू समा गइलन। जब अगना से निकललन त बड़ा तेजी से गाँव के छोटे मोटे राहता पकड़ के आगे बढ़े लगलन। अभी सुरुज भगवान नइखे उगल अभी ले माटी ओस में सनल बा। गाँव के कुछ आदमी दिसा-मैदान जात बा लोग। बाकिर ए ओरिया मनोहर के कौनों ध्यान नइखे, ऊ गुमसुम-चुपचाप आगे बढ़ रहल बाड़न। उनकरा के देखला पर इहे बुझात बा कि ऊ हिरदय में कौनो बात सोच विचार रहल बा। ओकरा माथा पर छोट-मोटरी बा अउरी देह पर एगो सवा रुपिया वाला लाल अंगोछा बा। छोट पनहा के एगो धोती आउरी "टायर छाप" चउदह आना वाला एगो पुरान चप्पल गोड़ में बा। आउरी कुछ नइखे। ठाटबाट के नाम पर जै जै सियाराम बा। केस अमेरिकनकट कटल बा।

मनोहर तनिके दूर गइल रहलन कि पीछे से आवाज आइल—"ए मनोहर बबुआ, तनी रूक।"

मनोहर के आगे बढ़त गोड़ थथमि गइल। आउर ऊ पीछे घूम के देखलन कि बाबू झटकल चल आवत बाड़न।

बाबू के देख के मनोहर के खीस ढ़ढ़ा पड़ गइल। खीस एहसे हो गइल रहे कि बनल-बनावल जतरा पर टोक के......बाकिर बाबू के टोकत देख के सब खीस ठीक ओही लेखा उड़ गइल जे लेखा मेहरारू के मन लाएक बात कहला पर ओकनी के खीस उड़ जाला।

जब लगे अइलन मनोहर के बाबू त ऊ कहलख—"काह बाबू?"

असी बरस के बूढ़ राम रतन लामा-लामा सांस पर काबू पा के बोललन—"अरे! धनेसरी के दुल्हा आइल बाड़न। फेरू झंझट बखेड़ा कइले बाड़न। हमरा त उनकरा से बतिआये नइखे आवत, बाकिर तू चल उनकरा से बति आव।"

"हम चलीं त हमरा जानाना के का होई। जे परसवती के दरद से तरप रहल बिया। कहीं मर जाये तब......।"

बीचे में रामरतन बात काट के बोललन—"अइसन बात मुँह से मत निकाल। भगवान के भरोसा करके ओकरा के छोड़ द। सहर मति जा। चल, आपन बहिन के भाग देख। बार बार अइसन मौका ना आवेला। हिरदया पर पत्थल राख के बहिन खातिर चल मनोहर !"

"बाकिर बाबू, ओकरो त जरूरी बा।"

"हाँ बबुआ, दूनों काम जरूरिये बा; बाकिर तोहरा ई देखे के बा कि दूनों काम में सबले जरूरी कौन बा।"

बाबू के बात सुन के मनोहर कुछ देर ले मन में ना जाने का सोचत बिचारत रहलन। फिर आपन बूढ़ बाप के आँख के देख के, सामने के बरगद के गाछ पर गिरल ओस देखे लगलेन। ओस पत्ता पर से टप टप नीचे चूअत बा, ठीक मोती लेखा। कुछ देर ले ओस के टपकत देखत रहलन आउरी आपन विचार जाने के कोसिस करत रहलन। फिर निसचय हो के बाबू से बोललन—"ठीक बा हम चलत बानी। आगे भगवान मालिक बानी।" दियरी के भुलफुलात लव लेखा मनोहर ढ़ील पड़ के आगे कहलन त खड़ा का बाड़ बाबू, चल।

एतना कह के आगे बढ़ गइल मनोहर। जे राहता से ऊ आइल रहलन ओही राहता से पीछे लौट अइलन। अब ले गाँव के लोग जाग उठल रहे। सब के घरे हाला गुला सुनाई पड़त रहे...चरखा के, धान कूटे के आउरी गीत गावे के......।

राहता खतम भइला पर मनोहर अपना घर के लगे पहुँचलन। घरे पहुँच के सीधे दलान में समा गइलन। दलान में धनेसरी के मरदना चुप-चाप सीत-बसन्त अइसन बइठल रहे। ओकरा मुँह में एगो संगम सिगरेट लागल रहे, आ नाक मुँह से धुँआ निकलत रहे।

जब मनोहर दलान में गइलन त ओकर बाबू बाहरे रूक गइलन।

मनोहर के घूसत देखिओ के धनेसरी के मरदाना सिगरेट आराम से पीयत रहे। सलाम आउरी परनाम त ऊ ताखा पर रख देले बा-अइन बुझात बा। मनोहर ई अतयाचार देख के अगिया बैताल हो गइलन। बाकिर चुप लगा गइला में आपन भलाई समझ के चुप लगा गइलन। मनोहर कुछ सोच समझ के बोललन—"पाहुन कब अइनीं।"

जरल, धनकत सुर में पाहुन बोललन—"रऊरा पास...आखिरी फसिला

करेला हम आइल बानी। राउर का विचार बा ठीक ठीक बोलीं। ना ई हो बोलीं रउआ का चाहत बानीं।"

"हमार त ईहे विचार बाकि रऊआ धनेसरी के ले जाईं। खुसी राखी आ खुसी से र......।"

नरम जबाब देत देख के पाहुन चट देना बीच में बोल उठलन— "रऊरा हमरा के डोम चमार समझ ले ले बानी। का समझत बानी हम के; हम राजपूत हईं।"

बाहर खड़ा रामरतन पाहुन के कुछ गरमात देख के समझ गइलन कि अब बात बिगड़े के चाहत बा। बाकिर अपना बोले के प्रभुताय ना पा चुप लगाये में ठीक समझलन। आउर चुप लगा गइलन।

मनोहर के सूतल खिस जाग उठल। आउर ऊ बहुत ऊँच आवाज कहलन—"त तें का हमरा के चमार आउर मेहतर समझले ह। तें हम पइसा से कालेज में पढ़ले। हमरे पइसा पर गुलछर्रा उड़वले। आउर हमरे पर आज फुटानी पाढ़त बाड़े। अपना के राजपूत कहत बाड़े। राज तोरा लेखा ना होलन सन। तोरा राजपूत के सान रहित त ते हमरा ईहे बोलते कि तू......राजपूत अपना से बड़ा आदमी के कबहू अपमानि ना करे...बाकिर तें त......।" तोरा लाज रहित त तू ईहाँ कभी अइते। हम ई हे अब ले समझले रहनी ह कि हमार बहिन मुसमात गइल। बाकिर तें इहाँ आके फेरू हमार सुतल खीसि के जगा देले। आ सुन ते चार बरस का कइली ह?...वेसवा इहाँ दिन भर पड़ल रहत रह ह। तें हमरा बहिनी के जिनिगी बरवाद कइके राख देहले। झूठ मूठ ओक पर अकलंक लगा के घर से निकाल देले...आउर सहर जाके वेसवा ईहाँ.. ...खूब गुलरोगन लागल ह ई चार बरिस में।

तोहरा अइसन हमार पाहून रहल आउर ना रहल—एके बरोबर बा तोरा अइसन पापी खोजला से ना मिली......।

बात काट के पाहुन कुछ बोले के चहलन बाकिर मनोहर कि बोले के मोका ना देले। बोललन—"ते चार बरस तक ई ना पूछले धनेसरी कइसन बिया। ई हो ना सवचले कि धनेसरी ए दुनिया में कि कि ना आज चलले ह। जरला पर नमक देवे। तोर बाप चउकदार.. त ते कइसन होइवे...हमरा सादी कइला के पछतावा होत बा...हम सुनर माटी के आपन चाक पर चढ़ा के बेरूप बना देले...दोसरा के

माटी मिल जाइत त ऊ माटी के सुनर सुनर केतना चीज बनाइत...... अलगा हट हमरा से...हमरा आँख से दूर हट......।"

अतना कह के मनोहर चुप लगा गइलन। बाकिर पापी हिरदया पाहुन के कबहूँ चुप रही। ठीक कसार लेखा पाहून के हिरदया बुझात बा–जे हाथ से जेतना बांहल जाला ओतने ऊ भरके ला...पाहून बोललन—"तू अपना के का समझत बाड़ मनोहर ?"

सिगरेट बिग के पाहुन बोललन अब पाहून भी रउरा से तू पर उतर गइल बाड़न।

मनोहर पाहुन के ई ताव देख के चट देना एक थाप पाहून के लगा देलन।

चाटी लगा के जइसहीं पीछे उ घूमत बाड़न तइसहीं धनेसरी देखाई दिहलस। धनेसरी चउकठ पकड़ के खड़ा रहे। आँख का कोर से टप टप लोर चूवत रहे।

मनोहर ओकरा के देख के पूछलन— 'का ह रे धनेसरी।"

"........।"

"बोलना, का ह। काहे रोअत बाड़े।"

धनेसरी कुछ बोले के चहली, बाकिर सामने अपना मरदाना के देख के चट देना घूघ तान के घूमि लगली, तवे मनोहर झकझोर के पूछलन—"बोलुना रे धनेसरी, का भइल ह। तोरा खातिर हम जान देवे ला तइयार बानीं, आउर तेहीं हिरदया के बात नइखिस कहत।"

मनोहर ई समझ के फेरू धनेसरी से कहलन कि कौनो बात ई अपना मरदाना के बारे में कहे के चाहत बिया, बाकिर लाज के मारे कुछू नइखे बोल पावत –"बोलुना धनेसरी। हमहीं नूँ एगो भाई बानी। तौनों पर ते छुपावत बाड़े।"

"भइया तू सुन के का करब। बड़ा दुख होत बा हिरदया में दबइला पर। जब बाहर निकली त तोहरा त आउरी दुख होई।"

"दुख काहें।"

"भइया··सुने के पहिले...।"

"बोलना......।"

"ओह ! कइसे कहीं हम।"

"बोलना करेजा पर पत्थर राख के...।"

"भऊजी चल दे ली।"

"का......।" घनेसरी के एक बार झकझोर के मनोहर अंगना में समा गइलन। अगना से होके सीधे अपना बोठरी में एइलन। कोठरी में देखलन कि मेहरारू लोग के भीड़ लागल बा। आउरी माई ओकरा जानाना के मुँह उजर कपड़ा मे तोपत बाड़ी। ओकरा जानाना के लगे कोई सुतलबा। साइद......खटिया के लगे खून के लोथड़ा बा...। मनोहर पागल लेखा पूछलख अपना माई से—"का रे माई ई मर गइल।"

"हूँ" अँटकल आउर भरल गला से उनकर माई बोलली।

एतना पूछ के ऊ दुआर निकल अइलन। दुअरा पर मार भीड़ लागल बा। एक ओर पाहुन; एक ओर बाबू आउर गाँव के लोग खड़ा बा। साइत गाँव के लोग जान गइल बा कि मनोहर का...... ।"

मनोहर बाहर आके सब के सुन्न आँख से देखलन। ओकरा आँख में कौनों भाव नइखे। सब लोग के चेहरा झँवाइल बा। ओकर बाबू के चेहरा त काला पड़ गइल बा। पाहून के देह अइसने लागत बा कि उनकरा देह में एको बूँद खून अब बाँचि नइखे गइल।

कुछ देर ले मनोहर दुअरा पर खड़ा रहलन। फेर अपना बाबू के पास जा के बोललन—"अब खूस बाड़ नूँ बाबू।"

बाबू का जबाब देसु। उनकर त हाल बेहाल हो गइल बा। उनकर न आँखें के पपनी...हिलत बा न देहे में...।

सब कोई के कठया मार देले बा। सब कोई अचकचा गइल बा। गाँव के आउरी लोग भीड़ देख के चहूँपे लागलबा लोग। बाकिर लोग के पूछला पर कौनों जबाव ना पाके चुप लगा जात बा लोग, तबे अँगना के बखार पर पँवरत आवाज आइल, दुअरा पर अरे दुल्हीन...हो दुल्हीन...ऊँ हूँ ऊँ हूँ...हो ..।

अरे भउजी ! हो भउजी, तोहरा बिना हम कइसे रहबि हो भउजी...।

...तबे बरगद के गाछ से एगो काग उड़ल आउर आसमान में उड़ गइल।

मनोहर ऊ काग के तब तक देखत रह गइलन जब तक कि काग एक दम घटा में लुका ना गइल।

—भगवान बाजार, छपरा।

*

टूटत फेड़ बिखरत डेहुँगी

सूर्य देवराय

दृश्य पहिला

(दस इगारह हाथ के आँगन। तीन ओर माटी के तीन तीन घर आ एक ओर खाली दीवाल। पूरब तरफ बहरा निकले के दरवाजा। अगहन के महीना। घाम अँगना से उड़ि के मुँड़ेरा पर पहुँचल रहे। पूरब के दरवाजा से राम दरस भीतर घुस के आँगना में कदम रखत बाड़न। उनका सिर पर एगो मोटरी बा आ हाथ में लटकत झोरा में तरकारी लउकत बा। ओरियावी से मोटरी ठेके ना एही से थोरे झुक के अँगना में आवत बाड़न। रामदरस बस एगो मइल धोती ठेहुन ले पहिन ले बाड़न। उमर पचास के पार गइल बा, बाकी कमर अभी तनिको झुकल नइखे। पँजरी के हाड़ साफ लउकत बा, बाकिर देह बतावलिया कि एक दिन अखाड़ा में इ अपना सामने केहू के गुनत ना होईहन। रंग धपधप गोर, साँझ के घाम जइसन। बड़ी बड़ी कउड़ी जइसन आँख आ ललाट सूरज जइसन दमकता। रामदरस के देख के उनकर औरत बर्तन साफ कइल छोड़ के गन्दे हाथे आगे बढ़ आवत बाड़ी। उनकर नाम त चन्द्रावती रहे, बाकी कहास चनरवती। सिर के आधा केश सन जइसन सफेद हो गई रहल। पेवन लगावल साड़ी पहिनले रहली आ लिलार पर नवका पइसा बराबर टिकुली सटल रहे। नराक में बड़का नकबेल लटकल रहे आ हाथ गोड़ में चानी के कँगना आ काड़ा दिखाई देत रहे।)

चनरवती—(चिहा के) ई का ह ?

रामदरस—(मोटरी उतारते) अरे आज बबुआ आवत बा न। जतन साहू कि हाँ चलि गइली हँ। पहिले त ससुरा उधार देते ना रहल ह, बाकिर बड़ा कहला सुनला पर .... ।

चनरवती—(मोटरी खोलत) उधार का देउ ? अभी पहिले ही के बकाया ना साफ भइल। (भौंहा थोड़ा सिकोड़ि के) आ एकर कवन जरूरत रहल ह ? कवनो पाहुन त केहू आवत नइखे ? दू हजार रुपया कर्जा हो गइल बा। (आहि खींचि के) ना जाने कवना जमाना में ई साफ होई ?

रामदरस—(हँसि के) बबुआ के भइला के देरि बा। लिखले देहल ह कि अबकी सब कर्जा साफ क देइब ?

चनरवती—(झुँझलाइल आवाज में) दू बरिस नौकरी करत हो गइल न ? सब गाँव कहता कि तोहार देवर इंजीनियर हो गइल बा। अब त तहरा रुपया से गल्ला हो जाई। तुहूँ कह कि बस पढ़ाई खतम भइला के देर बा, बबुआ के नौकरी धरते सब दुख दूर हो जाई। (बायीं ओर मुड़के) ए रानी, हाथ मइल ना हो जाई। तब तक बर्तनवा त सब साफ कइ द।

रामदरस—(बिगड़ के) एहीतरे बहू के कहल जाला।

चनरवती—(ऊँच आवाज में खिसिया के) देखत नइख ! इहाँ काम करत करत आँखि फूटि गइल आ। इ दिन भर साज सिंगार कइके पलंग पर सुत रहत बाड़ी। भागि फूटि गइल कि ए घर में अइलीं। एको दिन ना जनलीं कि आराम का कहाला। डोली से उतरते चौका बर्तन सँभारे के परि गइल आ जनाता कि बर्तने रगरत परान निकललि जाई।

रामदरस—(धीमी आवाज में) वेचारी बड़ घर के लइकी ह आ ओकर सास भी त तूही न बाड़ू। अइसे कहला से वेचारी का समझी ? कही कि ओकर केहू नइखे ?

चनरवती—(झटकि के खड़ा होके आ हाथ झटका के) ऊ राजा के वेटी ह त हम का भिखमंगा के हई ? हमरो बाप का कलकत्ता में मोटर चले ले। अरे उनकर आँखि फूटि गई रहलि कि ए घर में हमरा के भसवलन। (रो रोके) दोसर त दोसर, अपनो आदमी कभी ना हमरा ओर से बोलल। एहनीये सब खातिर हाय हाय करत जिनगी बीति गइल आ इहे हमरा के डाँटसु। देहि में एको जोड़ा गहना ना रहि गइल। सब एकरा पढ़ाई में हमरा देहि से उतार लहिलन। जिनगी भर बजड़े आ जोन्हरी खात बीति गइल। तीन तीन वेटी छाती पर सवार वे। सारा गाँव गाली देता बाकिर इनका त आँखि में माड़ा परि गइल बा। बस भाई आ भावहं के गुणगाव करे के बा। देखि लहि इहें एक दिन तोहरा के सरल मछरी जइसन निकालि दीहन स। (पुक्का फाड़ि के) हाय राम, एक दिन बबुआ आवस त बासमती चाउर आवे आ हमार लइकी दाना खातिर रोवत फिर स।

रामदरस—(डाँटि के) तोहरा त उलटे बुझाही के बा। साचे बाबा

कहले बाड़न—ढोल गँवार, शूद्र पशु नारी, ये सब·······।

चनरवती—(रोवत) हँ हँ, तोहरा त कहावत सूझते करी। (आँसू पोछि के हाथ चमकावत) एको बीघा जोते के नइखे न बाँचल ? सब रेहन धरा न गइल ? जब घरवो धरा जाई त ढोल लेके गइह।

रामदरस—(आँख लाल करि के) जीभ खींचि लेइब जो फेर अइसन बात मुँह से निकललू। डाइन आँखि का ओट हो जा नात गँड़ासा से मूड़ी उतार लेबि।

चनरवती—(रोवत) काटि देत तब त सब साफे हो जाइत। हाइ रे दइया, (पुक्का फाड़ि के रोवत आ हाथ से कपार पीटत) भगवानो के आँखि फूटि गइल बे। हमके उठा नइखन लेत। उनको खातिर भार हो गइल बानी।

रामदरस—(डाँटि के) अब तिरिया चरितर शुरू भइल। सब गाँव के जना द कि रोज महाभारत होला। घर के सब इज्जत ई खा गइल बे। (जोर से डाँटि के) फेर कहतानी चुप हो जा ना त...। अब बबुआ के आवे के टइम हो गइल बा। (आँगन से बहरा जात) हँ खाना खूब अच्छा बने के चाहीं। बबुआ पटना रहेला। (अपने से बड़बड़ात) अभी दूधो ले आवे के बा। ई औरत जाति।

(रामदरस अभी दरवाजा में पहुँचते रहलन कि बाहर से रमेश हाथ में सूटकेस टँगले घुसलन। पीछे पीछे इक्का वाला सिर पर बक्सा रखले आवत रहे। सूटकेस चौकठ पर रखि के रमेश रामदरस के पैर छुअलन। रमेश फुलपैंट आ फ्लाइंग शर्ट पहिनले रहलन। उमर ईहे पचीस, छब्बीस के लगभग होई। हूबहू रामदरस के नाक नकशा, जना कि रामदरस के फ़ोटो हवन। रमेश के हँ हँ कहला पर भी रामदरस सूटकेस हाथ में उठा लहिलन आ उनका साथ अँगना में आ गइलन।)

दूसरा दृश्य

(ऊहे आँगन। पाँचि घरी राति बीति गइल रहे। चारों ओर साँय साँय कर ता। तीनि डँड़ियवा अकाश में कपार का ऊपर आ गइलि रहे। रमेश चोर अइसन बहुत आस्ते दरवाजा खोलि के आँगन में घुसत बाड़न। बिलार जइसन पैर दबवले से धीरे धीरे पूरब का ओर कमरा में बढ़त बाड़न। तब तक पश्चिम का कमरा से खँसला के आवाज आवाज आवता। रमेश तेजी से पूरब का कमरा में घुसि के दरवाजा बन्द कइ दीहलन। दरवाजा बन्द हो गइला पर भरपेट साँस लेत बाड़न आ चारू ओर देखत

बाड़न। कोना में ताखा पर दीया टिमटिमात रहे आ पलँग पकड़ि के जमी पर घूँघट कढ़ले उनकर बीबी पद्मा बइठलि रहे।)।

रमेश—(दबल लेकिन खिसियाइल आवाज में) दरवाजा पर बइठ बइठल मन घबड़ा गइल ह। सोचत रहली हँ कि सब सूति जाउ त चली बाकी केहू का नीनिये ना आवत रहल ह। एगो पशुपति दादा बाड़न एगो का बाद एगो किस्सा छोड़ले रहल हन। जनात रहल ह कि क्या हवन। एतना देर का बाद अइली हँ त इहाँ भाभी खाँम लगली ह। ओ का दकियानूसी बा। ई गाजीपुर कबो ना बदली आ ओहू में ई हम गाँव। ई त हजारों बरीस में ना बदली। नाम त एकर बा अँजोरपुर बाकि बा ई एकदम अन्हारपुर। बताव, दुनिया चान पर जाति आ एहि अपना बीबी किहाँ चोर अइसन आवे के परता।

(पद्मा ओहीतरे गठरी नियत बइठ रहति या। रमेश जूता खोलि चारपाई पर धम से बइठ जात बाड़न।)

रमेश—(पद्मा के हाथ पकड़ि के) हूँ, अपनो मरद से लाज विचित्र देश बा। आव अब पलंग पर बइठि जा।

(पद्मा चुपचाप ओहीतरे बइठ रहतिया)

रमेश—(तनी झुँझलइला स्वर में)। आधा रात त दुआरे पर बी गइलि ह आ आधा तू मनावने करे में बिता द। (प्यार के स्वर में) त मजे से रहलू ह न ? अच्छा साच बताव हमार याद आवत रहल ह कि ना (पद्मा के हाथ पकड़ि के अपना ओर खींचत) अभी देखलू ह कि कि तोहरा के का का ले आइल बानी।

(पद्मा धीरे धीरे सिसके लागलि)

रमेश—(चौंकि के)—ऐ, ई का ? ई काँहे ? का भइल ह ?

पद्मा—(सिसकी रोकि के)—हमरा के नइहर पहुँचा दीं।

रमेश—(अचरज से)—काँहे ?

पद्मा—(सिर नीचे लटकवले)—एही तरे।

रमेश—(कोमल स्वर में) कुछ त बात जरूर होई। आखिर बतइबू तवे त...।

पद्मा—(रोवत) जे जनम दीहल ऊ एको मुट्ठी चवेना त केहूतरे लइका सँगे जिनगी गुजार लेइब। बाकिर ए घर में एको छन रहब। दिन-रात के...(पद्मा सिसके लागलि)

रमेश—(प्यार से पलंग पर अपना बगल में खींचत) का भइल ह ? भउजी से...?

पद्मा—(घूँघट उटा के आँखि में एको बूँद आँसू नइखे, क्रोध भरल आवाज में)—रउवा खातिर ई भइया आ भउजी लोग बा, हमरा खातिर इ लोग दुश्मन बा। रउवा त खाली मुँह देखे के बा। रउवा त ए दुनिया के छल कपट जनली ना आ रउवा अपने त हमेशा परदेश में रहे के बा। रउवा अपना बाल बच्चन से का मतलब ? रउवा त चिट्ठियो नइखे लिखे के ? साचे कहल बा कि मरद के हिया पत्थर के होला।

(आँखि से पद्मा के झरझर आँसू गिरे लगलन स)

रमेश—(और थोड़ा नजदीक खींचि के) चीठिये से प्यार जनाला ? का भइल ह, साच साच बताव।

पद्मा—(रोवत) हमार लइका दूध खातिर रोवे आ इनकर लइकी रोज दूध आ दही खा स ? अपना लइकिन के धान के भात बना के खियावेली आ हमरा लइका के बजड़ा के भात देली। ऊपर से दिन रात के ताना कि तोहरे भतार के पढ़ावे में घर बिका गइल। अपने रानी जइसन सूत रहेले आ इहाँ दिन रात काम करत करत जान चलि जाला। आपन दुख त केहूतरे सहियो लेतीं बाकिर ई लइका के दुख ना देखि जाता।

रमेश—(धीरे से) भइया त सुनील के बड़ा माने लन। सुनीलो कि दिन रात उनके यहाँ रहेला।

पद्मा—(खिसिआ के) एहीसे त ना कुछ कहत रहली हँ। रउवा त भइया के पछ लेवे करब। हम त जनते रहली हँ कि हमार भागि फूटि गइल बा। अपनो आदिमी...।

रमेश—(थोरे खिसिया के) फेर उहे सब। अरे कुछ बतइबो त कर ?

पद्मा—(थोड़ा खिसकि के आ मुँह दोसरा ओर फेरि के) अब का बताईं ? रउवा त जनाता कि रामजी अइसन भाई मिलि गइल बा, बाकिर रउवा का जनलीं ए दुनिया के ? बाजार से केला ले आवेलन त चुपके से अपना औरत के हाथ में दे देलन। राति में सबका सूति गइला पर अपना लइकिन के खियावेले।

(रमेश चुपचाप सोचे लगलन)

पद्मा—(नजदीक घुसुकि के) अच्छा रउवा पढ़ाई में केतना लागल होई ?

रमेश—(सोचत) इहे करीब दू हजार ।

पद्मा—(हाथ नचाके) आ ई मंथरा कहेले कि तोहरा भतार का पढ़ाई में पाँच हजार रुपया लागि गइल । रउवा का एकर चालि बूझब। हर साल अनाज बेचि के अपना लइकिन खातिर जमा करतिया आ रउवा के भर गाँव बदनाम करतिया । अभी पिछले महीना त कलवती खातिर कँगना बनववलस ह । (रोवत) हमरा लइका का देहि पर एगो वस्तर ठीक नइखे ?

रमेश—(जोर के साँस खींचि के) दू हजार रुपया ले आइल बानी। सोचत रहली हँ कि ए बार कर्जा चुका के खेत छोड़ा दीं बाकिर...।

पद्मा—(रमेश का जाँघि पर हाथ मारि के) जो ई रुपया दीहली त हमार मुँह ना देखब । काल्हे लइका के लेके कुँआ में कूदि परब । हमरा लइका के देखि देखि ई जरसु आ रउवा इनकर कर्जा चुकाई ? (रोवत) अभी परसों ई मुँहझौंसी कहति रहे कि भगवान एकरा के उठइयो नइखन लेत ? रउवा का सब जानब ? ई दुआर पर भगत जी अनाज बेचि बेचि के रुपया जमा करत बाड़न आ इ राँड़ि भीतर सूद पर रुपया चलावतीया। कुछ ना, ई रउवा के चूसल चाहत बाड़न स ।

रमेश—(धीरे धीरे सोचत) लेकिन भइया का देहि पर त एगो साफ धोतियो नइखे ।

पद्मा -(आँखि चमका के) रउवा का जानब ? रउवा के देखावे खातिर आज फाटल धोती पहिनले बाड़न । चार चार जोड़ा धोवा धोती बकसा में धइल बे । ई मत जानब कि रउरा लइका के ऊ अपना जइसन मानेलेन । रउवा के देखावे खातिर आज अपना यहाँ सुतावे ले गइल बाड़न । रोज त हमार लइका रोवत रहेला दुआरा जाये खातिर, बाकिर जब दउर के उनका पास जाला त डाँटि देलन । (झरझर आँसू गिरे लागल ।)

रमेश—(सोचत) बाकि भइया के हम चिट्ठी लिखि देले रहलीं कि दू हजार रुपया लेके आवत बानी । अब कइसे झूठ बोलीं ।

पद्मा—(हाथ नचावत थोड़ा उछलि के) कहि देइब कि गाड़ी में काट लीहलहन स ।

(रमेश चुपचाप सिर हिलावे लगलन)

पद्मा—(एकदम नजदीक सटि के)—आ मुँहझौंसी के भी कुछ ले आइल बानी ?

रमेश—(धीरे से) ई दू जोड़ा साड़ी आ सब बच्चिन के कपड़ा।

पद्मा—(उछाह से) ठीक बा, राँड़ि के दे देइब। गाँवो त जानी कि ई हमरा लइका के के तरे राखे ले आ हमनी का एकरा लइकिन के केतना मानीलाँ जा।

(रमेश चुपचाप पलंग पर सो जात बाड़न। आँखि मूँदि के सोचे लागत बाड़न। पद्मा बगल में सूति के उनका के अपना ओर धीरे से खींचतिया।)

पद्मा—(मदमातल आवाज में) उंघाई लागत बा का ?

रमेश—(आँख मूँदले) हूँ।

पद्मा—(और नजदीक खींचि के) अच्छा साच बताइब, हमार याद आवेले कि ना ? (हाथ खींचि के आ करवट बदलि के) काँहे के आवत होई ? शहर में एक से एक सुघर लइकी सँगी होइहन स। ओमे हमार अइसन देहाती के काँहे के याद आवत होई ? इहाँ राह देखत देखत आँख फूटि जाले। देखीं, ऊ दीवाल पर चिन्ह बनवले बानीं। चिट्ठी आई रहे कि पनरह दिन में आइब। रोज एगो लकीर पारत रहली हँ।

रमेश—(करवट बदलि के पद्मा के मुँह अपना ओर खींचत) केतनो कहब तोहरा विश्वास होई ? आजतक हम एको लइकी का ओर ना देखलीं। दिन रात तोहार चेहरा आँखि में नाचत रहेला।

पद्मा—(करवट बदलि के रमेश का मुँह किहाँ मुँह ले जाके) हमरा के कब अपना सँगे ले चलबि ? ई मत समझब कि हम अपना खातिर कहतानी। हमरा लइका के पढ़ाई लउकता। इहाँ दिन रात लइकन का सँगे घूमत आवारा हो जाई आ केहू देखो-रेख त करे वाला नइखे।

रमेश—(बाँहि में पद्मा के कसत भँगुआइल आवाज में)—का चाहताड़ू ?

पद्मा—(मदमातल आवाज में) ए बारी हमहूँ सँगे चलब। पहिले कहीं कि हँ......... ।

रमेश—(बाँह में कसत) ठीक बा।

तीसरा दृश्य

(घर से सटले पूरब का ओर दरवाजा। उत्तर से दक्खिन का ओर नरह हाथ लमहर मड़ई। मड़ई के आगे रामदरस लोटा में पानी लेके

दतुअम करत बाड़न। उनकी बगल में बइठ के पाँच बरस के सु उनकरे जइसन दतुवन करता। रमेश अभी मड़ई में सुतले बाड़न आ से घर्र घर्र आवाज निकलता। नाद पर बैल भूसा खात बाड़न स। ओर अकाश ईंगुर जइसन लाल भइल बा। सामने से जतन साहू आ दिखाई पड़त बाड़न। कमरा ओढ़ले बाड़न आ सिर अँगौछा से लेले बाड़न। साहू के देखि के रामदरस मनहीमन बुदबुदा उठलन 'सवेरही सबेरे तेली के मुँह लउकल, आज न जाने का होई? 'राम राम' गुन गुनाये लगलन।

जतन साहू—(नजदीक आके) पा लागी ठाकुर साहब।

रामदरस—(दोसरा ओर देखत) खुश रह।

जतन साहू—वाह, छोटको मालिक का साथ ही दतुअन होता?

रामदरस—(खुश होके) का कही, ईत साथ ही सूतता, साथ जागता आ साथ ही खात पीयत बा। एको छन सँगे नइखे छो कहीलाँ कि हमरा गृहस्थ अइसन अदिमी का सँगे रहब त गृहस्थे हो बा कह साहू जी. आजकल पढ़ला लिखता के न काम बा कि सँगे सँगे गइला के काम बा?

जतन साहू—(मड़ई में चउकी पर बइठत) बड़ होइहन त अपनही पढ़ि जइहन। बाप जब एतना पढ़लस त बेटा…।

रामदरस—(दातून फाड़त) ईहे त चिंता बा। स्कूल में एके याई से बइठा के त खेते जाइलाँ। रात में रोज बरियाई गिनती गिना (सुनील से) देख, बाप इंजीनियर भइल त तोहरा कलक्टर के परी।

सुनील—(खड़ा होके) हम दरोगा होइब।

रामदरस—(प्यार से डाँटि के) हे बेवकूफ कहीं का। बा दरोगा के होला?

सुनील—के होला?

रामदरस—हमरा जइसन अदिमी। जे पढ़ेला ना।

सुनील—(सोचत) त हम मास्टर साहब होइब आ लइक के पीटब। (रामदरस आ जतन साहू दुनू आदमी हँसे लगलन)

रामदरस—(मड़ई में आवत) आज बड़ा सबेरही साहू जी?

जतन साहू—(थोरे दाँत चियारि के) भैया के दर्शन करे अइली हँ।

रामदरस—(मने मन डेरात कि अब रुपया के बात चलाई) गुड़ आजकल के सेर के बा साहू जी ?

जतन साहू—(बिड़ी सुलगा के एगो रामदरस के देके दूसर अपना मुँह में लगावत) डेढ़ सेर के। थोड़े भेज दीं का ! अभी काल्हे त बाजार से ले अइली हँ।

रामदरस—(जल्दी से) नाहीं, अभी काम चलि जाई ।

(भिक्खू ग्वाला लोटा में दूध लेके पहुँचत बाड़न। बस एगो धोती घुटना तक पहिनले बाड़न। उमर तीस पैंतीस के करीब होई। कद मँझोला आ रंग साँवर बा।)

भिक्खू—पा लागी बाबूजी। (सुनील से) आव बबुआ, दूध पी ल। अभी गरमे बा, एकदम थाने तर के ह।

(सुनील दूध पीये लागता)

जतन—साहू—(रमेश के खाट की ओर देखत) भैया बहुत देर तक सूतत बाड़न ?

रामदरस—(अगरा के) अरे साहू जी, शहर में सब देर से जागेला। अधी रात तक त शहर में दिने भइल रहेला। सबका वहाँ देर तक रात में काम करेके परेंला आ बिजली बा न। बबुआ त पढ़बो करे त देर से उठे बाकिर रात में अधी रात तक पढ़ते रहे। जब जब हमार नींद खुले त देखीं कि पढ़ते बा। अरे साहू जी, त एही से बबुआ मैट्रिक में सबसे फर्स्ट रहल।

जतन साहू—(उछाह से) रमेश भइया जइसन अब का केहू होई ? न केहू से बोलन न कहीं खेले जाना। बस दिन-रात दुआर पर पढ़ना। छुट्टियों में अइला पर त दुआर छोड़ि के कहीं ना जालन। (दाँत निकालि के) एगो अब के लइका बाड़न स। दिन भर चोली पहिर के रस्ता रस्ता गाना गावत फिरत बाड़न स आ बात बात में दस पुश्त के गारी।

रामदरस—(गद्‌गद् होके मीठ स्वर में) बबुआ का मुँह से त अभी आजतक एको गारी ना निकलल। आजतक अभी केहू के कड़ा शब्द ना बोललस। आ एही से पूरा गाँव प्रशंसो त करेला।

जतन साहू—(एकदम पानी जइसन आवाज में) ई सब बाबू जी, आपेके कमाई ह। आज ए कलयुग में के बा जे भाई खातिर एतना करी ?

रामदरस—(जल्दी से सिर हिलावत) हम कुछ ना कइली हँ। रामजी के कृपा आ बाबू जी के पुन्य। बाबूजी मरे वक्त कहि गइली रमेश के आपन बेटा अइसन मनिह आ जेतना पढ़े ओतना पढ़इ (भरल कण्ठ से) सब बाबूजी के पुन्य ह।

(सुनील फेन मुँह में लगवले रामदरस का गोदी में आके बइठ आ भिक्खू सलाम कइके अपना घरे चलि जाता)

रामदरस—(अँगौछा से सुनील के फेन पोंछत) एहीतरे बिना धोवले ? जानत बाड़ ? फेन ना पोछला से तुरत मूँछ जाम जाले।

जतन साहू—(रामदरस के खाट का नीचे जमीन पर बइठ के धीरे अब हमरो हिसाब साफ हो जाइत त बड़ा अच्छा होइत। आप त बानी कि हमनो का महाजन से उधारे ले आवे के पड़ेला। पाँच हजार गइल बा।

रामदरस—हँ हँ, बस बबुआ का जगला के देर बा ? तू जा हम के अपनही रुपया लेके आइब।

जतन साहू—(दाँत निपोर के) भुलाइब मत मालिक। पा लागीं।

(जतन साहू चलि गइलन। रमेश जम्हाई लेके उठत बाड़न आ देखत बाड़न)

रमेश—(झुँझलाइल आवाज में) ओफ सात बजि गइल आ दसे स्टेशन पहुँचे के बा।

रामदरस—(चौंकि के) स्टेशन ?

रमेश—(घड़ी देखत) हँ एके दिन के छुट्टी मिल सकल ह। वहुँचला पर गड़बड़ हो जाई।

रामदरस—(चिंता भरल आवाज में) बाकिर तू त लिखले रहल पन्द्रह दिन का छुट्टी में आवत बानी।

रमेश—(चप्पल पहिन के खड़ा होत) चीफ इंजीनियर बड़ा आइल बा।

रामदरस—(सिर नीचा करिके हाथ मलत) कहल त ना रहली हँ, बाकिर जतन साहू आई रहल हन। तू त जनते बाड़...।

रमेश—(दुख भरल आवाज में) जानत त सब बानी बाकिर का पाँच हजार रुपया लेके चल रहली हँ, बाकिर रस्ते में कवनो काटि लस ह।

रामदरस—(आँखि फैल जाता) [illegible], (मुँह खुले रहि जाता)।

रमेश—(दूसरा ओर देखत) हँ।

रामदरस—(जमीन पर बइठ के हाथ में सिर पकड़ के) अब का होई ? (फेर थोड़ देर बाद) बाकिर काल्ह त तू ना कुछ कहल।

रमेश—(तेजी से) रात जब ट्रंक खोलुवीं त देखुवीं। अच्छा हम शौंच से तुरत आवत बानी। तुरत जाये के बा।

(रमेश शौंच खातिर लोटा उठा के जात बाड़न आ रामदरस ओहीतरे सिर पकड़ के बइठल रहताड़न)

सुनील—(उनकर हाथ पकड़ि के) का भइल ह बाबूजी ?

रामदरस—(हँसे के कोशिश करत)—कुछ ना, एगो अदिमी के रुपया चोरी चलि गइल ह।

सुनील—केकर ?

रामदरस—(उठि के सुनील के गोदी में उठावत) एगो मारवाड़ी के। चल घरे चलीं जा।

सुनील—(चौकठ पार करत समय) कहाँ के मारवाड़ी ?

रामदरस—(आँगन में सुनील के नीचे उतारत) जा माई से कहि द कुछ नाश्ता बनावे के ? तोहार बाबूजी आजे जइहन।

(आँगन में दूसरी से चनरवती आ गइलि)

चनरवती—का ? (थोड़ा रुकि के) का भइल ह ? काँहें तोहार मुँह उदास बा ?

रामदरस—(हँसे के कोशिश करत) कुछ ना। (थोड़ा रुक के) बबुआ के रुपया रस्ता में चोर काटि लहिल ह न स।

(तबतक कलवती, प्रभा, रमा तीनों आके माई के घेरि लेत बाड़ी स। कलवती एगो मइल साड़ी पहिनले बे आ प्रभा आ रमा फाटल फ्राक आ अंडरवीयर पहिनले बाड़ी स।)

तीनों एक साथ—का माई ? का चोर ?

चनरवती—(तीनों के एक ओर झटकारि के) ओ, त अब ई चाल सोचाइल ह ? हम त पहिलहीं से जानत रहलीं हँ। ई सब ओही रंडी के गुन ह !

रामदरस—(झुँझला के) तोहरा मुँह में त बस झगरे बसे के बा। बबुआ झूठ काँहे के बोली ?

चनरवती—(हाथ नचाके तेज आवाज में) सब तोहरे अइसन भगत न बा । कहत न रहलीं त हमरे के डाँट । (मुँह चमका के) आ अभी जानत बाड़ कि ना ?

रामदरस—(खिसिया के) का ?

चनरवती—(हाथ नचा के) बीबी साहब भी जात बाड़ी । सबेरही से समान सजाता ।

(रामदरस चुपचाप सिर झुकवले सुनत बाड़न)

चनरवती—(कपार पीट के) एको बीघा जोते के नइखे आ बीबी सँगे जातिया । अकेले रहला पर त एको पइसा ना घरे आइल त अब बीबी सँगे गइला पर पइसा आई ?

(रामदरस चुपचाप नाखून से जमीन पर लकीर खींचत बाड़न)

चनरवती—(बइठि के जमीन पर हाथ पीटत) हाय रे दइया, लइकी सेयान भइलि आ एहनी का कुछ नइखे लउकत ।

(रमेश बाहर से भीतर अँगना में आवत बाड़न)

रामदरस—(रमेश के अपना पास बुला के बइठे के इशारा करत) सब कोई जाता ?

रमेश—(खड़े सिर नीचा कइके) हँ, ओहिजा खाये के बड़ा तकलीफ होता । होटल में खात खात पेट खराब हो गइल बा ।

(कहके रमेश भीतर कोठरी में चलि जाता)

चनरवती—(धीरे से) कहि द कि औरत ना जाई । औरत एहिजा रही त दू पइसा के असरो रही । ऊ चलि जाई त एको पइसा ना आवे देई ।

(रामदरस चुपचाप नाखून से जमीन कुरेदत बाड़न)

चनरवती—(धीमी आवाज में जल्दी जल्दी) तोहरा लउकत नइखे का लइकी के अब केतना दिन घर में बँधले रहब ? गाँव हँसता ।

(रामदरस का आँखि से दू बूँद आँसू गिर पड़ता । तुरत दूसरा ओर सिर मोड़ के देखे लागत बाड़न)

चनरवती—(फुस फुसा के) तू कहब त का जाने मानि जा ? आ अभी घर में कबो त ना अइसन भइल । तोहरा से बिना पूछले अपना औरत के ले जाता ।

(रामदरस उठि के खड़ा हो जात बाड़न)

चनरवती—(झमकि के उठि के) हम त जनते बानी—तोहरा आगे रोवल आपन दीदा खोवल ।

(खिसिया के चनरवती उत्तर का घर में चलि जातिया । पूरब का घर से रमेश बक्सा बाहर निकालत बाड़न । पीछे पीछे पद्मा घूँघट कढ़ले बाहर आवतिया)

रमेश—(घड़ी देखत) रामू के कहि देले रहली हँ कि तुरंते जाये के बा, बाकिर अभी ना आइल । (सुनील का ओर देखि के) चल, जल्दी तैयार होखु, देरी होता ।

सुनील— हम ना जाइब, हम बाबूजी के पास रहब ।

(रामदरस के आँखि में आँसू भरि जाता, बाकी दोसरा ओर मुँह फेरि के आँसू पोंछि लेत बाड़न)

रमेश—(क्रोध में) का ? इहाँ रहबे ? आवारा होखे खातिर, दिन-रात लइकन का सँगे घूमे खातिर ? चल, जल्दी तैयार होखु ।

सुनील हम ना जाइब ।

(रमेश दौड़ता सुनील के पकड़े के । सुनील भाग के रामदरस का पास आ जाता । रामदरस सुनील के गोदी में उठा लेत बाड़न । सुनील रोवे लागता । रामदरस ओकर आँसू पोछत बाड़न)

रामदरस – चुप हो जा, रोवल जाला ? (रमेश का ओर मुड़ि के) एके यहीं रहे न द । हमरो के सहारा रही ।

रमेश—(कड़ा होके) ना, एहीजा ई का पढ़ी ? दिन रात लइकन सँगे अवारागर्दी करी ।

(रामू आँगन में आवता । रामू का सिर पर बक्सा उठा के रमेश चल देता । पीछे पीछे पद्मा घूँघट कढ़ले जातिया । सबका पीछे रामदरस सुनील के गोदी में लेके चलत बाड़न)

सुनील —(उनका गला से लिपट के) बाबूजी, हम तोहरे पास रहब ।

रामदरस— (भरल गला से) हँ, हँ ।

सुनील—(उनकर गरदन दुनू हाथ में जकड़ के) बाबूजी एने कहाँ जात बाड़ ? चल दुआर पर चली जा ।

(रामदरस कुछ कहल चाहताड़न, बाकिर गला से आवाज नइखे निकलत)

सुनील—बाबूजी, इनका पीछे पीछे कहाँ जात बाड़ ? चल, घरे चलीं जा ।

रामदरस—(गला साफ कइके रमेश से) बबुआ, बचवा के अभी कुछ दिन हमरे पास रहे द। बड़ा हो जाई त शहर ले जइह।

रमेश—(बिना सिर मोड़ले आगे बढ़त) ईहेत उमीर ह पढ़े के। ए घरी जइसन आदत पड़ि जाई जिनगी भर बन रही।

(सब लोग सड़क पर आ जाता। इक्का पहिलही से खड़ा बा। सब सामान बँधा जाता। पद्मा के इक्का पर बइठा के रमेश जबरदस्ती सुनील के खींचि के ले जाता। सुनील हाथ पैर पटकताआ 'बाबूजी, बाबूजी' चिल्लाता। रमेश जोर से एक थप्पड़ मारता। सुनील और जोर से 'बाबूजी बाबूजी' चिल्लाता। रामदरस दौड़ि के सुनील के गोदी में उठा लेत बाड़न। चूमि के ओकर आँसू पोंछत बाड़न। सुनील उनका से लिपटि के उनकर गरदन जकड़ि लेता। रामदरस केहूतरे आपन गरदन छोड़ा के पुचकार के ओकरा के इक्का पर बइठावत बाड़न।)

रामदरस—(सुनील के आँसू अपना हथेली से पोंछत) तू लइका न बाड़। तू इक्का से चल, हम पैदल आवत बानी।

सुनील—(सिसकत) नाहीं, तू झूठ कहत बाड़। तुहूँ आव एही पर बइठ जा।

रामदरस—(आँसू रोकि के) तोहसे हम झूठ कहब? तू आगे चल हम पीछे पीछे आवत बानीं।

रमेश—(इकवान से) जल्दी आगे बढ़ाव।

(इक्का आगे दौड़ता। सुनील के रमेश पकड़ले बा आ सुनील बाँह फैला के 'बाबूजी बाबूजी' चिल्लाता। रामदरस फूट फूट के रोवत बाड़न)।

जैन कालेज, आरा

◆

"तूहीं पतवार हो !"

ब्रज भूषण पाण्डेय

तोहरे पर बाटे भइया, देसवा के भार हो।
भूल जनि तूहीँ हउअ, देस के आधार हो॥
अन्नदाता हउअ तूहीँ, हउअ तूँ किसान हो,
तुहीँ अन्नपुरना तूहीँ, हउअ भगवान हो,
तोहरे नूँ हथवा में सब कर परान बाटे,
एही से कहा ल तूहीँ सब से महान हो,
काँहें आजु सूतल बाड़, बज्जर का निनियाँ,
खोल ना पलकिया आपनि भइल भिनुसार हो॥

× × ×

अनका दुआरिया आजु हाथ तूँ पसारत बाड़,
पुरुखुज के नउँआँ अपने हाथ ही बिगाड़त बाड़,
पच्छिम पुरुववा के कईके भरोस आजु,
जेकरे ना सेकरे अँगवाँ सिरवा तूँ गाड़त बाड़,
वनि के भिखारी आजु ईहो तूँ भुलाई गइल,
वाटे तोहरे हथवे में भगिया तोहार हो॥

× × ×

उठ ले ल खुरुपी हसूँआ अवरू कुदरिया,
कोड़ि खनि बोअ जोत करि मेहनतिया,
छोड़ जनि एको धूरि, खाद, सोह, सींच, कोड़,
ऊपज बढ़ावे खातिर कर तूँ जुगुतिया,
करे के वा तोहरे सब कुछ तोहरे जिम्मेदरिया,
तोहरे पर बोझल नइया, तुहीं पतवार हो॥

—बाँसडीह (बलिया)।

"केहू ना सोचे"

विजेन्द्र लाल 'अनिल'

कूर खेत में
अपने से जामल
भटकोइयां के फर लेखा
हमार रखवार केहू नइखे
तूर निहार सभेबा
का लइका
का जुआन
का बूढ़-ठूढ़
मरद-मेहरारू
केहू ई ना सोचे
जे हम अपने से जागल
बढ़ल
फुलाइल
आ फरल बानी
हमरा के तूरला में पाप लागी—
रबी के ओसावल भूंसा लेखा
सभे हमरा के गाइए-भँइस
के जोग बूझेला
केहू ई ना सोचे
जे हमरा में अनाजो बा
जवना से आदिमियो के पेट
भरि सकेला
सभे कोहड़े के पतिया के
अबर बूझेला
अंगुरी देखावेला
केहू ई ना सोचे
जे कोंहड़ा के एको फर से
सात सांझि
कराही चूल्ही प चढ़ेली
आ सताइस जाना
जीभि चटकारेलन।

—बगेन, शाहाबाद।

नइहरवा छूटल जाय

पुरुषोत्तम कुमार पाठक

जब गजाधर फजीरे गोरुआरी से निचिंत भइले त सोचले कि कुछ मुँह में डालि के तनी पानी पीलीं। कातिक के भीर ह। इ सोचिके अँगना गइले, आ कहले किए यसोदिया के माई! सुनतारु हो!! कुछ पानी पीये के बा? यसोदा के माई कहली, रात सीधो त कमें परल, बासीओ त नइखे। चिउरा थोरे घरबद के धइले बानी-कहीत बसावन का माई से तनी माठा माँग ले आईं। आ हँ। ऊहोत आज अतवार ह, दीहें की ना!' जाते जात तनी ठमकि के सोचे लगली। गजाधर कहले कि काहाँ फजीरही लोका घरे जइबू। उनका घरे नाया बेटो पतोह बाड़ी सन। कहींहें सन कि इहो घरघूमनी में हई। हम जातबानी, चउरी का खेते। सबेरे कुछ बनजाय त यसोदिया से खेते में भेज दीह।

यसोदा के माई कह लीं कि आ तनी तूँ ही बेलम जइब त का होई? सेयान बेटी कइसे खायक लेके खेत में जाई? एक दिन धोबिन किहाँ गइल रहे त सेयान बेटवा इरई-बिरई बोलत रहले सन।? 'कवन रहेरे? तनी नाव त बताउ। हम तनी ओकरा के देखितीं।'

यसोदा के माई कहली कि जायेद, छोड़ ई सब बात अपना ओर से ठीक रहे के चाहीं। तूँ चल हम कुछ बनाके ले आयेबि।'

आच्छा हम जातानी—कहीं भरोसा बयेल के आवसु त कहि दीह कि हर जल्दी खो ली हें। अपना भाँज का दिने चाक्का डुबा देले आ हमरा तनिको देरी हो जाला त, हरवाही में पहुँच जाले।' ई कहि के गजाधर चल गइले। यसोदिया के माई जल्दी जन्दी आँच बारि के दूगो रोटी पकवलसि। आ रातिये वाला मटर के साग मेंसे लेके खेते पहुँचली। गजाधर हाँथ धोके खाये लगले त कहले कि एहो, अपाना गाँव के बहुत लोग राँची जाता। उहवाँ नाया कारखाना खुललबा। अगर कहितु त कातिक के बोअनी कके हमहूँ पाँच छव महीना खातिर चल जइतीं। काहे कि साले भरका बाद आँगना में माड़ो गड़ाई। छानि छप्पर ठीक करावल जरूरी बाटे। काहे कि समधी अइसहीं खोंप में नानू उतरिहें।' घर के

ओर दिखा के कहले । अब त भला बाटे । कुछ दरबो नू लागी ? कहित त कतिकी नहान कइके हमहूँ चल जइतीं ।

यसोदा के माई कहली कि तहार ई काँच पाकल बोली हमरा फूटलो आँखी ना सोहाइ । हमरा ना बुझाला कि तू केकरा ऊपर बाहर भीतर जायेके कहेल । ५ रु० कमइबे त इहाँ १० रु० घर के खिलाई । अब जइसन मन में आवे तइसन कर । हमरा से का पूछेल ? आ हँ ? भैरो पुर वाला लइकवा के पता चलल कि ऊ अगला साल करी की ना करी सदिया ? तनिकसा गम्हीर होके गजाधर कहलें कि का कहीं ? ओकरा बाप के त मोलाई सुनि के माँथा चकरिआये लागल । पहिले के गोलवटिहा छिपोछिपा वाला हवे । दू अछर वेटा के पढ़ा लिखा देहलसि त दू हजार तिलक माँगता । एगो हमनी के विआह भइल कि ५१ गो रुपया तिलक चढ़ेत गाँव गवार में हाला हो जाय । एक जगह अउरी लइका के पताबा । तनी भीर खतम हो जाय त दू आदमी के लिआके जाईं । अच्छा, तू जा । यसोदियो त अकेलहीं होई हाथ मुँह धोकर गमछा से हाथ पोछते गजाधर बोलले ।

सांझ के गजाधर जोरुअन के नाँद पर से उपटा के अपना कउड़ा बइठल रहले तब तक तिलेसर अइले । कहले कि गजाधर बाबा ! तनी खइनी खिआव ना । कहके घूरा बइठ गइले । गजाधर खइनी बगली में से निकाल के देहले आ कहले कि हमार हाथ ठीक नइखे । ल ! बनाव । हो सुन तानी कि राँची तूँहूँ जात बाड़ ।' तिलेसर कहले कि 'हो, मन तह । काहे कि ढेर लोग अपना गाँव के गइल, आ सब केहू बढ़ियाँ आमदनी करता ।'

हम त चल गइल रहितीं । रोरू गइनी सुरेशवा के नाना मर गइले । उनकर कजिया आजू का दिने परल बा । सुरेशवा के माईयो जब सुनलस कि बाप मर गइले त, महतारी के धीरज धरावे खातिर नइहर चल गइल इहे नेवतवा करके आ ऊहो आजाय हम तइयारिये बानी । गजाधर कहले कि हो मन त हमरो करता । बाकी, का कहीं ? मलिकाइन के रोखे देखिके मन आगपाछ में परल बा । बाकी चलब त जरुर काटे कि इहवाँ के माटी सेवले सेवले जीवन सिरा गइल । आ दूँ पईसा के परापित ना भइल तब तक गजाधर के खाये के बोलाहट हो गइल । आच्छा, गजाधर बाबा ! हमहूँ चलतानी । दूआर पर केहू नइखे । हम चलबि त तहरो से कहबि ।

'हँ। ए बबुआ ! तनी हमरी से इशारा क दी है !' कहि के गजाधर खाये चल गईले।

गजाधर बाबा ! ए गजाधर बाबा !! बानी जी !!! गाँव के कुछ इसकुलिया सबके गोल दुआर पर आईल। अँगने से गजाधर बोलले 'के हवे ? बईठ। लोगन। आवतानी।' ऊजनलेकि गाँव में केहू के साँप कटलेबा ! अब कवनी रात लें जागे के परी। इहो विद्या सीखल एगो आफते बा। जल्दी जल्दी खइले। दुआरा पर आवसु त, लईकन के गोल ठकचल बा काहवे ए बबुओ ? ओहि में से कृपा शंकर आगे आके बोललन, 'बाबा। हमनी के मन पंचायत भवन पर एगो डारामा खेले के बा। डारामा के नाव हवे "जंय चितौड़" एह से कुछ चाना रउओ ऊपर लागल बा।

गजाधर कहले कि ए बबुओ। हमरा कवन पुरुष पछिम के आमदनी बा ? बाकी जब आइल बाड़सन त कुछ देइये देबि। कहि के मिर्जइ का थैली में हाथ डाल के और एक अठन्नी निकाल के दे दिहले। अच्छा, बाबा ! चलतानी सन। देखे आइबि नू ? जब यसोदा सुनली कि गाँव में डारामा बा त भीतरे खुश भइली। काहे कि सुनले रहली जे दू-चार दिन में बाबुओ त इटते बाड़े। मने मने बाँसन ऊँचा करेजा उछले लागल। धरती पर पाँव काहे के धरसु ! ईहे हालत एह घरी का बवाना के बा।

एक दिन गजाधर मैदान जात रहले। तबतक तिलेसर से भेंट भईल। गजाधर बाबा बिहने दिन भर रहके साँझ के बढियाँ जतरा बाटे। हम कुवेर तिवारी से जतरा पुछनी। अनुराधा नछतर परलबा अगर विचार होखे त तइयारी हो जाई। आच्छा हम भेंट करबि-कहि के गजाधर मैदान चल गइलन। मन में सोचले कि भूसा के गँहकीढेर लोग बा। ओही में से कुछ वेचिके गाड़ी-भारा करलीं। दिने भर में गँहकी खोजिके भूसा बेंचले आ चलेंके तईयारी करलेहले।

जाये के बेरा में कहलेंकि यसोदा कै ठीक से रखिह काम लागी त लागी, आ नाहीत हम जलदिये चल आइबि।

आज गजाधर का गइले २० दिन हो गइल। चिट्ठी-पतरी कुछ नइखे आवत। यसोदिया का माई के मन बड़ा उदास बा। आज पंचायत भवन पर डारामा बा। गाँव भर के मरद-मेहरारू जात बाटे लोग। बाकी उनकर मन तनिको नइखे सुगबुगात। यसोदा टोला-परोसा के बिटियन का

साथे साँझ ही चल गइलीं। डारामा शुरू भइल। राणा प्रताप के पाठ कृपा शंकर करत बाड़े। कृपा शंकर के रूप आ पोशाक देखिके यसोदा मोहित हो गइली। डारामा खतम भइल। सब केहू अपना-अपना घरे आके सुति गइल। बाकी उनकर आँखि तनिको ना लागल रात भर कृपा शंकर के रूप मन में धइले रह गइली।

आज जवाबी पोस्ट कार्ड गजाधर भेजले बाड़न। लिखले बाड़े कि हम काम करतानी। कवनो बात के फीकिर मत करिह लोग। एकर जवाब अब के लिखी, यसोदा के माई सोचतारी।

तब ले यसोदा कहली कि ए माई। कृपा शंकर के बोलाउना?। ऊहे लिखि दिहें? कृपा शंकर अइले। चिट्ठी के जवाब लिखी देहले। ओही जा यसोदा बइठल रहली। चिठी लिखल हो गइल त यसोदा के माई अपना काम में लागि गइली।

दूनो आदमी आज. भर पेट बात कइल लोग।

अब कृपा शंकर रोज आवसु आ पुछसु कि ए काकी! बाबा चिट्ठी भेजले बानी? बाबा का समाचार से यसोदा के समाचार लिहल उनका जरूरी रहे। भीतर भीतर खूब प्रेम बढ गइल। का ये यसोदा हमरा! बिना तहरा के कही रहल नइखे जात। दार्जिलिंग हमार घर भाड़ा पर चलेला। चाचा पुलिशे में रहेले। बाबूजी मरले तब से ई सब भारा-बूती के काम हमरे कपार बा। यसोदा त पहिले बाड़ा फेर में परली बाद में कृपा शंकर से पिंड छोड़ावल मुश्किल रहे।

तभ भइल कि - आज रात में चल चले के। पहिले कोर्ट में चलिके सिविल मैरेज हो जाय।

यसोदा—घर से माई के सुतला में छोड़ि के चलत गइली, बाकी उनका मन मे का बीतल ई लिखला से बात ना हो सके।

जब रास्ता पकड़ि के दूनू आदमी जात रहे लोगत स्टेसन के बत्ती देखाई दिहलसि। यसोदा कहली कि अगर बाप-मतारी बिआह करित त गीत-मंगल उठित। बारात आइति, बाजा बाजित, आज ईका हो गइल। एह पर कृपा शंकर कहले कि ई कवनों नया चीज बा? पृथ्वी-राज का कवनो संयुक्ता का घरे बारात ले गइल रहले? ताले मेलगाड़ी पास करत रहे ओकर सिटी सुनाई पड़लि। कृपा शंकर कहले कि देख, हमनी का बिआह में आज गाड़ी के सिटी बाजा के काम, आ मुसाफीर लोग बाराती के काम कर दिहल।

● हिन्दी विद्यालय, बोगाईं गाँव (असम)।

कहानी

अभागिन

मदन मोहन पाठक

राखी के परब बड़ा धूम धाम से मनावल जात रहे, जेकरा के देख ऊहे मगन लउकत रहे। केहू के हाथ में लाल राखी, केहू के हाथ में पीयर, केहू के हाथ में हरियर राखी चकमकात रहे। जमींदार जगत नारायन सिंह के हवेली में आज बड़ा घूमधाम मनावल जात रहे, जमींदार जी भगवान के बड़ा भगत रहीं। ऊहाँ के रामधुन गावे में मस्त रहीं। अचक्के में बड़ा सरिआ के भूकंप उठ गइल। धरती काँपे लगली, चारू ओर हाहाकार मच गइल। केहू ना जानत रहे कि ई खुशियाली दुख में बदल जाई। सऊँसे गाँव तहस नहस हो गइल। कवनो कवनो घर में से एक दुई प्राणी बाच गइल। चारू ओर पानिये पानी हो गइल।

जमींदार जी के परिवार में दुई प्राणी बाँचि गइल रहे। एगो उनकर बड़का लड़िका, मोहन औरू एगो लड़की रधिया। मोहन औरू रधिया के अब एह दुनिया में भगवान के छोड़ दोसर केहू सहारा न रह गईल।

मोहन औरू रधिया दूनों 'भगवानपुर' गाँव में जाइके बसि गइले स। दूनो भाई बहिन रात दिन जंगल में से लकड़ी काट के शहर में बेंचि आवस औरू जवन ओकरा से पइसा मिले ओही से आपन गुजारा कर स।

हरेक साल नीहन फेनू राखी आइल। ऊहे खुशी, ऊहे चहल पहल चारू ओर लउकत रहे। शहर में चारू ओर लाल, पीयर औरू हरिअर राखी देखि के रधिया के मन अकुलाइ गइल, ऊहो चाहत रहे कि हमहूँ अपना भाई के राखी बन्हिती। बाकी भाग्य के फेर अइसन रहे कि, आज ओकरा पास एको पइसा ना रहे कि ऊ एगो सधारनों राखी कीन के अपना भाई के बान्हें। वेचारी मन थोर करिके शहर से अपना गाँव में चलि आइल। औरू टूटल, उजड़ल पलानी में अपना टुटही खाटी पर बइठ के कुछ सोचे लागलि। अतने में मोहन कपार पर लकड़ी के बोझा लीहले मड़ई में ढुकल, रधिया के उदास देख के ऊ पुछलस-रधिया! का सोचत बाड़े?

रधिया—कुछुवो न भइया।

मोहन—नाहीं कुछुवो त सोचत बाड़े। कहु ना कि का सोचत बाड़े। तोरा कवनो चीज के दुख बा का? छिपाऊ मत, हम तोर बड़ भाई हईं। हमरा से ना कहबे त केकरा से कहबे? तोर रच्छा करे खातीर भगवान हमरे के जिंदा रहे देले बाड़े, नाहीं त हमहूँ सभ नीहन ओह भूकंप में खतम ना हो गईल रहतीं।

रधिया—ए भइया हमरा भाग में नइखे कि हम तहरा के राखी बान्हीं औरू सभ नीहन खुशी मनाईं।

रधिया के ई बात सुनि के मोहन के आँखि में लोर डब डब भर गइल।

रधिया—ए भइया एगो बात कहीं।

मोहन—कहु, एगो काहें दू गो कहु।

रधिया—ए भइया, अब हम कसहिंयो आपन पेट काट के पइसा बटोरबि। औरू अगिला साले जब फेनू राखी आयी त एगो खूब नीमन राखी कीन के ले आइब आ तहरा के बान्हब। औरू भगवान जी से ईहे मनाइब कि हे भगवान जी, हमरा भाई प कबो कवनो दुख ना आवे आ ढेर दिन जियस।

रधिया आ मोहन ईहे कुल्ह सोचते-बतिआवत सुति गईले स। बिहान भइल। सुरुज भगवान के अंजोर चारू ओर फइल गइल। भगवान पु गाँव, जवना में धनिक आदमी के त परिछाहिंयों नां रहे, एहो गाँव के सभ प्रानी हमेशा नीहन अपना अपना मुँह प झूठो के खुशी के मेखड़ा लगवले अपना अपना काम में चल दीहल। केहू जंगल में लकड़ी काटे, केहू शहर में मजदूरी करे, त केहू दोसरा के आगा हाथ पसारे।

समय बीतत देरी ना लागल। काल्हुए राखी रहे। रधिया मड़ई में बइठ के एगो गिरह खोलत रहे। अतने में मोहन मड़ई में आइल त देखलस कि रधिया आजु बड़ा खुश बिया आ गिरह में से खोलि के पइसा गिनत बिया। अतने में मोहन रधिया से पूछिये लिहलस कि रधिया! ई अतना पइसा कहाँ से औरू आजु अतना खुश काहें बाड़े।

रधिया—भइया! तहरा भोर परि गइल। हम पछिला साले का कहले रहनी कि ए भइया! हम आपन आपन पेटो काटि के पइसा बटोरब आ तहरा खातीर जब अगिला बंरिस राखी आयी, त खूब नीमन एगो राखी ले आइब आ तहरा के बान्हबि। मन परल कि ना। अब हम चलनी बजारे आ तू तले जाइके एक बोझा लकड़ी काटि ले आव। आ ए भइया तू घबड़इह मत हम सांझि ले लौट आइब।

रधिया के बाजार पहुँचत देरी ना लागल काहें कि आज ओकर डग खुशी से भुइयाँ ना परत रहे। रधिया बाजार में जेने देखे ओनिये लाल पियर राखी चकाचक चमकत रहली स। आखिर में सोच बिचार के एगो खूब नीमन राखी ६ आना के कीन लिहलस। बाकी ओकरा पासे एक रु० दुई आना पइसा बाचि गइल त ओकर अपना भाई खातीर गंजी किनलस। दूनो चीज कीन के गाँव के ओर चलि दिहलस। साँझि होखई आला रहे। मने मन सोचत रहे कि काल्हु भइया के राखी बान्हबि औरू नाया गंजी पहिराइब। अब ओकर मड़ई निगिचाई गइल रहे। रधिया के आपन मड़ई साफ लउकत रहे। रधिया अपना मड़ई के आगा दस-बाहर अदमी के देखि के बड़ा फिकिर में पड़ गइल। आजु का बात हो गइल बा कि अतना अदमी हमरा घरे, बटोराइल बाड़े। रधिया दउरे लागल। ओकर दिल धड़के लागल। जसहीँ ऊ अपना मड़ई में ढुकल कि ऊ अचेत होई के ओहिजे गिर गइल। जब होस आइल त देखलस कि मोहन भुइयाँ सुतल बा आ एगो कपड़ा ओढ़ावल बा। रधिया मोहन के मुँह प से कपड़ा हटा दिहलस आ मुँह हिला हिला के पूछे लागल भइया ! भइया...उठ, हयी देख, हम तहरा के का ले आइल बानी। तहरा का हो गइल। एक हाथ में राखी आ गंजी लीहले रधिया अपना भाई के आँखि खोललस त ओकरा हाथ से राखी आ गंजी दूनो भुइयाँ गिर गइल। अपना भाई मोहन के छाती पर आपन कपार धरि के रोये लागल। रधिया के दशा पागल नीहन हो गइल। रधिया के अब एह दुनिया में केहू ना रह गइल रहे। एगो भइयो रहे त ओकरो के भगवान छीन लीहले। रधिया चिचिआये लागल 'भइया, ए भइया...तू आज तक केहू के कुछ न बिगड़ल तबो ई तहार दशा के कर दीहल। अब हम भइया केकरा के कहब, अब एह दुनिया में हमार सहारा के बा। तू त कहत रहल हा कि रधिया ते कवनो बात के फिकिर मत कइल कर भगवान तोर रच्छा करे खातीर हमरा के जिन्दा रहे देले बाड़े त तूहूँ छोड़ के चल दिहला। गते गते मड़ई में भीड़ बढ़ल जात रहे। रधिया सभ के ओर एक बेर ध्यान से देखलस आ ठहाका मार के हँसे लागल ओकर आपन सुधि ना रह गइल रहे। ऊ छाती पीट पीट कहे लागल कि, हमार भाई तहनी लोग के का बिगड़ले रहल हा। गाँव के मुखिया भी ओहिजे खाड़ा रहले। उन्हकर गोड़ धरि के रधिया पूछे लागल, 'बाबा...तूहीं बताव हमरा भाई के हमरा से के छीन लीहल। हम केहू के का बिगड़ले रहनी हाँ। रधिया के दुख देखि के सभ रोवे लागल। रधिया फेनु कहलेस

कि बाबा, कहत काहें नइख। अन्त में धीरज धरि के मुखिया जी कहले, रधिया न तें केहू के कुछ बिगड़ले रहले हा न तोर भाई। आजु दुपहरि में मोहन के जंगल में लकड़ी काटत खा एगो विषधर साँप काटदेलस हा। हमनी का बचावे खातिर आपन पूरा कोशिश कइनी हाँ जा। बाकी हमने के कवनो वश न चलल हा। अतना सुनि के रधिया ओहिजे गिर गइल।

विहान भइल। आज राखी रहे। बाकी रधिया खातिर पलंग रहे। गाँव के लोग अर्थी लेके चलि दिंहल लोग। रधिया बेहोश पड़ल रहे। एक ओर रधिया के कीनल राखी भुइयाँ गिरल रहे। अर्थी बाजार के बी से होके जात रहे। जे केहू देखे उहे एगो राखी मोहन के अर्थी प डा दे। आज मोहन के अर्थी पर सैकड़ो राखी चकमकात रहली स। बा ओह सैकड़ो राखिन्ह में रधिया के एको ना रहे।

हिंदू कॉलेज, मुरादाबाद
(उत्तर प्रदेश)

सीज फायर

बच्चन पाठक 'सलिल'

हम टाटा नगर स्टेशन पर बइठल रहीं। रात के २ बजे राँची एक्सप्रेस आवे के रहे। अभी डेढ़ घंटा समय बाकी रहे। का कइल जाउ ? हम सोचलीं कि बइठि के डायरी लिखि लीं। फाउन्टेन निकाले खातिर जइसहीं पाकिट में हाथ लगवनी कि एगो अन्तरदेशीय लिफाफ भी निकलल। आजु ए साँझी खा मिलल रहे। पढ़े के फुरसते ना रहल। कॉलेज से अइला के बाद 'नागरिक सुरक्षा' के मीटिंग में गइल रहीं। देश में इमरजेंसी नू रहे। ओकरा बाद घर पर दोस्त लोग आ गइल। सिनेट के चुनाव चलत रहे। राजनीति के बात होखे लागल। खा पी के कइसहूँ स्टेशन भगली। ब्लैक आउट में रात खा टैकसी के कवनो कियाम ना रहे, एह से जल्दी चलि अइलीं। राँची में दोसरा दिने रेडियो स्टेशन पर कविता पाठ करे के रहे। एही हफ-चफ में हम चिट्ठी ना पढ़ले रही। चिट्ठी हमरा सार भुवन के रहे। भुवन कान्ड्रा ग्लास फैक्टरी में "सेक्यूरिटी इन्सपेक्टर" बाड़े। चिट्ठी पढ़ली —

आदणीय पाहुन जी,

प्रनाम। रउरा त भारती सैमुएल के बारे में जानते होखब। ऊ एगो क्रिश्चियन लइकी ह। एहिजा के जंगल के ठीकेदार सैमुएल साहेब के बेटी ह। हमनी का बी० ए० संगही पढ़ले बानी। प्रेम दूर तक बढ़ गइल बा। ऊ शादी के वादा कइले रहे, बाकिर एक दिन हम ओकरा बंगला पर गइली त कहलस कि निकल जा, ना त धक्का देके निकलवा देबि। धोखाबाज कहीं का। हम वजह पूछे के चाहत रहीं, बाकिर ऊ बाते ना कहलस। हमरा दिल टूटि गइल। मन करता कि नोकरी छोड़ दीं आ ओह बेवफा के नाम पर—नदी में डूबि मरीं। शाएद रउरा से हमार भेंट अब ना होई।

—भुवन

चिट्ठी पढ़ि के हमार एड़ी से कपार तक ले भसम हो गइल। सोहदा कहीं का। दिल बुझाता कि कान्ड्रा फैकटरी के बनल सीसा के गिलास ह कि टूटि गइल। बड़ा मजनू बने आइल बाड़े। मन में आइले कि लिख

दीं कि तोहरा नदी में बूड़ला के कवन काम बा, चुरुआ भरि पानी का होई। बाकिर फेर सोचलीं कि भुवन के अभी धीरज आ सहानुभूति जरूरत बा। मन खिन्न हो गइल। डायरी ना लिख सकलीं। मन लगा खातिर 'भोजपुरी साहित्य' निकाल के पढ़े लगलीं।

"यह कौन-सी मैगजीन है?" सामने देखलीं फराक पहिरले तेइ चउबीस बरिस के एगो जवान लइकी खड़ा। गोल-मटोल। मन भइल कहि दीं—'कनक भूधराकार सरीरा।'

कहेके परल—"भोजपुरी-साहित्य है।"

"अच्छा, भोजपुरी में मैगजीन छपेला?"

एह बेवकूफी के हम का जवाब दीहीं। मालूम भइल ऊ अपना नो से भोजपुरी बोले सीखले बाड़ी। ई एह देश के दुर्भाग्य बा कि ढ़ेर अप लोग बावर्चीखाना में ही उर्दू वाला हिंदी भी सीखले ह।

ऊ फेरु पूछली—"भोजपुरी में सबसे पुरान कवि के बा?"

मन त भइल कि कहि दीं कि बच्चन पाठक 'सलिल', बाकिर कहलीं कबीरे से भोजपुरी के लीखि चलि आवता। पहिलहूँ कुछ लोग क कइले रहें।

मालूम भइल कि उनकर बाबूजी जंगल के ठीकादार बाड़े। ऊ रहेली। राँची कवनो 'कानवेंट' में टीचर होखे जा तारी। हमरा मन भुवन के चिट्ठी आ गइल। कहीं इ हे त भारती ना ह? आ घुमाइ फि के हम जानि गइलीं कि हमरा सार के मन तूरे वाला इहे हई।

बातचीत चले लागल। लइकिन के कॉलेज में पढ़वला से एगो त भइले बा कि मेहरारुन संगे बतिआवे में सहजता आ गइल बा। प्रोफेसर लोग के लइकिन संगे बतिआवत खा गाल लाल हो जा बुझाई कि भरम से केहु गालन में सेनुर पोति देले होखे। कट गड़हा बढ़ेला आ बात से बात। भारत आ पाकिस्तान के लड़ाई से के हमनी का 'हस्तरेखा विज्ञान' पर बात करे लगलीं। ऊ कहलीं कि हस्तरेखा में विश्वास ह?

"विश्वास का, हम त खुदे हाथ देखिला। ई हो क्लेम बा कि प्रतिशत बात ठीक होई।"

"प्रोफेसर साहेब, कृपा करके हमरो हाथ देखीं। हम बड़ा

बानी।" ऊ हाथ आगे क देली। मेहरारुन में ढकदीर जाने के बड़ा इच्छा रहेला।

हम दू चार मिनिट उनकर हाथ अपना हाथ में लेइके उलटनी पुलटनी! फेरु 'हूँ' कहलीं। ऊ घिघियाये लगलीं। "कहीं ना, अपने काहें गंभीर हो गइली।" हम कहली कि तोहरा मंगर के घर में सनीचर चलि गइल बाड़े आ राहु केतु के भी नजर बा। कुछ संस्कृत भी प्रभाव जमावे खातिर कहे के चाही, बाकिर हमरा कुछ यादे ना पड़ल। कइसहूँ हम मेघदूत के एगो दूगो, लाइन बोललीं—

"धूम, ज्योतिः सलिल मसता, सन्निपातः कव मेघः" माने तोहरा कहियो अपना प्रिय से झगड़ा होई, जहिया आसमान में मेघ लागल रही। ओ में गलती तोहरे रही।

ऊ लगली सुबुके। फेरु कुल खिस्सा कहली। ऊ भुवन के कतना मानत रहलीं, बाकिर ऊ बे मुरव्वत निकलले। एक दिन ऊ उनका डेरा पर गइली। ऊ देखली कि बरामदा में एगो दू बरिस के लइका खेलता। भुवन भीतर एगो मेहरारु से हँसि हँसि के बतिआवतरे. नेपाली दरबान कहलस कि माई जो आजुए देश से आइल बाड़ी।

भारती बुझि गइली कि भुवन विवाहित बाड़े। भोजपुरी लोग में त लइकाइएँ में बिआह हो जाला। तब भुवन हमरा के काहें ठगत रहले हा? भारती खीसी थर थर काँपे लगली। ऊ घरे चलि अइली। दोसरा दिन भुवन घर पर अइले बाकिर ऊ झहरा के भगा देली।

भारती रोवत रही। हमरा मन में एगो लइका, एगो मेहरारु आ भुवन के फोटो चलत रहे। अचानक एगो खियाल आइल। हम एगो आपन पारिवारिक चित्र निकलनी आ कहलीं कि देखीं त चिन्ह तानी।

भारती देखली आ कहली कि हँ इहे लइका ह इहे मेहरारु। बाकिर रउरा कीहाँ ई फोटो कइसे? हम कहलीं कि ई हमार पत्नी हई, आ ई हमरे बेटा ह। भुवन हमार आपन सार हवे। उनकर बहिन ए घरी कान्ड्रा गइल बाड़ी। फिर हम भुवन के चिट्ठी भी निकाल के दे देलीं।

भारती के त बुझाल कि कठेया मारि देलस। कहली कि या गॉड, हमार निस्तार कइसे होई। हम कहलीं-घबरा मति। हम हनुमान चालीसा पढ़ि के राहु केतु के सोझिआ देबि। अब हमनी के—राँची के यात्रा कैंसिल। कान्ड्रा चले के बा।

अखबार के मार्निंग एडिशन आ गइल रहे। छोकरा चिचिआत रहे। भारत पाक युद्ध बन्द। सीज फायर हो गइल। हम भारती संगे आवे के तार कान्ड्रा दे देलीं। ऊ हँसि के कहली—सर, रउरा त नीमन जोतिसी बानी।

हम कहलीं—अइसे कह, पाहुन जी, रउरा त साँचो यू थान्ट बानी कि सीज फायर करा देलीं।

वीमेन्स कालेज, जमशेदपुर

अधिक सफेद और चमकीली धुलाई के लिए

स्पेशल जागृति बार साबुन

और

जागृति सरसों तैल

अपने पास के दूकानदारों से खरीदें।

निर्माता

केशरी इन्डस्ट्रीज, आरा

यहाँ 'प्रकाश देव धूप' भी तैयार होता है। एक बार परीक्षा करें।

आपन कथ

भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के स्वर्गवास से सँउसे देश के करेजा दुखे दरक गइल बा। भोजपुरी इलाका के उहाँ का सरहँग सवाँग रहलीं हां। उहाँ के बिहिया के नजदीक के भुवाल दास के पिपरा के रहेवाला रहलीं। बाद में रोजी आ संबंध के चलते उहाँ के उत्तर प्रदेश के भोजपुरी इलाका मोगल सराय आ बनारस गइलीं। उहाँ के धर्म पत्नी, श्रीमती ललिता देवी शास्त्री भोजपुरी के कवयित्री हईं।

युद्ध आ शांति के नेता के रूप में भोजपुरी क्षेत्र के एह प्रधान मंत्री के इतिहास कबहीं ना भुलाई। अइसन ईमानदार, सरल, निष्ठावान आ गांधीवादी नेता के परलोक-वास से भोजपुरी भाई लोग के जतना दुख होई, ऊ कहा न सके।

हम भोजपुरी परिवार के ओरि से अइसवा सजइन सवाँग के मउअत पर दुख परगट करतानी आ शास्त्रीजी के दुखी परिवार के लगे सम्वेदना आ श्रद्धांजलि धर तानी।

× × × ×

भोजपुरी साहित्य में अबले लोक-कथा आ ओकरा तर्ज पर कहानी लिखेवाला लोग बड़का कहानीकार मानल जाता। अगर ईहे लीखि चलत रहे त भोजपुरी साहित्य के बढ़ती में संदेह बा। लोक-कथा के आपन महत्व आ स्थान बा। अगर सब कहनिए लोक-कथा हो जाई त एह साहित्य के नया-बोध से कटल आ हिगराइल मानल जाई। ई साहित्य तब अवरन साहित्य के बराबरी ना कर सकी। एह से जेकरा गुमान बा कि हमनी क कहानी लिखनिहार हईं ऊ नया बोध के कहानी लिखो इहै हमार लिखनिहारन से हथजोरी बा।

नया बोध से बगइला के काम नइखे। एकरा से त्रिजुकला से काम ना चली। ई बोध गाँवे-गाँवे पाटल बा। खाली आँखि खोलि के देखी। आ समकालीन साहित्य के सुर-ताल के चीन्हि के कहानी लिखी।

भोजपुरी साहित्य के कहानी-विधा के उजागर करे खातिर एकर मार्च अंक कहानी अंक होई। रउआ कहानी के हम स्वागत करतानी।

श्री सरस्वती प्रिंटिंग वर्क्स लिमिटेड,
आरा, के लिये नागरी मुद्रण, वाराणसी, से मुद्रित

संरक्षक

१. श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, मैनेजर, बनवार कोलियरी, पो० फूजू जि० हजारीबाग।
२. श्री शिवकुमार त्रिपाठी, महाशक्ति आयुर्वेद भवन, तरी मुहल्ला, आरा
३. श्री शिवशंकर मिश्र, एडवोकेट, एम० पी० बाग, आरा (शाहाबाद)
४. श्री जीतन प्रसाद तिवारी, ग्राम तरी-मझगाईं, पो० बेलहर, वाया सुलतानगंज, जि० भागलपुर।
५. श्री रामसुन्दर त्रिपाठी, मु० घुरहूपुर, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद।
६. श्री जगतानन्द, एडवोकेट, एम० पी० बाग, आरा (शाहाबाद)।
७. श्री सत्यनारायण लाल, व्याख्याता, राज्य शिक्षा संस्थान, पटना-६।
८. श्री रामखेलावन सिंह, मैनेजिंग डाइरेक्टर, श्रीकृष्ण आयुर्वेद भवन (प्रा०) लि०, आरा।
९ श्री रामदेव सिंह, ऐडवोकेट, आरा।
१०. श्री रामरूप उपाध्याय, करनामेपुर, परसौंडा, शाहाबाद।
११. श्री ब्रह्मेश्वर ओझा, बँसवर, रघुनाथपुर, शाहाबाद।
१२. श्री ऋषिकेश तिवारी, मु० पो० निमेज, शाहाबाद।
१३. श्री ईश्वर दयाल दुबे, मैनेजर, टाटा मालकेरा कोलियरी, मु० पो० मालकेरा (धनबाद)।
१४. श्री दामोदर प्रसाद बैजनाथ गुप्त. मेन रोड, झरिया।
१५. श्री चक्रधारी सिन्हा, ऐडवोकेट, बक्सर (शाहाबाद)

विशेष चन्दादाता

१. श्री केशव त्रिपाठी, मु० एकडार, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद।
२. श्री प्रधानाध्यापक, मा० विचकनी, पो० दल्लूपुर, जि० शाहाबाद।
३. श्री शिवपूजन राम, मु० एकडार, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद।
४. पं० हरिहरनाथ उपाध्याय, वैद्य, काशी रसायनशाला, के ईपं राजमंदिर, वाराणसी।
५. श्री विश्वेश्वर प्रसाद, बक्सर, शाहाबाद।
६. श्री रामसूरत मिश्र, तरी-मँझगाँई, बेलहर, भागलपुर।
७. श्री कैलाश प्रसाद गुप्त, विकास पदाधिकारी, जीवन बीमा निगम, आरा।

विशेष चन्दा ।

८. श्री जगन्नाथ चौबे, जवहीं, हठीलपुर, शाहाबाद ।
९. श्री बलभद्र सिंह पारस सिंह, लाल बाजार, झरिया ।
१०. श्री विश्वनाथ प्रसाद राजेन्द्र प्रसाद, मेन रोड, झरिया ।
११ श्री सूरजनाथ सिंह पारस सिंह ऐण्ड कंपनी, झरिया ।
१२. श्री सकलदेव सिंह ऐण्ड कंपनी, झरिया ।
१३. श्री लखन लाल अर्जुन प्रसाद, लाल बाजार, झरिया ।
१४. श्री बचन साह, बोरापट्टी, झरिया ।
१५. श्री दिगविजय चौबे, मु० पो० गोसाईपुर, शाहाबाद ।
१६. श्री ऋषिकुमार मिश्र, मु० पो० रघुनाथपुर, शाहाबाद ।
१७. श्री रामदेव मिश्र, चन्द्रपुरा, हठीलपुर, शाहाबाद ।
१८. श्री यदुनन्दन मिश्र, खैरा कोलियरी, पो० कुसुण्डा, धनबाद ।
१९. श्री कुमार दीनानाथ सिंह, बड़हरा, गोड्डा, सं. परगना ।

देबी शक्ति कार्यालय का

दर्दसन (रजिस्टर्ड)

बात व्याधि के लिये सुप्रसिद्ध
ल। शरीर के किसी भी अंग का
र्द फौरन दूर हो जाता है। गठिया
दर्द से पीड़ित रोगियों के लिये
ो यह महोपकारी तैल है। इसके
र्दन से हाथ-पैर का दर्द अंगों का
कड़ जाना, सुन्न हो जाना, झिनझिनी
कवा, चोट, मोच आदि रोग दूर
ो जाते हैं। पशुओं को भी दर्द में
ायदा होता है।

गोपाल घुटी (रजिस्टर्ड)

यह दवा बच्चों के होनेवाले रोगों जैसे—दांत निकलते समय की तकलीफ, कय, हरे पीले दस्त का होना, सर्दी, खांसी, बच्चों का सूखा रोग, दिन पर दिन कमजोर होते जाना, हमेशा बुखार रहना आदि रोगों को दूर कर बच्चों के शरीर में खून, बल आदि को बढ़ाकर बलवान तथा पुष्ट बनाने में सर्वोत्तम है।

हर जगह विक्रेताओं की आवश्यकता है
देवी प्रसाद केसरी, रजि० वैद्य
देबी शक्ति कार्यालय, ब्रह्मपुर (आरा)

श्री लक्ष्मी त्रिपाठी व्यवस्थापक द्वारा
श्री सरस्वती प्रिंटिंग वर्क्स लिमिटेड,
आरा में छपवा के प्रकाशित।

५

भोजपुरी

साहित्य

बिल्कुल ही नये ढंग के

फिलिप्स

नोबोसोनिक

रेडियो

PHILIPS

जिन्दगी-सी हू-ब-हू आवाज़

फिलिप्स ट्रांजिस्टर रेडियो : टेबुल या पोर्टेबुल अपना सानी नहीं रखते अत्यधिक मांग के कारण, हमें खेद है, सभी मॉडल सदा प्राप्य नहीं होते।

फिलिप्स इलेक्ट्रिक रेडियो : मधुर आवाज और आधुनिकतम डिज के लिये अत्यन्त लोकप्रिय मॉडल—

सचित्र रंगीन कैटलग के लिये हम से मिलें या हमको पत्र लिखें।

फिलिप्स बत्तियां : फ्लोरेसेंट ट्यूब बत्तियां, उषा, ओरियेंट, कैसेल्स रैलिस बिजली के पंखे तथा बिजली के प्रत्येक सामान के लिये याद रखें।

शाहाबाद के प्रमुख बिक्रेता

के० के० जैन कम्पन

आरा

भोजपुरी साहित्य

मासिक पत्रिका

वर्ष : १, अंक : ७
जनवरी, १९६६

५ बरिस २५ रुपया
जिनिगी भर १०१ रुपया

कविता

जागल हिन्दुस्तान बा १ डा० शिवदत्त श्रीवास्तव 'सुमित्र'
कन्हैया के गोहारि २ जनार्दन चतुर्वेदी 'जन'
कइसे फाग मचे होरी जी ३ स्वामी विमलानन्द सरस्वती
चौपदी १२ विश्वरंजन
अजुओ मिटत नइखे १२ सीतासुन्दर देबी "प्रियंवदा"
पाँच गो हँसाई २६ गणेशदत्त 'किरण'
छोड़ ई त काम इ ! २७ श्रीराम सिंह 'उदय'
धरती के सिंगार करे २८ सत्यनारायण लाल

कहानी

सबेरे क भुलायल १३ रामसिंह शास्त्री, साहित्यरत्न
आदर्श बदला ३४ लव शर्मा "प्रशांत"
प्रेम पुकारत बा ४२ बद्रीनारायण पाठक

निबंध

भोजपुरी के रूप रचना ६ रघुवंश नारायण सिंह
भोजपुरी हिन्दी ह १९ रासबिहारी राय शर्मा
बिदेसिया २२ सुबोधकुमार सिंह
चितचोर रामजी दुलहा २९ महेश्वर प्रसाद

लोक कथा

चार कम चालीस ४४ विश्वनाथ दूबे

चिट्ठी मिलल ४७ कुंजलाल गुप्त वगैरह
आपन कथ ४८ सपादक

एक बरिस ५ रुपया
१२ बरिस ५१ रुपया

संपादक
डॉ० जितराम पाठक

व्यवस्थापक
लक्ष्मण त्रिपाठी

कार्यालय
प्रोफेसर कॉलनी, के० जी० रोड, आरा (बिहार)

टेली ग्राम—नवीन विज्ञान

फोन— कारखाना : २१३
निवास : ४७१

नवीन विज्ञान, आरा

स्टील फर्नीचर
साइंटिफिक एपरेटस
टाइपराइटर्स
फोम रब्बर कुशन

लकड़ी के फर्नीचर
लैबोरेटरी फिटिंग्स
सोफा कम बेड
स्टील स्प्रींग कुशन

नवीन का अर्थ है क्वालिटी

नये डिजाइनों के

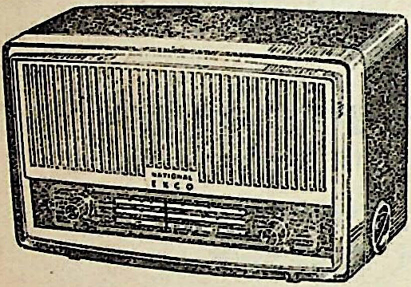

रेडियो सेट
और
ट्रांजिस्टर
के लिए
तथा

बिजली के अन्य
सामान
के लिए पधारें।

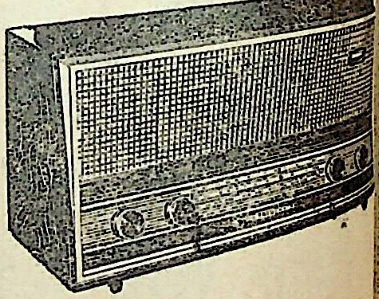

अजन्ताज ● रमना रोड, आर

जागल हिन्दुस्तान बा

डा० शिवदत्त श्रीवास्तव 'सुमित्र'

जागल हिन्दुस्तान बा।
देश-भक्ति के जोश जहाँ, रग-रग में उठत तुफान बा,
हर मजहब के लोग जहाँ पर लेके खड़ा कमान बा,
जागल हिन्दुस्तान बा।
नाम चरच ना पाटी के, ना भेद भाव के बात बा,
एके धुन आ एक राग, बढ़लीं त दुश्मन मात बा,
हिन्दुस्तानी हिन्द देश के एके जहाँ जवान बा,
जागल हिन्दुस्तान बा
सरहद ऊपर नवजवान, खेतिहर खेती-खरिहान में,
मोर्चा ले मजदूर डटल बा, कल-करखाना, खान में।
चलि रहल बा अपने जहवाँ रक्तदान-अभियान बा,
जागल हिन्दुस्तान बा।
हंटर, टैंक जहाँ के लोगे, खुद ही ऐटम 'बम' बा
अनका बल पर कूदे वाला दुश्मन के का दम बा?
लालबहादुर मंत्री तक ले बुढ़वा बनल जवान बा,
जागल हिन्दुस्तान बा।
सत्य - अहिंसा गाँधी के, जहवाँ बा जोति जवाहर के,
शीश झुकावे ले जहवाँ पर अदना आला बाहर के,
विश्व-शान्ति के रक्षा खातिर जहवाँ सबके ध्यान बा,
हर मजहब के लोग जहाँ पर लेके खड़ा कमान बा!
जागल हिन्दुस्तान बा।

बड़ी बाजार, बाँसडीह,
बलिया (उ० प्र०)

कन्हैया के गोहारि

जनार्दन चतुर्वेदी "जन"

लोगवा कहेला, "जन" गोपी ग्वाल बालकन्ह,
दुखवा टारन गिरि हथवा में धइल।
लोगवा कहेला, कृष्ण, भगत का बस रहि,
मानुस के तन धरि नन्दलाल भइ ल॥
लोगवा कहेला, श्याम गज के गोहारि सुनि,
सरन में 'द्रौपदी के लहँगा बढ़वल।
सबइरि भोजपुरी मिलि गोहराव तारे,
चट दे ना आव कान्हा काहाँ तू लुकइल॥१

पाप पयसरवा से पाक अतिचार बाड़े,
चक चक चीनिया से देवता नसइले।
एह-अतिकालवा में अलम अनाथ नाथ,
सोहनी सूरति माधो मनवाँ में अइले।
कतने जवान "जन" मन से बोलाव तारे,
चट देनि, चुपके से काहीं चलि गइले॥
बिथकल हमनी का नटवर, गिरधारी,
करना उधार, ना त नइँया डुतइले॥

कर्सियांग (प० बंगा

कइसे फाग मचे होरी जी

स्वामी विमलानन्द सरस्वती

सतरंगी महलनि सँग विहँसति,
चहकत कहाँ अयोध्या नगरी ?
चहुँदिशि नीलम गजमोतिन से,
सजल सजावल सरजू कगरी ॥
हँस-वंश राजा दशरथ के,
नाहीं आज जनकपुर अइले।
धनुष जग्य पूरन भइला पर,
नाहिं विदेह जनक मुसुकइले ॥
धन-दऊलतिया सुख-सिंगार के,
ऊ दिनवा ऊ राति कहाँ बा ?
सभई विहरत मउज मनावत,
देशवा के ऊ बाति कहाँ बा ?
वृन्दावन में नन्दमहल में—
सघन-कुंज में बंशीवट में।
राधा-रानी मुरलीधर से,
गोपिन गोप संग घर-घर में ॥
दूध दही माखन-मिसिरी के,
कहवाँ फाग मचल बा भाई ?
मुसरी डंड करति बा घर-घर,
कइसे ढोलक झालि बजाईं ?
शाल-दुशाला लोई-मखमल,
रेशम क दस थान बनवलीं,
गुदरी गाँथि घुसरि पुवरा में,
तबो माघ के राति बितवलीं ॥
आइ बसंत रितुन के राजा,
जग कइसन गुलजार बनवलनि।
बाग-बगइचा फुलवारिन में,
सोने रूपे साज सजवलनि ॥
आम का माँथे मउर बन्हाइल,
भवँरा लगलनि मंगल गावे।
अलबेली कलियन का संगे,
पी पराग-मधु मउज मनावे ॥
कहीं पियार लता मन मोहे,
सुघर लाल कचनार फुलाइल।
कहीं अनार अशोक पलाशन,
बगियन-बगियन चउक पुराइल ॥
मलय पवन हाँकत रस बेनियां,
कोइलि पंचम सुर में गावे।
चहचहात चहुँदिशि चिरइन से,
सुख-सोहाग के राग सुनावे ॥
गहगहात गँछियन में लउकत,
लाल सोहासुत पल्लो कइसन !
कचरत पान झूमि रंगरसिया,
गाल फुला नारङ्ग फल जइसन ॥
भला बेल पाकल अनवा त,
सुगवा खातिर खुशी कवन बा ?
लहालोट सोना पर सभई ;
मनवा दुरदिन देखि मवँन बा ॥

सीदति सासति दलिद्रता के,
कथा बड़ी लमहरि बा भाई।
के बा मोर लोर पोंछवइया,
झूठे रोईं दिदा गवाँईं ।।
हमनीं बहुते त्याग देखवलीं,
आफति के बरसाति गवँवलीं।
केतने कोंखनि आगि लगवलीं,
केतने घर क माँगि धोववलीं ।।
तबहूँ कर पर करधनि कहवाँ,
घरवा पर कहाँ कराइन बा।
लिट्टी खुदी आँटत नइखे,
जिउवा भइल रोवाँइन बा ।।
रोपनी मधकलि आइल ताव,
बन्हकी धइलीं पछुआ पजेब।
मुवल धान तब पहुँचल पानी,
कवना जतन महाजन देब ।।
बैल बिकाइल खूँटा कबरल,
बढ़ल रेट आइल परवनवाँ।
दुख क केतना करीं बयनवाँ,
हँकड़त करज पोत परोजनवाँ ।।
कथा बड़ी लमहरि गोला के,
जेकर केतना आस लगवलीं।
मनलीं जनलीं आदर कइलीं,
खेती के समुझि सिंगार सजवलीं ।।
छोला गढ़ि भरि जेठ खियवलीं,
परल हाथ में केतने ठेला।
खरी खेसारी भूसा दिहलीं,
कवन कवन गुन गाईं भोला ?
टूटल हरिसि जुवाठि फेंकाइल
मेघ चुवल जब आइल अदरा।
घाँटी घुघुर बान्हि बनि नेता,
कान्हें धइ खादी के चदरा॥
पीच सड़कि पर टहरे लागल,
जहाँ दाम के ठेलम-ठेला।
केतने कइल गोल गरियारन,
चिरूकी काटि बनवलसि चेला॥
बनलि चरनियाँ अब सोना के,
हीरा मोती रतन जड़ाइल।
खूँटा गाड़ि सुघर चानो के,
नया नया इलबास रचाइल!!
रंगमहल में बइठल गोला,
अब तबला घुड़कावे ला।
छानि घोंटि पियलसि बउराइल,
हँसि कनून कटरावे ला॥
हरिन सोनहुला छउकाँवे ला,
कपट रूप लउकावे ला।
जग्य करत मुनियन का मंडप
हाड़ लहू बरिसावे ला॥
उड़न खटोला चढ़ि धावे ला,
सभके पेट देखावे ला।
एकरा कवन लाज भा डर बा,
भीखि माँगि ले आवे ला॥
सोना का कुरसी पर बइठल,
भीतरे भोग लगावे ला।
हमनीं का जब रोईं लाँ त,
झोरा झारि देखावे ला।
चमकि उठलि सोने के लंका,
देवलोक थहराइल बा।

दया धरम दुबराइल निहुकल,
तपसी लोग लुकाइल बा ॥
मौंछि मुड़ा मांथे धई खाभा,
खोंखला पर ठेहुकाइल बा ।
दागल साँढ़ बनल हँकड़त बा,
खलक देखि कउवाइल बा ।

* * *

जहवाँ देखलीं इहे तमाशा,
खोंतवा उजरल हाहाकार !
धन दउलति क लूटि मचलि बा,
जग में सगरे धुआँधार ॥
छीना-झपुटी सरलि लासि पर,
कतहीं मचलि कँचाइँनि बा ।
कहाँ गरीबन का मड़ई में,
लागलि आगि बुताइलि बा ॥

* * *

ललकि ललकि मनमोहक ललका,
फुलवा देखि भुलइलीं जा ।
घाम सीति बरखा सब सहि के,
गाँछ अगोरि सुखइलीं जा ॥
लोभ मोह तिसुना में सभई-
दाव-पयँतरा बूझल ना ।
माया खेलति आँखिमुदौवलि,
जाल बिछावल सूझल ना ॥
अब का सोच हिरासन सुगना,
जब सेमर के गाँछ सेवाइल ।
कंचन कलई खुललि समय पर,
लागल ठोर भुवा उधियाइल !!
नागा देश, असाम, बँगाला,
दिल्ली लखनउ चंडीगढ़ ले ।
पटना पुरी बंबई धइले,
रामेशर से काशमीर ले ॥
उहे सेमरवा फरल फुलाइल,
सगरे आपन रंग जमवलसि ।
मुहवाँ जवलसि, सुसुक चढ़वलसि,
अन्न बिना सबके कुहुँकवलसि ॥

* * *

मेवा फरे सबुर का डाढ़ी,
का मनवाँ मधुवाइल बा ?
एह बगिया क चालि दुरंगी,
उडुकल से उधियाइल बा ॥
तपन भइल बदरी किंचराइलि,
अब दिनवाँ नियराइल बा ।
झूठे भइलि उतान टिटिहिरी,
बदरी कहाँ रोकाइलि बा ?
अंधड़ उठी बिजुलिया तड़पी,
जे एतना अगराइल बा ।
लउकी उहे सेमरवा झंखत,
धरती पर भहराइल बा ॥

—शिवाला, वाराणसी ।

भोजपुरी के रूप रचना

रघुवंश नारायण सिंह

भोजपुरी के संपादक, भोजपुरी भाषा-साहित्य के जानल मानल विद्वान।

अनेरे ई सवाल उठ खड़ा भइल बा कि भोजपुरी के रूप का होखो। भोजपुरी में एक रूप ले आवे के भी कुछ लोग जोर लगा रहल बा आ कुछ लोग खास जगह के भोजपुरी के असली भोजपुरी कहे का फेर में बा आ ओकरे वोकालत कर रहल बा। रिग वेद में एगो मंत्र आइल बा:

इमें भोजा अङ्गिरसो विरूपा
दिवस्‌ पुत्रासो असुरस्य वीरा।
विश्वामित्राय ददतो मघानि
सहस्र सावे प्रतिरन्त आयुः ।।३।५३।७

एकर माने बा कि ई भोज आ अङ्गिरा लोग विरूपा माने विविध रूप वाला, सुरुज के पुत्र नियर तेज आ चमकीला आउर असुरन नियर वीर ह, आ एही लोग के सहस्रो तरह के धन देके एह लोग के जिनगी के बढ़ावल-चलावल जाय।

भोजपुरी भासा का बारे में हमरो ईहे राय बा कि ओकर जवन भिन्न-भिन्न रूप बा ओकरे के बढ़ावल चलावल जाय। एकरा खातिर कोशिस ई होखे के चाहीं कि जहाँ तक भोजपुरी बोले आ लिखे के चलन बा ओह सभ जगहन के लेखक आउर साहित्तकार के पता लगा के ओह लोग से ओह लोग कौ बोले के जवन तौर तरीका बा ओह में मजगर लेख लिखवा के छापे चाहीं। भोजपुरी बोले वाला जगहन के नक्सा अपना सोझा ध के ओह प सोचे समुझे के काम बा। पहिले बुझात रहे कि खाली ग्रियर्सने भासा सर्वे में नक्सा देल बा, बाकि अब त लोग का पता हो गइल हो कि डा० उदयनारायण तिवारी के किताब 'भोजपुरी भाषा आ साहित्य', डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा के 'मध्यदेश', डाक्टर विश्वनाथ प्रसाद के 'भोजपुरी के ध्वनि' वगैरह कई किताब बाड़ी अवनन में भोजपुरी बोले वाला हलकन के नक्सा देल बा। ओह सभ हलकन के पुरहर लेख आ मासिक पत्रन में छप जाई आ किताब भी छपे लगिहें स तब भोजपुरी रूप में निखार आई।

साँच पूछीं त अबहीं भोजपु

के गद में लिखाइलि का बा, श्री अवधविहारी सुमन के 'जेहल के सनदि', श्रीरामनाथ पाण्डेय के एगो छोट उपन्यास आ जमशेदपुर के भोजपुरी साहित्य परिषद के चार किताब। एही छव-आठ किताबन पर भासा के कवनो रूप ना बनावल जा सके। एह से अबहीं लिखे-लिखवावे आउर छापे-छपवावे के काम बा; अबहीं भासा का फेर में पड़े के जरूरत नइखे।

हँ, एह बात पर जरूर कड़ा नजर राखल जाय कि क्रिया पद बदल के हिन्दी के समूचे वाक्य के भोजपुरी ना बना देल जाय, जइसन कि मैथिली लोग कर रहल बा। सोचावट एह पर होखे के चाहीं कि जब हिन्दी के हमनी सभ आपन भासा मान लेले बानी आ ओकरा में काफी साहित्त आ चुकल बा त ओकरे इंटवा घसका के भोजपुरी के फरका एगो देवाल खड़ा कइला के कवन काम बा। ई काम त तब होखे के चाहीं जब केहू का ई खिआल होखे कि हम ओकरा के खराब क के छोड़ब। भोजपुरी का केहू से कवनो झगरा नइखे, आपन डेढ़ चाउर के खिचड़ी पकावे के चाह नइखे, तब ई तोड़-मोड़ काँहे?

हमरा बुझाता कि भोजपुरी के अपना सुभाव आ प्रकृति के चलावे बढ़ावे के चाहीं। भोजपुरी के गँवई के गँवार सबदन में जब साहित्त लिखाई त ऊ सचहूँ करेज खँखोर लेवे वाला होई। नवाध, नवोन्ह, नवहा, नवही, नन्हकीं, नयकी, नीममकी, नेवर, नेंव, नाध, नासल, बस्कद, लखरल, पखरल, बेहम, पयवस्त, पसगयबब, पिसाम, पिसाइन, पियासल, पीअल, पसंघा, पछहर, पँवरल, वौगैरह सबदन में साहित्त लिखाय त ऊ गजब के काटे ना करी, बलुक हिन्दी के भंडार भर के उपटा दी। ऊ अपनो सोभा बढ़ाई आ राष्ट्रभसो के कुछ दे जाई। गँवई के गँवारन के बोली में बड़ा रस बा। हिन्दी के कुछ हर बरक के आज काल्ह नवाधे में चलत बाड़े, बाकी बड़ा पाँक बा, एह से ठेहुना ले धस जाता। भोजपुरी के बाछा ओनहीं भागे के मन करत बाड़े, एह से ईहो लोग भुआ का नदी में पँवरे के सिवाय कुछ हाथ नइखन लगा पावत।

एह बात के हम जरूर मानब कि हिन्दी में एम. ए. पास क के जे भोजपुरी लिखे बइठी ओकरा बड़ा मेहनत करे के परी, ऊ त कतना दिन मेहनत क के हिन्दी के, कवन दो

परिनिष्ठ रूप होला, तवना के सिखलन, अब उनका के जो भोजपुरी का भँवर में डाल दिआता त उनका कोर किनारा बुझाते नइखे। एह से हहुआ के इहे ढँढ़िया ध ले ताड़े जवन छोड़ के आइल रहन। कहताड़े कि एकरा जगह पर का लिखाई। ऊहे अंगरेजी वाला हिसाब। जइसे अंगरेजी वालन का हिन्दी में सब्दे नइखे मिलत, ओसहीं एह लोग का भोजपुरी में शब्दे नइखन स मिलत। भोजपुरी लिखे के सासरंग नइखे, एह से हमरो से मजिगर लिखात नइखे, गलती हो-हो जाता, काहें कि असली रूप धराते नइखे। बोले में बोला जाता, लिखे में धराते नइखे। पंडित गणेश चौबे के कहनाम बा कि भोजपुरी में बीस हजार त शब्दे बाड़े स। उनका बीस हजार कमे बुझाता आ अंगरेजी के वेब्स्टर डिक्सनरी के मिसाल देत बाड़न जवना में सात लाख शब्द बाड़े स। उनका जाने के चाहीं कि मचान जंगल, लाठी, नियर, नियरा जइसन सबद भी अंगरेजी के डिक्सनरी में बा। हमनी कीहाँ मचान बन्हाला मकेआ के खेत के रखवारी करे खातिर, अंगरेजी में मचान बनेला खाली सिकार खेले खातिर। मचान के ईहे माने अंगरेजी डिक्सनरी में लिखल बा।

बीस हजार सबद कम नइखन स। एकरा अलावे जब भोजपुरी सबदकोस बने लागी त हमनो का ओह सब सबदवन के भर नू देबे जवन अंगरेजी, फारसी, रूसी, जर्मन वोगैरह से हमरा में आ के गल पर गइल बाड़े स। अबहीं त हमनी का असली-नकली का फेर में बानी जा। ग्रियर्सन का पिजेन्ट लाइफ में जाते ऊहे सब सब्द बाड़े स जवन जनता का नित दिन के काम में आवे ले स। श्री अवधविहारी सुमन आ चौबे जी का संग्रह में का बा से हम नइखीं जानत। बाकी ई हम जानत बानी कि जतना शबद भोजपुरी में चलत बाड़े स ओह में साहित्त लिखा सकत बा भलेहीं विज्ञान आ दोसर दोसर चीज ना लिखाए। एगो लेख लिखाए में कतना सबदन के जरूरत बा एह प सोच विचार कइल जाव। डेढ़ दू हजार सबदन का लेख में ईहे देखे के होई कि कतना सबद बाड़े स जवन दोहरा तेहरा के आइल बाड़े स। अइसनो सबद होइहें स जवन बेर-बेर आइल बाड़े। क्रिया, विभक्ति वोगैरह में त अइसन होइबे करेला।

चौबे जी हमरा के बेरी-बेरी लिखत बानी कि हमरा आ ईहाँ

भासा का बारे में मतभेद बा। काल्हो उहाँ का लिखले बानी कि ऊहाँ का चाहत बानी कि तत्सम सबद जइसे के तइसे लिखा स आ हम चाहत बानी कि ममोर-चमोर के लिखा स। ई बात गलत। हम ममोरे चमोरे का फेर में नइखीं, बाकी हम एह पर कुछ सजग बानी कि ऊ भोजपुरी का प्रकृति के अनुरूप होखे के चाहीं। शब्द के बहुवचन शबदन होई। एकरा के असही लिखाउ। चौबे जी शब्दे लिखले बानी। हमार कहनाम बा कि एकरा के भोजपुरी का सुभाव पर आवे दीं। असहीं आउर जवन सबद रउरा हिन्दी का भण्डार से लेवे के बा तवना के भोजपुरी का वाक्य में सोभे लायक बना लीं। अइसहीं ओकरा के वे गढ़ले ओढ़ले उकठ काठ नियर मत धराउ कि बगवा का राकस आ मभौवा का चोन्हर नियर फरके से चिन्हा जाउ।

हिन्दी के व्याकरन से भी हमार विरोध बा। बाबू दुर्गाशंकर सिंह हिन्दी व्याकरन के आधार लेके बहुत चलीं ले। समस्या बाड़ी स भा कहानी लिखा ताड़ी स एह तरह के भोजपुरी भाषा के हम खिलाफ बानी। महर्षि विश्वामित्र महा विद्यालय के प्राचार्य श्री विश्वनाथ सिंह के एगो लेख भेजले बानी, उनका 'नवरतन' खातिर। ओह में हम देखवले बानी कि वैदिक वसिष्ट, स्याल, सूपं, सूकर वोगैरह संस्कृत में वशिष्ठ, स्याल, शूर्प ओ शूकर हो गइल बाड़े। एह से हमार कहनाम बा कि विवरन भा वर्त्तनी उच्चारन पर लिखाव। वेद में वर्तनी हरसिकार से लिखल बा, हिन्दी में दीर्घइकार से लिखाता। वेद में छुरेण लिखल बा हिन्दी में छूरा से लिखाता, वेद में कर्णयो लिखल बा हिन्दी में कानों को चलत बा। एह से हमार कहनाम बा कि एकरा के उच्चारन पर चले दीं आ जाहिल गँवार आ अनबूझ का उच्चारन पर चले दीं। व्याकरन आ उच्चारन के मालिक ऊहे लोग ह। का गणेश जी बतला सकेलन कि मोटर के हवागाड़ी आ बाइसाइकिल के बाइसिकिल ओकर पाँवगाड़ी के कइल? ई सभ जनता जनार्दन के करनी ह जे ओकर मालिक ह।

जनते का बोलचाल का भासा में वेद लिखाइल, ऊहे प्राकृत भाषा रहे। जब पंडित लोग ओकरा के सँवार सुधार के संस्कृत कइल त का प्राकृत खतम हो गइल? ना, प्राकृतो चलते रहल। ओही में, गलते सही, बाकी

अपभ्रंश आ गइल। एक ओर संस्कृत दोसरा ओर प्राकृत आ, बाकी ओकरे अपभ्रंश, कइसन मजा आवत होई। संस्कृत के महाकवि बाणभट्ट अपना हर्षचरित में भाषाकविरिशानः, वर्णकविर्वेणी भारतः, प्राकृत्कुलपुत्रो वायुविकारः, लिखले बाड़े। एह से माने के परी कि संस्कृत कवि बाणभट्ट, प्राकृत के वायु विकार, वर्णकवि वेणी भारत आ भासा कवि इशान, ई चारो चार तरह के भासा लिखे वाला आपुस में हित मित्र रहन। वेद में भी भासा के अनेक रूप बा। अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू, को वः सखित्व ओहते, आ तू पिच कएवमन्ति, ईहे ह वो मनसा वन्धुता नर, ई सभ तनी मनी का हेर फेर से भोजपुरीये बूझीं। पिच के दन्त स से लिखीं आ मन्ति के मतिन क दीं त ई भोजपुरी ह। को वह सखित्व ओहते के का करब। ई सभ वेद बानी ह।

हम साफ-साफ फरिया के कह देबे के चाहत बानी कि रउरा अपने लिखे के बा त हिन्दी के लामा चाकर मैदान रउरा खातिर छोड़ल बा; ओह में चउकड़िया मारीं, कबड्डी खेलीं; चिक्का जमाईं, बाकी जब जनभासा भोजपुरियो का ओर, एने मारीं फुलापति ओने मारी घूस के मन होखे त जनता के मुँह जोहीं, ओक आवाज धरीं, लिंग के भेद ओके से सुन के करीं, आपन पंडित अपने पासे अबहीं रहे दीं। ईहो राह ध ली आ एकरो में इ हास, पुरान आ बिज्ञान वा लिखाये लागी त रउरो इलेक्ट्रि लिखब, बिजुली लिखे में अड़ बुझाय त इलेक्ट्रीके लिखब, तब हम कवनों उजुर ना होई। अबहीं खेड़ा बेड़ा बा जो कहीं गलत धरा गइल त फेर मोड़ खोजल म किल हो जाई।

भोजपुरी में से 'ही, भी' उठा एह में हमहूँ रउरा जवरे कान्ह ल इब, बाकी कोरसिस के कोसि मत बनाईं, ना मन माने त कोसि रहे दीं। गोस्वामी तुलसीदास दोसे लिखले बानी—भरतहि देइ को जाएँ, जग बौराइ राज पाएँ। ससिगुर तियगामी नहु चढ़ेउ भूमिसुर जान। लोक वे बिमुख भा, अधम न बेन समान तुलसी बाबा के राह छोड़े के क परोजन पर गइल बा। प्रयोजन हम परोजन नइखीं बतावत, भोज इलाका भर में परोजन परेला, एह तूर तार के सवाल नइखे।

असहीं बिकारी भा बकटोइया

सवाल बा। वे हरसिन दीर्घीन के पता जनले जहाँ मन में आवे ओहीजे लगा दीं ई गजब बात बा। कर्म के मोताबिक क्रिया के लिंग बना दीं। काहे रोटी खाई थी के जगह रोटी खइले रहीं त ठीके बा त समस्या बाड़ी स काँहे के। संस्कृत, अंग्रेजी बंगला कवनों में ई झंझट नइखे। का जाने काहाँ से हिन्दी में आइल त भोजपुरिओ में आ जाय एकर कवन काम। एगो कर्त्ता के ने चिन्ह के रटत-रटत पढ़निहार के बोकर छूटल बा, तबहूँ पटना सड़क पर आ बस में चलत सुनलीं—हम त ऊँहाँ थेइये थे, हम त कहबे किया था। ई कोट पैंट वाला लोग कहेला जे पुरहर पढ़ल-लिखल बा।

हमरा जे बुझाइल से लिख देलीं, माने ना माने के राउर अख्तियार। बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह आ श्री रसिक बिहारी ओझा के कहनाम बा कि हमरे बतिआ सभलोग मानू मानो। हमार कहनाम बा कि मत माने। हम का मनावे खातिर कवनो बान्ह छान लगावत बानी, बाकी,

कीरति भनिति भूलि भल सोई।
सुरसरि सम सभकर हित होई॥

भोजपुरी कार्यालय, पटना

◆

अधिक सफेद और चमकीली धुलाई के लिए

स्पेशल जागृति बार साबुन

और

जागृति सरसों तैल

अपने पास के दूकानदारों से खरीदें।

निर्माता

केशरी इन्डस्ट्रीज, आरा

यहाँ 'प्रकाश देव धूप' भी तैयार होता है। एक बार परीक्षा करें।

चौपदी

विश्वरंजन

किरिन संख बाजल जे फगुनी के।
सीपी जस आँख खुलल टहुनी के॥
साध उड़ल फिरल आस-डैना पर।
सपना के फूल खिलल सगुनी के॥

फूल-फूल फाहा बन इत्तर के।
गमकावे घाम रंग पित्तर के॥
गंधी के बक्सा जस बगिया बन।
बानगी देखावेला भित्तर के॥

साँझ पघिल गइल रात करिआ में।
चाँद उतर गइल गोल थरिया में॥
काहें ना बात बनी सोंचल जे।
टहके ला लाली दुपहरिया में॥

छपरा, सारन [बिहार]

—o—

अजुओ मिटत नइखे कठिन कलेसवा

सीतासुन्दर देवी 'प्रियंवदा'

जड़वा के दिन आइल, ठिठुरल देहिया।
ऊसर जमिनियाँ में फूटि गइल रेहिया॥
सगरे बधरिया के उठि गइले धनवाँ।
धनवाँ के गँजवा से भरल खरिहनवा॥
रबिया के खेतवन प चढ़ले लहसवा।
भोरवा में कुहवा से कुँहुकल अकसवा॥
कतना गरीबवन के पुअरा बा जनवाँ।
कतना त आग तापि राखेलन परनवाँ॥
पीठ में सटल पेट, सिकुरल बा चमवाँ।
भोरवा से सँझिया ले ठोंकलन करमवाँ॥
ईहे बा आजाद भइया भरत के देसवा।
अजुओ मिटत नइखे कठिन कलेसवा॥

डिहरा, पो० मनिअंच, शाहाबा

सबेरे क भुलायल

राम सिंह शास्त्री, साहित्यरत्न

गदहबेरिया के बखत घरे पहुँचली त देखत का हईं कि एक ठे टांगा पर बक्सा, बिस्तरा, सुराही, डोलचो, पनदान वगैरह सब रक्खल हौ। ई समझ में नाहीं आयल कि कोई आवत हौ कि कोई जात हौ। न तो कोई के आवे क खबर रहल न कोई के जाए क उमेद। साइकिल गलियारे में रख के भीतर गइलीं त देखलीं कि चच्चा आपन कपड़ा पहिरत हउवन अ चाची अपने बचवा के जूता पहिरावत हइन। बड़की भउजी अपने खटिया पर सूत के रोवत हइन अ चूल्हा ठंडा हौ। भइया क पतै नाहीं हौ कि कहाँ हउवन।

के से का पूछी? खड़ा हो के लगलीं बकर-बकर मुँह ताके, कभी चाची अ चच्चा के ओर देखी त कभी भउजी के ओर। सब कोई चुप रहल त चाचिए (मुनुआ के तरफ देखके, बोल्लिन, मुन्नू! भइया के नमस्ते करले आ कह दे कि हम अब जात हईं, ई घर में कब्बौं न आइब'। ई कहते चाची के रोआई आ गयल अ ऊ अंचरा मुंहें में दबा के सीढ़ी से नीचे उतरे लगलिन। एपर चच्चो बोललन, "लल्लू! हम लोग ई घर छोड़ के जात हईं, अब तू लोग आराम से रहे, चल, नीचे केंवाड़ी बन्द कर ल"।

अब हम का कहीं, का करी, ई कुछ समझे में नाहीं आयल। हम तो बस चच्चा क गोड़ पकड़ के एतने पुछलीं' "काहें जात हउअ तूं लोग? चच्चा हमार बांह पकड़ के उठउलन अ एतने कहलन, "ए घरे में अब दाना पानी करना गउ मांस खाना हौ, अपने भइया से पूछ लीह," एकरे बाद झटकक के टांगा पर जा के बइठ गइलन। हम ताकते रह गइली अ ऊ चल गइलन।

"भउजी, ए भउजी, उठतू काहे नाहीं? ई सब का हौत हौ घरे में? चच्चा चल गइलन, भइया देखाते नाहीं हउवन, तूं सूतल हऊ अ चूल्ही ओइसहीं तवांयल बा," हमार एतना बात सुनते भउजी एकदम तेज

चमकलिन जइसे करइत क पोंछ दबा गैल हो। ऊ फुंफकरलिन 'लल्लू, आज हम लोगन के कलंक लग गयल, पाप क कमाई खात-खात हम लोग पापी हो गयल हई। आज हमलोग बहुत बड़े पाप से बच गइली। जा आपन काम कर हमार तबियत ठीक नाहीं हौ। जा, कुछ पानी ओनी पी आव, तब तक भइयो आ जइहेन।" चुपचाप उठके हम मनहीं मन सोचत बिचारत सड़प पर चल अइली अ एकठे होटल में बइठ गइली।

सड़क के किनारे 'पीली कोठी' में जाके कुछ नाश्ता मंगउली अ एकठे मेज पर चुपचाप दोमा रखके खाए लगली। तन होटल में रहल लेकिन मन घरे में बौड़ियात रहे। ई तो हम जानत रहली कि चाची अ भउजी में पटरी नाहीं बइठत, लेकिन ई बात एतना बढ़ जाई ई हम कब्बौं नाहीं सोचले रहली। चच्चा पुराने खियाल क आदमी हउअन, बाकिर भइया नए जमाना के हिसाब से चलेलन। चच्चा चाची ई समझेलन कि भउजी भइया पर बसीकरन कै देले हइन। चच्चा जब चाची के बोलावेलन त कहेलन, "कारे सुनत हई", लेकिन भइया भउजी क नाम लेके बोलावेलन अ ओहू में 'जी' लगा के पुकारेलन। भइया भउजी आपस में 'आप' कह के बात कहेलन। भउजी क कहना दिमाग में सिनेमा के तरे नाचे लगल। 'कलंक', 'पाप क कमाई' ई सब का बात हौ; कुछ नाही समझ में आयल।

भइया भउजी नए जमाना क लोग हौवन। ओनकर नया सिद्धान्त हौ, नया विचार हौ, नई दृष्टि हौ, नया जीवन दर्शन हौ। भउजी इन्टर में पढ़त रहलीं तब्बे बियाह हो गैल; भइया तो एम० ए० का लेलन, लेकिन भउजी के मौके नाहीं मिलल। बियाह होते हमरे माई के का जानी कउन बेमारी लग गयल कि ऊ ओही में मर गइलीं। बा दिल्ली रहेलन। ओन से मतलबे नाहीं हौ कोई बात से। माई के मर गइले पर भी खाली तेरहीं वाले दि आएल रहलन। ओनकरे घरे क पता कोई के नाहीं मालूम हौ, चि पत्री दफ्तर के पता से होला। चच्चा कहत रहलन कि ऊ बेधरम हो गयल हउवन, ऐसे ओनसे कोई तरह क सम्बन्ध कोई नाहीं रक्खेला। घर गिरस्तीक देख भाल चच्चा कर रहलन अ भइया भी अपने किता

उताव क रायेल्टी मिल गइले पर कुछ रुपया घरे दें देत रहलन। खाली हमार आमदनी बन्हल हौ, दुकान पर से सौ रुपइय्या मिलेला तो भउजी के हाथ में न देके चाची के दे देत रहली। ए तरह से गिरस्ती क गाड़ी खिंचात चलत जात रहल। अब सब जिम्मेदारी हम लोगन पर आ गयल। मालूम होत हौ भइया कहीं रुपइय्ये के जोगाड़ में गयल हउवन। हमार तनखाह बो पहिलवें दिया गयल रहल।

घरे पहुँचली तो रात हो गयल रहल। भइया आ चुकल रहलन अ भउजी परौठा सेंकत रहलिन। भइया हमके देख लेहलन त बोलइलन। हम चुप्पे जा के खड़ा हो गइली। भइया हमरे कन्हा पर हाथ रख के बोललन, चच्चा, चल गइलन, हम लोग क तनिको कसूर नाहीं हौ। तू तनिको मत घबराए, बेटा, अबहीं हम तइयार हई ...", कहत कहत ओनकर गला भर आयल। हमरो मन बहुत पसिजल अ जिउ रोआइन हो गयल। हम कहली, 'ठीक हौ भइया, तोहार छांह छोड़ के हम कहां जाइब"! भउजी क कहानीं मुहें में आवत-आवत रह गयल।

खाना ओना खा के हम लोग भइया बाले कमरे में बइठ गइली। भउजी कहलिन कि ऊहो कुछ काम, करिहेन अ गिरस्ती चलावे में मदद करिहेन। भइया बतउलन कि ऊ अपने कालिज गयल रहलन हं, ऊहां एक ठो टेम्परेरी प्रोफेसर क जगह खाली रहल ह। अपने प्रिन्सिपल साहब से भेंट कइले पर ऊहे बतउलन अ कहलन कि ई जगह अर्जी भेज देवे के चाहीं, जगह बाद में मुस्तकिल हो जाए क उमेद हौ। एक तरह से काम मिलले समझे के चाहीं। भइया हमहूँ से कहलन कि अगले साल एम० ए० कर लेई त कउनो बढ़िया नउकरी मिल सकेला।

सबेरे भउजी बड़के अस्पताल गइलिन अ जाके एक ठे फारम ले अइलिन जेम्मे नर्स क काम सीखे क परार्थना रहल। दुसरे दिन अतवार रहल, अ हम सब लोग घरहीं रहली। भउजी बड़े उत्साह से फारम भरत रहीं अ भइया ओनकर मदत करत रहें। फारम ओरम भरके भउजी अ भइया दूनों जनें अस्पताल जा के फारम जमा कर अइलन। लउट के अइले पर बहुत तरह क कल्पना महल बनल बिगड़ल।

सात आठ दिन बाद जब सब

लोग फिर एकट्ठा भइलन त आपन-आपन चरचा फिर सुरू भइल। भइया कहलन कि ओनकर किताब पुरस्कार के लिए सरकार के पास भेजल गयल हौ अ भगवान चहिहेन त कुछ न कुछ पुरस्कार मिलबे करी। ओ बिसय पर दूसर कउनो किताब नाहीं गयल हौ एसे सोलहो आना उमेद हौ कि पुरस्कार मिले के चाहीं। भउजी बतउलिन किं ओनकर फारम मंजूर हो गयल हौ औ अगले सोम्मार यानी पहिली तारीख से टरेनिङ्ग सुरू हो जाई।

भउजी क टरेनिङ्ग सुरू हो गयल अ भइया के नउकरी मिल गयल। धीरे-धीरे दू महिन्ना बीत गयल। भउजी के दुपहर में जाए के होब रहल सबेरे क खाना ओना बना के ऊ चल जायं अ तीन चार बजे तक लउट आवें। भइया भी जब ओनकर किलास रहे तब कालिज जायं नाही तो घरहीं बइठ के लिखल पढ़ल करें। ए बीच मैं न तो चच्चा अइलन न चाचिए अइलिन। कोई के पता भी तो नाहीं रहल कि ऊ कहाँ चल गइलन, त खोज खबर कइसे कोई लेत।

एक दिन चच्चा से चउक में भेंट हो गयल। हाल चाल पुछउवल भयल। चच्चा अपने घर क पता बतउलन अ कहलन कि कब्बों-कब्बों आवल कइली। गइली एक दिन ओनके घरे। घर का रहल कि बस सुअरी क खोभार कहे के चाही। चाची खटिया पर बोखार में पड़ल मुनुवा के अलगे पतली टट्टी परेसान कइले रहल। कहीं बइठे क ठेकाना तक नाहीं, एक्के कमरा, ओही में चच्चा खाना बनावत रहलन। चाची हमके देख के लगलिन रोवे। कहें, कि जब से आयल हई तब्बे से बेराम हई, मुनुआ क टट्टी बन्द नाहीं होत हौ। ई एक कोठरी क भाड़ा दस रुपइया देवे के पड़ेला, न सुत्ते क जगह हौ न बइठे के। टाट क जमीन नाहीं अ भाड़ा दाम क मोल। अब तोहार चच्चा पछतालन कि नाहके हिंया आवल गयल। "लेकिन चाची," हम पुछली, "तूं लोग चल काहें अइलू?" ऊ अचरज में हमसे सवाल कइलिन "तोहें नाहीं मालूम हौ का? "नाहीं तो, तोरे गइले के बाद भउजी रोवत जरूर रहें, लेकिन ऊ कोई क सिकाइत नाहीं कइलिन," हम फिर पुछली "आखिर बात का रहल, चाची?" "झगड़ा, मनिआडर क रहल, और तोसे का छिपाई, बचवा." चाची

कहलिन । हम तुरन्ते पुछली, 'कइसन, मनिआडर, चाची' ? 'ढाका से आयल रहल,' चाची बोल्लिन, 'तीन सौ रुपइया रहल'। "लेकिन, ढाका तो पाकिस्तान में हौ," हम कहली, 'पाकिस्तान से रुपइया के भेजलस अ काहें बदे ? चच्चा क तो कोई दोस्त हुँआ रहत नाहीं, फिर ई रुपइया कइसे आयल ?' एक सांसे हम सब पूछ गइली। चाची बतउलिन कि ई बात भउजी के मालूम हो गयल अ ऊ चच्चा के धमकी देलिन कि अगर ई सब रुपइया वापस नाहीं होई त ऊ पुलिस में खबर कर दीहें। ओही बखत भइयो आ गइलन अ ऊहो कहलन कि पाकिस्तान हमार दुस्मन हौ, दुस्मन क मदत करना बेईमानी हौ, गद्दारी हौ, अइसे अदमी के तो गोली से उड़ा देवे के चाही। एही बात पर चच्चा चाची घर तियाग लिन अ रुपइयो वापस करे के ड़ल। अब समझ में आयल के झगड़ा काहें भयल रहल। चच्चा किस्तानी एजेन्ट हउवन। सचौं बात सरम क हौ। चच्चा सरकारी बिजली घर में पावर हाउस क फोरमैन रहलन। ओनके सङ्हें क ठो एसिस्टेन्ट फोरमैन काम करत रहे। ऊ एक दू साल पहिले रिटायर हो के पाकिस्तान चल गयल। उहे चच्चा के मिलउलस अ लालच देलस कि अगर चच्चा पावर हाउस के डाइनामाइट से उड़ा दें या मेन कनेक्सन एक दिन रात भर बन्द करवा सकें तो ओन्हें एक हजार रुपइया इनाम मिली। चच्चा लालच में पड़ गइलन अ गद्दारी करे क बात मंजूर कर लेलन।

लेकिन ही बीच लड़ाई बन्द हो गयल। रुपइया तो चल चुकल रहल, एही से चच्चा के मिल गयल। चच्चा के नाम एक ठे चिट्ठी भी आयल रहल जे के भउजी खोल के पढ़ लेहलिन। ओम्मे लिखल रहल कि ई पेसगी रुपइया हौ, जब दूसर सनेसा मिली तब कार्रवाई सुरू करे के होई। पूरी इस्कीम अगिली चिट्ठी के साथ मिली। एही बात पर चच्चा के भइया फटकरलन, अ कहलन कि तुरन्त मकान खाली कर द, नाहीं तो पुलिस में दे दिहल जाई।

ई सब खबर सुनते हमार करेजा उछरे लगल, मन कइलस कि अइसे पापिन क मुंह देखना हराम हौ। हम उठे लगली त चच्चा बोल्लन, "हम बहुत सरमिन्दा हई, बचवा, अपने गलती क माफी मांगत हई।

भइया से कह दीह, हमार दुरदसा न करावें, हम्में अपने सरन में ले लें। ऊ जइसे कहिहेन हम ओइसहीं चलब, सच्चौं हम बहुत बड़ा पाप करे जात रहली। हमार लछिमी बहू हम्में न टोकत त हम कउने नरक में पड़ित, एकर ठेकान नाहीं हौ। भगवान जवन करेलन सब अच्छै करैलन। हमार मत भरभस्ट हो गैल रहल, हम्में सहारा द बचवा नाहीं तो हम कहीं कूआं-इनारा में डूब मरब। हमार आत्मा हम्में हर दम धिक्कारत रहेला, कान में अइसन भन्न-भन्न होला जइसे हम्में कोई 'पापी', 'गद्दार', 'नीच' कह-कह के गोहरावेला। महल्ला टोला बर-बाजार में जहाँ चार अदिमी फुसुर-फुसुर बात करेलन त हमके सक हो जाला कि हमरे बारे में कहीं कउनो बात तो नाहीं हौ। जब लोग अकबार में पढ़ के सुनावेलन कि फलां पाकिस्तानी पकड़ाएल या एजेन्ट क कुटम्मस भयल या के पुलिस में दे दीहल गयल हमार करेजा उछरे लगेला। में हम ईहे देखीला कि हम्में पकड़ के ले जात हौ औ दरोगा हन्टर से मारत हउवन चिल्लात हई। ओही वखत नीन जाला आ फिर नीन नाहीं हम्में बचाल बचवा, नाहीं तो पागल हो जाब या कहीं जाइब…" कहत कहत चच्चा लगलन। हम चच्चा से एतने 'जाए द चच्चा, सवेरे क अगर संझा के घरे लउट भुलायल नाहीं कहात'।

जन्तु विज्ञान विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्या
वाराणसी-५

◆

भोजपुरी हिन्दी ह

रासबिहारी राय शर्मा

'भोजपुरी साहित्य' मासिक के नवम्बर अंक में भोजपुरी के वर्त्तनी आ व्याकरण मथेला लेख में भोजपुरी के नामी गरामी विद्वान श्री गणेश चौबे जी एगो गहन विषय पर सवाल उठवले बानी। ओह में हमरो नाँव आ गइल बा। एह से हमरा कुछ सफाई दिहल जरूरी हो गइल बा। हिन्दी के सर्वनाम 'यह' का प्रसग में भोजपुरी ई के प्रयोग आइल बा। ई अउर ऊ के बदला इ अउर उ लिखाइल बा। आने इ अउर उ के बदला ई अउर ऊ होखे के चाहीं। अइसन चौबे जी के विचार मालूम होत बा। बात ठीक बा। अधिकतर ई अउर ऊ के प्रयोग भोजपुरी में ावल जाता। ई हमहूँ मानत बानीं। व हम भोजपुरी व्याकरण लिखे गलीं तब हमरो मन में एह बात में बहा-संका भइल। कहीं इ के वहार बा त कहीं ई के। कहीं उ खल मिलत बाटे त कहीं ऊ के हार बा। कुछ प्राचीन अउर नवीन भोजपुरी के हस्तलिखित अउर छपल लेखन के देखला से हमरा कुछ-कुछ जान पड़ल कि दूनो रूप बेवहार में आइल बा। भोजपुरी त उच्चारण प्रधान भासा ह अउर ध्वनि मूलक बोली। ओहू बातन पर हमार नजर गइलि। जहवाँ तहवाँ पर्यवेसन भी कइलीं त हमरा ईहे बात ठीक मालूम भइल कि अभी इ अउर उ के प्रयोग भी देखावल जाय। जदि भोजपुरी के मनीसी लोग ई अउर ऊ के शुद्ध रूप समझी त पाछे ठीक कर दिहल जाई। एह में कवनो हमार हठ नइखे। हम त भोजपुरी व्याकरनी लोगन के बात माने के हरदम तइयार बानीं। इ के भी प्रयोग पावल जाला। एगो-दूगो उदाहरन देके ई बात खतम कर देत बानी।

(क)

"एक जनी अहिर ससुरारि करै गइलैं। उहां राति के दीआ बरत रहे। इ कब्बो दीआ बरत देखले नाहीं रहलैं। अपने मन में कहल

हौ न हो ई है अँजोरिया के बच्चा। जब उनके ससुर नेग बिदाई देवै लगलं त ई कहलं—सब लोग जानि गइलं कि 'इ' हे सार घर फुकलसि है।"

(सरवरिया)
ग्रामीण हिन्दी से
प्रो० धीरेन्द्र वर्मा द्वारा संकलित
(१९३३)

(ख) सर्वनाम 'वह'

अवधी	छत्तीस गढ़ी	भोजपुरी
ऊ	उओ	ओ, ऊ
उइ	उन	उन्हका, ऊसभ
उइ	उओ	ओहि, ओह
उन	उन	उन उन्हुका

ग्रामीण हिन्दी
प्रो० धीरेन्द्र वर्मा
(१९३३)

(ग)

छछनत दिन रतिया बित जाला
गँवई के मजदूर के।
होत फजीरे लोही लागे
तसहीं इ मजदूर जागे।
मालिक घुड़कि-घुड़कि के डाँटे,
तबहू खेतवा बोवे काटे,
निगिचा इ कतना जानत बा
मालिक कतना दूर के।
टका अधेली पर दिन काटे,
जाइ गोदामनि इ खटे
चीनी के बोरा चउकेला,
छछनेला इ गूर
मिलवन में दुख के दिन गिनले
सूत-सूत से कपड़ा बिनले,
सबके इ पहिरवले कुरता
इनकर कुरता धूर
का बरखा का जाड़ा गरमी,
कबहीं ना इ कहले नरमी,
तबहूं ना सुख सूद के मिलल,
इनका मेहनत मू
मजदूर कविता
श्री दिवाकर लाल

(घ)

कइल जाता दूसर, कहल जाता
गुनल जाता दूसर, मथल जाता
इ कइसन बा जादू इ सइसन बा
लिखल जाता दूसर, पढ़ल जाता
हुकूमत के मानों दुरुखा दु
तरे रंग दूसर परे रंग दूस
× × ×
आजादी त आइलि मगर दूर
लदल बाटे सिर पर गरीबी के
न तन में लंगोटी न घर में बा
पिसति बाटे कोल्हू में बंजर के
सुने कवन दुखियन के दुख के
इ सरकार दूसर जवाहिर उ
श्री प्रसिद्ध नारायण सिंह 'प्र

(ङ)

ओ० टी० आर०

इस्टेशन के कौन बताईं हाल,
पनिया के दरसनवाँ जहाँ मुहाल।
पुरिया के तौ करौं न तनिको बात;
जकसनवा पर सतुवा नाहि लखात।
जब इ रेलिया चले पुरुब की ओर,
जहां फरे मलदहवा अमवा थोर,
गारड बाबू के जिउ अति ललचाय,
मुसवा देखि बिलइया जनु मुह बाय॥

'बेढब' बनारसी

(च)

"टीपन के मूल्य रउआ एही से समझीं कि जे भविष्य में देखे के अभी तक कौनो वैज्ञानिक या अध्यात्मिक साधन, नइखे उ भविष्य के देखे के यन्त्र ह।

'टीपन', जनवरी, १९६४

'अँजोर'

"उ जरूरत से ज्यादा बड़ अउर भारी बा। पत्थर के काट के नकाशी जे काम भइल बा उ सब बहुत उच्च श्रेणी के बा।"

"एह समय में चमकीला पालिश के जवन प्रचार भइल उ मौर्यकाल के बाद एकदम नइखे मिलत।"

मगध के मूर्ति कला

'अँजोर', जनवरी, १९६४

(छ)

"भारत के इ अइसन धरती,
रहि-रहि पिरिति झरेला,
बाकिर केहु आँखि देखावल
ओकर नास करेला।

चयनवाँ नाहीं लेवे राम

राहगीर (वाराणसी)

ऊपर के सभ उदाहरण के देखि के विद्वान लोग एगो निश्चय करे कि इ अउर ई तथा उ अउर ऊ दूनो रूप शुद्ध मानल जाई आ कि ई अवरू ऊ।

भोजपुरी के हिज्जे अउर वर्तनी का विषय में खूब विचार होखे के चाहीं।

डुमराँव, शाहाबाद

हो न हो ई है अँजोरिया के बच्चा। जब उनके ससुर नेग बिदाई देबै लगलं त ई कहलं—सब लोग जानि गइलं कि 'इ' हे सार घर फुकलसि है।"

(सरवरिया)
ग्रामीण हिन्दी से
प्रो० धीरेन्द्र वर्मा द्वारा संकलित
(१९३३)

(ख) सर्वनाम 'वह'

अवधी	छत्तीस गढ़ी	भोजपुरी
ऊ	उओ	ओ, ऊ
उइ	उन	उन्हका, ऊसभ
उइ	उओ	ओहि, ओह
उन	उन	उन उन्हुका

ग्रामीण हिन्दी
प्रो० धीरेन्द्र वर्मा
(१९३३)

(ग)

छछनत दिन रतिया बित जाला
गँवई के मजदूर के।
होत फजीरे लोही लागे
तसही इ मजदूर जागे।
मालिक घुड़कि-घुड़कि के डाँटे,
तबहू खेतवा बोवे काटे,
निगिचा इ कतना जानत बा
मालिक कतना दूर के।
टका अधेली पर दिन काटे,
जाइ गोदामनि इ खटै
चीनी के बोरा चउकेला,
छछनेला इ गूर कै
मिलवन में दुख के दिन गिनले
सूत-सूत से कपड़ा बिनले,
सबके इ पहिरवले कुरता
इनकर कुरता धूर
का बरखा का जाड़ा गरमी,
कबहीं ना इ कइले नरमी,
तबहूं ना सुख सूद के मिलल,
इनका मेहनत मूं

मजदूर कविता
श्री दिवाकर लाल 'अं

(घ)

कइल जाता दूसर, कहल जाता दू
गुनल जाता दूसर, मथल जाता दू
इ कइसन बा जादू इ सइसन बा
लिखल जाता दूसर, पढ़ल जाता दू
हुकूमत के मानों दुरूखा दु
तरे रंग दूसर परे रंग दूसर

× × ×

आजादी त आइलि मगर दूर
लदल बाटे सिर पर गरीबी के
न तन में लंगोटी न घर में बा
पिसति बाटे कोल्हू में बंजर के
सुने कवन दुखियन के दुख के
इ सरकार दूसर जवाहिर उ

श्री प्रसिद्ध नारायण सिंह 'प्र

(ङ)

ओ० टी० आर०

इस्टेशन के कौन बताईं हाल,
पनिया के दरसनवाँ जहाँ मुहाल।
पुरिया के तौ करौ न तनिको बात;
जकसनवा पर सतुवा नाहि लखात।
जब इ रेलिया चले पुरुब की ओर,
जहां फरे मलदहवा अमवा बोर,
गारड बाबू के जिउ अति ललचाय,
मुसवा देखि बिलइया जनु गुह वाय॥

'वेढब' बनारसी

(च)

"टीपन के मूल्य रउआ एही से समझीं कि जे भविष्य सें देखे के अभी तक कौनो वैज्ञानिक या अध्यात्मिक साधन, नइखे उ भविष्य के देखे के यन्त्र ह।

'टीपन', जनवरी, १९६४

'अँजोर'

"उ ज़रूरत से ज्यादा बड़ अउर भारी बा। पत्थर के काट के नकाशी जे काम भइल बा उ सब बहुत उच्च श्रेणी के बा।"

"एह समय में चमकीला पालिश के जवन प्रचार भइल उ मौर्यकाल के बाद एकदम नइखे मिलत।"

मगध के मूर्ति कला

'अँजोर', जनवरी, १९६४

(छ)

"भारत के इ अइसन धरती,
रहि-रहि पिरिति झरेला,
बाकिर केहु आँखि देखावल
ओकर नास करेला।

चयनवाँ नाहीं लेवे राम

राहगीर (वाराणसी)

ऊपर के सभ उदाहरण के देखि के विद्वान लोग एगो निश्चय करें कि इ अउर ई तथा उ अउर ऊ दूनो रूप शुद्ध मानल जाई आ कि ई अवरू ऊ।

भोजपुरी के हिज्जे अउर वर्तनी का विषय में खूब विचार होखे के चाहीं।

डुमराँव, शाहाबाद

बिदेसिया : आध्यात्मिक पिरीत रूपक?

सुबोध कुमार सिंह

एने आके कुछ लोग भिखारी ठाकुर के 'विदेशिया' किताब के आध्यात्मिक कहत बा। जइसे अवधी में जायसी के लिखल 'पद्मावत' किताब बा जेकर अन्त अन्योक्ति में कइल बा। अन्योक्ति के अरथ होला दोहरा अरथ वाला। राजा रतनसेन आपन बिआहल पत्नी नागमती के छोड़ के तोता हीरामन से पद्मावती के रूप-गुण के चरचा सुन के ओह अलबेली के खोज में चल गइलन। विशेष अरथ में आत्मा परमात्मा के मिलन के रहस्यवाद कहल जाला। एकरे अनुसार पद्मावत के प्रेम कहानी मैं दोसर अरथ ई लेल जाला कि जीव (रतन सेन) संसारिक माया (नागमती) के छोड़ के पद्मावती (भगवान्) के प्राप्त करे चल गइलन। एह प्रसंग में हीरामन तोता गुरु के काम कइले बाड़न :—

"गुरु सुआ जेहीं पंथ दिखावा,
बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा।"

गुरु के काम ह अन्धकार मिटा के प्रकाश देवे के। ई काम तोता हीरामन 'पद्मावत' में कइले बाड़न। ओसहीं भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया किताब में ई बात महेश्व प्रसाद (ग्राम भरौली, शाहाबाद कहले बाड़े कि बिदेशिया के जना जीव के प्रतीक ह, बिदेसी ब्रह्म के विदेस वाली वेश्या माया के प्रती ह, बटोही गुरू के रूप में आइ बाड़न, जे जीव से भगवान के मिला के उतजोग करत बाड़न।

बाकी सवाल एहिजा ई उठत कि भगवान विद्या माया के छोड़ अविद्या माया के पकड़े खातिर क जइहन। दोसर बात ई कि ब्रह्म गुरू के द्वारा ज्ञान करावे के परम्परा में नइखे मिलत। विद्याप के दूती, पद्मावत के सुग्गा, कबं के गुरू आउर सूर के ऊधो सब त जीवे के समझावत पावल ग बाड़न। जीव जब ले अविद्या म या सांसारिकता में लिपटल रहे तब ले 'उनकर' खेयाल भुला जाल विद्या माया त अच्छे चीज कृष्ण के राधा, शिव के पार्व आह्लादिनी ह लोग। एकरा अ में त शिव शंख हो जालन आ ई

भी मुरझा जालन। एह नजर से महेश्वर प्रसाद जी द्वारा स्थापित अन्योक्ति उचित नइखे लागत।

बिदेसिया के पीछे प्रेरणा "कलि-काल के मइल" के बा। करीब सब आध्यात्मिक किताबन में भगवान के नाम, रूप, गुण, लीला, धाम के चरचा जरूर रहेला। बिदेशिया में कलकत्ता सरग (स्वर्ग) के प्रतीक नइखे होखत। कलकत्ता जाये के ललक जवन बिदेशी में बा, ओकरा पीछे सथ बहरा जाके दाम कमावे के बा। भिखारी भी कहले बाड़न:—

"ललसा रहे जे बहरा जाईं।
छूरा चला के दाम कमाईं॥"

ओसहीं बिदेशी के अपना जोईं से ई कहल कि

"क्या तोसे कहूँ सुनु प्यारी प्रिया!
मन चाहत मेरो बिदेश को जाऊँ।
मेरी यही लालसा जरा-
देश बिदेश की सैर लगाऊँ॥"

से बहरा जाये के ललक लउकत बा भगवान के साधना में लीन होखे के झलक ना। दोसर बात ई कि कलकत्ता जवन स्वर्ग के प्रतीक बा ओह में भी भौतिक पदार्थ के अभाव दिखाई देत बा। एकर पुष्टि बिदेश के वेश्या के लइकन द्वारा गावल गीत से, हो जात बा—

"अब ना जिअब महतारी।
दाल-भात घी पापड़ चटनी
दुलम भइले तरकारी॥"

ओसहीं भगवान के बरनन में परम्परा ई बा कि नख से सिर तक के वर्णन कइल जाला, बाकी बिदेसिया में सिर से नख तक के बरनन कइल गइल बा।

एह सब कारण से हमार ईहै भावना पुष्ट होखत बा कि बिदेसिया प आध्यात्मिक भावना के आरोप मत कइल जाय। ऊ आध्यात्मिक किताब नइखे। हँ, बीच-बीच में 'साँवली सुरतिया', 'आठो पहर छुटत बा करेज में लहरिया' आ 'लागी गइल बा परदेशी में सुरतिया' अइसन बेयान आइल बा, ऊ रामायण अउर सूरसागर के छींटा ह! लेखक अउर पाठक प ओकरे संस्कार ह कि हम गुनावट करत बानी कि आत्मा-परमात्मा खातिर गोहार करत बा कि

"बीतल बाटै आठ पहरिया हो,
डगरिया जोहत ना।"

बाकी बिदेसिया वियोगात्मक सामाजिक काव्य ह। भिखारी ठाकुर के उदेश सामयिक, सामाजिक, परिवारिक समस्या प विचार करे के बा। ऊ ई कि:

“धोती पड़धरिया धइके कान्ह प
चदरिया हो बबरिया झारिके ना।
होइब कवना तू सहरिया हो
डगरिया जोहत ना ।।”

अइसन नवही जब कलकत्ता जाला तब बंगला देश के केश अउर भेष प मोह जाला आ रखेलिन रख लेला। घर के बिआही के भुला देला। ओह बिआही के जवना के पति गवनवाँ करा के भवनवाँ में छोड़ के पुरुबवा चल गइल बा। पत्नी के मांग पूरा करे खातिर, आ अपना विलास के साधन जुटावे खातिर, रुपया कमाये खातिर बाध्य होके गरीब के परदेश जाये के पड़ जाला। देहाती समाज के सब लोग येह आफत के शिकार बा। विदेश जाये के प्रसंग में विदेशी के अपना औरत से ई कहल:—

“वहु शौक सिंगार करूँ अपना
पुनि प्यारि लिए कछु बस्तु ले आऊँ।
कोट कमीज घड़ी बहियाँ,
जरा केश सँवारि सुगन्ध लगाऊँ।।

असहीं बहरा से लौटे के समय विदेशी के औरत खातिर साड़ी चोली खरीदल एही माँग अउर मन के इच्छा के ओर संकेत करत बा—

“हटिया में लेला रामा टिकुली
सेनुरवा से,
चोलिया बेसाहे बूटेदार रे विदेसिया
काँखि जाति लेला रामा
पुरूब के सरिया से,
चली देला देशवा की ओर रे
विदेसिया।

औरत बेचारी घर में “कइ कटिहें रतिया’ के दर्द लेले “दिनवें कटेला सइयाँ बटिया जोहत तोर तारा गिनत रतिया”, के निवेद करत बीया। जब गोरिया के ‘बार बरिस के उमरिया’, ‘चढ़ल जवानी ‘सुतही के बेरिया पिया परदे गइले’ “एको नाहीं पतिया भेजवे बलमुआँ”, एही करनवाँ तिरिया घरनवाँ भवनवाँ में तड़पत बा ओही मउज के भंग करे खातिर नाटक के रचना कइल गइल बा एकर एगो नाम पहिले “बहरा बहार रहे। एहू से स्पष्ट होखत बा विदेशिया नाटक “हरिऔध” जी ‘प्रिय प्रवास’ लेखा वियोगात्म काव्य ह। पिया परदेश में बहा लूटत बाड़े अउर परदेशिया के ‘जो हो गइल बीआ बीना इंजिन के रेल ओही से पति पत्नी में बरावे खाति मेल रचल गइल गइल बा ई खेल ओकरा के आध्यात्मिकता में ढकेल देल जाय। एगो बारहमा में अइसने लगले बिआह कइल जवा

के असहाय अवस्था के चित्र देखीं :—

"वारि उमर परदेश बालम,
जियबो कवन आधार हे।"

गवईं औरतन के भी शंका रहेला :—

"बासी फुलवा में बास नहीं, परदेशी
बलमुआँ के आस नहीं, विश्वास नहीं।'

असहीं भिखारी ठाकुर के भी कमाल देखीं :—

"बिरह के कूपवा में योगिन के रुपवा में,
ताकत बाड़ी चारो ओर।"

पिया आके करस सोर "कि प्यारी केवरिया खोल द।"

बाकी दीदार होखे के कवनो असरा नइखे लउकत। बिरह के आँच में तप के संयोग के भोग करे के अरमान मिट गइल। त्याग के तप मुखर गोहार करत बा—"सुखिया बा तोहरे दरस के बलमुआँ।" ए से जियल कठिन बा—"कतहूँ ना लउकत अंजोर।" तबहूं 'प्रेम लपेटे अटपटे' बचन बोले से चूकत नइखी। कहत बाड़ी :—

"जिउवा कठोर बाटे गुलमा के नाती।"

जे चिठी तक नइखे देत ओकरो से बढ़ के केहु निठुर हो सकत बा :—

"खत खबर पिया एको ना भेजवले।
हो गइले निपटे कठोर॥"

विदेशी के कुछ बदचलन दोस्त लोग देवर भउजाई के नाता लगावत तरह-तरह के प्रलोभन देत नजर लगावत बा। येही कारण से "त्राहि उमापति, त्राहि रमापति, धरम बचाईं मोर।' कहि के पती परमेश्वर से निहोरा करत बाड़ी। पत्नी खातिर पति त परमेश्वर होइबे करेलन।

येइ से हमार कथ ई बा कि विदेसिया वियोगात्मक गीत नाटक ह, आध्यात्मिक पिरीत रूपक ना। वियोगिनी नायिका के अनुभूति के सच्चाइये ओह किताब के आध्यात्मिक ऊँचाई पर ले जात बा।

—जैन कॉलेज, आरा।

* * *

भोजपुरी कहानियाँ
संपादक
रामबली पाण्डेय
भोजपुरी संसद
जगतगंज, वाराणसी
वार्षिक ५ रु० एक प्रति ५० पइसा

माटी के बोली
भोजपुरी मासिकी
संपादक
श्री विश्वनाथ प्रसाद
भगवान बाजार, छपरा
वार्षिक ३ रु० एक प्रति २५ पइसा

पाँच गो हँसाई

गणेशदत्त "किरण"

(१)

नगदे गिनाब त "चारसीट" कटाइ देबि।
कहब तू जेके हम ओछी के फँसाइ देबि॥
अमल मैं मोकदमा त तोहरे बनावल ह।
तिगिड़-बिगिड़ करब त झूठी चलाइ देबि॥

(२)

कागद के नोट ब दरखास का पीछे बाटे।
दानी के चाउर मलमाँस का पीछे बाटे॥
मरजी बा हाकिम के अबकी रिहाई होई।
हँड़िया के दही त इजलास का पीछे बाटे॥

(३)

बघवा के हमरा तू एगो पाड़ी दे द।
बछिया का माइ के कीन के साड़ी दे द॥
जित ब जरूरे तू हमहीं पेसकार हईं।
हमरा के खाली तू लबनी भरि ताड़ी दे द॥

(४)

सरदी जब होई त खाँसी जरूर होई।
ताड़ी उतारी से पासी जरूर होई॥
सान्ति भंग होई भा ना होई, एसे का?
भईल चौआलिस त अठासी जरूर होई॥

(५)

बहुत दिन देखलीं मेहरारू का जीदी में।
रेजकी हेराले मा गदहा का लीदी में॥
कतना तईदन का अटारी पिटाइ गइल।
छोड़ीं वोकालत अब आँई तईदी में॥

—बक्सर, शाहा

छोड़, ई त काम ह !

श्रीराम सिंह ‘उदय’

गीत में का परल मनुआ ! छोड़, ई त काम ह।
कविता सुनावे खातिर जिउ खखुआइल बा,
आवे ना बनावे, एही से त भकुआइल बा,
चोरिये के कविता पर सभ भरमाइल बा।
ओहू पर हमार भँटकोवाँ उपनाम ह।
टूटलि जमींदारी, सेठ गीरी नाहीं गइली,
नया-नया सेठ लोग सिआवतारे थइली,
बढ़तारी तोंद, इचिको ना कम भइली,
तुहरे, कमाइल सभ उनकर ई दाम ह॥
होखि त दरोगा जो तूँ रोब त जमइ त,
‘घूस’ खाई कोठिला नियर तू मोटइ त,
गारी छोड़ि सीधे मुँह बाति ना सुनइ त,
‘केस’ के समझित कि चीनियाबेदाम ह।
डाकटर होजा तूँ ‘डिपलोमा’ एगो कीनि ल,
दवा खातिर घास-पात एने-ओने बीनि ल,
मांग मत्ति फीस, जबरदस्तिये तू छीनि ल,
रोगी देखि जानि ल कि लँगड़ा ई आम ह।
सभा में जे जइह त खाली मति जइह,
दुई-चार जूता होशियारी से चोरइह,
घात लागे जेबियो पर कइँची भिड़इह,
आपन ई त जलसा ह, आपन धूमधाम ह।
पाक के सियार हुआँ हुआँ खूब कइले,
भारत के शेर जब बढ़ले, परइले,
भुट्टो’ आ अयूब मुँहें करीखा पोतइले,
जो न चेती, पाक के अब ‘सत्त रामनाम’ ह।

—बाँसडीह, बलिया (उ० प्र०)

धरती के सिंगार करे

सत्यनारायण लाल

हर-कुदार ले चलल किसनवाँ धरती के सिंगार करे।
मन में भरल उछाह देह में जोर गजब के जागल।
टिटकारत ले चलत बैल के जइसे लोही लागल॥
बैलन के घंटी के टुन-टुन-धुनि में मन बा बान्हल।
आँगन में आकास उतारे चलल किसनवाँ पागल॥
सजल हराई के पाँतिन में बिहँसत, खिलल दुलार भरे।
हर-कुदार ले चलल किसनवाँ धरती के सिंगार करे॥
हर के फार छुअत धरती के सूखल मन हरिआइल।
टप-टप चुअत पसीना, लहकत छाती आजु जुड़ाइल॥
आँतरि पर आँतरि फानत बैलन के मन अगराइल।
दुपहर भइल किरिनियाँ मातल चढ़ि कपार पर आइल॥
रहि-रहि ताके डगर गाँव के मन में आस-हुलास भरे।
हर-कुदार ले चलल किसनवाँ धरती के सिंगार करे॥
सिर पर सजल पितरिया थारी, लोटा में भरि पानी।
गोदी में लरिका ले घर से निकसल भरल जवानी॥
जुटल पाँव में पंख, नेह के डोरी खींचि रहल बा।
श्रम का पूजा में पिरीति सब सुधि-बुधि भूलि रहलि बा॥
पहुँचल रनियाँ अपना राजा के तन-मन के प्यास हरे।
हर-कुदार ले चलल किसनवाँ धरती के सिंगार करे॥
खनकल चुरी, झनक काननि में पड़ल हिया हुलसाइल।
नन्हका के "बाबू हो" सुनि के श्रम के भार भुलाइल॥
झाँझर छँहरी में बबूर के बगिया सरस फुलाइल।
मन के दुनिया के अचके में परती भी गदराइल॥
बढ़ल किसनवाँ तब कहिए से खाली परल बखार भरे।
हर-कुदार ले चलल किसनवाँ धरती के सिंगार करे॥

—राज्य शिक्षा संस्थान, पटना।

चितचोर रामजी दुलहा

महेश्वर प्रसाद

'सब से पहले उस प्रेम को लीजिए जो आदि काव्य रामायण में दिखाया गया है। इसका विकास विवाह-संबंध हो जाने के पीछे और पूर्ण उत्कर्ष जीवन की विकट स्थितियों में दिखाई पड़ता है। दूसरे प्रकार का प्रेम विवाह के पूर्व होता है, विवाह जिसका फल स्वरूप होता है। तीसरे प्रकार के प्रेम का उदय प्रायः राजाओं के अन्तःपुर उद्यान आदि के भीतर भोग-विलास या रंग-रहस्य के रूप में दिखाया जाता है, जिसमें सपत्नियों के द्वेष, विदूषक आदि के हास-परिहास और राजाओं की स्त्रैणता आदि का दृश्य होता है। चौथे प्रकार का वह प्रेम है जो गुण-श्रवण, चित्र-दर्शन, स्वप्न-दर्शन आदि से बैठे बिठाये उत्पन्न होता है और नायक या नायिका को संयोग के लिए प्रयत्नवान करता है। इन चार प्रकार के प्रेमों का वर्णन नये और पुराने भारतीय साहित्य में है।'

—स्व० आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल

तुलसी दास के मत के मोताबिक रामजी दुलहा के बिआह में बहुत तरह के खूबी बा; तरह-तरह के प्रेम के मेल बा। रामजी के असली बिआह त फुलवारिये में हो जाता। दूसरका होता परथा के लेखा से धनुष टुटला पर। परशुराम के हरला पर तीसरा दफे राम-बिआह अउरी जगमगाये लागता आ चउथका होता विधि-विधान के साथ। ईहे कारन बा कि भिखारी अइसन कम पढ़ल-लिखल आदमी के सउँसे तुलसीकृत मानस में कतहीं कुछ ना बुझाइल। जो कुछ बुझाइल 'फुलवारी के जगह बुझाइल' जहवाँ प्रेम के लीला शुरू भइल—'छनछेप विलोकनवाँ, लता के ओट से।' रामजी के प्रेम के परदा हटावे वाला एने का ओर एगो भिखारिये लउकत बाड़े। ओने त बेठेकान लोग भइल बाड़े। चिन्हे के शक्ति चाहीं। ओतने लोग मीठ आ मधुर भाव के भइल बा जतना किशुनजी के प्रेमी लोग। साच त ई बा कि जतना लोग रामजी खातिर मधुर भाव में तरसत रहिं गइल हा ऊ सब लोग के किशुना अवतार में मन भरल हा। रामजी के

देखि के के ना बिका गइल हा ? राहे राहे पुकार होता—'सुमुखि कहहु के आहि तुम्हारे ?'

ओने के प्रेम कुबरिये तकले सीमित बा, बाकी एने के मधुर भाव सुपनेखियो के बेड़ीन कइ देले बा। राम-भक्ति में मधुर भाव त का खोजे के बा ? घर-बाहर, जंगल राह-बाट, जहाँ देखीं उहँवे बा। ऊ सेवरियो कवनो दोसरा भाव में नइखे बइठल। आ मिथिला त ब्रज के मूल ह, जरि ह। मिथिला ऊ जगहा जहाँ के लइका तकले रामजी के मोलायम देहि छुअत बाड़े स 'सब सिसु एहि मिस प्रेम बस, परसि मनोहर गात।' ई सब सुन्दर रूप के परताप ह। ईहे कारन बा कि भाई 'माधव' जी अपना विशिष्ठ रचनन में बराबर गोहरवले बाड़े—'सुन्दर का जादू सीधे हृदय पर चलता है।' 'रूप की चोट सब से करारी होती है।' 'रूप का घायल रूप का पुजारी हो जाता है।' भिखारी रूपे के घाही हवे। रामजी के सब रूपन में भिखारी रूप के खजाना बीनले-बीछले बाड़े। अपरूप ह रामजी दुलहा के रूप। रामजी दुलहा के बकायदे बरिआति सजत बा। भिखारी लिखत बाड़े—

राजा दशरथजी के हुलसत बा छतिया,
राम राम हरे हरे।
नेवतत जाति परजतिया
राम राम हरे हरे।
अवध नगरिया से चलल बरिअतिया
राम राम हरे हरे।
दिन रात जात तिरहुतिया
राम राम हरे हरे॥

अखंड राम के बरिआत दिनरात अखंड जाता। भोजपुरी इलाका में बरिआत एगो खास चीज ह। ई हौसिला आ हुलास के चीज ह। समधी दसरथजी के खुशी के ठेकाना नइखे। खुशी के हुलास में ऊ जाति-परजाति सबके नेवति देले बाड़े। ई सोचे लायक आ कल्पना करे लायक बात बा कि अजोध्या से जब ई बराति लमहर रूप में चलल होई त देखहीं लायक भइल होई। जवना राह से ई बरिआत जात होई तवना राह के अंजोर कइ देत होई। आखिर रामजी के बरिआत ठहरल। कायदा से बरिआत दुआरे लागल बा। ओकरा बाद होता परिछावन। परिछावन के बाद गुरहथी। तेकरा बाद बिआह। बिआह होता माँड़ो में। माँड़ो के भीर देखीं—

भइल बा मँड़उआ में भीर।
दरसन हेतु आपुस में तरसत
हित नेवतहरी फकीर॥

केहु कहत बरबस हम देखबि
आपुस में खींचत लकीर।
राम सिया दुलहा दुलहिन के
स्यामल गोर शरीर ॥

भिखारी रामजी दुलहा के देखे खातिर माँड़ो में भीर लगा देले बाड़े। ई भीर सहजे केहू के माँड़ों में लागि जाला। बाकी एहिजा जइसे बाजी लागि गइल बा कि हम पहिले देखबि भा हम जरूर देखबि। 'खींचत लकीर' के भाव कुछ ओइसने बा जइसन कि 'रेख तिन्ह खाँची' के बा, भा 'रेख खँचाइ कहउँ बल भाषी' के बा। सँगे-सँगे तीन 'क्रमालंकार' के भी देखते चलीं—'राम सिया, दुलहा दुलहिन के स्यामल गोर शरीर'। दुनिया एही दुरंग में भोरा गइल, 'रूप देखि के भुलल बाड़ गोर साँवर तनवाँ ' भिखारी के ई चेतावनी ह। बाकी एह अपरूप रूप के आगन भावुक भिखारी भी बेहोश बाड़े—'साँवर साँवर गोर गोर उमिरि बा बराबर हाय रे! जियरा।' रामसिया के एक जोड़ी भइल। अइसन-अइसन चार जोड़ी जवना माँड़ो में बा ओह माँड़ो के बखान कवना शब्द में कइल जाउ।

सुन्दरि सुन्दर बरन्ह सह
सब एक मंडप राजहीं।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था
बिभुन सहित बिराजहीं ॥

एके माँड़ों में चार-चार गो बर आ दुलहिन देखि के गुरुजी के आध्यात्मिक भाव उठत बा। उनुका मत के मोताबिक आदमी के देहिये माड़ो बा। एह माड़ो में जीव के उर में 'तुरीया' सुषुप्ति, स्वप्न आ जाग्रत अवस्था अपना बिभुन्ह के संगे, ब्रह्म, प्राज्ञ, तैजस आ बैस्वानर के रूप में बा। ईहे क्रमशः राम, भरत, लछमण आ शत्रुघ्न के पत्नी सहित जोड़ी भइल।" हँ, त भिखारी माँड़ों के भीर चीर के भीतर घुसत बाड़े। भीतरी घुसला प उन्हुका लउकत बा चउका आ ओह चउका पर—

चउका पर अवधबिहारी,
राम राम हरे हरे।
पहिले से धिरवति सरहज सारी,
कोहबर के रोकब दुआरी,
राम राम हरे हरे ॥

पढ़निहार लोग से निहोरा बा कि भिखारी के निगाह चउका पर बेसी बा। काहे कि ऊ जाति के हजाम हवे आ चउका पूरे के काम हजाम चाहे, ओह लोग के जनाना के ह। भिखारी अपना भाग के सरा ह तारे कि हजामे जाति के पुरला चउका पर अवधबिहारी रामजी दुलहा के रूप में बिराजत बाड़े। 'धीरवल' एक किसिम के 'कारन' समझीं। धीरवला के मत-

लत्र डेरवावल चाहे भय देखावल भइल। रामजी दुलहा के धिरावे के काम उनुका सारी आ सरहज के भइल जे केहू गाँव-नगर में लागत होई। माड़ो आ चउका एक तरह से आम जगह आ खास मरजादा के जगह भइल। बाकी एकान्त आ निराला जगह भइल कोहबर, जहाँ दुलहे आ दुलहिनि के रहे के परे ला। ओह कोहबर में जाये खातिर दुलहा के दुआरि पढ़ि के परेला आ सारी-सरहज लोग दुआरि रोकेला। बिना दुआरि पढ़ले, भा बिना हँसी मजाक कइले, भा बिना धका-धुक्की कइले भीतरी जाये ना दे। एही कोहबर में समाये के समय खातिर पहिलहीं से रामजी के सारी-सरहज लोग धिरा रहल बा। ई कोहबर के परथा भी हिन्दू समाज में ढेर दिन से चलि आवत बा। रामजी के विवाह में समूचा मिथिला मगन बा। बाल, जुआ बूढ़ा चाहे मरद हो चाहे जनाना, गारी के गाना तरह तरह से गावल जा तारे स। 'इहे कहि कहि कर गावतारी गानवा, तिरहुत के जननवा'—

चलि आवत बा दिलगी रिस्तदरिया में।
बाप गोर बेटा करिया,
कहिके भइल बाटे गरिया,
त्रेताजुग मिथिलेस के नगरिया में॥

अइसे गारी कवनों अच्छा चीज ना भइल। बाकी बिआह करना खुशी के चीज ह जवना में गारी भी खुश करे वाला बनि जाला—'सबके मन हरषित करै, ज्यौं विवाह में गारि।' एक बात अउरी। ऊ ई कि मरद से बेसी बड़ हाथ जनाना लोग के विआह में बा। जइसे गारी अइसन साहस के काम ओह लोगन के जिम्मा बा। ओसहीं साहस अनत चपलता मआ भी बा। साहस के बाद माय के नमूना देखल जाउ। विवाह के बाद राम जानकी के बिदाई आ जुड़ाई के बेरा आवत बा। मिथिला के ललना लोग विदाई के नावँ से कोह जाता। ऊ लोग रामजी दुलहा से भिखारी के कोमल भाषा आ मधु भाव में निहोरा करत बा—

लेके चलि जइब हो दुलहा
जनक किसोरी।
हम कइसे रहबि हो दुलहा
मिथिला अगोरी।
नाहिं प्रान रहिहन हो दुलहा
सीता बिनु मोरी।
बस ना चलत बा हो दुलहा
होता बरजोरी।
बिसरत नइखे हो दुलहा
राम सीता गोरी।
नइखे कहे आवत हो दुलहा
अकिल बा थोरी॥

ाकुन्तला जब जाये लगली तब वैरागी पसी कन्व के करेज भी फाटे लागल उरू गिरहत के त बाते का ? बेटी के बिदाई सुनि के-सोना के पिंजड़ा में सुगा तकले—'व्याकुल कहहिं कहाँ देही ?' अइसना हालत में जनाना के का गति हो सकेला कवनो मतारिये के हिरदय बता सकेला। करुना नारी हिरदय के खास चीज ह। मरद जब हुत ऊँचाई पर पहुँचेला तब ओकरा ारी हिरदय से भेंट होला। एही से गो विचार वाला लिखनिहार कहले ा—'The ultimate destiny of an is to become a woman.' रुना आ कविताई कवनो दू चीज ना । साच कवि करुना के तस्वीर नावेला। भवभूति के निगाह में के रस करुना बा। जे करुना के चित्रन ना कइल ऊ कवि होखे के दावा ा कर सके। शेली राय देले बाड़े—

Our sweetest songs are those
That tell of saddest thought.

खारी में दरद के गीत सुनावे ला नारी हिरदय बा। ऊ कोमल से मल मरम के जगहा पहचाने ले। ही से दरद के, वियोग के उसुकर गीत रेज के छूए लेस। नारी के सुर में र मिला के भिखारी आपने दशा के होरा हर जगह कइ रहल बाड़े।

अइसे त जइसन साधारन रूप में नारी लोग होला, अकिल के थोरे होला, मतलब गार्गी आ मयत्रेयी से नइखे। बाकी भिखारी अपने खातिर ई निवेदन भी कई देत बाड़े—'नइखे कछे आवत हो दुलहा अकिल बा थोरी।' हँ. राम जी दुलहा के बिदाई के बारे में भिखारी के लिखल एके बात बहुत समझे लायक रहि गइल बा। रामजी अपना रूप आ गुन भा सील सुभाव आ चरित्र के लेके सगरे खातिर याद करे लायक बड़े। बाकी रामजी दुलहा के तस्वीर मिथिला छोड़ के दोसरा के हिस्सा में नइखे परत। एह से मिथिला के लोग के कुछ दावा बेसी बा रामजी दुलहा पर। ऊ लोग भिखारी के शब्दन में उनुका के चितचोर' के पदवी देता। ई 'चितचोर' शब्द खास कइके किशुन जी खातिर कवि लोग बचा के रखले रहल हा। बाकी भिखारी आँखि उघारि के आ आँखि गड़ा के देखले हा त रामजी भी 'चितचोर' हो गइले हा मिथिला में जाके। 'मैथिल कोकिल वयनी' के सुर में सुर मिला के भिखारी रामजी दुलहा के सामने आपन अन्तिम फैसला राखत बाड़े —

(बाकी पन्ना ४१ के नीचे पढ़ीं)

कहानी :

आदर्श बदला

लव शर्मा "प्रशांत"

नाम ओकर जानकी रहे। नइकी जबाना के साज–सिंगार के समानन से बनल-संवरल छोकरी भी ओकरा आगा पानी भरत नजर आवे। ओकर देह सुन्नर आ भरल रहे। आंख ओकर शराबी रहे आ चाल एगो अजब मस्ती में भरल! जेने से निकल जात रहे. नवही लोग करेजा ध लेवे आ बुढ़ऊ लोग लुका छिपा के ओके देखे लागे लोग। बाकी ओ बेचारी के ई सब बातन के कवनो पता ना रहे। जबाना के तेजी का साथ ओकर खबसुरतियो बढ़ल चल जात रहे।

ओ गाँव के सेठ कन्हाई साह के खराब नजर ओकरा पर बहुत दिन से लागल रहे। ऊ बहुत खराब आदमी रहे जेकर जिनगी के दुइये गो मोट खाम्भा रहे—छोंकड़ी आ दारू। गँवई के बहुते छोकरियन के सत का साथ ऊ बहुत के जिनगी भी बरबाद क चुकल रहे। जानकी के भी ऊ लालच दे के अपना मत में ले आवे के चहले बाकी ऊ सत पर चलेवाली रहे। कन्हाई जानकी के जबर्दस्ती कुछ करे से भी रहे, कहें कि जानकी के छ भाई रहन स जे अपना एला मसहूर लठइत रहन स। ऊ हार मा मनलस आ मोका जोहे लागल।

एक दिन ओकरा मोका भी गएल। राति के दस बजे ओकरा दोकान में आँटा आइलि। ओती खानी ओकरा में दोसर कवनो गाहक ना अब तक रास्ता भी सून हो रहे। एसे नीमन टाइम कन्हाई के दोसर कवन मिल रहे? मोका से ऊ जानकी अपना हाथे दबलस आ जबर्दस्ती ले गइल। भीत कोठली में नीचा एगो तहखा जेकरा के ऊ एही समय ला ब रहे। जानकी के कन्हाई

खाना मैं ले जा के बन्द क लस। ओकरा बाद ऊ फेरु पना दोकान पर जाके बइठ गएल। धा घंटा का बाद जानकी के सभे ई हाथ में लाठी लेले कन्हाई के कान पर पहुँचलन स। कन्हाई हले त बाड़ा घबराएल, बाकी ऊ ना हिम्मत के बनउलस आ कनी से पुछलख--

"का बात ह? का चाहीं तोहनी जल्दी कह ना त अब दोकान द करे जात बानी।"

"हमनीका कुछुओ कीने के खे, बलुक ई पता लगावे आइल ीं स कि जानकी कहाँ बा? धा घंटा पहिले ऊ तोहरे दोकान आँटा कीने आइल रहलि ह।"

का पुछलस।

'हमरा का पता? आज त ओकर चेहरो ना देखनी ह। ऊ गाएब हो गएल बा?"

"हँ।"

"हे भगवान! आज के जबाना जवान लइकियन के राति में बाहर लल जुलुम हो गएल बा। हमनी के जबाना रहे, आ एगो ।। हे भगवान! साफ कलजुग गएल।" ई बात कहके कन्हाई लमहर साँस खींचलख।

सभे दोकान से निकल के बाहर चल गएल।

कन्हाई मुस्कियाए लागल।

बहुते रात भइला पर कन्हाई हाथ में दारू के बोतल ले के तहखाना में घूमल। जानकी चिहुँक के एक ओर हट गइल। कन्हाई टेबुल के नगीच पहुँच के खोललस आ एगो गिलास में भर के पिये लागल। ओकरा बाद ऊ जानकी के तरफ बढ़े लागल। बासना के मोट-मोट तह ओकरा नजर में साफ-साफ लउकत रहे। ओकरा के अपना ओर एह तरे बढ़त देख के जानकी जोर से चिचियाएल --

"हमरा से दूरे रह पापी! तू पापी हबस !!"

जानकी देखलस, कन्हाई मिनट-मिनट पर ओकरा एकदम नगीच होत जात रहे। तनिये देर का बाद कन्हाई के गरम-गरम साँस ओकरा गाल पर परे लागल। ऊ आगे के बारे में सोचते रहे कि का करीं, कि तले कन्हाई ओकरा के भर पाँजा ध लेहलस। जानकी फेरु चिचिआएल--

"हमरा के छोड़ पापी।"

बाकी ऊ कुछुओ ना कर सकलि। ऊ मजबूर रहे, बेबस रहे। कन्हाई

ओकरा सत आ इज्जत से खेलत रहे। ऊ भोकार पार के रोए लागल, बाकी ओकर उहँवा सुनहीं वाला कवन रहे? तनि देर का बाद जब ओकरा होश आएल त कन्हाई ओकरा के छोड़ के चल गएल।

ओ दिन के बाद जानकी के खराब दिन शुरू हो गएल। ऊ कन्हाई के बासना के आगि बुतावे के एगो सामान बन गएल। दिन भर ओ अन्हार तहखाना में रहे के आ राति के कन्हाई के बासना के सिकार बने के, बाकी ईहो दुःख एक दिन खतम हो गएल। एक राति कन्हाई नशा में तहखाना के दरवाजा खुलते छोड़ गएल। जानकी ऊहे रास्ता से बाहर निकलल आ शहर के ओर चल देहलस। शहर में एगो बदमाश ओकरा पाछा परल आ चहेटलस। ऊ भागत-भागते एगो बहुत बड़ का मकान के लगे पहुँचल। ऊ मकान "समाज सुधार समिति" के रहे। ओकरे एगो कोना पर एगो प्लेट लागल रहे—सुधाकर, एम० ए०, मंत्री—समाज सुधार समिति।" ऊ दरवाजा पर हाथे मरलस। तनिये देर के बाद एगो अठाइस बरिस के नवजवान आ के दरवाजा खोल देहलस आ पुछलस—

"का बात ह?"

"हम एगो दुःखी बानी। हम

आश्रय चाहीं।"

"ठीक बा, इहँवा अपने

आश्रय मिल जाई", बाकी एक

एक सुधाकर के नजर जानकी

हमल पर परल ऊ उदास हो गए

बाकी ऊ एह उदासी के अपना चेह

पर आवे तक ना देहलस। मुस्कियात कहलस—'आयीं।"

जानकी भीतर चल गएल

सुधाकर जी ओकरा के एगो कोठ

बता देहलन आ ऊ ओही में जा

सुत गएल।

बहुत पैरवी क के सुधाकर

जानकी के "समाज-सुधार-समिति

में काम धरा देहलन। सुधाकर

के बगले में एगो कोठली ओक

रहेला मिल गएल।

एह तरह ओकरा उहँवा

करत तीन-चार महीना बीत गए

एक दिन सुधाकर जी ओकरा

एगो चाकलेट खाएला देहल

ओकरा खइला का बाद ओक

घुमरी आवे लागल आ ऊ

लेके अपना कोठली में जा के

गएल। ओकरा तीन दिन के

जानकी के हमल गिर गएल।

धीरे-धीरे तीन महीना

गइल। सुधाकर जी के साथ कर मेल-मिलाप बढ़तहीं चल ल। एक राति के बात ह – कर जी ओकरा के अपना ठरी में बोलउले। कोठरी के तर घुमते सुधाकर जी दरवाजा द क देहले।

“एगो बहुते पराइभेट बात रा से करे के बा।” ई बात ते-कहते में सुधाकर के आँख बी हो गएल। तबहुँओ ऊ ओ ना सोच सकल, कुछुओ समझ सकल। सुधाकर आलमारी रीब पहुँच के बोतल आ दूगो लास निकाल के टेबुल पर ध लस आ आ ओकरा बाद बोतल ल पानी दू गो गिलास में ढार लन आ एगो गिलास जानकी के रे बढ़उलस। जानकी चिहुँक छलस—

“ई का ह?

“ई आम के सरबत ह। ओह! ज बड़ा गरमी बा।”

“अपने पियत जाव, हमरा के मन नइखे।”

“ई त ठीक बात नइखे कि हम यत हीं आ तूं बइठल रह। ई जु-काल के जमाना लाएक बात इखे। खाली एके गिलास ले ल, हमरा ला”, कहके सुधाकर जी जबर्दस्ती शराब के गिलास जानकी के मुँह में लगा देलन। मजबूरी का साथ ऊ गटागट पूरा गिलास खाली क देहलस। करीब आधा घंटा बाद ऊ पूरा निशा में आ गइल आ अंट-संट बके लागल। ओकरा बाद सुधाकर जी ओकरा कमर में हाथ लगा देहलन आ पलंग के ओरी ले गइलन।

जानकी पूरा निशा में रहे आ अपना पर होत अत्याचार के ओकरा कवनो पता ना रहे। ऊ गड़हा में गिरत गएल, आ जब होश आएल त भोकार पार के रोए लागल। ए जिनगी में ऊ दोसर का मरद का हाथे लुटा चुकल रहे। ऊ देखलस कि आज के बेरादरी में कवनो सुन्नर लड़का के अछूते रहल कवनो तरेह सम्भव नइखे काँहे कि बेरादरी के फूहर पिलुआ बहुत तरेह के भेष में चारू ओर के सामाजिक संस्था सभ में फइल गइल बाड़न स। आज के बेरादरी भी ई लोग के खुल के साथ देवेला, एकरा के पोसेला। ई सब बात के लेके ओकरा हिरदेया में बदला के आगि धधके लागल। ऊ मरद जाति से बदला लेवे के उदेस से रूप बजार के तरफ

चल परल आ उहँवा दुइये बरिस के भीतर जानकी बाई के नाम से मशहूर हो गएल।

जानकी बाई के नाम के चारो ओर धूम मच चुकल रहे। ओकर एक बेर चेहरा देखेला लोग जान देवे ला तैयार रहे। एह बीच ऊ बड़का-बड़का सेठन के राहता के भिखारी बना देहले रहे, बड़का-बड़का नेता लोग के पोल खोल के कवनो करम के ना रहे देले रहे, बड़का-बड़का घर के कौलेजियट लइका लोग ओकर मोहब्बत में फेल भइला का बाद आत्महत्या क लेहलक स आ बहुत सा साधु क़िसिम के लोग भी ओकरा फेर में माथा खराब क लेहले रहे लोग। ई सब जेतने होखे, जानकी बाई के ओतने मजा आवे। जब कवनो आत्महत्या क लेवे आ कवनो सब कुछ लुटा के ओकरा दुआर पर आवे आ ऊ दरबान से धक्का दिउवा के ओकरा के निकलवा देवे त ओकरा बड़ा आनन्द आवे।

एक दिन एगो अइसन आदमी आइल जेकर नाम ओ शहर के नामी आ छँटइल बदमाशन में गिनात रहे। ओकरा से जानकी बाई के बड़ी देर तक बात-चीत भइल। ओकरा बात से जानकी के पता चलल कि ऊ बहुत बड़ा खानदान के बा, बाकी खराब समय आ कुसंगत से ऊ आज ई हालत में पहुँच गइल। आज ऊ जानकी के लगे ओकर हाथ पकड़े आइल रहे। आपन पूरा कहानी सुनवला के बाद ऊ कहलख—

'तब जानकी, का कहतारू? हम तोहरा से शादी करे के चाहतानी!"

'ई त हमार बड़ भाग बा जे अपने हमरा अइसन बेसवा से शादी करे के चाहतानी। बाकी हमर एगो शर्त्त बा।"

"शर्त्त! कइसन शर्त्त?"

"हमरा के हमर गाँव के कन्हाई साह नाम के एगो बनिया ई हालत में पहुँचा देहलख। हमहूँ चाहतानी कि ओकर बेटी के वेशवा बना के छोड़ दीं। हमरा साथ कन्हाई जइसन कइलख ओइसने हमहूँ ओकरा बेटी के साथ करब। ए तरह हम अपना पर कइल बदला लेहब।"

'ई हमरा ठीक नइखे लागत जानकी। ऊ बेचारी तोहर का बिगड़ले बा? ओकरा के छोड़ द।" ऊ नवजवान कहलख।

"ना, ई त हमर प्रण बा। एके पूरा करहीं के परी। का कहतार?"

"ठीक बा।"

ऊ नवजवान जानकी के जिद का आगा आपन मुड़ी गार देलख। दोसरा दिन दुनूँ के शादी हो गएल। कुछ दिन आराम से कटल। तब एक दिन जानकी मोहन से कहली—

"हमार शर्त भुला गइल ?"

"ना, ऊ त यादे बा हमरा।"

"त अब समय आ गइल बा। ओकरा के पूरा कर।"

"हम त कहब कि ओकरा के तूँ छोड़ द। ऊ बेकसूर बा। गलती कइले बा ओकर बाप, कह त ओकर म्मत क आयीं ?" मोहन कहलें।

"ना हम ओकर बेटिये से बदला लेब।"

"जइसन तोहार इच्छा।" कह के मोहन जानकी के गाँवें चल देहले। रात भइला पर ऊ कन्हाई के बेटी दुलरिया के मुंह दाब के ले आइल आ जानकी का आगा पटक देहलख।

दोसरा दिन भोरे दुलरिया के खूब नहवा-धोआ के आ ओकरा बाद क्रीम पाउडर लगावल गएल। नायलोन के साड़ी आ ओकरे लाएक ब्लाउज पहिरा देहल गएल। पूरा सजावट क के ओकरा के रूप-बाजार के एगो कोठा के खिड़की पर बइठा देहल गएल। अभी ले दुलरिया के ए बात के कवनो पता ना रहे कि ओकरा के काहे ला एतना सजावल जाता। बाकी जब दिन बितला का बाद ओकर अवरो सजावट कइल गइल आ फेर खिड़की पर बइठा देहल गइल त सब बात ओकरा समुझ में आ गइल। चारू ओर के कोठन के खिड़कियन पर बहुते मेहरारू स सजल-सँवरल बइठल रहन स आ आवत-जात लोग पर इसारा मारत रहन स। दुलरिया के आतमा रोए लागल। ऊ समुझलस कि जनकिया दीदी हमरा से आपन बदला ले रहल बिया। ओकरा अपना बाप से जानकी के इज्जत के बरबादी छिपल ना रहे। ओकरा समझ में कुछुओ ना आइल कि आगे का करीं। का एही तरेह अपना इज्जत के बरबाद हो जाए दीं ? ना, ई ना हो सके। हम जानकी दीदी के समुझाएब, गोड़पर गिरब, खुशामद करब, बाकी ई काम ना करेब। हँ ..हँ ..ना करेब, चाहे हमार जाने चल जाई।"

"दुलरिया !"

तब तक जानकी मोहन का साथ कोठली में घूसत कहली।

"का ह दीदी ?

"बगल के कोठली में एगो गाँहक

आइल बाड़े, जाके तनि देर ला उनकर मन बहला द।"

'दीदी!" दुलरिया चिचिआइल।

"का ह रे? चिचिआत काहे बाड़े?"

"ई का कहतारू? तूँ बरबाद हो गइलू त का हमरो के बरबाद क देबू? का एही में तोहार शान बा? का ईहे बेवहार एगो औरत का दोसर औरत से करे के चाहीं?"

"ई सब बात हमरा लगे ना चली। औरत के शान के बात आ अवरो कवनो बहाना ना चली। ई हम आपन बदला कन्हाई साह से ले रहल बानी, जवन हमरा के ई हालत में पहुँचवलस। हमहूँ तोहरा के ए रूप बजार के एगो मशहूर कली बना के छोड़ देहब।" जानकी कहली।

दुलरिया जानकी के गोड़ पर गिर पड़ल आ रोवत कहलस—

"दीदी! तूं हमार दीदी हऊ!! हमरा के नरक में मत ढकेल। हमर इज्जत के मत बरबाद कर। हम जिनगी भर तोहर गुलामी करब। तोहार जे दशा भइल, ओ में हमार कवनो दोस नइखे। हमार बाप गलती कइलें आ तूँ ओकर बदला हमरा से सधावत बाड़ू!"

"चुप हरामजादी! हमहूँ तोहरा बाप से ए से भी जियादे रोवले रहीं, खुशामद कइले रहीं बाकी तोहरा बाप पर ओकर कवनो असर ना परल। आज हम तोहार इज्जत अपना आँखि के सामने बरबाद कराएब आ तब हमार करेजा के आगि ठंढा होई।"

"भैया!" चारो ओर से निराश होके दुलरिया मोहन ओरि रोवत कहली—"हम का तोहर बिगड़ले रहीं जे तूँ हमरा के ए आगि में ढकेल देहल! ले त अइल ह तूँहीं हमें। अब तूँहीं हमरा के जबाब द!"

मोहन हड़बड़ा गइलन। उनका ए बात के कवनो उमीद ना रहे कि उनको से दुलरिया सवाल पूछ सकतिया। हड़बड़ी में उनुका कुछुओ ना बुझाइल कि हम का जबाब दीं आ ऊ जानकी से कहलें—'जानकी! दुलरिया के अब माफ क द। ईहे तोहार सब से बड़का बदला होई।"

"ना मोहन! हम ना छोड़ेब!!"

"जानकी! तूँ पागल हो गइल बाड़ू। दुलरिया के तोहरा साथ जे अत्याचार भइल ओ में का दोष? जबाब द! आ जब तूँ बुराई के

(बाकी पन्ना ४१ के नीचे पढ़ीं)

(पन्ना ३२ के बाकी पढ़ीं)

साँवली सुरतिया,
दिलमें मोहनी मुरतिया रामजी दुलहा।
गड़ि गइले कोसिला किसोर
रामजी दुलहा ॥

पिरितिया लगाइ,
काइ कइके चलि जइब रामजी दुलहा।
मिथिला से कहइब चितचोर
रामजी दुलहा ॥

भरौली, शाहाबाद

(पन्ना ४० के बाकी पढ़ीं)

बदला भलाई से देबू त केतना बड़का तोहर नाम होई। आज से दुलरिया हमनी के बहिन भइल", मोहन कहलें।

"हमरा के माफ कर द दुलारो। हमरा से गलती भइल। हमरा साथ अत्याचार त तोहार बाप न कइले, ओ में तोहार कवन गलती? आज से तूँ हमनीं, दूनू के बहिन भइलू। कुछ दिन बाद हमनीं तोहार शादी निमन घर खोज के कर देहब।'

"दीदी! दीदी!!" कहके रोवत दुलरिया जानकी के भर पाँजा में ध लेहली।

(पन्ना ४३ के बाकी पढ़ीं)

विचार सुनके काफी खुश भइले आ शादी तय कइ लिहल लोग। शादी के तय तापर होखले के दिन से दूनो रोगी के रोग रोज-रोज अइसे नीमन होखे लागल जइसे दूज के चांद दिन दिन बढ़ेला।

एक दिन ऊहो दिन आइल जेह दिन ये दूनो जीव के समाज के बंधन से बांध-दिहल गइल। शादी के बाद से ऊ लोग समाज में प्रेम के स्थान बहुते ऊँचा देखा दिहल लोग कि अपना दिल से चुनल साथी लिहला से जिनगी कतना मउज से कटेला।

—डाकघर, झरिया।

—:o:—

कहानी

"प्रेम पुकारत बा"

बद्रीनारायण पाठक

साँझ के जब सूर्य भगवान लाल होइ के पच्छिम के ओर आसमान के गोदी में छिपल जात रहन, चिरई गीत गावत रहीस, दिन भर के थाकल हवा खीस बिटोर के चहकत मन कइके कछुआ के चाल से बहत रहे जवना से सब के मन कनकना जात रहे अउरू प्रेम के एगो लहर सब के छाती में लहर जात रहे।

गधवेर के अइसन सोना लेखा बेरा में एगो नवही ठेहुन पर ले चुरियादार कुरता पहिरले आउरू कपार पर लाल लमहर गमछी के फेटा बन्हले आ कान्ह पर सुन्दर सोझ बड़हन लाठी ले ले खेत के डंड़ार धइले आगे बढ़ल जात रहे अवरू मने-मने दोसरा के छेदे लायक गीत भी गावत रहे। जवान के देह गठल रहे, गर्दन सुग्रीव लेखा रहे, आंख लाल-लाल बड़े-बड़े रहे। एह जवान के सुन्दरताई देख के सब लोग ओकरा के एक टक देख लेत रहे। ई जवान पक्का दियरहा रहे। नाम रहे खदेरन। ई एगो सूचित अउरू वड़ा गिरहत के लइका रहन।

खदेरन के एगो लड़की से बहुत प्रेम रहे। ओह दूनो जाना के दिल मिलि के एक हो गइल रहे। दूनो के एक दोसरा खातिर अगाध प्रेम रहे। ओह लड़िकी के जवानी छलकत शराब के बर्त्तन अइसन रहे, उनकर आंख दिया लेखा बरत रहे, गोल-गोल मुँह रहें, गाल गुलाबी रहे, लट नागिन अइसन पीठी पर लटकत रहे। ओकर रूप देख के पहुंचल साधु-संत लोग के के भी धीरज छूट जात रहे। इनकर नाम रहे गुलाबो। ई एगो गरीब परिवार के सुन्दर सुशील लड़की रही।

गुलाबो अपना खेत से सांझ के वेरा घरे आवत रही ओही घरी उनकर अवरू खदेरन के मुलाकात हो गइल। दूनो जाना के आंख आपस में लड़के चार हो गइल। प्रेम के बात दिल में चुभ गइल। दूनो आदमी डंडार से कुछ किनारे

हद के गहूँ लहलात पौधन के बीच में बइठ गइल लोग आ आपन प्रेम के चर्चा करे लागल लोग। एक दोसरा के प्रेम पाइके धनि हो गइल लोग। एह दूनो आदमी के अइसन संबंध रहे जइसन संबंध देह और जीव में रहेला। एगो के बिना दोसरा के जीवन अन्हरिया लेखा लागत रहे।

एही बातचीत के बीचे में खदेरन के चाचा आवत रहत आ दूनी के आपस में अइसे बतिआवत देखि के बहुत खिसीआ गइले। गुलाबो के खूब हलुक-पातर सुनवले आ धमकवले कि आज से फेर बात चीत करत देखि लेबि त तोरा के गांव से निकलवा देबि। खदेरन और गुलाबो चाचा के डर से अलग-अलग होके आपन रहता देखल लोग।

अन्त में ई प्रेम बड़का रूप धइके समाज के सोझा आ गइल। जब खदेरन के शादी उनका उनका बाबू जी के विचार से ठीक भइल तब खदेरन शादी करे से इनकार कर देलन। आ बोलले कि हम जब शादी करबि त गुलबिए से करबि। खदेरन के अइसन बिचार सुन के सब लोग इनकरा पर हँसे लागल।

एने जब गुलाबो के बाप उनकर शादी एगो ४० चालीस बरीस के आदमी से करे खातिर तैयार भइले। काँहे कि उनकरा पाले अतना पइसा ना रहे कि गुलाबो के जोग दुलहा खोजसु।

जब से गुलाबो के पता लागल कि उनकर शादी खदेरन से ना हो सकेला, बलुक एक दोसर आदमी से होखे जाता, ओही घरी से गुलाबो के दिल कसमसाये लागल आ देह दिन-दिन गले लागल। अन्त में उनकर अइसन हाल हो गइल कि उनका मुंह से बोली तक ना निकले। गुलाबो के हाल देखि के खदेरनो के स्वास्थ्य दिन-दिन गिरे लागल। गुलाबो गरीब घर के रही। एह से उनका के ठीक से दावा बीरो के इन्तजाम भइल। बाकी ई रोग दावा बीरो ना सुने वाला रहे। आखिर में खदेरन के बाबू जी ई जानि गइले कि इनकर रोग ओही घरी छूटी, जब इनकर बिआह गुलबिया से होई। ईहे विचार लेके खदेरन के बाबू जी गुलाबो के बाबू जी से भेंट कइले आ आपन बिचार रखले। गुलाबो के बाबू जी खदेरन के बाबू जी के अइसन

बाकी पन्ना ४१ में देखीं

लोक कथा

चार कम चालीस

बिश्वनाथ दूबे

एक गाँव में दुखी और रुखी नाम के दू गो गरीब गिरहत लोग रहे। दूनो आदमीं के एक-एक गो लरिका रहे। दुखी अपना लरिका के नाम चार कम चालीस धइले रुखी अपना लरीका के नाम बीस चार चउबीस धइले। चउबीस और चार कम चालिस में लरिकाइंये से इयारी लाग गइल।

दूनों जाना बकरी चरावे नदी के तीर पर जासु। उहां खूब गप सप होखे। ई दूनों इयार साचो के इयार रहे लोग। चौबीस जब सेयान भइले, कलकत्ता नोकरी करे चलि गइले आ नोकरी करे लगलें, बाकी चार कम चालिस घरहीं रहत रहनि। कुछ दिन का बाद चार कम चालीस के बाप मतारी मरि गइल। तब ई भी नोकरी करे के चाहे लगले। इनका मन परल कि हमार संघतिया, बीस चार चौबीस कलकत्ता बाड़े, गइला पर काम लागी।

चार कम चालिस कलकत्ता गइले। पता मालूम रहे। पूछत-पूछत बीस चार चौबीस के डेरा पर पहुँच गइले। देखते मातर बीस चार चौबीस खुश हो गइले, आ अंकवारी में धं लेले। उनका खुशी का मारे लोर चले लागल। बीस चार चौबीस खूब खरच में परले, बाकी एकर अफसोस उनका ना रहे।

दू-चार महीना के बाद चार कम चालीस कहले कि ए भाई, हमरो के नोकरी लगा द, काहें कि हमरो कमाये के साध लागत बा। दूनों जाना नोकरी के तलास में चलल लोग। राहता में एगो सूरदास भेंटइले। चार कम चालीस मन में कहले कि अगर नोकरी लागि जाई त आमदनी के दसवाँ हींसा सूरदास के दे देबि।

नोकरी लागि गइल एगो कपड़ा के दूकान पर। उनकर बोली अइसन बढ़िया रहे कि दूकानदार के दुगुना नफा होखे लागल, गहँकी भी जुटे लगले स। दूकानदार बहुत खुश रहत रहन। कुछ दिन काम कइला के बाद खा पी के उनका पाँच सौ रुपया बचल। ऊ अपना संघतिया से कहले कि हमरा घरे जाए

के मन करता। संघतिया भी राजी हो गइले कहले कि जा सके ल।

दूनो जाना संगही दुकानदार से जा के कहल लोग। दूकानदार खुश होके एक सौ रुपया वकशीश दिहले। समय पर चार कम चालीस हवड़ा इसटेशन पर पहुँचले, ओहिजा ऊहे सूरदास भेंटइले। चार कम चालीस उनका के पचास रुपया निकाल के दे ले। ऊ पूछले कि ई रुपया कइसन ह त चार कम चालीस कहले कि हम नोकरी से जतना कमाइल बानी ओकर दसवाँ हिसा भखले रहीं पहिलहीं, एह से तहरा के दे दे तानी।

सूरदास कहले कि बबुआ ५०० कमइल हा ? ऊ कहले कि हं। त तनी देखाव ए बबुआ हमरा के। हम ओतना के थइली अबहीं देखलहीं देखीं। ऊ थैली दे देले ! कुछ समय के बाद कहले कि थैलिया द गाड़ी के समय होखल जाता। सूरदास सरीया के हँटले, कहले कि ई हमार जीनगी भर के कमाई झटकारल चाहतार। एगो सिपाही आके चार कम चालीस के धाका दे के खेद देले। उनका जाने में ऊ रुपया सूरेदास के बुझाइल।

सूरदास बहुत खुश हो गइले। चार कम चालीस भी चतुर हो गइल रहन। फरके से सूर दास के देखत रहन।

जब सूरदास टिकट कटावे लगले त चार कम चालीस जाके देखले कि ई अंधेरपूर के टिकट कटाव तारे। ऊहो थोरे देर में अंधेरपूर के टिकट ले के सूर के साथे हो गइले। जब सूर दास चढ़ले त ऊहो ओही खोंढ़ा में चढ़ले।

सूरदास अंधेरपुर उतरले। पीछे से चार कम चालीसो उतरले। सूर दास चल जात रहले। ओनहूं से एगो सूर चल आवत रहन। बीच में दूनों जाना के भेंट हो गइल। ऊ कहले कि के ह ए बाबू ! त दोसर जाना कहले कि हम त सूर हईं। उनका पूछला पर ई भी अपना के सूर बतवले। पहिला सूर कहले कि तू कहाँ जइब त दूसरा सूर कहले कि कलकत्ता जाइबि। दूसरा सूर के पुछला पर पहिला सूर कहले कि हम त अंधेरपुर जाइबि।

दूनो जाना आपन-आपन कमाइल बतावे लगले। एक जाना कहले कि हम ५०० रु० कमाइल बानी त दोसर जाना कहले कि हम त १०००) के एगो टोपी कमाइल बानी। कलकत्ता वाला सूर कहले कि देखीं त

तहार टोपी, त ऊ सूर कहले कि देखीं त तहार रुपया के थइली। दूनो जाना आपन २ चीज देखावे के हाथ बढ़ावल लोग तब तकले चार कम चालीस दूनो जाना के चीज ले लेले।

चीज के लेके कुछ फरक हो गइले। पहिला सूर बोलले कि द हमार थइली द। दोसर सूर कहले कि द हमार टोपी त ऊ कहले कि हमरा के टोपी कहाँ देले हा त ई कहले कि हमरा के रुपया के थईली कहां देले हा। बाते बात में खिसिया के पहिला सूर अन्दाजे पर दोसरा सूर के कपार पर एक लाठी दमका दिहले। दोसर सूर भी लाठी के जबाब लाठी से दे के फरके पयँतरा करे लगले। बड़ा हल्ला मच गइल।

राजा के सिपाही पहुँच गइले लोग आ दूनों जाना के ध लिहल लोग। चार कम चालीस कहले कि एह दूनों जाना के रावा सभ पकड़ के राजा कीहाँ ले चलीं जा। हम भी चल तानी हम शुरूए से ई लो के तमाशा जान तानीं।

राजा के पास ई लोग पहुंचाव गइल। चार कम चालीस के गवाह से सब बात मालूम हो गइल। राजा दूनो सूर लोग के जीनगी भ खातिर जेल में डालि देले काहे पहिला सूर ५००) के बेईमानी कइ रहले और दुसरका सूर जे टो चोरा के ले ले जात रहले ऊ राजा खास टोपी रहे।

चार कम चालिस के ईमानदा सचाई और चतुराई देखि के रा अपना लड़की से सादी कर देले औ उनके के गद्दी पर बइठा देले, का कि उनका लरिका फरिका ना रहे।

चार कम चालीस अपना सं तिया बीस चार चउबीस के कलक्ट से बोला लिहले और उनके के मंत्र बना लेले। अब ओहिजा के रा के काम बहुत ठीक से चले लागल।

माध्यमिक विद्यालय,
महुआँव (शाहाबाद)

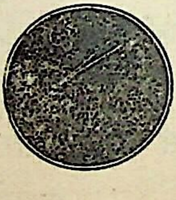

चिट्ठी मिलल

प्रधान मंत्री का सचिवालय
नयी दिल्ली,
२-१२-१९६५

प्रिय महोदय,

मुझे आदेश हुआ है कि मैं आप के पत्र दिनांक २७-११-६५ की प्राप्ति की सूचना आपको दूँ। जिस भावना से प्रेरित होकर आपने राष्ट्र रक्षा कोष के लिए अंश दान दिया है, प्रधान मंत्री जी ने उसकी बहुत सराहना की हैं और वह इसके लिए आपको धन्यवाद देते हैं।

कुंजलाल गुप्त, अवर सचिव

नागरिक केन्द्रीय परिषद्
संरक्षक : डा० एस० राधाकृष्णन
अध्यक्ष : श्रीमती इंदिरा गाँधी
नयी दिल्ली
२-१२-६५

संपादक
भोजपुरी साहित्य
प्रोफेसर कॉलनी,
के० जी० रोड, आरा।

प्रिय महोदय,

श्रीमती इंदिरा गाँधी का मुझे आदेश है कि मैं आपके द्वारा प्रदत्त सामग्री की प्राप्ति सधन्यवाद स्वीकारूँ।

श्रीमती गाँधी इस उदार सहयोग की अत्यधिक सराहना करती हैं।

आप का विश्वास भाजन
बी० एन० बनर्जी,
सहायक सचिव,

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र,
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
मगध विश्वविद्यालय,
गया।

'भोजपुरी साहित्य' का 'प्रवेशांक' मिला। आप सब का प्रयास प्रशंसनीय है। 'भोजपुरी' के विविध रूपों पर भी ध्यान रखना और उनका समावेश करना संगत होगा। आगे चलकर कोई परिनिष्ठित रूपही ग्राह्य हो सकता है।

—:o:—

आपन कथ

अँगरेजी साल तमाम हो गइल। अब नया बरिस आइल। एह मोका पर सालाना जमा खर्च के हिसाब, साहित्य के नजर से, करेला लोग। एही घरी अगवढ़ के अनधा उमेद उगेले।

गत साल में भोजपुरी साहित्य में नया बोध जागल, ओकर ज्योति आसाम से बम्बई तक छा गइलि। देस के कोना-कोना में एह नया-बोध के चरचा चलल। लोग एकरा अंजोर में अपना के पहचानल। एह नजर से बितला साल में एगो मजगर काम भइल। उमेद बा कि नया साल में एह अंजोर में अवरू जोति मिलि के एकरा के अवरू सजहन बनइहें स।

भोजपुरी साहित्य के पाठक लोग के नेह-छोह खातिर हम आभारी बानीं। उमेद बा कि अगिला साले एकरा अवरू अनघा सहयोग मिली। नया साल एकरा मंगल के होई अइसन उमेद बा। एह मोका पर हम भोजपुरी साहित्य के पाठक लोग के बधाई दे तानीं आ नया साल में मंगल खातिर कामना कर तानीं।

●

भोजपुरी साहित्य

के

मार्च अंक कहानी विशेषांक होई।

आपन रचना जल्दी भेजीं।

संरक्षक

१. श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, मैनेजर, बनवार कोलियरी जि० हजारीबाग।

२. श्री शिवकुमार त्रिपाठी, महाशक्ति आयुर्वेद भवन, तरी मुहल्ला, आरा

३. श्री शिवशंकर मिश्र, एडवोकेट, एम० पी० बाग, आरा (शाहाबाद)

४. श्री जीतन प्रसाद तिवारी, ग्राम तरी-मझगाई, पो० वेलहर, वाया सुलतानगंज, जि० भागलपुर।

५. श्री रामसुन्दर त्रिपाठी, मु० घुरहूपुर, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद।

६. श्री जगतानन्द, एडवोकेट, एम० पी० बाग, आरा (शाहाबाद)।

७. श्री सत्यनारायण लाल, व्याख्याता, राज्य शिक्षा संस्थान, पटना-६।

८. श्री रामखेलावन सिंह, मैनेजिंग डाइरेक्टर, श्रीकृष्ण आयुर्वेद भवन (प्रा०) लि०, आरा।

९ श्री रामदेव सिह, ऐडवोकेट, आरा।

१०. श्री रामरूप उपाध्याय, करनामेपुर, परसौंडा, शाहाबाद।

११. श्री ब्रह्मेश्वर ओझा, बँसवर, रघुनाथपुर, शाहाबाद।

१२. श्री ऋषिकेश तिवारी, मु० पो० निमेज, शाहाबाद।

१३. श्री ईश्वर दयाल दुबे, मैनेजर, टाटा मालकेरा कोलियरी, मु० पो० मालकेरा (धनबाद)।

१४. श्री दामोदर प्रसाद बैजनाथ गुप्त. मेन रोड, झरिया।

१५. श्री चक्रधारी सिन्हा, ऐडवोकेट, बक्सर (शाहाबाद)

विशेष चन्दादाता

१. श्री केशव त्रिपाठी, मु० एकडार, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद।

२. श्री प्रधानाध्यापक, मा० विचकनी, पो० दल्लपुर, जि० शाहाबाद।

३. श्री शिवपूजन राम, मु० एकडार, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद।

४. पं० हरिहरनाथ उपाध्याय, वैद्य, काशी रसायनशाला, के २०/६१ राजमंदिर, वाराणसी।

५. श्री विश्वेश्वर प्रसाद, बक्सर, शाहाबाद।

६. श्री रामसूरत मिश्र, तरी-मँझगाँई, वेलहर, भागलपुर।

७. श्री कैलास प्रसाद गुप्त, विकास पदाधिकारी, जीवन बीमा निगम, आरा।

बिल्कुल ही नये ढंग के

फिलिप्स
नोबोसोनिक
रेडियो

PHILIPS

जिन्दगी-सी हू ब-हू आवाज़

फिलिप्स ट्रांजिस्टर रेडियो : टेबुल या पोर्टेबुल अपना सानी नहीं रखते-
अत्यधिक मांग के कारण, हमें खेद है, सभी मॉडल सदा प्राप्य नहीं होते।

फिलिप्स इलेक्ट्रिक रेडियो : मधुर आवाज और आधुनिकतम डिजा
के लिये अत्यन्त लोकप्रिय मॉडल--

सचित्र रंगीन कैटलग के लिये हम से मिलें या हमको पत्र लिखें।

फिलिप्स बत्तियां : फ्लोरेसेंट ट्यूब बत्तियां, उषा, ओरियेंट, कैसेलस औ
रैलिस बिजली के पंखे तथा बिजली के प्रत्येक सामान के लिये ह
याद रखें।

शाहाबाद के प्रमुख बिक्रेता

के० के० जैन कम्पनी
आरा

भोजपुरी साहित्य

(मासिक पत्रिका)

वर्ष : १, अंक : ६ दिसम्बर, १९६५

५ बरिस २५ रुपया
जिनिगी भर २०१ रुपया

कविता

नौ मुक्तक १ पाण्डेय कपिल
किसुनी काका २ विंध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी
मन के पपिहरा ३९ कुसुमेश
निगेटिव ३९ जगन्नाथ
पूस के जाड़ ४० विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा"
जिनिगी बहार बा ४० भरत चतुर्वेदी

कहानी

ललकी सारी ९ विष्णु दयाल
सतवें भँवरिया ए बाबा १७ बच्चन पाठक 'सलिल'
तार के खबरि २८ रमेश तिवारी
पर्दा में अब रहल ना जाई २५ नरोत्तम पाण्डेय
राख ३३ विजेन्द्र लाल 'अनिल'

निबंध

भोजपुरी हिन्दी ह ३ रासबिहारी राय शर्मा

ललित निबन्ध

एगो चन्दबरदाई वार्ता २१ जगदीश पाण्डेय

एगो संस्मरण

गवरइया के बच्चा १४ रमाशंकर पाण्डेय

लोक कथा

बासी भात के मजा ४५ विश्वनाथ दूबे

स्तंभ

भगवान राम के गुरुधाम बक्सर ४१ कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'
चिट्ठी मिलल ४७ दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह
आपन कथ ४८ संपादक

एक बरिस ५ रुपया
१२ बरिस ५१ रुपया

संपादक
डॉ० जितराम पाठक

व्यवस्थापक
लक्ष्मण त्रिपाठी

कार्यालय
प्रोफेसर कॉलनी के० जी० रोड, आरा (बिहार)

टैली ग्राम—नवीन विज्ञान

फोन— कारखाना : २११
निवास : ४७१

नवीन विज्ञान, आरा

स्टील फर्नीचर — लकड़ी के फर्नीचर
साइंटिफिक एपरेटस — लैबोरेटरी फिटिंग्स
टाइपराइटर्स — सोफा कम बेड
फोम रब्बर कुशन — स्टील स्प्रींग कुशन

नवीन का अर्थ है क्वालिटी

नये डिजाइनों के

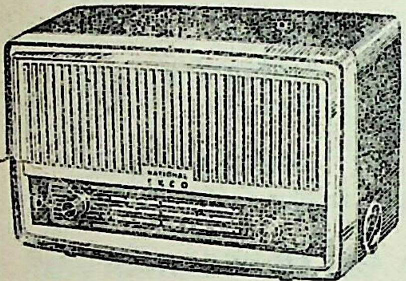

रेडियो सेट
और
ट्रांजिस्टर
के लिए
तथा

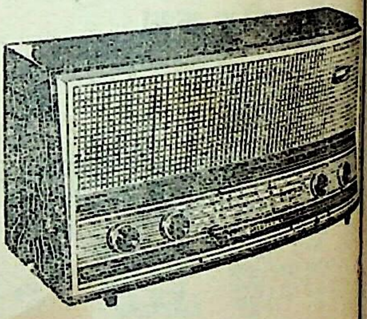

बिजली के अन्य
सामान
के लिए पधारें।

अजन्ताज ● रमना रोड, आरा

नौ मुक्तक

पाण्डेय कपिल

लौ लगन के धरा गइल केहू
आस-भरोसा करा गइल केहू
जोत से जोत जरल जिनगी के
मन के दियरा जरा गइल केहू

लौ लगा के बरत रही बाती
रात-भर जाग, जुगाई थाती
बस, बनल रहो नेह के नाता
देख जवना के जुड़ाई छाती

उनके सुरता में दिया दहकत बा
प्रान में आग लेखा लहकत बा
दिहले जे जान देस के खातिर,
जस जेकर देस-देस चहकत बा

पाँत के पाँत बर गइल दियरी
रात जइसे पहिर लेलस पियरी
जोत से जगमगा गइल सगरो
स्वर्ग के हो गइल धरा धियरी

देस जागल, केहू सुता ना सकी
मुँह में कारिख कबो पुता ना सकी
ई दिया साँच के दाहे दहकल
झूठ के हवा से ई बुता ना सकी

बा अजब जोस देश में जागल
कुछु ना कुछ करे के आग बा लागल
एकता के लछिमी जी आ गइली
देस के दुःख-दरिद्दर भागल

अब ना तनिको कहीं रही परती
तीनो कोना दरब से बा भरती
माटी दी अब हमरा के सोना
स्वर्ग से होड़ करी इ धरती

हम करब काम, चाल से फौजी
त्याग के बाना बनल रही मौजी
हम ना जोहत रहब बिदेस के मुँह
अन्न जो ना दिहन, त नौजी

बात मुट्ठो के अब सहात नइखे
उनका बोलला बिना रहात नइखे
उनका जो लाज आ हया होखे
बाकिर अइसन त कवनो बात नइखे

२, इस्ट गार्डिनर रोड, पटना—१

बिसुनी काका

विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी.

छुट्टी रहे, शहर से आइल
अपना गाँव रहीं हम।
समय साँझ के रहे, रहे-
कुछ मस्ती भरल हवा भी।
उमड़ल मन में भाव कि चलके
हम बधार में घूमीं।
देखीं मस्ती धन-खेती के
पागल होके झूमीं।
सगरे घूमलीं, खूब निखरली
बाकीर मस्ती ऊ कतहीं ना पवलीं
कतहूँ रानी प्रकृति न क्षण भर
मनवा के बिलमवली।
लागल भरला भादो जइसे
जेठ उतरि आइल बा।
मस्ती के सागर
सगरे लहराइल बा।
हो निराश मन में हम सोचत-
रहलीं अब - घर जाईं।
ओहिजे ममता के आँचर में
मन आपन बहलाईं।
तबहीं अचके ओहिजे घूमत
मिलले बिसुनी काका।
बिलमा के ऊ पूछे लगलन,
"का बबुआ तू कब अइल ह,
कह हाल अच्छा रहल हा,
तू त कह, शहर में बाड़
वोहिजा के कुछ हाल बताव
वोहिजा भी मँहगी आइल बा ?
वोहिजा के भी लोग दुखी बा ?
गाँधी बाबा कहले रहलीं
जब सुराज होई दिन लौटी
दूध - दही के नदी बही जब
नाहीं केहू दुखी रही तब
बाकी ई कइसन सुराज-
जबना में सब दुख पावत बा।
खाये के ना अन्न मिलत बा
पहिने के बहतर दुलम्ह बा।
दाना-दाना बिनु अदिमी के
मुँह बसात बा
कतना दिन से घर-घर में के
हाँड़ी उपास बा।
कइसे कहीं कि गूँथ-गूँथ के कपड़ा
कइसे लाज ढँकाता।
बबुआ अब दुःख सहल न जाता।
जाने कहाँ भुलाइल बड़ुये
कागद ई हमरा किसमत के
नाहीं त हमरा आगे के लोग
कभी के सरग चल गइल।
अच्छा होखित दइब उठा लेते हमरो
अतना कहत कहत काका के
मन के दरद उमड़ के आइल
आँखिन में सागर लहराइल
सुन काका के बात भला हम
का कहितीं, बस चुप हो गइलीं
बहुत सोच के बहुत समझ के
काका के परबोध न सकलीं।

शाहपुर (शाहाबाद

भोजपुरी हिन्दी ह

रासविहारी राय शर्मा

'जानल-मानल खोजी विद्वान। भोजपुरी के प्रबल समर्थक।'

आजु से तीस पैंतीस बरिस पहिले इलाहाबाद युनिवरसिटी के हिन्दी के नामी प्रोफेसर आचार्य धीरेन्द्र वर्मा ग्रामीण हिन्दी नाँव के एगो छोट किताब लिखले रहलें। ओ किताब में उहाँ का ई बात प्रमानित कइले रहलीं कि उत्तर प्रदेश में ग्रामीण हिन्दी[1] के चार मुख्य बोली बोलल जाला अउर एही चारो। बोली के सगरे बोलवाला बा। इहे चारू बोली हिन्दी के बोली ह। इहनी समूह के में हिन्दी भाषा के अतना व्यापक रूप बा कि चौदह करोड़ आदमी एक भाषा के सूत में बँधल बा। ग्रामीण हिन्दी के चार रूप—(१) मेरठ-बिजनौर के खड़ी बोली (२) मथुरा-आगरा के ब्रज भाषा (३) लखनऊ-फैजाबाद के अवधी अउर (४) बनारस-गाजीपुर-गोरखपुर-बलिया के भोजपुरी ह। एही चारू बोली का भीतर बांगरू बुन्देली, बघेली, छत्तीस गढ़ी अउर कन्नौजी बोली भी समाइल बा। डा० ग्रियर्सन साहेब लिखले रहलें कि बिहार में तीन गो बोली मुख्य बाड़ी स भोजपुरी, मगही, अउर मैथिली। कहलीं गइलीं भोजपुरी, अलथुम-गलथुन मगही अउर आइछी जाइछी मैथिली। साहब ईहो बात लिखले बाड़े कि भोजपुरी के सीमा बहुत दूर तक गइल बा। ई बोली बिहार से अधिका संयुक्त प्रान्त में बोलल जाले।

हमहूँ आजु से पैंतीस बरिस पहिले सरस्वती अउर सुधा में कई गो, लेख लिखले रहलीं कि भोजपुरी अर्द्ध मागधी से निकलल बुझातिया, अउर मगही आ मैथिली मागधी प्राकृत से जन्म ल मालूम परत बाड़ी स। ओह लेखन पर डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी बहुत छान बीन कइले रहलन। आजुओ ऊ सवाल जइसे के तइसे बा। जब पण्डित ज्वाला

---

[1] ग्रामीण हिन्दी, पृ०—२६।

राम नागर काशिका के अइलीं गइलीं व्याकरणम् लिखि के भोजपु शब्दम के सिद्ध कइले रहलन तब ओह व्याकरण से ई बात सोरहो आन जरूर साबित होता कि भोजपुरी अर्द्ध मागधी प्रसूत ह, अउर अवधी सगी बहिन ना त सौतेली बहिन जरूर ह।

हम एहिजा भोजपुरी, अवधी खड़ी बोली, ब्रज बोली हिन् के उदाहरण देइ के सिद्ध करबि कि भोजपुरी के कतना नगिचा बा। ए एकरो स्थान महाविद्यालय अउर बिश्वविद्यालय में जरूरे सुरक्षित हो के चाहीं। काशी, बलिया, गाजीपुर, गोरखपुर वगैरह जगहन में महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के स्थापना हो गइल बाटे, बाकी भोजपुरी के अभी स्तम्भ (कुर्सी), अउर मञ्च ना मिलल हा, जव से भोजपुरी में खोज-सोध अवरू पठन पाठन जमि के हो सको। नी उदाहरण से देखीं जा कि भोजपुरी अवरू अवधी में कतना समता ब

(१) ग्रामीण हिन्दी

ग्रामीण खड़ी बोली

(मेरठ जिला)

एक दिन अकबर बादसा ने बीरबल तें पुच्छा, ओ बीरबल हमें बड़दे[1] का दूध लादे और नहीं तेरी खाल कढ़वाई जागो। बीरब कूँ बहोत रंज हुआ और हुन्तर[2] आण[3] के अपने घरूँ पड़ रहा।

बीरबल की लोन्डी[4] नें अपणे मन में कहा की आज तो मेरा ब बहोत सोच में पड़ा हे। आज के जाणे इसका काके ढब हुआ। जि उनने अपने बाप कूँ पुच्छा अरे बाप आज तेरा के ढब है।

बीरबल ने कहा की बेटी कुछ ना हे। फ़ेर लोन्डी नें पुच्छा की पि अपणे मन का भेद बताणा चहिये। जिब उनने कहा की बादसा कहा की के तो बड़दू का दूध ला दे नहीं तूझे कोल्हू में पिलवाऊँ मेरे ते कुछ नहीं कहा गया ओर हाम्मी भर के आया हूँ ओर कुछ नहीं पात्ता। लोन्डी ने कहा की पीता जी या तो कुछ भी बात नाँ तुम बेफिक्र रहो। बीरबल उठ खड़ा हुआ।

---

[1] बैल। [2] वहां से। [3] आकर। [4] लड़की।

खैर, जिब तड़का हुआ तो उस लोन्डी ने के काम करा की अपणा सब सिंगार करा और बहोत अच्छी पुसाक पहर के और कुछ कपड़े हाथ में लेके बादसा के किले के आगे कूँ लिकड़[1] जमना पर गई। बादसा किले पे चढ़ के जमना की सेल कर रहे थे। अकबर ने देखा की बीरबल की लोन्डी लत्ते धो रही है। बादसा ने लोन्डी तें पुच्छा की ए लोन्डी आज क्यों तड़के ही तड़के लत्ते धोवण आई है। जिब उस लोन्डी ने कहा की बादसा आज मेरे बाप के लोन्डा[2] हुआ है। बादसा ने छोह[3] में आके कहा अरी लोन्डी भला कहीं मरदूँ के भी भी लोन्डे होते सुणे हैं। लोन्डी ने कहा की बादसा भला कहीं बड़द के भी दूध होता सुणा है। जिब बादसा कूँ कुछ बोल नहीं आया और लोन्डी कूँ कह दिया की तड़के ही तड़के बीरबल कूँ कचहड़ी में भेज दे। बीरबल तड़के ही कचहरी में गया। बादसा ने पुच्छा की बीरबल लाया बड़द का दूध। बीरबल ने कहा की बादसा सलामत में तो कल तड़के ही लोन्डी के हाथ भेज दिया था। बादसा कूँ कुछ बोल न आया।

(२) ग्रामीण हिन्दी।

ग्रामीण व्रजभाषा।

(एटा जिला)

एक ठाकुर हों[4]। वाने एक कोरिया कूँ बेगार में पकरो और अपनी घुड़िया के संग बाइ लिवाइ के अपनी सुसरार कू चलो। तब कोरिया की मैतारी[5] ने कही कि बेटा जब ठाकुर खुसी हों तब अढ़ाई सेर रुई मांग लाये। कोरिया ठाकुर के संग चल भयो।

जब ठाकुरु सुसरार में भीतर गओ, कोरिया कूँ अपनी घुड़िया थमाय गओ और जताइ गओ कि जाइ चोट्टान लै जामें। आधी रात भयें कोरिया सोइ गओ। घुड़िया चोर ले गये। धौतायें[6] देखो। तो घुड़िया न पाई। लगाम लैकें अटरिया में जा जगौ ठाकुरु सोवत हे पोंचो और कही कि ओ ठाकुस सा 'अटलन खुन खुन" तो मौ पै है हुन हुन का दुम लै गये हो? जे सुनि ठाकरु उठि कें ढूढ़वे कूँ भाजे। कोरिया बिन के संग लगिलओ।

---

[1] निकल। [2] लड़का। [3] क्रोध। [4] था। [5] महतारी, माता। [6] सुबह।

राह में एक नदिया परी। ठाकरु ने कोरिया कूँ अपनी तरवार गहाइ दई और कही कि मेरे संग उतरि आ। जब बीचोंबीच पोंचो, तरवार मियान में तें निकरि परी। कोरिया ने कही, ओ ठाकुस सा जामें सें मिंगी निकरि परी और चोकलो मो पै रहि गओ। ठाकुरु नें कही कि काँ गिरि परि? तब वा कोरिया नें नदिया में मियान फेंक के बताओ कि वाँ गिरो हैं। मियानहूँ वह गओ, जापै ठाकरु खूब हँसे।

कोरिया ने, हात जोरि कें कही भले ठाकरू, अम्मा ने अढ़ाई सेर रुई मागी है।

(३) ग्रामीण हिन्दी। ग्रामीण अवधी।

(प्रतापगढ़)

एक अहीर के घरे माँ चार मनई लरिका, सास, पतोह और बाप रहत रहें। मुला चारयू बहिर रहें।

बेटौना एक दिन खेते माँ हर जोतत रहा औ ओही ओरी से दुई राही चला आवत रहें। वै बेटौना से गुहराइ कै पूँछिन कि हम रामनगर का जावा चाहित अहै कौनी डगर से जाईं? तौ ऊ अहिरवा जानिस कि हमरे बरधवन का पूछत अहैं कि बेचब्या? औ गोहराय के कहिस कि बरधवन का हम न बेचबै। यहि पर रस्तागीरै गुहराई कै कहिन कि हम का बैल न चाही, रह्या जो जानत हुआ तौ लखाइय्या। तौ ऊ जानिस कि सौ रुपैया बरधवन कै लगावत अहैं। औ गुहराइस कि राजू, सो रुपैया का व दूयु सौ देत्यो तबहूँ हम आपन बरधवन तुम्हें न देइत।

(४) ग्रामीण हिन्दी, ग्रामीण भोजपुरी।

(गोरखपुर)

एक जनी अहिर ससुरारि करैं गइलैं। उहाँ राति के दीआ बरत रहैं। इ कब्बो दीया बरत देखले नाहीं रहलैं। अपने मन में कहलैं हो न हो ई है अंजोरिया कै बच्चा। जब उनकै ससुर नेग बिदाई देबै लगलैं त ई कहलैं, ए राऊत, हम लेब त अंजोरिया कै बच्चे लेब। ससुर दे दिहलैं। बाकीर इनके मन में तब्बो खटका रहल। राति के जब सब सूति गइल बब ई दीआ छान्ही के नीचे चोरा दिहलैं। घर में आगि लगि गईल। सब्बी धन दौलत बिला लिला गइल। इहो रोए लगलैं, हमार अंजोरिया

के बचा ओही में जरि गइलें। सब लोग जानि गइलें कि रहै सार घर फुकलसि हँ।

नीचे दिहल गइल उदाहरणन से देखल जाई त मालूम होई कि भोजपुरी अवधी, ब्रजभाषा आउर खड़ी बोली से कतना नजदीक बा।

	खड़ी बोली	ब्रजभाषा	अवधी	भोजपुरी
एक व०	घोड़ा	घोड़ा	घोड़वा	घोड़ा, घोड़वा
बहु व०	घोड़े	घोड़ा	घोड़वे	घोड़ा, घोड़वा
विकृत रूप—एक व०	घोड़े	घोड़ा	घोड़वा	घोड़ा, घोड़वा
,, बहु व०	घोड़ों	घोड़न	घोड़उन	घोड़न, घोड़वन

आम शब्द।

एक व०	ऑव	आम	ऑव	आम
बहु व०	आँम	आम	आंब	आम
वि० रूप—एक व०	आँव	आम	आँब आँबे	आम
,, बहु व०	आँबों	आमन	आँबन	आम, आमन्हि

ईंठ शब्द।

एक व०	ईंट	ईंट	ईंट	ईंट
बहु व०	ईंटें	ईंट	ईंट	ईंट
विकृत रूप—एक व०	ईंट	ईंट	ईंट	ईंट
,, बहु व०	ईंटों	ईंटन	ईंटन्ह	ईंटन्हि

सर्वनाम में उत्तम पुरुष।

	खड़ी बोली	ब्रजभाषा	अवधी	भोजपुरी
एक ब०	मैं, म	मैं, हौं	मइ	में, हम
बहु ब०	हम	हम	हम	हमरन, हमनीका
विकृत रूप-एक ब०	मुज, मेरे	मो, मोय	मइ	मोहि, मुमो, हमारा
ब० ब०	हम, म्हारे	हम, हमै	हम	हमरा
संबंध—एक ब०	मेरा, म्हारा	मेरो	मोर	मोर, मोरे, हमार, हमरे
,, बहु ब०	हमारा, म्हारा	हमरो	हमार	हमनी, हमरन, हमन

सहायक क्रिया के मुख्य रूप।

हिन्दी होना

होना होना होनो होब होइबि

हो	होवे	होय	होइ	हो
हुआ	हुया	भयो	भवा	भइल
होगा	होगा	होयगो	होई	होई
होता	होत्ता	होतो	होत	होत, होत, होइत

होइहं, जइहें, पढ़िहें वगैरह रूप अवधी-भोजपुरी में होला, जइसे,—

"होइहैं सोई जे राम रुचि राखा, का करि तर्क बढ़ावहिं साखा।"

वर्तमान काल है

खड़ी बोली	ब्रजभाषा	अवधी	भोजपुरी
है	है	है, अहै, बाटै	बा, हवे, बाटे
हैं	हैं	हैं. अहैं, बाटैं	बाटन, हवन
हो	हौ	है, अहै, बाटै	बाट, हौव
हूँ	हौं	हौं, अहौं. बाटौं	बटों, होंई
हैं	हैं	हैं, अहैं, बाटैं	बटीं हौइं

भूत काल था।

खड़ी बोली	ब्रजभाषा	अवधी	भोजपुरी
था	हे, हतो	रहौं, रहै	रहलों, रहले, रहल
थे	हे, हते	रहन, रहौ. रहैं	रहलीं, रहला, रहलन
थी	ही, हती	रहौं, रहैं, रहै	रहलीं रहली
थीं	हीं, हतीं	रहन, रहौ, रहैं	रहल्यूँ, रहलू. रहलि

धीरेन्द्र बर्मा लिखले रहलन कि—"भोजपुरी बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया. गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़, शाहाबाद, चम्पारन, सारन तथा छोटा नागपुर तक फैली पड़ी है। भोजपुरी बोलने वालों की संख्या तीन करोड़ के लगभग है। काशी मे रहते हुए भी कविगण प्राचीन काल में व्रज तथा अवधी में और आधुनिक काल में हिन्दी में लिखते रहे हैं। भाषा सम्बन्धी कुछ साम्यों को छोड़कर शेष सब बातों में भोजपुरी प्रदेश बिहार की अपेक्षा हिन्दी प्रदेश के अधिक निकट रहा है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि उत्तर प्रदेश में चार मुख्य बोलियाँ बोली जाती हैं अर्थात् मेरठ, बिजनौर की खड़ी बोली, मथुरा की व्रजभाषा, लखनऊ-फैजाबाद की अवधी तथा बनारस-गोरखपुर की भोजपुरी।"

डुमराँव, शाहाबाद

कहानी

ललकी सारी

विष्णु दयाल

हम ढेर देरी से बिछौना प पसरि के कलम अवरू कागज लेके अपना मन के आलू अस उसीनत रहलीं कि कुछ लिखीं। सोचते-सोचत हमार माथा अइसन टनके लागल जइसन कि पानी मिलला बिनु धान के खेत के मुलायम चाम चटके लागेला। कौनो बात दिमाग में ढुकवे ना करे। अंत में सोचलीं कि कलम-कागज नीलाम कर दिहीं आ एह जमाना के चपलूस कुकुर बनि के आपन पेट पोसीं। अतने में गोरैया बाबा के कृपा हमारा ऊपर भइल, जवना से कि हमरा गाँव के लंगोटिया इयार रमधरिया मन परल। हमार गाँव पूरा पान सौ एक धुर मजिगर देहात में बसल बा। पुरनिया लोग ओकर नाम बड़ा चुनि के तिसौरी रखले बा। तिसौरी गाँव जवार भर में नामी मानल जाला, काहें कि ओ हजा लाल मरीचा के ढेंढ़ी अस तीत दिमाग के पढ़विहार होलनि। जवन लइका धनी बा तवन भरला भादो, सुखला जेठ, चढ़ला जाड़ा, गुमान से अँठिली लेखा अँठिलाइल चलेला। बाकी जेवन गरीब बा तेवनो के जोम जूता में ना रोकाला। ऊहो शहर में टिसनी क के कालेज के कलेजा चीर के आगे बढ़ि जाला। रमधरिया भी धनी ना रहें, काहें कि लछिमी बतीसो दाँत चिआर के ओकरा घर से चलि गइल रही।

गरीबो रहला प गाँव के इसकोल में रमधरिया के नाम बड़ा सरधा से टोल-परोस के कहला-सुनला से ओकर बाबू सालभर दउर-दउर के पंडी जी के पतरा खोलवा के निमन दिन पूछ के लिखवा देलन। रमधरिया के पढ़ाई-लिखाई देखि के ओकरा गाँव के दुष्ट लोगन के दाँत नीचे-ऊपर बजनी करे लगलनि स। बेचारा रमधरिया भी बड़ा चटक सुभाव के निकलल। केहू से अइसन बोले कि सुने वाला के

बुझा कि किसमिस, मोनाका, छोहाड़ा वोगैरह फेंटि के उ खात होखे।

कई बरीस के बाद जब एह बात के चारू भर शोर हो गइल कि ओकरा अस पढ़े में चोख, चरव त जिला भर में केहू नइखे। ई सुनि के ओकर बिआह करे खातिर एगो अदिमी धोती खूँटि के तइयार हो गइल। ऊ कहलनि कि लईका के धन पना बाकी एकर तेजई देखि के अपना लइकी के एह घर में लगावत बानीं। मुँह में सुरती फाँकि के ऊ लोगन से कहे लगनी कि "जरूर हमार बेटी एह घर में राज करी।" सचहूँ एक दिन रमधरिया के घर में अभगिया दुलहिन बनि के आइली। पहिले त एह घर में ऊ बड़ा उदास रहे, बाकी पीछे ओकरा समझ में आइल कि एह घर के हम सरग बनाईं। ईहे सोचि के अपना उदासी के हाथ-पयर तुरि के अचटाहे गड़हा में बिग देलसि।

अब जवान अभगिया गाँव में पीस-कूटि के आपन, अपना जईफ ससुर-सासु के, अपना सामी रमधरिया के खेवा खरचा चलावे लागलि। ऊ हरदम ईहे सोचे कि कबहूँ खरची जनि घटे पावे। राति-दिन एही फिकिर में ओकर जवानी ढहत-ढहत खंड़हर बन गइल। ओकरा मन में एके आशा रहे कि हमार सामी पढ़ि-लिखि के साहेब बनि जइहें त खरची के फिकिर छुटि जाई आ कतना गरीब दुखिया के उधार-पांइच देवे जोग हम खुदे हो जाइबि।

एक दिन अभगिया के कान में सुनाइल कि ओकर सामी अउअल दर्जा में पास कर गइलस। अब ओकर खुशी मोटरी में बन्हले ना बन्हाइ। ऊ चटपट आगि जोरि के पिसान सान देलसि आ अनघे गु डालि के हलुआ बनावे लागलि, जब रमधरिया घर में मुसुकाते हाथ में अखबार लेले ढुकल त अभगिया के भर अँकवारी बटोर लेलसि। दूनों खुशी अउर परेम के विमान चढ़ि के एक दूसरा से कई मिनि तक आम के लासा लेखा चिपटाइ रह गइलन स। अतने में अभगिया बाहर केहू के आवाज सुनि के भ से आपन हाथ छुटका के लुती आ सन रसोइया घर में जा के भर छि हलुआ लेके रमधरिया के आगे र देलसि आ ताबर-तोर बेना हिलावे लागलि। रमधरिया गते से ए कौर हलुआ लेके अभगिया के मुं में कोंच देलसि। अभगिया हाथ

हाली आपन मुँह पोंछते कहलसि—'ई तोहार रहन-चाल हमरा सूई के नोखियो भर ना सोहाला'।

'तू परेम में खिसियालु त हमार करेजा खंखोराइ जाला'-रमधरिया अपना नरेटा में हलुआ लिलते-लिलते कहलसि।

अभगिया अपना झोंटा में हाथ डालि के कहलसि—"ई मरद जाति मेहरारू के तनिकी आसा में फुसिलावे के पूरा घाट जाने लनिस। अपना काम परी त मनौती प मनौती जरूर करिहें। बस खाली अपने दिल दिमाग के धुन रहेला। ई पढ़ल-लिखल मरद ये दिल-जान के करिया करिया अछर के पाछा दिलदारो चीज के रदी खाँची में बेमोह दाया के फेंकि देला लोग। दोहाई काली माई के, अबो से एह लोग के गियान होखो।"

अभगिया के कुटाई-पिसाई से जेवन पइसा। बाँचल रहें तेवना से रमधरिया खातिर नया-नया पोशाक बनल, सूटकेस किनाइल। एगो फूटल पइसो भी अभगिया अपना खातिर बचा के ना रखलसि। ऊ एही में अनकर खेत चरला भंइसा अस अघाइल रहे कि जब हमार सामी कलेज पास कइ के लमहर गो साहेब बनि जइहें ओह दिन फूटल भाग कनइल के फूल अस फुला जाई। आपन करेजा कड़ा करके ऊ रमधरिया से चले के बेरा कहलसि—"खुशी मन से जाईं, राउर मन कामना बनसपती माई पूरा करिहें।" फेरु मने मन आँखि मूदि के एक ओड़ी मिठाई आ एगो पखाउज के नाच महथिन दाई के भाखि देलसि।

जब से शहर में पढ़े खातिर रमधरिया गइल तब से अभगिया के दुख सोझे दोबरी हो गइल। रात-दिन सुरूज आ चनरमा लेखा एक सुरिये खुशी से ना बलुक आपन रोआँ-रोआँ छछना के, पेट काटि-काटि के, तन प लुगरी जेवना में पेवन चलनी लेखा, झंखुराइल झोंटा जेवना में तेल जाये के भूलइलो नाम ना ले, गहना के नाम प अंगुरी में एगो खियाइल पीतर के अँगूठी पेन्हले अभगिया दुआरी-दुआरी पिसौनी-कुटौनी करि के अपना सामी के अन्हार किस्मत में अंजोर भरे खातिर खिआइल जात रहे। अपना सामी के रेख बदले खातिर, टेक राखे खातिर, अमर करे खातिर सीता, उर्मिला, अनसूइया अउर सवितरी लेखा पबितर बनि के

भिजल लकड़ी अइसन ऊ धुआँत रहे। ओकरा मन में ई बात ठेहुन भर जम गइल बा कि “औरत जाति तबे पवितर रही जब सुतंतर रूप से भईस के सींघ अइसन छाती उठा के चले वाली आजु के बिटिअन्हि से पौने पाँच कोस फरका रही।” काहे कि मरद लेखा सुतंतर बनि गइला में पवितरता कवनो हालत में ना रही।

रमधरिया पढ़ाई-लिखाई खतम करि के अब नोकरिहा बनि के शहर में अपना जोड़ के पढ़ल-लिखल एगो लइकी से परेम करत बा। एह से ओकरा मन में एक दिन पाप समाइल जेवना से सोचलसि कि अगर कौनो तरी घर के भंड़ा फोड़ हो जाई त बनल बनावल काम मटकी के झटकी में बिगड़ि जाई। कयलान एही में बा कि अभगिया के कइसहूँ अपना रहता प से हटा दीहीं—’ कलम मुँह में डालि के सोचे लागल। थोरे देरी के बाद ऊ सीधे एगो कपड़ा के दूकान पर गइल आ सारी माँगि के देखे लागल। ढेर रंग के सारी में से ओकरा एगो लाल सारी पसन आइल। ओह ललकी सारी के कीनि के ऊ टिसिन प आके गाड़ी ध के अपना गाँवे चलल। अपना सामी, देवता के देखते अभगिया के रोआं-रोवाँ से बरखा के बुनी लेखा खुशी टिप-टिपाये लागल। जब ललकी सारी देखलसि त ओकरा मन में ई बिसवास हो गइल कि अबकी जरू हमरो शहर जाये के परी। एही सपना, सुख-कलपना में ओकरा दे के मोटाई बाढ़ के पानी अस बढ़े लागल। साचो निमना दिन दे जतरा बना के ललकी सारी में सजि-बजि के ऊ गाड़ी पकड़े टिसीन प चललि। ओकरा मन में कवन-कवन शुभ भाव, आनन्द के छने-छने बिचितर अन गिनित कलपना ओह दिन उठत रहे–एह बात के ओकर देवता लेखा सामी रमधरिया साइत ना समुझे के कोशिश कइलसि।

चार-पाँच दिन के बाद आजु फेरु अभगिया के दुआर प राम के बानरी सेना लेखा मरद-मेहरारू के भीड़ जमा भइल बा। सऊँसे गाँव में ई हराहोर मच गइल कि अभगिया फेनु ना जाने काँहे चलि आइलि। ऊ लोगन्ह के बीच में बइठि के आपन मूँड़ी गाड़ि के जनमतुआ लइका अइसन फूटि-फूटि के रोवत सूखल धरती के भिंजावति रहे।

‘काँहे रे अभगिया, रमधरिया

कुशल से बा नू ?"—गाँव के लोटा काका खइनी के थूक फेंकि के पूछले।

'कइसन जमाना बहि गइल ए काका थू-थू" एगो हाँड़ी लेखा मेहरारू नाक के नथिया हिलावत बोललि।

"छि-छि जइसन ऊ निसतनिया नरकी काम कइलसि ओइसन ओकरा फल जरूर मिली—ऊ गलि-गलि के माटी के देवालि अस गिरी, पिलुआ नोचि-नोचि के खइहनि'—पथल के पटिया लेखा हाथ झमकावत बेदमिया भउजी बोललि। ओह भीड़ में चारू ओर से सभके मुँह से थू-थू रमधरिया खातिर निकलत रहे। अगर केहू चुप रहे. कुछु शिकाइति ना करत रहे त खाली अभगिया। ओकरा के अपना साथे जेवन आदिमी लेके आइल रहे ऊहे लोगन से रो-रो के अभगिया के अभाग के कहनी जोर-जोर से फफक के सुनावत रहे।

जवार-पथार में बिजुली के करेन्ट अइसन ई हाला मचि गइल कि पढ़ल-लिखल रमधरिया आपन इज्जति बरबाद करे प तुलि गइल बा। तबे नू अभगिया के दूर देश में ले जा के दोसरा गाड़ी में बइठा के भागि गइल हा, जेवना से कि ऊ भूला-भटकि के आँखि के समने से अलग हो जाउ। एकरा बाद बिना झंझटि के तारा से बिआह कइल आसान हो जाई। बाकी अभगिया के अभाग सोझ होके ओकर इज्जति बचा के पवितर रूप में फेनु तिसौरी गाँव में ले आइल हा।

जब जल्दी भीड़ हटे के कौनो उमेदि ना बुझाइल त लाज-डर छोड़ि के अभगिया चम से खड़ा हो गइल आ ललकी सारी के तार तार चीरि के, दूनों हाथ से मीसि-मासि के ओही चेंथरा से आपन सेनुर पोंछि-पोंछि के हवा में उधिआ देलसि आ फेनु आपन पिसौनी-कुटौनी ध लेलसि। अभगिया के अभागा सोहाग महथिन दाई के भखौटी अब ले ना उतारे देलसि! अब गाँव में तीजो-परवि के दिन केहू के लाल सारी पेन्हल देखि के ओकरा भीतर जोर-जोर से सूल उठेला।

जगजीवन कॉलेज, आरा

▲

एगो संस्मरण

गवरइया क बच्चा

रमाशंकर पांडेय

'गवरइया वाम्हन चिरई ह · ...इन्हनी के दाना दिहले पुन्न होला।'

बाति सन १९४९ ई० क ह। ई घटना त बहुतपु रानि हो गइल, तबो हमरा खातिन ई आजुओ ओतने नई बा जेतना कि ओहि दिन रहे। जब-जब ई बाति याद आवेले, त इहे बुझाला कि ई घटना अबहिंये घटलि हा।

हम पहिले पहिल दार्जिलिंग से जमशेदपुर में एगो शिक्षक बनि के अइलीं। हिमालय पहाड़ के गोदी में जेतना शहर बसल बानस, ओहनी में दार्जिलिंग शहर सब से सुन्दर कहल जाला। ई पहाड़ी शहरन क राजा ह। जमशेदपुर क दूसर नाम ह टाटा नगर। ए शहर के विषय में लिखे वाला एकरा के लोहा क नगरी जरूर लिखे ला।

अमेरिका क कुछ इसाई पादरी एही शहर में एगो विद्यालय खोलले बान जा। एकर नाम लयोला स्कूल बा। अंग्रेजी क पढ़ाई होले। वातावरन विलायत क बा। एहीजा पढ़े-पढ़ावे वाला जे बा ऊ अपना के अंग्रेज से कम नाहीं जाने, माने। जइसे अंग्रेज बोलेलन स, खालन स, बइठेलन स, सब बाति क नकल कइल एइजा क प्रधान गुन मानल जाला।

हमार जीवन त उत्तर प्रदेश एगो गाँव में बीतल। शहरो में गावे नियर काम धाम रहे। जब एहिज अइलीं तब हमरा के ई नई दुनिय लागल। धीरे धीरे हमहूँ थोरे बहु ओइसहीं रहे लगलीं। अब हम कुछ बुरा ना लागल। हँ, हम कबे अंग्रेज बने क चेष्टा ना कइलीं। पढ़ाई एइजा सप्ताह में पाँच दि होले। सनिबार के चाहे सिने होई चाहे खेलकूद।

सनिबार क दिन रहे। स्कू बन्द रहे। लरिका एने-ओने खेल रहलन स। हम अपना घर के आं वाला बगइचा में बैठि के ए किताब पढ़त रहलीं। हल्ला भइ आ कुछ लरिका हमरा बगइचा पइठ अइलनस। कुल्हींन का हा में गुलेल रहे। ओह में से ए लरिका एगो गवरइया क बच्चा हम

आगे रख देहलस। दूसर एगो मरल गवरइया रखि दिहलस। हम त देखते दुखिया हो गइलीं।

बचपन में माई जवन बात कहले रहलि, ऊ बात बार बार याद आवे लागलि। 'हे बचवा, गवरइया के ना मारे के। ई बाम्हन चिड़िया हइस। एहनी के खाना-दाना दिहले पुन्न होला।"

अब हम एही बात में डूबति-उतरात रहलीं कि ओह में से एगो बोलि उठल—"सर, इहे लरिकवा गवरइवा के मरलस ह। एकर निसान बड़ा तेज ह। ई अपना खोंता में बइठलि रहलि ह। हमहीं एकरा के बतवलीं हँ। हमहूँ मारे के चहलीं हँ, बाकी हमार निसान नीक नाहीं ह। ई त केतनो दूर क चीजन के गिरा देही। अबे ऊ बोलत रहे कि दूसरका हमरा सामने तनिके बड़ा हो गइल। ओके हम बड़ा देर तक देखते रहि गइलीं। मन त भिनभिनाई गइल रहे। हम ओहनी के जाएके कहि दिहलीं। ऊ सब भागि गइलन स।

नीचे देखतानि त ऊ गवरइया क बच्चा खूबे एने-ओने छटपटाता। ओकरे नियरा गवरइया मुअल परलि बा। उठा के देखलीं। ओकरा गला में करिया धारी रहे। हम जानि गइलीं कि ई गवरइया एकर बाप ह। मालूम होता कि ई अपना बचवा के चारा खिआवे आइल ह। आ ई सब लरिकवा देखि लिहलन ह स। बचवा एकदम छोट रहे आ ओही तरे छटपटात रहे। हमार मन तिलमिलात रहे। थोरे देर तक त समझे में ना आइल कि हम का करीं। फिर मन में पक्का कइलिहलीं कि चाहे जो होइ एकरा खातिन एगो पिंजरा बजारि से खरीदि लेहीं।

बजार से एगो पिंजरा ले अइलीं। ओमा कपड़ा क गद्दी बिछा के रखि देहलीं ओकरा के। ओह में भी ऊ ओही तरे छटपटात रहे। दुपहर भइल, साँझि भइल आ अब राति भी हो गइल। हमहूँ खा-पी के खटिया पर लेटलीं, बाकी नींद नाहीं लागलि। हम एक टक ओही पिंजड़वा का ओर देखत रहलीं। मन में तरह तरह क बाति आवति-जाति रहे। एकरा के कइसे जिआवल जा, इसब हमरा समझ में ना आवत रहे। ई एतना छोट रहे कि कुछु खा पी ना सकत रहे। कबहूँ त मन में ईहे बात आवति रहे कि सबेरे तक इ बचवा मरि जाई। एहि तरे सोचते-सोचते पता नाहीं कब हमरा नींदि

आ गइल। सबेरे जगलीं त देखलीं कि दिन बहुत चढ़ि आइल बा।

पहिलहीं आँखि पिंजरा की ओर भगली स। मुँह अचरज में खुलि गइल! देखतानी कि एगो गवरइया पिंजड़वा पर बैठ के खुशी से बचवा क मुंह में कुछ देति बा। बचवा भी खुशी से खात जात बा। हम खटिये पर बड़ी देर तक बइठल रहलीं। इतवार क दिन रहे। छुट्टी रहे, घबराए क त कामें नाहीं रहे। थोड़ी देर में फिर ऊ चिड़ियवा आइल आ फेर बचवा के ओही तरे खिआवे लागलि। अब त हम समझि गइलीं कि ई एकर माई ह। मन क भारीपन हटि गइल।

जब ऊ चिड़ियवा उड़ि गइल तब हम पिंजड़वा क पास गइलीं। देख तानी कि बचवा अब टनमनाइ गइल बा। उठे बइठे लागल बा। धीरे-धीरे अवाजि भी करत बा। जब-तब उचुकि-उचुकि के ओनिये देखि भी लेत बा जेनीं से ओकर माई आवेले। ओकरा बाद हमहूँ उठि के हाथ मुँह धो धा के कुछ खइलीं पियलीं आ आपन काम करे लगलीं। खिड़िकी हमेशा खुले छोड़ि देत रहलीं कि कहीं ओकर माई आई त लौटि मति जा।

एसहीं एक महीना बीति गइल। बचवा अब खूब तगड़ा हो गइल। तब ओकरा के बाहर निकालि दिहलीं आ ऊ अपना माई क संगे उड़ि के चलि गइल, हमहूँ भगवान के धन्यबाद दिहलीं आ पिंजड़ा के उतारि के एक ओर कोना में रखि दिहलीं। आजु भी ऊ पिंजड़वा कोना में पड़ल बा।

— लोयला स्कूल, जमशेदपुर।

कहानी

सतवें भँवरिया ए बाबा

बचन पाठक 'सलिल'

भोजपुरी के जानल-मानल कवि-कथाकार। 'सेमर के फूल' उपन्यास अभी लगले छपल हा।'

आजु अनगुते, ८ बजे हम बाथरूम से निकल के दाढ़ी बनावे खातिर जइसहीं तेयारी सुरू कइलीं, ओइसहीं रसोइया घर में सिसिकी सुनाइल। दुआरी पर जा के देखलीं त माई एगो नाया मेहरारू के चुप करावत रहे आ ऊ गते-गते रोवते जात रहे। हम अखियान कइलीं—ई त बासन्ती ह। हम लवटि अइलीं। पाछे माई कहलसि कि काल्हु बसन्ता बोकारो से लवटि आइल बिया। गोदी में साल भर के एगो लइकिनी बा।

हमार मन पिछलकी बातन में ऊभ चुभ करे लागल। बुझाइल कि हम सपना ना, कवनो साँचो के सिनेमा देखत होखीं। १० साल पहिले के बात ह। हम बी० ए० में पढ़त रहलीं। आन्ध्रभवन में कवनो जलसा होखत रहे।

यदुवंश सुधाम्बुधि चन्द्रस्वामि रा रा।
यदुवंशसुधाम्बुधि चन्द्रस्वामि रारा

सोहना राग में मीठ गाना के संगे कुचिपुडी नाच (आन्ध्र प्रदेश के खास नाच) होखत रहे। हम घड़ी देखलीं। आठ बजत रहे। साढ़े आठ बजे प्रोफेसर मित्रा कुछ खास सवाल बतावे के बोलवले रहले। मन नाहियों रहला पर नाच छोड़ि के उठे के परल। प्रोफेसर मित्रा केहू के ट्यूशन ना पढ़ावेले। समय के पैबन। अगर छोह से केहू के बोलइहें आ टाइम से ऊ ना जाई, त ओही घरी भहरा के बोल दीहें। लावल लपिटावल ना जानसु। सँगही ओह दिन से लेट लतीफ के नाँव मित्रा साहेब के लिस्टी से कटि जाई।

हम जइसहीं गेट पर पहुँचलीं कि एगो लइकी पाछे से बोललीं 'तनी सुनीं।'

हम रोकि गइलीं। चौदह पनरह साल के एगो लइकी—पैजामा सलवार पहिरले आइलि। साँवर रंग, बड़े-बड़े आँखि। लमहर-लमहर केश। दू-एगो लट आगे गाल पर झूलत रहे। बुझाइल, एह लइकी के हम

कहीं देखले बानी। आकिर एकरा हमरा से कवन काम बा।

ऊ कहलस कि भैया कहले रहले हा कि तू च ल। हम साढ़े सात बजे इन्स्टीच्यूट से आन्ध्र भवन पहुँचि के संगे लिया लेब। आठ बजे ले ऊ ना अइले। बुझाता, भुला गइले आ कवनो साथी संगे सोडा फाउन्टेन चलि गइले। हमरा के संगे लियवले चलीं। अपना मोहाला के अउरो केहू नइखे आइल।

पाछे पता लागल कि ऊ हमरा मोहला के फोरमैन तिवारी जी के बेटी हई। बालिका विद्यालय में, ११ किलास में पढ़तारी। हमरा के बरोबर देखे ली। 'साहित्य-संगम' के चन्दा लेवे उनका इहाँ हम दू-एक हाला गइल रहलीं। तिवारी जी चन्दा देवे में अगहर हवन! उनका से थोरे जानो पहचान हो गइल बा।

बासन्ती कहली कि 'साहित्य-संगम' के उत्सव में ऊ हमार कविता सुनले बाड़ी। हमरा मन में गुदगुदी बरे लागल। रस के लोभे बतबढ़ौंब खातिर हम तिखरलीं। 'कुछ इयादो बा', आ ऊ दू-एगो कड़ी सुना दिहली।

उनका घरे गइला पर तिवारी जी बतियावे लगले। बासन्ती के माई पकौड़ी बना के ले अइली आ गरम-गरम चाह पियवलीं। दूनो वेकति अपना लइका राजीव पर बिगरल लोग कि ई नालायक कहिये आ बबी के लियावे काँहेना गइल हा। आजु संजोग से जो कपिल बाबू ना भेंटइते त लइकी कइसे आइति?

अतना आदर सतकार से हमार मन अगरा गइल। तिवारी जी कहले कि असो बासन्ती मैट्रीक में बीया। ई हिन्दी में बहुत कमजोर बा। तनी रउरा कबो-कबो मदति करदीं त बड़ा नीक होई। रउरा त हिन्दी के विद्वान बानीं। तिवराइनो कहली कि हँ ए बबुआ, तू त अपने जिला-जवार के बाड़। एह आन देस में हमनिए के नूँ आपन बानीं जा। तू त राजिवे लेखा हमनी खातिर बाड़। कबो-कबो आइल कइलीं। बबी के कुछ बता दिहल करिह। एह स्वागत सतकार में प्रो० मित्रा के प्रोग्राम हम भुला गइलीं।

ओह दिन से हमार आइल-गइल शुरू हो गइल। तिवराइनों घरे आवे-जाए लगली। माई के अन-मना हो गइल। परोस के बंगाली आ मद्रासी मेहरारून से ओकरा खाली साहेब सलामत रहे। ओकर भासा ना ऊ मेहरारू बूझस ना उहनी

के भासा ऊ बूझे। अब तिवराइन संगे घंटन वइठकी होइ। कबो सूरन के अँचार आ भतुआ पाग तिवराइन दे जासु, त कबो गंटा के कलउँजी भा कोरवर बरी-बारा माई ले जाय।

बासन्ती पढ़े में तेज रहे। हिन्दी में ओकर व्याकरन कमजोर रहे, जवन ठीक हो गइल। ऊ हमरा से कविता ढेर पूछे आ सुने। अल्हड़ सुभाव रहे। कबो पूछे कि फलना तीन गो बिआह काहे कइले? कबो पूछे कि चिलाना अतना गन्दा काहे लिखे ले? मैट्रिक क्लास में ऊ ढेर कविता, कहानी आ उपन्यास पढ़ि गइल रहे। कबो-कबो ओकर सवाल सुनि के हम डेराईं कि तिवारी जी सुनिहें त का कहिहें।

वासन्ती मैट्रिक पास क के आइ० ए० में नाँव लिखवलस। तिवराइन अउरी पढ़ावे के पछ में ना रही। तिवारी जी कहले कि नाँव लिखाए द। लइको खोजात रही। कॉलेज में पढ़ला से लइकी के मोल बढ़ि जाई।

हम बी० ए० (आनर्स) में यूनिवर्सिटी में फस्ट भइलीं, गणित में डिस्टिंकशन मिलल रहे। माई देबी जी के परसादी चढ़वलस आ कहलस कि तिवारी जी के घरे दे आव।

तिवारी जी हमरा रिजल्ट से खूब खुश भइले। वासन्ती कहलस कि हमहूं आइ० ए० फर्स्ट डिवीजन में पास करब। तिवारी जी हँस के कहले कि गुरु पास हो गइले अब चेला के पारी बा।

कलकत्ता यूनिवर्सिटी में हमार एडमिशन हो गइल। बासन्ती हमरा इहाँ कवनो किताब ले जाए आइल रहे। कहलस—

'त रउरा चल जाइबि?'

'त का करीं? एहिजा त एम० ए० के पढ़ाई नइखे। बाकिर हमार मन ना लागी।'

'काहें?' ऊ पूछलस।

'ओहिजा सूरन के अँचार ना मिली।' हम कहि के तनिकी हँसलीं।

'ओ, त ई बात बा', ऊ उदास हो गइल।

'काहें, उदास काहें हो तारू?'

'एह से कि चिरईं के जान जाए, लइका के खेलबना।' हम एक छन अपना के सधलीं आ कहलीं—

"बसन्ता, एगो बात पूछीं?"

"पूछीं।"

"हमरा खातिर तूं इचिको सोचेलू?"

आ बासन्ती रोवे लागल। हम अपना रूमाल से ओकर लोर पोंछलीं। ओकरा पीठी पर हाथ ध के कहलीं—'चुप रह। हम तोहरा के प्यार करत रहलीं हाँ, बाकिर साहस ना होत रहल हा कि कुछ कहीं। पागल कहीं का, कलकत्ता कवनों ढेर दूर बा। दू-तीन महीना पर त हम आइले रहब।"

कलकत्ता से अइला पर सुनलीं कि बासन्ती के बिआह के बातचीत चलता। घबरइलीं। तिवारी जी से मिले चललीं। बरामदा में ढूकि गइलीं। तिवारी जी तिवराइन से कहत रहले—'तू पागल हउ। कपिल कतनों तेज बाड़े त आर्ट्स पढ़तारे। अधिका से अधिका कवनों कालेज में पढ़इहें त दू-तीन स रुपया मिली। बासन्ती के बिआह इनका से कइसे क दीं। बोकारो वाला लइका इंजीनियरिंग पास कइलस हा। सा आठ स रुपया के नोकरी मिली। हँ, बसंता के बिआह होता। धी कपिल के ढेर आइल-गइल ठीक नइखे।'

बुझाइल कि केहू सीसा घि के हमरा कान में डालत होखे। हम आपस चलि अइलीं।

बिआह के दिन रहे। भाँव परि गइल। मेहरारू गावत रहीं स—"सतवें भँवरिया ए बाबा, हम नाहीं रहलीं तोहार।" आ हमरा कान में केहू कहल कि आर्ट्स के पढ़ाई से बसन्ता तोहार ना भइली। अचके में हमार धियान टूटल। माई कहत रहे जल्दी नहा ल। कॉलेज जाए के बेरा हो गइल।

वीमेंस कॉलेज,
जमशेदपुर

सायकिल खरीदते समय उसके असली पार्ट्स-पुर्जों की जाँच जरूर कर लें। सायकिल के असली पार्ट्स पुर्जों तथा असली रैले, हरक्युलिस, नार्टन, ऐटलस, इस्टर्न स्टार, ग्रे हाउण्ड और हीरो साइकिलों के लिए

बॉम्बे साइकिल स्टोर्स
गोपाली कुआँ, आरा
में पधारें।
यहाँ सभी माल की गारंटी दी जाती है।

ललित निबन्ध

एगो चन्दबरदाइ वार्ता

जगदीश पाण्डेय

हिन्दी के जानल-मानल ललित निबन्धकार, आलोचक आ कथाकार। पहिला बेर अपने के रचना आशीर्वाद रूप में।

एने ब्रजकिशोर बाबू जिन्दगी पर मउअत क नजर से बहुते विचार कइले बान, बाकी फायदा जिन्दगिए के भइल बा। ऊ ब्राह्म मुहूर्त्त में मरल मूर्खता मानेलँ, काँहे कि भोर क अखबार पढ़ले बिना चल देहला से रास्ता भर मन अँदेशा में पड़ल रही। हस में मालिश क प्रचार क बाद उनकर दोसर स्थापना बा कि मालिश के बादे मरला आदमी के मणिकर्णिका भेजेके चाहीं। नाहिंओ बाँची त जिन्दगी भर क थकावट त मिट जाई। कहीं बँच गइल त पक्का साम्यवादिए हो के निकली।

गाँधीजी नियन ऊ चश्मा, चप्पल आ घड़ी छोड़ के मरल चाहेलँ। चश्मा चेतावनी क रूप में कि बहुत पढ़े क गलती लइका लोग न करे। चप्पल एह खातिर कि लइको लोग समझ जाय कि बाबूजी चरन त लेले गइलँ बाकी पूजे खातिर कमल छोड़ दिहलँ। घड़ी एह से कि ई ससुरी ना रहित त मउअत ठीक समय पर नाहीं आइलि रहित।

बाकी ओह दिन ऊ जवन कहलँ तवन कफन के बारे में रहे। उनकर अंदरूनी इच्छा बा कि मउअत क दिने उनका पास कफनो कीने के पइसा ना रहे, पहिलहीं सब खरच हो जाय। ना मालूम काँहे कमला बाबू ब्रजकिशोर बाबू के बात के, दाँत से नाखून क तरह काटि देलँ। तमक के कहलँ, 'ना साहेब, हम त मरे के पहिले मुहल्ला भर के कफन किनवा के मरब।' फिर बड़ा बहस भइल आ लोग के सोचे के मजबूर होखे के पड़ल।

इकट्ठा लोग में से एगो दल क विचार रहे कि ब्रजकिशोर बाबू के बात में स्वार्थ क लेस बा, बाकी बेचारे कमला बाबू परोपकार के पीछे मरत बान। एगो मित्र कहलँ कि संन्यासी के तन पर लंगोटियो ना रहे आ ओकर परम धाम हो जाय, ई समुझ में आवे लायक बात बा, बाकी गृहस्थ केहाँ कफनो न

जुरे त जरूर ऊ जिन्दिगी भर प्रेमचन्द क कहानी में क ताड़ी पीयत रहल होई। सब कुछ मस्ती में फूँक देहला पर कबीरे काहें, कवनो जोलहा हाथे मा लागी। आ मस्ती-मस्ती में फरक होला। साँचो क मस्ती त खाइल छोड़ के 'पीएवाला' क होला। खूब खाए आ नीमन पहिरेवाला के कफ़न ना रहे त ओकर कूंच दिवालिया क कूच ह। चुकल पूँजी में मस्ती ना, मजबूरी होला। दवा के पइसा से, इहाँ तक कि कफ़नो के पइसा से, खूब छाने ऊ आनन्द क राज पथिक ह, जे चलतो राह में बेसुध-विदेह होके पड़ रहेला। दूसर बात ई कि अपना पइसा से मस्ती ना आवे। रिन ले के घी पीएवाला साचो क चार्वाक ह। असल में रिन सुखवाद क असल पूँजी ह। एही से, सुख से जीए के उपदेश देवेवाला पिता के संतान क ऊपर कर्ज क भारी से भारी बोझा छोड़ जाये के चाहीं। अइसना पिता क आदर्श पर बेटा चले, फिर बेटा क बेटा चले, तब कफ़नो खातिर निश्चिन्त रहे क सुभावे से ऊ दशा आ जाई, जवन संत लोग क निराला ढंग ह। सुखवाद पहली पीढ़ी में साधना, दोसरकी पीढ़ी में दया आ तीसरकी में सिद्धि होले। ई तीनि पीढ़ी क काम ह, कुछ अतना आसान नाहीं कि महीना क दस तारीख तक खर्च नाहीं चल सकल, एसे इगरहवीं तारीख खातिन कवनो बहाना खोज लेहल गइल।

ब्रजकिशोर बाबू ओह दिन हलुक-फुलुक रूआ में एगो बजर क गाँठ देहलँ। सिद्धान्त त उमंग क रहे, बाकी ऊ ईहो कहे लगलें कि बाल-बच्चा आ परिवार खातिन अपना कर्त्तव्य के पालन करत जाये के चाहीं। अब कर्त्तव्यवाली ई बात अतना भारी भरकम बुझाइल कि उनका उत्साही समर्थकन्ह क भी मन उतर आइल। शिवजी से बढ़ के आनन्दप्रिय के देवता बा, बाकी उनका सिर पर शीतल-लहरत गंगा बाड़ी आ आँखि पर पुन्य क फुहार। उनका कपार पर केहू हिमालय धइ दे त ललाट पर क चन्द्रमा क हँसी बिला जाई, आ उनकर समाधि टूटि जाई। कहाँ भाँ क तरंग आ हाथ में डमरू, आ कहाँ रोज हाथी के चारा जुटावे क प्रपंच। लइका पढ़िहन कि नाहीं, एकर चिन्ता काँहे खातिर? शिवजी एकर चिन्ता ना कइले त उनका लइका के गुरु ना मिल गइलँ? राजकुमार खातिर हाथी के बंदोबस्त ना कर सकलँ त मूस कवना सवारी से हीन ठहरल? अइसन सिद्धि मिलल कि सबके पहिले पुजाले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equitable Heritage Foundation, Jalgaon.

गणेशजी कवनो स्कूल-कॉलेज क मुंह नाहीं देखलँ, बाकी लोग उनके से विद्या माँगेला। एह से भगवान पर छोड़ाय त सब कुछ। ई का कि मुअला पर आपन चिन्ता भगवान पर, आ जियता भर में संतान क चिन्ता अपना ऊपर। कपार पर भर के हैट के हाथे ना धइलजाय। ओकरा के प्राणवध आ पवन क वेग पर छोड़ देहला से साहेब लोग क भलाई होला।

बाकी कमला बाबू के लोग दोसरो कारन से परोपकारी कहे लागल। ब्रजकिशोर बाबू कह दिहलँ कि समाज मुर्दा के परवाह स्वार्थ के कारन करेला। कहले, दाह-किरिया में भूत-हवा ना, प्रेतभय बा; धरमपालन ना बा, लास के सड़े क खतरा बा। एह तरे ह बात में उमंग आ चित्त-व्यंग क अइसन मेल रहे कि एह में कतना वैयाम क दर्शन, आ कहाँ तक उमिर क असर बा, ई कहल कठिन रहे। एह ढरा र चढ़ल जाइ तब त शोक में लोग ना रोवे, गावे ना आवे (आइत त लोग गाइत) एह से रोवेला, आ एह से कि रोवला से कीचर साफ हो जाई, आ एह से कि अभागा कफन-खातिर फूटल कउड़िओ ना छोड़ गइल, आ एह से जे ई रहे त बीमारो पड़त रहे अब त बचले लोग में से केहू के बेमार पड़े, आ मरे के पड़ी।

जानवर आ प्रिय के लास में फरक होला। खाली स्वार्थ के बात रहित त घर क लोग मसान में काहे ले जाइत, लास क डाक्टरी पढ़वाला लइकन के हाथे बेंच देहित, कुछ पइसा हाथे लागित। अइसे त शहीद होखेवाला के स्वार्थी कहल जाला, बाकी स्वार्थ खातिर मरेवाला के आज ले शहीद नइखे कहल गइल। एगो चीजु ह, जवन प्रेम ह, आ ई असन बन्धन होला कि एकरा आगे मुक्तिओ छोड़ देहल जाला। ईहे प्रेम ना मरे, प्रिय के शरीर भले मरि जाय। एही से लेनिन के शरीर आज रूस में तीरिथ मानल जाला, आ एही से कवनो परमहंस क सेज्जा, कवनो गाँधी क स्मृति-चिन्ह, कवनो नेहरू क भस्म क महिमा होला।

बाकी कमला बाबू क परोपकार में खतरा जरूर बा। एगो त ई कि मुहल्ला भरि में कफन तबे बँटाई जब हैजा आ प्लेग क बन्दोबस्त कर लेहल जाय। एकरा खातिर शहर भर क माछिन के हाँकि के ले आवे के पड़ी, बेशकीमत से बेशकीमत फल सड़ावे के पड़ी पोटास अपने पिए के परी कि ऊ कुँआ में न पड़े पावे, बहुत खरच कर के अपने आ लोगन्हि के ठूस ठूस के

खिआवे के पड़ी, बिल में से चूहनके, 'कवनो-कवनो बिलो में साँपो रहेलँस', शहर में भरे खातिर चढ़ावे के पड़ी, आ उलिटा जाप करावे के पड़ी। अतने ना। हर किसिम क कफन खरीदे के पड़ी। भलफलाहे दरवाजा खटखटा के अपना पड़ोसी से कहे के पड़ी, 'सरकार, रउआ अनमतुआ खातिर दास कफन लेके हाजिर बा। सँकोच मत करीं। कृपा कर के एकरा के रख लीहीं।' मुहल्ला में शादी होत होय त बराती आ घराती दूनो खातिर काफी रंगीन कफन के जोगाड़ करे के परी। तब इच्छो से अधिका आशीर्वाद मिली। छपवा के नोटिस बाँटे के पड़ी, 'जे भाई मरे में हिचकत होखे ऊ हिचकी आवे तक मत भँखो। ततकाले मरो, कफन क इन्तजाम बिना खरच के हम करबि— पता— कमला प्रसाद, कफन दातव्य धाम, मुहल्ला चटपट, नगर नश्वर, जिला मुर्दाबाद।'

अतने ना। मुहल्ला में मेहमान के बिदाई के बेरी हाथ में तीन गज मारकीन थम्हा देवे के पड़ी जे मालूम हो जाय कि मुहल्ला में कतना मेल-मुहब्बत बा। साँच पूछल जाय त डाक्टर लोग जइसे जबरदस्ती सुई देला ओइसहीं मोहल्ला से होके जायेवाला हर राही के खदेड़ के अतना चीर जरूर बाँटि देवे के परी कि केहू के चिन्ता ना करे के परी। ओइसे कमलो बाबू से अधिका चिन्ता-हरन आदमी पहिले भइल बाड़न। एगो जवान जोतिसीजी के एक आदमी आपन नया मकान देखावे के ले गइलँ। जोतिसीजो कहले, 'सब त ठीक बा, बाकी निकले के दुआर सँकेत बा। जदी मुर्दा के बेंड़ा निकाले के चाहीं त ना निकली।' घर के मालिक के ई बात बड़ा जबुर बुझाइल। ऊ जोतिसी के बूढ़ बाप से जे खुद जोतिसी रहले, सब बात कहले। ऊ फिर नया मकान में अइले। अपना मूर्ख लइका पर ऊ बड़ा बिगड़लँ, आ जजमान के भरोसा देत कहलें, 'हमार बेटा बड़ा मूरुख बा। ऊ का जाने? भगवान चहिहें त एही दुआर में से जोड़ा मुर्दा एके संगे निकलिहें स।' बुढ़ऊ जोतिसी चिन्ता हरे में कवन कसरि कइलँ?

बात लगाव आ बिलगांव के बा। ब्रजकिशोर बाबू हाथ पसरलहीं ना, हाथ छोड़वलहूँ जाए के चाहत बान। कमला बाबू जातो जात अनेकन्हि के हृदया से लगवले, लेले-देले जाये के चाह तान। रामजी अपना कुकुर के

बाकी पन्ना २७ पर देखीं

पर्दा में अब रहल ना जाई

नरोत्तम पाण्डेय

“ई बिजुली कहाँ गिरी यारे? मियाना कथना गाँवे गड़ी?” वहीं एक्का बस्ती में ना ढुकल रहे कि नवही मनिआये लगल। जेने से सुनाइ, बोले निकले। एकत लगन क दिन, दोसरे बेपर्दा के एक्का, आह प चमचमात जनानी सवारी— कांड़े में खफुलहटे रहे।

एक्का नियरा आइल। पंच तरमसइले। मेहरारू झुकि परली स। एगो चुनमुनिया मूरति अइसन चेहरा उतरल। लोग चक-कइले। “आरे, ई मैनवा ह। अच्छर कट्टू का भइलि, ई हँजा नि गइलि। लाज-डर धाइए अलांस। भला भरल मजलिस पड़ी, बे पर्दे ओहार क चलल आवतिया। ओकर सबगओ सगहो वा। ऊहा ससुरा हइसे निरलज्ज हाई—कहू सपना ना देखले रहे।”

बेपर्दा के मैनवां गाँवें का आइलि—गाँव खातिर ऊ चीनी एग्रेशन हो गइलि। आठ दिन तक गाँव में मैनवें के चर्चा रहे। जहाँ सुनीं, ओकरे थूकम-फजिहत। मैंनवां हिम्मत ना बटोरि सकलि, घर से बहरि आए के। ओकर कुल्ही सोचाहट भूलाइल जात रहे।

मैंनवाँ सोचले रहे, “गाँवे का जाइबि, गाँवें आगि लगा देबि। जहाँ देख, मेहरारू पहिले, मेहरारू पहिले, आ गाँवें ई हाल जे तनी नांच देखे निकलत त पंच डंट लेके धावसु। मैंनवां गांवे इन्कलाब के झंडा खड़ा करी। नया जोश भरी। चुहानी के बहुरिया लोग के सड़क प परेट कराई, नारा लगाई।” बाकिर पहिले दिन के स्वागत ओकर जोश ठंढा देलस। आठ दिन तक मैनवां ना सुगबुगाइलि।

मैंनवां का अइला के नउआ दिन। सबेरे आठ बजे के टाइम। मुँह-हाथ धोवे आ खाए-खिआवे के बेरा। लोग दुआर दालान पर उठत-बइठत बा। बीचे में हाला भइल' —“आरे····हई देख इयारे—हई ह मयनवां।” सब ओनिए ताकल। मैंनवां आज घर से बहरि-

आइल रहे। उघारे माथ, उड़ियात बार, ऊँचा एड़ी के चप्पल आ तीसी रंग के सारी। मैनवाँ हाथ में बेग लटकवले निकललि रहे।

मैनवां गाँव का महटराइनि किहां गइलि। दिहलसि पानी इनका के—'का ए महटराइनि, तूँ का करम कुटले बाड़ू, अपना लिलार में त जवन सतुआ सटलू तवन त सटबे कइलू—हेह लइकिअन के त किछु नाया दुनियादारी सिखा व।" होते-होते मैंनवा आ महटराइनी एक प्रान दुई देहि हो गइल लोग। हेवली-हेवन्ती निअन जेने लउके लोग, संगही लऊके।

गते गते मैंनवां आ महटराइनि गाँव खातिर रोग हो गइल लोग। जेने लोग मुड़े, मरदन प आफति परी जा। बाकी मेहरारू ओतने अगरासन। उहन लोग के खातिरदारी में का का ना होखे? मैनवां मेहरारून के नया-नया दुनियां के बात बतावे, सिखावे। जब सीमा प दुसमन खड़ा होखे, देस के आजादीं खतरा में होखे, मेहरारू कतना सहायता करि सकेलिस। सोना-चाँनी खातिर त मैंनवा मन में घिनि बरादेलसि। मैंनवां बतवलसि जे दुनिया का सोभा, खास कके, भारत का सोभा, भोजन के समस्या बड़ा टेढ़ बिया। मुठिया चलवलसि। मेहरारू रो रसोई में से एक मुट्ठी बचावस। सात दिन प भूखा के दिआई। पंच के आंखि खुललि। सोचले 'मैंनवां खाली एड़िए अलगा के ऊँच नइखे भइलि, एकरा माथ प लुगा उतरते बुद्धि जामि गइल बिया। ई त जय किसान के अवता बिया। ई ओह जनम के कुन् गंधारी रहलि हा।"

जूझि के बादरि बरसि के गु गइल। सब पंच अमन-चैन से गो पसारल। खेत-खरिहान चहचहाइल मैंनवा के गुनगान घरे-दुआरे सगं होखे लागल।

बाहर के झगरा बुताते, भीतर के झगरा सुनुगल। एह घरी मैंनवा के फुर्सत रहे। ओकरा अपन अधिकार के लड़ाई के फ्रौन्ट साथ लउकल।

एगो दुपहरिया। जहां-वहां बेतहास भहराइल बेदिल पंच। सबके पुरान चिन्ता जागल। मैंनव हैजा रहे, ओकर कीरा घरे-घ फैलि गइल रहे। सकल पंच उठ बइठस तमासा देखत रहन। भी बेअहरा हो गइल रहे। गाँव भा के मेहरारू-बेटी झुँड बान्हि के सड़

प इकलि गइल रही स। मैनवा
हाथ में झंडा लेले आगे-आगे।
मरद टुकुर-टुकुर ताकत रहन।
नारा के शब्द, जवना के गूँज आकाश
में भरि गइल रहे, गते-गते कान में
समात रहे—

मरद के दुख सहल ना जाई!
सहल ना जाई!!
परदा में अब रहल ना जाई!
रहल ना जाई!!

राजेन्द्र छात्र भवन,
२४ ए, सर सरकार लेन,
कलकत्ता – ७

◆

(पन्ना २४ के बाकी पढ़ीं)

विमान पर चढ़ालेले त कमला बाबू नया अतर भेजि दे ताड़ँ कि झटपट सज-धज के परलोके साथे चलीं जा त कवनो बेजायँ बात नइखे। विनय बाबू कहलँ, 'कमला बाबू खाली नया उकती के लोभ से अतना बड़ा वादा करत बान, नाहीं त ऊ अतना खरच ना कर सकँ। ऊ त दोसरो से कफन ले लीहें।' कमला बाबू कहलँ, 'जरूर, दोसरा से ले लेवि, बाकी हरिश्चन्द्र के तरह।'

एह तरे हँसी ठट्ठा के बात कहाँ से कहाँ पहुँचि गइलि। ओइसे ब्रजकिशोर बाबू जमा करे से ना चुकिहँ, आ कमला बाबू केहू कफन ओढ़ि के निकललो चाहे त आपन वसूली ना छोड़िहँ। मनलीं कि रउआ मरि गइलीं त बाँया अंगूठा क निसान दे देले जाईं? रउआ जाईं, राउर बाल-बच्चा चुकता कर दीहें। बाकी बातचीत में ब्रजकिशोर बाबू के सुलतान बनते कमला बाबू चौहान बनि के शब्दवेध करे शुरू कर देलँ। ई सब कुछुओ ना होइत, बाकी चन्दबरदाई लोग चैन से बइठे दे तब न?

अँगरेजी विभाग,
जैन कॉलेज, आरा।

तार के खबरि

रमेश तिवारी

ऊ सोचत रही, 'अब केकरा से आपन दुख-सुख कहबि ? अब केकरा से रूसबि आ मानबि ?'

गांव में लुत्ती अस खबरि पसरि गइलि। देखते देखत में सबसे गांव का जबान प ईहे बात सरसराये लागल। जे जंहवे सुनल कठुआ गइल। अक्किलि गुम हो गइलि। सभ के मुँह प धीरज के एके शबद रहे, का कहल जाई। जइसे इस्वर रखिहें ओइसे रहहीं के परी। आपन का अख्तियार बा ?

रघू पण्डित के बड़का लइका चरन पलटन में बहाल रहले हा। एने का ओर त छव-एक महीननि से उनकर कवनो चिठिओ ना आवत रहे। अचके में काल्हु तारे चलि आइल। रघू पण्डित तार के नामे सुनि के चिहा गइले, रघू पण्डित के कलपना में तार आइल अउरे बात रहे। अइसे तार के अछरि ऊ पढ़ि ना सकत रहनि, बाकिर बेपढ़लहीं बहुत कुछ आह-अंदाज लगा ले ले।

गांव में अंगरेजी पढ़ल एगो 'मासटर साहेब' रहनि। केहू का कवनो एह किसिम के कागज-पत्तर आवे त उन्हुके से लोग पढ़वाव रहे। पण्डिओ जी तार ले धुरियाइले पांवे मासटर साहेब कि गइले। मासटर साहेब नहा धोती बदलत रहनि। पंडी जी देखले त अगरा के अगुआनी कइले,—"आईं-आईं पण्डी जं कइसे आसन आइल हा ? आ लाल कागज कइसन ले ले बानी पंडी जी।"

रघू पण्डित थथम्हि के कहे "ई तार ह ए मासटर साहेब, बड़ बबुआ किहां से आइल हा अवे डकमनसी देले जा तरुए। तनी दे ना जे का लिखल बा ? एही खाति त रउआ किहां ले अइनी हां। बबुअ चरन किहां से एने का ओर चिठि ढेरि दिन से नइखे आवत अचक्के में तार कइसे आ गइल मासटर साहब ? हमार त मन बड़ घबड़ा गइल बा। अब तनी प तब न बात खुले।'

मासटर साहेब तब ले तार फा कवनो एह किसिम के कागज-पत्तर

चुकल रहनि। फारते-फारत उनकर नजरि तार के अछरिनि प नाचि गइलि। तार साफे रहे, बाकिर मासटर साहेब ओकरा के छव सात हाली पढ़ि गइले। उनका आंखी में अन्हरिया छा गइल। हाथ कांपे लागल उनकर, जबान बन हो गइल। तार हाथ-मे-के-हाथ में ले ले मासटर साहेब काठ बनि गइले, जइसे उनका में जाने ना होखे. आकि उनकर देहि सुन्न पड़ि गइल होखे। मुँह से ऊ कुछुओ बोलि ना सकले।

मासटर साहेब के ई हाल देखि के रघू पण्डित हक्का-बक्का रहि गइले। ऊ बार-बार पूछसु—“का बात बा ए मासटर साहेब! जलदी कहीं दादा, काहे चुप लगा गइनी, का लिखल बा ए ईसवर, ।”

मासटर साहेब का जब होस भइल आ पंडी जी के बेखबरी देखले त कहे के ना चाहलो पर कहि गइले “का कहीं ए पण्डी जी, कहल नइखे जात। राउर बड़का लड़िका चरन जे पलटन में रहलेहा उन्हुके किहां के ई तार ह। ओहिजा से उनकर मेजर लिखले बा कि चरन बबुआ लड़ाई के मैदान में वीर गति पा गइले”। बात खतम करत-करत मासटर साहेब का आंखी से लोर के धार फूटि चलल।

रघू पण्डित तार के खबरि सुनले त उन्हुका कठेया मारि देलस, चेहरा पिअरागइल। कपार पीटत बेखबरि ऊ घरे अइले। घरे पण्डिताइन जनली, घर के अवरू लोग जानल, आ जनली चरन के मेहरारू।

रघू पण्डित के त जवन हाल रहे तवन रहले रहे, जब उन्हुका मेहरारू का मालूम भइल त उनकर मुँह बेटा का वियोग में खुलिगइल। लगली पुक्का फारि के रोवे। बेटा के सुरति उन्हुका आंखी में नाचे लागल। भाई लोग भी अपना भइआ खातिर कम ना दुखी रहे। आखिर सभन में बड़ रहनि चरन बबुआ आ बड़ो में सभ गुन के आगर रहनि। जवना समाज में रहसु, ओइसने बनि जात रहनि। हंसमुख चेहरा, लाम चाकर देहि, गोर शरीर, सभ केहू एह रूप के चाहत रहे। बाकिर जवना चीज के ढेरि लोग चाहे लागेला, ऊ चीज मिलबो ना जल्दी करे। भगवान के अइसने विचित्र लीला ह।

चरन के मेहरारू का सबसे गहीड़ चोट लागल। ऊ तिलमिला गइली, बुझाइल कि बरदास ना होई, बाकिर ई दुनिया अइसन ह कि

इहाँ सभ सुने के परे ला आ बरदास करे के परेला। चरन के मेहरारू के सपना चूर-चूर हो गइले स। कहाँ मौज के जिन्दगी रहे, नया जवानी रहे। अवहीं त खेले-खाये के समइये रहे, तलेले एके बे जे जुवाड़ि उठल कि सभ कुछु धो पोछ के साफ कइ देलसि। अब जिनिगी में कवनो रसे ना रहि गइल। एह जिअला से त मउअति आछा, "बाकिर मँगला प मउअतिओ ना नू मिले ?"

ई हचकालि सुनि के रघू पण्डित इहाँ गाँव भरि के मरद आ मेहरारू जुटि गइल लोग। जे जहँवे सुनल, काम-धंधा छोड़ि के धावल आइल। एगो नीमन भीड़ पण्डी जी किहां जवरा गइल। सभ के चेहरा पर समवेदना आ करुना के लोर झलमलात रहे, सभ के हिरदय रोवत रहे। आ काहे ना रोवो पण्डी जी के हीरा अस जवान बेटा नाहीं भइल रहे।

दुआर मरदाना लोग से खमाखम भरल रहे त आँगन जनाना लोग से ठकचल। दूनो ओरि एके बजार, एके राग। "जाये दीं ए पण्डी जी, संतोष करीं, का करबि! जीअल-मुअल केहू का हाथ में बा। आ ओहू में पलटन में भरती होवे वाला के कवन ठेकान ह। जवे देश में लड़ाई सुरूम होई, कि ओकर जान खतरे में रही", गांव के मुखिया जी पण्डीजी के धीरज बंधवले। "हूँ, तब का जे वासे, ठीके त रावा कहत बानी मुखिया जी, आ एह घरी त पाकिस्तान जरे लड़ाई लागिए गइल बा। हमनी के कुल्हि सैनिक एह संकट का समे में काश्मीरे आ लाहौर में भेजल गइल बा लोग"—परोसिया सरजू सिंह मुखिया जी के बात में हुँकारी भरले।

मोका देखते कुछ अवरू लोग अपना-अपना गेयान के गठरी खलिहावे लागल। केहू कहल, "लड़ाई त हम चीन साथे सुनले रहीं। ई पाकिस्तान बीच में काहाँ से टपकि गइल हा ?" केहू जवाब देल, "आरे चीन से त वासठिए में लड़ाई लागल रहे, असो त पाकिस्ताने साथे लागल बा! तू ईहो आजु ले नइख जानत? हरे हरे…"। "कहाँ इनका शहर-बाजार जाये के ठहर कि ई वेचारू जानस! तुहूं के मतलब के केहू के बुरूबक बनाव रहे ल"। केहू कहल, 'छोड़ लो ई विवाद एकरा से का मतलब बा जरूरत त एह बात के बा कि प

लड़ाई में हमनी के का करे के चाहीं ? लड़ाई चाहे पाकिस्तान से होखे भा चीन से, हमनी खातीर त दूनो बराबरे बा। हमनी खातिर त जइसन पाकिस्तान दुसमन तइसन चीन दुसमन। हमनी का दूनों से लड़े के बा—दूनों से मोर्चा लेवे के बा। हमनी के जवन एह बारे में तैयारी होखे, ऊ दूनो के धेयान में राखि के होखे के चाहीं।" केहू बात के नया मोर देल आ युध के बारे में कुछ बात बतावल। ई बात सभ के पसन आइल। कुल्हि लोग एह में हँ-में-हँ मिलावल। बाकिर पण्डी जी का ई कुल्हि ना सोहात रहे। उनकर मन रहि-रहि के अपना लइका का तरफ खिचा जात रहे। ऊ सभ के बीच बइठल रहि के भी जइसे कहीं आलगा होखसु, तइसे हो जात रहनि। सभ कुछ सुनिओ के ऊ कुछु ना सुनत रहनि। उनकर हिया फाटल जात रहे—बांस के माफिक दरकल जात रहे उनका हिरदय के पोर-पोर। देश-ओस उनका एह घरी कुछु ना बुझात रहे। आदमी के अपना प परला पर संचहूँ सभ सिद्धान्त बेमाने-मतलब के हो जाला—काहे कि एह दुनिया के माया विचित्र ह।

एने अंगनो में कम हंगामा ना रहे। टोला-परोसा के गांव-घर सगरे के मेहरारुनि के जमघट लागल रहे। पण्डिताइनि त बेखबरि रही। लइकियो अपना भाई खातिर छछनते रहीस। चरन के मेहरारू के त दांत पर-दांत लागत रहे। उन्हुका ना रोआइए आवत रहे आ ना चूपे रहल जात रहे। देखला पर भयानक चेहरा भइल रहे, बार बिखरल, चूड़ी फूटल, जगह-जगह कपार प टटके फुटला के दाग।

मेहरारू लोग में से लोग पण्डिताइनि आ चरन के जनाना के समझावे-बुझावे के भी काम करे में लागल रहे। केहू कहे, "कवनों बात मा। मरद आ बरध बान्हि के रहेला। ऊ त आहर-बाहर जइबे करी, दइब का ईहे कबूल रहल हा त का करबू ? कसहूँ अब सबुर करे के बा', दोसर केहू हं-में-हं मिला देल, 'हं बहिनी ठीके त कहत बाड़ू, असमन जनि ह बबुआ के माई कि तोहरा चरन बबुआ के अतने दिन के अरदुआइ रहल हा। बबुआ आपन दिन पुरा के जहां से आइल रहले हा उहां चलि गइले।" बाकिर पण्डिताइनि का आजु ई दार्शनिक सांच दिल में ना धंसत रहे। भले दोसरा का दुख में पण्डिताइनि

एही साँच के सहारा लेवे के आग्रह कइले होखसु, बाकिर आज अपना दुख में ई सांच बे-माने-मतलब के हो गइल रहे। ऊ बार-बार लोगन्हि के बात के कान करसु बाकिर कुछ्छु माथा में घर ना कर सकत रहे। समझ में आइल। ऊ एही से केहू कुछुओ कहे चूपो साधि ले ले रही।

बाकिर चरन के मेहरारू का आगा-पीछा कुछु ना सूझत रहे। उन्हुका खातिर संवसे जग अन्हार हो गइल रहे। ऊ सोचत रही 'अब केकरा से आपन दुख-सुख कहबि। केकरा से रूसबि आ केकरा से मानबि। के अतना अब हमार धेयान राखी! के अब ओतना दुलार करी! अब त दूनो जून के खाइलो भार हो जाई। अब केकरा बल पर जिनिगी कटी? अबहीं त पच्चीस के उमिरि भइल, सँउसें, जिनिगी बाकिए बा अबहीं — ई सब सोचि-सोचि के उनकर मन अवरू बेयाकुल होखल जात रहे। ऊ अपना के आजु बेसहारा बेवालिस अनुभव करे लागल रही। लोगन्ह के समुझावला-बुझावला के उन्हुका पर कवनो असर ना होत रहे। उन्हुका दुखमें केहू संचहूं के साथ ना दे सक एह सांच के ऊ जानि गइलीं।

आजु चरन के किरिया ह। कवनो ढेरि तेआरी नइखे। अबहीं ले दुख के असर जइसे-के-तइसे बा। तबहूं देखला पर ई लागत बा कि कवनो महान आत्मा के अंतिम संस्कार होखत होखे। देश खातिर जे शहीद हो गइल। ऊ महान आत्मा त संचहूं के बाटे। एही से सराध में जे-जे आइल बा ऊ एगो सरधा भाव से भरल बा। ओकर ई श्रद्धा निस्संदेह ओह महान अत्मे के प्रति बाटे। सभ लोग मने-मने ओह आत्मा के प्रति सरधा से भरल बाटे।

देश के प्रधान मंत्री भी संवेदना-संदेश भेजले बाड़े। मेजर आ कमाण्डर इहां से भी संवेदना-संदेश आइल बा। एह सब से गांव में पण्डितजी के लोग गौरवशाली समझे लागल बा। ढेरि लोग त चिहा-चिहा के प्रधान मंत्री जी के चिट्ठि देखे खातिर आवत-जात रहत बा। लोगन का एगो अजब अचंभा हो गइल बा कि प्रधान मंत्री क चिट्ठी कइसन होला, तनी देखीं त ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

▲

राख

बिजेन्द्र लाल 'अनिल'

...सोनिया अइसन अगरबत्ती ह, जवना से अन्हार घर में अँजोर भले ना होखो, सुगन्ध त मिली जवना से अन्हार कटा जाई।

बनारस-इसपरेस, बिरत राति ला, जोर से धउगल चलि जात रहे। ेर जात्री लोग टाँग पसारि के फोंइ-फोंइ नाक बजावत रहन। जेकरा ुते के दबर ना मिलल रहे, ऊ इठले-बइठले झँपात रहें। बाकी संकर के आँखि सटते ना रही स। ुझात रहे, केहू उनुका आँखिन में क मुठी बालू झोंकि देले होखे। कवे से, माथा के ऊपर हनहनाइ चलत पंखा के, एकेटके देखत हत। साइत उनुका आपन जिनि-गिओ पंखे लेखा लागत रहे।

गते-गते संकर के आँखि के ोझा से पंखा टकसे लागल आ ोकरा जगह प एगो धुंधुराह चेहरा उकें लागल। पहिले त ऊ चेहरो ाचत रहे पंखे लेखा, बाकी दुइए ारि छन में ऊ अस्थिर हो गइल।

...आ, अब संकर देखत रहन पना लइकाईं के इयारिन सोनिया के, जेकरा संगे ऊ गाँव के अमराइन में, दिन-दिन भ आम के टिकोरहा बीनत रहन, जेकरा संगे इमिली के चिकन-चिकन, लाल-लाल टूसा जीभि चटकारि-चटकारि के खात रहन। जेकरा नरम कलाइन्ह में तरकुल के हरियर पतइन के कंगना बनाइ के पहिरावत रहन आ जेकरा पुतरी के बिआह में आम के मोला के बाजा झूमि-झूमि के बजावत रहन...।

लगलहीं सोनिया के ई तसबीर उनुका आँखि के आगा से खरकि गइल। अब ऊ देखत रहन चउदह-पनरह साल के एगो जवान लइकी के, जवन एगो पुरान-धुरान लुगा पहिरि के हाथ में कसँउजा के डोरि आ माटी के घइला लेके, दूनो जून ओह इनार प, जवन उनुका बइठका के आगा रहे; आवत रहे। कबो-कबो, इनार प सोनिया के अकेले देखि के, ओकरा से दू-एक बात बोलि लेत रहन। ऊहो मुड़ी नवबले कनखी से उनुका ओरे ताकि क, बात के जवाब दे देत रहे। केहु

खुलि के ना बतिआवत रहे। संकर डेरात रहन ओह समाज से, जवना के ठीका उनुका अइसन सैकड़न हजारन लइकन के बाप लोग ले ले बा, आ सोनिया डेरात रहे अपना बाबू के ओह सोंटा से, जवन नन्हियो मुटी गलती होखला प, ओकरा के छठिआरी दूध इआद परा देत रहे। ऊ समाज से ना डेरात रहे। असल में, समाज नाँव के कवनो चीजु एह दुनिया में होखेला, ई ऊ जानते ना रहे। गाँव घर के लोग सोनिया के बाबू के 'कसाई' कहत रहे, बाकी आजु तकले ऊ कबहूँ उनुकर सिकाइत ना कहले रहे।

····आ संकर के इआद परि गइल एगो बात। एक दिन, जेठ के दुपहरिया में, जब ऊ अपना कोठरी में, खाटी प आराम करत रहन, निगिचे से आवत, एगो मेंही बोली उनुका कान में परल। बोलिए से ऊ सोनिया के चीन्हि गइलन। खिरकी से झाँकि के देखलें,—ऊ उनुका परोसिया जोखू के केवाड़ी खोलावत रहे। लगलहीं केवाड़ी खुलल रहे। सोनिया भीतरी जा के दुइए-तीनि मिनट में बहरी आ गइल रहे। संकर ओकरा के बोलवले, त ऊ गते गते आ के खिरकी के पंजरा खाड़ा हो गइल रहे।

"एह दुपहरिया में काहाँ आइल रहलू हा सोना ?" ऊ पूछले रहन।

"बाबू सातू खाए बइठल बाड़न, नून ना रहल हा।" कहि के ऊ आपन अँजुरी, जवना में थोरे नू रहे, खिरकी के सोझा क देले रहे।

···संकर कुछ कहल चाह रहलें, बाकी सोनिया ठहरबे ना कइलि, लामा-लामा डेग डालत, अपना घर के ओरे चलि गइलि रहे।

साँझि खा, रोज नीयन, सोनिया के इनार के जगत् प ना देखि के संकर के थोरे अचरज भइ रहे। रोज-रोज, दूनो जून, ओकरा के इनार प देखे के ऊ आदी हो गइ रहन। अकसरहाँ, ऊ आपन किताबो बन क के, ताके लागत रह इनार का ओरे साँझ-फजिर। आजु सुरूज के डूबलो प जब सोनिया ना लउकलि, त उनुका बुझाइल, केहू घड़ी के चाभी उलूटा अँइठि देले बा आ ऊ अब कुछ दिन तकले ठी से काम ना करी।

·· अनिआसे, ऊ सोनिया के घर के ओर चलि गइलं। घर के आँगा, एगो टुटहा बँसखट प, सोनि के बाबू खेदू, गाल प हाथ ध

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equitrust Heritage Foundation, Jalgaon.

बइठल रहन। उनुकर साँस जोर-जोर से चलत रहे। उनुका मुँह से निकलल हावा अतना गरम हो गइल रहे, कि आगे परला प चहचह हरिअर पतई, पीअर हो जास। का जाने खेदू अइसन हावा नाक से खींचले रहन, किदो बढ़िया हावा उनुका फेफड़ा में जा के, करेजा के जलन से, अतना गरम हो के बहरी आवत रहे। संकर फरके से खेदू के देखि के लवटि आइल रहन।

दोसरा दिने, अपना घरे लँउड़ी के मुँहे सुनले रहन—"भगवान् दुसमनो के खेदुआ अइसन बाप जनि देसु। मुँह झँउसा, काल्हु सोनिया के अइसन मारि मरलसि जे बाछी उठि के पानिओ पीए लाएक नइखीं। " आ मरबो कइलसि बिना कवनो कसूर के। सुनलीं हाँ, काल्हु दुपहरिया में, जोखू किहाँ से, ओकरे खातिर नून कीने आइल रहे। जाए में तनी देरी हो गइल रहे। इहे ओकर कसूर रहे।

....ई सुनि के उनुका बाड़ा पीरा भइल रहे। ऊ सोनिया किहाँ जा के ओकरा के देखे के सोचलें। साँझि खा, गइलो रहन। खेदू ओह घरी कतहूँ, घूमे गइल रहन। सोनिया के मुअला-जिअला के कवनो फिकिर ना रहे उनुका जइसे।

संकर सोनिया के माथा प हाथ रखलें, त हाथ जरे लागल रहे; बुझाइल देर से जरत 'सिक्स्टी वाट' के बिजुरी के बौल प तरहथी परि गइल होखे।

"सोना…" ऊ गते से पुकरले रहन। सोनिया एक बे उनुका ओरे ताकि के आँखि मूँदि लेले रहे।

"कवनो दवाई ले आईं ?" ऊ पूछले रहन।

सोनिया मुड़ी हिला के बता देलसि जे कवनो काम नइखे दावा-बीरो के। ऊ ओकर बात ना मानल रहन। डाकडर किहाँ से दवाई ले आ के ओकरा के पिआ आइल रहन।

…घरे अइलन त सुनलें, उनुकर बाबू जी गरमात रहन—"हम त संकर से तंग आ गइल बानीं। अतना पढ़लें - लिखलें, बाकी दुनियादारी से अबहीं भेंटे ना भइल। भला खेदुआ के घरे गइला के कवन काम रहल हा। सोनिया ओकर बेटी ह, चाहे मारो चाहे काटो। दोसरा केहू के काँहे कपरबथी ले लेला ?"

…ऊ अँगना में ना जाके बइठका में चलि अइलन। उनुका

पहिले पहिल ई बुझाइल, कि जइसे-जइसे अदमी के दिमाग बढ़त जाला, ओकर दिल सँकेत होखत जाला।

ऊ सोनिया के अपना दिमाग से निकाल देबे के बहुत कोशिश कइले रहन, बाकी बेकार। असल में, ऊ सोनिया के अपना जिनिगी के पतवार बनावे के कबहूँ ना सोंचत रहन, एह से ना कि जे ऊ उनुका लाएक रहबे ना कइलि, ऊ ओकरा के पाइए ना सकत रहन। ओकरा के गरहन करे खातिर बूते ना रहे उनुका भिरी; बाकी ई त उनुका बुझाते रहे, जे सोनिया अइसन अगरबत्ती ह, जवना से भलहीं अन्हार घर में अँजोर ना होखी, बाकी अइसन बास त सँउसे घर में फएलिए जाई, जवना से अन्हारा में बिना दीया के रहि सकेला अदमी। ऊ ई ना चाहत रहन जे रातो दिन सोनिया के सुन्नर सूरति देखत रहीं, ना ईहे जे, अपना अँगुरिन से, ओकर नागिन अस करिया आ लमछर चोटिन के सुहुरावत रहीं। बाकी, ऊ ई त चाहते रहन, जे सालो भ प एक बे, ओकर गुलाब अइसन खिलल चेहरा, हरिनी अइसन चंचल आँखि, आ हँसिनी अइसन अलमस्त चाल देखे के मिलत रहे।

...गरमी के छुट्टी बीतला प, कवलेज में जाये के पहिले, ऊ एक बे सोनिया के देखले रहन। ऊ ओइसहीं गुलाब लेखा खिलल रहे। ओह घरी खेद के मारि के खुमार उतरि गइल रहे ओकरा देही प से। इनार के जगते प भेंट भइल रहे। ऊ ओह घरी अकेलहीं रहे।

"काल्हु हम चलि जाइब सोना?" ऊ कहले रहन।

"काल्हुए!"—उदास हो के पूछले रहे सोनिया जइसे संकर के ओहिजा रहला से ओकरा कवनो अइसन चीजु मिलि जात होखे जवना बिना ओकर हँसी-खुसी गाएब हो जाई। ऊ ओह चकोर लेखा रहे, जेकरा चनरमा के फरके से देखला में सुख मिलेला।

"अब, कहिया आइबि?"-सोनिया थोरे देर के बाद पूछले रहे।

"दसहरा के छुट्टी में।"-गते से कहले रहन संकर।

"का, हमरा बिआह में ना आइबि?"—हिचकिचाइ के पूछले रहे सोनिया।

"बिआह? का तोहार बिआह असवे होत बा?" अचकचाइ के पूछले रहन संकर। उनुका बुझाइल अचके में आ के, केहू दूनो गाल में चट-च

दू थप्पर लगा गइल। "का रउआ तइखे मालूम? बाबू त कहत रहन जे ओह अतवार के हम डोली प चढ़ि के चलि जाइब अपना ससुरा।"—सोनिया सकुचाइ के कहले रहे।

संकर कुछ ना बोलल रहन। बुझाइल जे उनुका आँखि के सोझा उजर धुआँ उड़त बा। का जाने ऊ धुआँ काहाँ से निकलत रहे, कवनो परोसिन के छप्पर से, कि दो केहू के धुआँइल करेजा से।

"त आवा ना आइबि हमरा बिआह के दिने?" --सोनिया आँखि फारि के तिकवले रहे संकर के ओरे। ओकर घइला अब भरि गइल रहे। ऊ अब इनार प से जाये के तेआरी करत रहे।

"कहि ना सकींला।"--मद्धिम आवाज में बोलल रहन संकर।

सोनिया, एक बे फेनु, उनुका ओरे ताकि के चलि गइल रहे। ओह चितवन में एगो टीस रहे, एक किसिम के लचारी रहे।

...तले गाड़ी सीटी दे देलस। संकर के धेआन भंग हो गइल। अब उनुका आँखि के सोझा उहे पंखा जोर-जोर से घूमत रहे।

ऊ एने ओने तिकवलन। देखलन, जात्री लोग आँखि मलत उठत रहन। कतना जाना खइनी पीटत रहन। केहू-केहू चिड़ियो-सिगरेट धरावत रहे। एगो यात्री से पूछला प पता चलल कि उनुकर इस्टेसन नजदीकाइल बा।

गाड़ी जइसहीं इस्टेसन प लागल, ऊ आपन अटैची ले के उतरि गइलन। अबहीं अन्हमुन्हारे रहे। ऊ 'वेटिंग रूम में चलि गइलन। टेबुल प अटैची रखि के ओकरा के खोललन। ऊपरे कागज के एगो डिब्बा रहे। ओकरा के खोललन। ओकरा में दू गो सोना के चूरी रही स। चूरिन के देखि के ऊ हरियरा गइलन।

...आजु सनीचर ह। साँझी खा सोनिया के बरिआत आई। ऊ एह चूरिन के सोनिया के दे दीहें—उपहार में। ...आ तब ओकर बिदाइयो भइला प उनुका कवनो किसिम के पीरा ना होई।...

ढेर देर तकले ऊ ओहिजा ना ठहरलें। गाँव के ओर चलि देलन सुरिआइले।

बीतल बात फेनु इआद परे लगली स। आँखि के आगा फेनु सोनिया के सूरति नाचे लागल।

अब ऊ अपना गाँव के एकदमे नगीच आ गइलन। थोरहीं दूर पर एगो पीपर के झंगाठ फेड़ रहे, ऊ ओकरा नीचे एगो अदमी के

गाल प हाथ ध के बइठल देखलन। थोरे अवरू नगीच अइलन त चिन्हलें— ऊ खेदू रहन, सोनिया के बाबू।

"खेदू चाचा, . तूहीं हव ?" ऊ पूछलें।

खेदू गते से आपन आँखि उठा के उनुका ओरे तकलन। ...आ लगलहीं, बिना कुछ कहले, मुड़ी झुका लिहलें।

"आजु तोहरा किहाँ बरिआति नू आवे के बा ?" संकर पूछलें।

"बरिआत ?...केकर बरिआत ?" खेदू अचरज के भाव अपना मुँह प ले आके पूछलन।

"सोनिया के बिआह होखे के नू रहल हा ?"—संकर सँकाइ के पूछलें।

खेदू कुछ देर ले चुप रहलें। संकर उनुकर मुँह निहारत रहलन, जवना प ना करून रस के छाप रहे, ना भेआनक के। ऊ एकदम सान्त रहे।

'ओकर बिदाई त ओही अतवार के हो गइल एहिजा से।"—खेदू गते से कहलें।

संकर के समुझ में खेदू के बात ना आइल। उनुकर चेहरा पनिआ गइल। त का सोनिया उनुका से झूठ बोललि रहे? का ऊ सरारत कइले रहे? ना, एह सभ ममिला में ऊ सरारत कइए ना सके। ... तब! आखिर, ई सभ गड़बड़ी हो कइसे गइल ?

खेदू बूझि गइलन संकर के मन के बात। कहलन "तोहरा ठीके खबर मिलल रहल हा संकर बबुआ। आजुए ओकर बरिआति आवे के रहल हा। बाकी ऊ ओही अतवार के, राति खा, कुछ खा के सूति गइलि, भोरे उठलि ना। हाला गुला कइला से कवनो फायदा ना रहे। हम दू चारि गो अदमी के साथे एही पीपर के नीचे ओकर लास जरा दिहनीं।"

खेदू एकदम अस्थिर हो के ई सभ कहत रहन, जइसे कवनो नवटंकी के रटल पाठ दोहरावत होखसु। जइसे सोनिया के मउअत एगो महमूली घटना होखे, ओह से खेदू के कवनो घटी नाफा ना रहे।

संकर अबकी पीपर के फेंड़ के जरी त तकलन। तनी-मनी रा लउकल। खेदू के बात प बिसवास ना भइल, बाकी, का जाने काहे उनुका बुझाइल जे, धरती आ सग दूनो डोलत बाड़न स, आ ऊ फेंड़ से गिरल, सूखल पतई लेखा, सहारा हो के, एगो अनजान दिस में, उड़ल जात बाड़न।

बगेन (शाहाबाद)
मार्ग—रघुनाथपुर

मन के पपिहरा

कुसुमेश

आधी-आधी रतिया पपिहरा पुकारे,
सपना के गलिया से नदिया किनारे—
आजा येही पारे आजा एही पारे !

उठि-उठि सुनतानी बोलिया चिन्हतबानी,
केहू के मिलनवाँ के दिनवाँ गिनत बानी
बेरि-बेरि रतिया खा संझिया सकारे।

प्रीति के जवनियाँ के थोरी रे उमरिया,
बलुही जमिनियाँ में कतनी बहरिया,
कहिया ले बेचीं ई सनेहिया उधारे।

पोंछि-पोंछि कजरा भइल पोथी अँचरा,
जहँ-तहँ सेनुरा कचोटे मोर जियरा,
विँदिया उमीदिया से भगिया विचारे।

लोरवे से हाय रे सेराले मोर छतिया,
बुझी ना बुझाता ई बिरहवा के बतिया,
उठे जनि खुशिया के डोलिया कुँआरे।

—o—

निगेटिव

जगन्नाथ

के बाटे दोस्त
अउर
के बाटे दुसमन अब
जानल-पहिचानल बड़ मसकिल
बा जिनिगी के
भीड़-भरल रस्ता में।
जेतना तसवीर आजु
अदिमी के लउकत बा,
सभ के सभ एक रंग
सभ के सभ एक बरन
अइसन बुझाता कि
असगिन निगेटिव
छितराइ दिहल गइल होखे
कवनो स्टुडिओ के
पॉजिटिब के पता कहाँ
केहू के बाटे अब ?
जानल-पहिचानल बड़ मसकिल
बा जिनिगी के
भीड़-भरल रस्ता में
के बाटे दोस्त आउर
के बाटे दुसमन अब

—मुगल सराय

पूस के जाड़

विश्वनाथ प्रसाद "शैदा"

भोर दुपहर में बीच इचिको बुझाइल ना,
लगले भइलि साँझि गरूओ गइल चर के।
घिरल अन्हरिया बा सून सभ डगरिया बा.
पछुआ बेअरिया सिसिकारत बा फरके॥
छवले बदरिया बा, झिथरे नहरिया बा.
धनि रे कठेठ जीव जाति मुसहर के।
टुटही झोंपड़िया बा, ना तन प लुगरिया बा,
पूस के गँवावसु जाड़ मुट्ठी में भर के॥

× × × ×

केहू त दलान बीच बिजुली के जगमग में,
मित्रन के मंडली जमा के देस भर के।
अपना बदन प डाल, गुल गुल दुलाई साल,
होत बा निहाल मजा लेत बा इनर के॥
भरल पियाली बा करत जात खाली बा,
केहू उहाँ से टरकवलो ना टरके॥
पूस के गँवासु जाड़ तनल मुसहरी तर,
सुघर पलँगिया पर ठाट से पसर के।

—डुमराँव, शाहाबाद

जिनिगी बहार बा

"भरत चतुर्वेदी"

जिनिगी में उनका बहार बहार बा।
बाप बा महतारी बिया,
भाई बहिन पूता धिया,
हीत नाता, गोतिया, गोहार बा॥
रंग बा जवानी बाटे,
मुँहवा में पानी बाटे,
झनके ला तार उनकर जिनगी सितार बा॥
माल बा खज़ाना बाटे,
एको ना बहाना बाटे,
साने सौखिनवाँ में बेड़ा उनकर पार बा।
आस पास गावे गीत,
धरती पर चारो ओर उनकर सिंगार॥

भगवान राम के गुरु धाम

बक्सर

'कमला प्रसाद मिश्र विप्र'

भोजपुरी के जानल-मानल नाटककार, कवि आ शबदकार। इतिहास में विशेष रुचि।

भारत का नामी स्थानन में भगवान राम का गुरुधाम बक्सर के भी वड़ा आदर के स्थान बा। रामचन्द्र जी एही स्थान पर सिच्छा पाइ के अनार्ज संस्कृति पर आर्ज संस्कृति के फिर से स्थापना कइले रहन आ रामराज का नेंव के पहिली ईंट भी रखले रहन एही अपना गुरुधाम बक्सरे में। सतजुग में एह स्थान के सिद्धाश्रम, त्रेता में बामनाश्रम आ द्वापर में वेदगर्भा कहल जात रहे। एह जुग में पहिले ई स्थान 'व्याघ्रसर' कहात रहे, बाद में मुसलमानी राज में बक्सर कहाए लागल।

बक्सर गंगा का किनार पर बसल बा। गंगा जी के महिमा त अपार बड़ले बा, बाकी इहां का सरोवर तीर्थ के भी रोचक बरनन ग्रंथन में आइल बाटे। वेदसिरा नाम का ब्राम्हन का कुष्ट रोग हो गइल रहे। ऊ ब्राम्हन रोग मुक्ति खातिर तीर्थ आ आश्रमन में भटकत रहन। गंधमादन पहाड़ पर नंदी जी से उपदेश मिलल जे सिद्धाश्रम में सरोवर तीर्थ के सेवन कइला से शरीर सोवरन हो जाई। सचकी में बेदसिरा ब्राम्हन के बघमुहाँ (व्याघ्रमुख कुष्ट) से बक्सर में मुक्ति मिलल। बक्सर में ८० सरोवरन के बरनन मिलेला। अनघा सरोवर त गंगा का गोद में पइठि गइलन। कहे सुने खातिर जे कुछ बांचलो बाड़न से एह विकास जुग में घरिए खेइ रहल बाड़न स।

बक्सर के इतिहास पुराने जुग से झलकत चलि आवत बा। एह जुग के इतिहासकार लोग एहिजा का ऊँच पहाड़ मतिन उतान टिला से झांकत आ झरत बत्तुसन पर बिचारे के निजगुत बेंवत नइखन पाइ सकल। बाल्मीकि के कथन बाइ जे चरित्र बन का बारे में रामचन्द्र जी का पुछला पर बिश्वामित्र जी बतवले बाड़न जे 'पहिले इहां मलद आ करुष नाम के दुइ जनपद रहे। अब इहां

असुर लोगन के अखंड राज बाटे।

बक्सर गंगा किनार, हर साल धार से धोआइ के नया-नया अनमोल बस्तुस देखावेला। आकी बन कुसुम मतिन ऊ फुलात आ कुम्हिलात जाला। हवन कुंड के जरल जव, पकावल बड़हन गोला, कई तरह के ताड़, बान के फल आ अवरू अनेकन्ह तरह के सामान पटना जादोघर आ विश्वामित्र आश्रम वगैरह स्थानन पर धइल बाड़े स। बक्सर के किला मध्य जुग में बनल रहे। लोग कहेलन जे एह में बहुत सुरंग आ दाम भी बाटे। किला के खुदाई कइल एह से कठिन बाइ जे बक्सर में अभी तक छलका के प्रबंध नइखे हो सकल।

एह जुग का इतिहास में बक्सर के विचित्र हाल रहल बा। ई कबो मगध राज में रहल बा आ कबो काशी राज में। एहू जुग में बक्सर का इतिहास के ठोस स्थान बाटे। बक्सर में भारत के तीन भाग्य निरनायक संग्राम हो चुकल बा। इतिहासकार श्री नेत्र पांड़े के कथन बाइ जे सन् १५२९ में ६ मई के बक्सर में बाबर अफगान लोगन के परास्त कइलन आ ओह लोगन के घांचल खोंचल दम के बेदम कइ दिहलन।

सन् १५३९ ई० में बक्सर (चौसा) का मैदान में शेर खाँ आ हुमायूँ से कठिन संग्राम भइल रहे। हुमायूँ का हाथ में तीर लागते उनकरि सेना छितरा गइलि। ऊ बेचार घोड़ा साथ नदी में कूद गइलन। घोड़ा डूब के मर गइल आ उनका प्रान उबरल भिश्ती का मशक का सहारे। उहे संग्राम शेर खाँ के 'शाह' बनाइ के सिर पर राज के चमकत ताज रखले रहे। ओह विजय में शेर शाह बावन एक जमीन चरित्र बन में संत मह लोगन के माफी में देले रहन। सन् १७६४ ई० में ईस्ट इंडिया कं का सिपाहिन का साथ मीरकासिम शाहआलम आ सुजाउद्दौला के संगठित दल से घमसान लड़ा भइलि रहे बक्सर में। ओहिजे से मुसलमानी राज के पतन आ अंग्रे राज के विकास भइल जवन मद्भागत का द्वादश स्कंध में बहु पहिलहीं से लिखल बाटे। अंग्रे राज गुरुण्ड) का बाद मौनिस रा के बरनन बाटे ओह पुरान में जव राज एह घरी चल रहल बाइ।

सन् १८५७ में बक्सर के रा महल कँवर सिंह का सरदारन

के गुनावट घर रहे। विलियम साहेब लिखले बाड़न जे बक्सर आ भोजपुर में सतरहवीं आ अठारहवीं सदी में सैनिक दफ्तर रहे। ऊ आगा लिखले बाड़न जे अठारहवीं सदी में अंग्रेजी राज काएम भइल पर भी बक्सर सजहन सैनिक दफ्तर रहे। सन् १९१७ में एही बक्सर में शाहाबाद आ उत्तर प्रदेश का पूरबी जिलन के कुछ देश प्रेमीं लोग नवजुवक संघ के स्थापना कइले रहन जवना के सराहे जोग काम भइल रहे स्वराज अंदोलन में। सन् १९४२ में बक्सर एस० डी० ओ० साहेब तिरंगा कान्ह पर धइ के नारा लगवले रहन 'बंदे मातरम' के। एहिजा के लोग सदईं से समर खातिर लोहा रहल बाटे। एहू जुग में लाठी, भाला, तीर तलवार का साथ तोप पर भी आपन खास अधिकार एह छेत्र के लोग रखले बाटे। अंग्रजी राज में जोहि के बक्सर के लोग तोप पर राखल जात रहन जेकर बक्सरी का नाम से बरनन कई ठहर आइल बा। अभी हाल में बक्सर प्रखंड का चौसा गाँव के एगो अमर सिपाही के माता माता कहले रहली हा जे 'बेटा देश के मरजाद पर अपना के बल चढ़ाई के लाज राख लेलस'।

बक्सर पंचकोश के भी बड़ा रोचक बरनन पुरान में पावल जाला। अगहन वदी पंचमी से पंचकोश जात्री अहिरवली में वास करेलन। उहाँ से नारदाश्रम (नदांव), भार्गवाश्रम (भभुअर), उद्दालकाश्रम (उनुबांस) होत पांचवा दिन जात्री लोग चरित्र-बन बक्सर में पधारेलन। हजारन हजार लोग ओह दिन ओहिजा बनभोज करेलन। एगो विराट मेला हो जाला बक्सर में से दिन। चैत संक्रांति, चैत बारुनी, रामनौमी, गंगा दशहरा, विजय दशमी आ माघी अमावस के भी बक्सर में मेला लागेला। गंगा दशहरा आ, माघी अमाबस आ चैत रामनौमी के माल मवेसी के भी मेला लागेलन स।

बक्सर में मठ मंदिर त बहुत जादे बड़ले बाड़न स, इहाँ मुसलमान वंधु लोगन के मसजीद, इसाई बन्धु लोग के गिरजा का अलावे एगो स्थान सिक्ख साथी लोगन के भी बाटे। हिन्दू भाई लोग के रामेश्वर स्थान, सिद्धेश्वर स्थान, चित्ररथेश्वर स्थान, वामनेश्वर स्थान, सोमेश्वर स्थान, गौरी शंकर स्थान, लक्ष्मी नारायन स्थान, बरारोहा स्थान

मदोत्कटा देवी स्थान आ हनुमान स्थान संदई से नामी ह।

बक्सर में वेदसिरा आश्रम, बिश्वामित्र आश्रम, स्वामी सहजानंद सरस्वती आश्रम आ वीर सेनानी बा० कुंवर सिंह आश्रम नाम के चार आश्रम बाड़न स। नगर में गंगा तट पर पांच पक्का घाट आ इहां तीन धर्मशाला बा। छोटहन, बड़हन बिद्यालय का अलावे एगो महाविद्यालय भी बाटे। साहित्यिक संस्थन में तुलसी साहित्य संसद, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी साहित्य मंडल के आदर के स्थान बा। नगर में पांच पुस्तकालयन में सरस्वती पुस्तकालय एगो नमूना बाटे। इहां दुइ गो वाचनालय का अलावे मनोरंजन खातिर दुइ नाटक संघ भी बा। खेल के मैदान का अलावे बेराम हेराम का दवा बीगो खातिर एगो अस्पताल आ लटत बुड़त एगो खैराती दवाखाना भी चलत बाटे। टेंट टोवे वाला दुइगो सिनेमा घर भी बक्सर में डेरा डाल चुकल बाड़न।

बक्सर बा बिहारे राज में आ पार में अगर कगर उत्तर प्रदेश के गाजीपुर आ बलिया सटले बाटे। बक्सर में सन् १८६९ ई० में नगरपालिका के स्थापना भइल। गरीब रहला का कारन नगरपालिका का ओर से सजहन बिकास बक्सर के ना हो सकल। इहां का बड़की जेल का बत्तुस के विदेश तक बड़ाई बा। सब कुछ रहते इहां आज तक गंगा नदी आ कर्मनाशा पर पुल ना बन सकल। छलका आ पर्जटक केंद्र खातिर कहिए ले लोग टक लगवले बा। एह घरी त तन-मन आ धन से एह छेत्र के लोग राष्ट्र का सुरच्छा खातिर कंधा भिड़वले बा, रहल बात आगा के। ओह में बिकास विधाता लोग का इचिको एनहूँ आँख उठावे के चाहीं जेकरी ओर बक्सर आतुर होइ के धीरज आ संतोख का साथ ताकत चलि आवत बाटे दिनन से।

बक्सर, शाहाबाद

भोजपुरी साहित्य में विज्ञापन दे के आपन बिक्री बढ़ाईं।

लोक कथा

बासी भात के मजा

विश्वनाथ दुबे

बहुत पहिले के बात ह कि एगो बूढ़ राजपूतिन रहली। ऊ बिधवा हो गइल रही, बाकी उनका एगो लरिका रहे। गरीबी हालत में ओह लरीका के पोसली। कबहीं-कबहीं एके जून के बनावल भात दूनो जून चले। बासी भात में भी लोग का बड़ा मजा मिलत रहे। घर रहे, घर में बहुत पुरान इनार रहे। ओकर पानी बड़ा ठंढा रहत रहे। कुछ दिन का बाद जब लरिका कुछ सेयान भइल त नोकरी करे खातिर घर से चल देलस। कुछ दूर गइला पर एगो मुरगा देखलस। चहलस कि मुरगा ध के घरे लौट जाईं और शोरवा बना के खा के तब फेरु नोकरी करे जाइबी, बाकी टांग पकड़ते मुरगा उड़ि गइल और ई लटकले रहि गइले। ओहीजे एगो कुटिया में साधु के संगे रहे लगले, चउका बरतन करे लगले, खाएके मिले लागल। नगीचे एगो राजा रहत रहन। उनकर लरिका बड़ा कुरूप रहे। तिलकहरू आवस, आ फिर जास। ऊ राजा एक दिन कुटिया में गइले। देखले कि एगो बड़ा सुन्दर लरिका ठहरल बा। लरीका के ५००) रुपया देके भारा पर ले गइले कि बिआह क के तहरा के छोड़ देबि। तहरा खाली ५०० रुपया मिली। ओही लरिका के देखा के तिलक-बिआह सब भइल। बरिआत में दूनो लरिका गइले स। एगो राजा वाला और एगो भारा वाला। भारा वाला लरिका के केहू पानियो पीए के ना पूछल। बिआह का बाद जब कोहबर में गइल त कहलसि कि हमरा बड़ा भूख लागल बा। राजकुमारी छतीस तरह के व्यंजन ले अइली। खा के लरीका कहलस कि एह में बासी भात के मजा बा। आ जब बनावल पानी पिअलस त कहलसि कि एह में हमरा इनार के पानी के मजा बा। राजकुमारी सोचली कि ई बहुत धनी राजकुमार बा। सबेरे जब बिदाई भइल त राजकुमारी के डोली के संगे दू गो और डोली रहे एगो भारा वाला लरीका के

आ दोसर कुरूप राजकुमार के। जब वन में डोली गइलीस तब भारा वाला लरिका पेसाब करे कुछ दूर गइल। चाहत रहे अपना घर जाये के तब तकले उहे घोड़ा (मुरगा) दिखाई पड़ल। सोचलसि कि घर घोड़ा पैदल चले, घरे गाड़ी खा तीन। थाती धरे दमाद घर, जग में भकुहा तीन। बस जाके मुरगा के टंगरी पकड़ लेलस आ अपना घरे चली गइल। पोसाक बढ़िया रहले रहे आ ५००) नगद माई के दे देलसि। राजकुमारी कुरूप राजकुमार से पुछे लगली कि ऊ काँहा गइले। उ कहले कि तू हमरे हउ। रानी सवाल कइली. त उनका जबाब ना मिलल कि कुछ कइसु राजकुमारी घरे लौटि गइली आ बाप से कुछ बात कहि के कुछ सिपाही आ लौंड़ी के ले के गाँवे गाँवे पता लगावे लगली कि केकरा संगे उनकर बिआह भइल बा। आपन बीतल बात जे सुनाई ओकरा के बकसीस दिआई। पूछत पूछत ओह गाँव में गइली। ऊ लरिका भेंटाइल आ। आपन सब बात कहलसि, राजकुमारी ओही घर में गइली। अपना सासु के गोड़ लगली आ अपना नइहरे से धन मंगाके घर में रिधी सिद्धी सब कर देली। लरिका के भाग लौटि गइल।

माध्यमिक विद्यालय, महुआँव,
शाहाबाद।

* * *

अधिक सफेद और चमकीली धुलाई के लिए

स्पेशल जागृति बार साबुन

और

जागृति साबुन

अपने पास के दूकानदारों से खरीदें।

निर्माता

केशरी इन्डस्ट्रीज, आरा

यहाँ 'प्रकाश देव धूप' भी तैयार होता है। एक बार परीक्षा करें।

चिट्ठी मिलल

दुर्गाशंकर प्रसाद सिह, दलीपपुर ।

भोजपुरी-साहित्य के जे महान अभाव के पूर्ति के भोजपुरी के धेय ह बाकी साहित्य जगत के 'नया बोध' के भाव त पकड़ल जाय ओसहीं हमनीं के और धेयन का साथ प्रधान धै होई कि साहित्य के जतना अंग एम. ए के कक्षा वास्ते बाड़न स तवनन के साहित्य जुटावल आ लिखल भा लिखवावल आ छापल जाय। जवना से भोजपुरी का पास एम. ए. में पढ़ावे के सब सामग्री प्रस्तुत हो जाय। जवने के एक महान अंग के पूरा करे के धे राउर भोजपुरी साहित्य के घे भी बा। बधाई कोटि कोटि बधाई। समहुत बहुत नीमन भइल। मधुकर के 'नया संसार' मथेला कहानी से भिन्न बिलकुल भिन्न। सुभकर महान सुभकर?

हमनी के एक धेय ई भी मुख्य बा कि भोजपुरी गद्य के पाठ और लेख में एकरूपता स्थापित कइल जाय जवना से भोजपुरी के साहित्यिक भविस्य में समानता आ जाय आ सरवमान भाखा के रूप अपना भोजपुरी के ही आप अपना साहित्य सिरजना हो।

भोजपुरी-साहित्य पढ़लीं। मनन त कइलीं। मन गद्‌गद हो गइल। मन चाहल कि राउरे कलम चूमि लिहीं आ चूमि लिहीं और लेखकन के "नयी कहानी'. 'संत कवि देवाराम' 'नयी कविता के 'भाव बोध', 'चारि गो कविता', भा कहानी के लेखक के।

सचमुच 'भोजपुरी-साहित्य' भोजपुरी साहित्य के नयी सैली के बोध के आचायन साहित्य के सोध के प्रतीक पत्रिका बा।

आपन कथ

बनारस के कुछ नामजद डाक्टर लोग के भोजपुरी साहित्य के बढ़ती से थोड़े चिन्ता भइल रहे कि एह से हिन्दी के विकास में बाधा आई, कि हिन्दी के समस्या अवरू बढ़ि अवरू बढ़ि जाई, कि देश के भावात्मक एकता के राह में रोड़ा आ जाई।

लोक भाषा आ जन भाषा के आपन महत्व आ स्थान बा। ओकरा के नकरला से काम ना चली चली। काँहें कि एह भाषा के आधार ओकर संस्कृति बा, जवना के रूप ओही भाषा में उभर सकेला। भोजपुरी संस्कृति के आपन विशेषता आ स्वरूप बा। ऊ अलगे उगल रहेला। ओकर अभिव्यक्ति जनपदीय उपन्यास का कहानी में बड़ा सतही ढंग से उभरल रहे। बाकी अब त ऊ खतमो हो गइल। एह स्वरूप के उजागर कइल जरूरी बा। काँहे कि भोजपुरिआ कहीं जासु आपन विशेषता से साफे चिन्हा जाले। अइसना संस्कृति के छोड़ल ना जा सके। एह से ओकर अभिव्यक्ति साहित्य में होई आ बड़ा गहिड़ आ तेज ढंग से होई। भोजपुरी के जाये के कवनो सवाले नइखे।

भोजपुरी हिन्दी के सहयोगिनी रहलि आ आगे भी रही। ओकरा में कवनो हठ आ द्वेष नइखे।

भोजपुरी के अनेक शब्द आजु हिन्दी में चमकतारे स। यदि लोक भाषा ना उठी आ बढ़ी त हिन्दी के शब्द भण्डारो में बढ़ती ना हो सके।

ऐसे हिन्दी बढ़ो, बाकी भोजपुरी के जाँतल मति जाउ। ईहो बढ़ो। एही से दूनो भाषा आ साहित्य में गति आई।

संरक्षक

१. श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, मैनेजर, वनवार कोलियरी, पो० कूजू जि० हजारीबाग।
२. श्री शिवकुमार त्रिपाठी, महाशक्ति आयुर्वेद भवन, तरी मुहल्ला, आरा
३. श्री शिवशंकर मिश्र, एडवोकेट, एम० पी० बाग, आरा (शाहाबाद)
४. श्री जीतन प्रसाद तिवारी, ग्राम तरी मझगाईं, पो० वेलहर, वाया सुलतानगंज, जि० भागलपुर।
५. श्री रामसुन्दर त्रिपाठी, मु० घुरहूपुर, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद।
६. श्री जगतानन्द, एडवोकेट, एम० पी० बाग, आरा (शाहाबाद)।
७. श्री सत्यनारायण लाल, व्याख्याता, राज्य शिक्षा संस्थान, पटना-६।
८. श्री रामखेलावन सिंह, मैंनेजिंग डाइरेक्टर, श्रीकृष्ण आयुर्वेद भवन (प्रा०) लि०, आरा।
९. श्री रामदेव सिंह, ऐडवोकेट, आरा।
१०. श्री रामरूप उपाध्याय, करनामेपुर, परसौंडा, शाहाबाद।
११. श्री ब्रह्मेश्वर ओझा, बँसवर, रघुनाथपुर, शाहाबाद।
१२. श्री ऋषिकेश तिवारी, मु० पो० निमेज, शाहाबाद।
१३. श्री ईश्वर दयाल दुबे, मैनेजर, टाटा मालकेरा कोलियरी, मु० पो० मालकेरा (धनबाद)।
१४. श्री दामोदर प्रसाद बैजनाथ गुप्त, मेन रोड, झरिया।
१५. श्री चक्रधारी सिन्हा, ऐडवोकेट, बक्सर (शाहाबाद)

विशेष चन्दादाता

१. श्री केशव त्रिपाठी, मु० एकडार, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद।
२. श्री प्रधानाध्यापक, मा० विचकनी, पो० दल्लपुर, जि० शाहाबाद।
३. श्री शिवपूजन राम, मु० एकडार, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद।
४. पं० हरिहरनाथ उपाध्याय, वैद्य, काशी रसायनशाला, के $\frac{२०}{६१}$ राजमंदिर, वाराणसी।
५. श्री विश्वेश्वर प्रसाद, बक्सर, शाहाबाद।
६. श्री रामसूरत मिश्र, तरी-मँझगाँई, वेलहर, भागलपुर।
७. श्री कैलास प्रसाद गुप्त, विकास पदाधिकारी, जीवन बीमा निगम, आरा।

विशेष चन्दा ।

८. श्री जगन्नाथ चौबे, जवहीं, हठीलपुर, शाहाबाद ।
९. श्री बलभद्र सिंह पारस सिंह, लाल बाजार, झरिया ।
१०. श्री विश्वनाथ प्रसाद राजेन्द्र प्रसाद, मेन रोड, झरिया ।
११ श्री सूरजनाथ सिंह पारस सिंह ऐण्ड कंपनी, झरिया ।
१२. श्री सकलदेव सिंह ऐण्ड कंपनी. झरिया ।
१३. श्री लखन लाल अर्जुन प्रसाद, लाल बाजार, झरिया ।
१४ श्री बचन साह, बोरापट्टी, झरिया ।
१५. श्री दिगविजय चौबे, मु० पो० गोसाईपुर, शाहाबाद ।
१६. श्री ऋषिकुमार मिश्र, मु० पो० रघुनाथपुर, शाहाबाद ।
१७. श्री रामदेव मिश्र, चन्द्रपुरा, हठीलपुर, शाहाबाद ।
१८. श्री यदुनन्दन मिश्र, खैरा कोलियरी, पो० कुसुण्डा, धनबाद ।
१९. श्री कुमार दीनानाथ सिंह, बड़हरा, गोड्डा, सं. परगना ।

देबी शक्ति कार्यालय का

दर्दसन (रजिस्टर्ड)

वात व्याधि के लिये सुप्रसिद्ध तैल। शरीर के किसी भी अंग का दर्द फौरन दूर हो जाता है। गठिया के दर्द से पीड़ित रोगियों के लिये तो यह महोपकारी तैल है। इसके मर्दन से हाथ-पैर का दर्द अंगों का जकड़ जाना, सुन्न हो जाना झिनझिनी लकवा, चोट, मोच आदि रोग दूर हो जाते हैं। पशुओं को भी दर्द में फायदा होता है।

गोपाल घुटी (रजिस्टर्ड)

यह दवा बच्चों के होनेवाले रोगों जैसे—दांत निकलते समय की तकलीफ, कय, हरे पीले दस्त का होना, सर्दी, खांसी, बच्चों का सूखा रोग, दिन पर दिन कमजोर होते जाना, हमेशा बुखार रहना आदि रोगों को दूर कर बच्चों के शरीर में खून, बल आदि को बढ़ाकर बलवान तथा पुष्ट बनाने में सर्वोत्तम है।

हर जगह विक्रेताओं की आवश्यकता है

देबी प्रसाद केसरी, रजि० वैद्य
देबी शक्ति कार्यालय, ब्रह्मपुर (आरा)

श्री लक्ष्मण त्रिपाठी व्यवस्थापक द्वारा
श्री सरस्वती प्रिंटिंग वर्क्स लिमिटेड,

भोजपुरी साहित्य

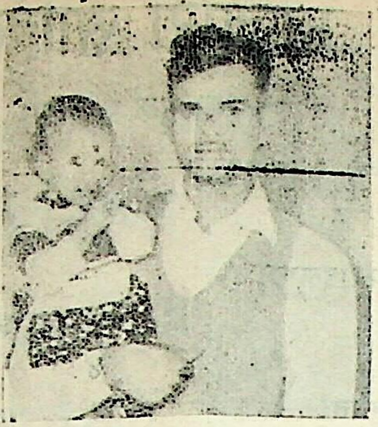

स्व० श्री गंगाशरण सिंह जी

इहाँ के महुआर (ब्रह्मपुर) के श्री केशव सिंह जी के पुत्र रहीं। इहाँ के कश्मीर के मोरचा पर दुश्मन के संगे लड़त खा वीरगति पवलीं। २७ अगस्त, १९६५ के २ बजे दिन के इहाँ के दुश्मन के गोली लड़ते खा लागल।

हम भोजपुरी परिवार के ओरि से भोजपुर के अइसन सरहँग सवाँग के देश-सेवा पर गरब करतानी आ ऊहाँ के प्रति भोजपुरी परिवार के ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करतानी।

—संपादक,

अइसन शहीद भोजपुरी जवानन के फोटो आ परिचय अगिला अंक में छापे खातिर भेजीं सभे।

आगि त भराइल बा सतफुट्टा लउरी में

गणेश दत्त 'किरण'

हमरा से जान जो बचावे के होखे त
जाइके लुकाजा तू झाँपी आ दउरी में।
नाही त खीस जो बरइब अन्हेरे त
खेदि के धुलाटबि हम पेकिंग का सउरी में।
लइका के ह ना चुलबास रार के नाधल
खो द मत माटा के झोक सहजबउरी में॥
अबहीं जवानी बा, जोस बाटे, होस बाटे,
आगि त भराइल बा सतफुट्टा लउरी में।१।
भारी बेहाया बा, इचिको ना दाया बा
झूठे के रगरा ई नधले अकारन बा।
कइले बखेड़ा बा, लमहर लहेंड़ा बा
एक सूरा भेंड़ा बा, जीव लुकवाढ़न बा।
अजबे बेलूरा बा, पेंपा बा, छुछुमा बा
बाटे लतखोर, खूब वंश के उजारन बा।
जरत देखि डाही बा, इरिखा से घाही बा
कइसन बहेंगवा के टाटी कुरुआरन बा।२।
अबले परहेजलीं अब अधिका परहेजबि ना
छान्ही के तोहरा तरायल उतारि लेब।
चलनी बनवल तू मार-मार गोलन से
मुकुट फेनु माता का माँग के सँवारि लेब।
गभ क मत अतना। किरासन का ढिबरी अस
फार देब लाद आँत दाँतन ओदारि लेब।
सनकी अस बात कहीं हरुस जो कढ़वल त
राख में लपेटि जीभ सट्ट दे कबारि लेब।३।

राम जस रावन पर, आग जस लावन पर
तिरपन जस बावन पर चोल्हि जस मीन पर।
बाघ मृगछौना पर, पहलवान बवना पर
पुरहर जस पवना पर चानी जस टीन पर।
नन्दलाल नाग पर, सीतापति काग पर
गंगा जल आग पर, खदूधुक जस रीन पर।
बिनता सुत साँप पर, पुन्न जस पाप पर
हिन्द देस ओसही चढ़बाँक बा ई चीन पर।४।
पपरी के चिखल सवाद खूब अतना दिन
मुँह में का पपरी के ओठ पर पराइब जा।
रहल परसाद पर रहब परसाद पर
काढ़ा निकालि हाँथ काढ़ा पहिराइब जा।
पाँव में रुपहुला जहाँ पाँव में रुपहुला तहाँ
कंचन के भीत ढाहि मीत बनवाइब जा।
सोना हराम बा इ सोना हराम बाइ
चीन के चबइलीं जा चीन के चबाइब जा।*

—बक्सर, शाहाबाद।

---

*(कवि के जल्दिए छपेवाला संग्रह 'हिमालय गोहरावत बा' से),

कन्नौज सुगन्ध भण्डार
धरमन चौक, आरा।
में
हर तरह के इत्र, तेल आ जर्दा खातिर पधारीं। एजा मस्ताना सेंट मिलेला।
एक बेरि परीछा करीं। एकरा के सूघि के मन मस्त हो जाई।

गीत

जगत नारायण पाण्डेय शास्त्री

आव, सीमा क सनेसवा हम सुनाईं सजनी ।
पाक क साहंसाह अयूब
चीन से साँठि-गाँठि कइ खूब,
कइले अचके में देसवा पर चढ़ाई सजनी ।
चढ़ि के दुस्मन सिर पर आइल
देखि, सास्त्री कहले घबराइल,
चौधरी रोक जवन होई देखल जाई सजनी ।
सेना गइली सब बटुराय
गोली चले धाँय-धाँय,
केतना तूपक गोला तोहरा के गनाईं सजनी ।
गोली बरसे मूसरधार
केतने बहिके धइलें पार,
देस के जै-जै कइ हम आगे बढ़ल जाईं सजनी ।
दुस्मन फेंकलसि अचके बम
एनी तनिको ना रहे गम,
बरल रोस मारि के दिहलीं जा गिराई सजनी ।
आखिरी सबका इहे पसन्द
लवटि के चीन जो परिहें फन्द
त चीनी चीन पाक नमकीन बनाइ उड़ाईं सजनी ।
आव सीमा क सनेसवा हम सुनाईं सजनी ।।

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

शरद

सीतासुन्दर देवी 'प्रियंवदा'

आइल शरद् सुहावन सजनी !
चम चम चमकि चान मुसकाइल,
खेत-खेत में धान फुलाइल,
फूटल कास लुभावन सजनी !
लगा लगा आँखिन में काजर ॥
खँड़लिच बा उतरल आरी पर,
घर - आँगन मन-भावन सजनी !
आइल सरद सुहावन सजनी !
पूजा पहुँचल, छठ नियराइल,
गोधन से हियरा हुलसाइल,
सुखदियरी सरसावन सजनी।
आइल शरद् सुहावन सजनी !

ग्राम—डीहरा, पो० मनीअच, शाहाबाद।

* * *

सँवलिया गाता !

महेश्वर प्रसाद

मोहनी मुरतिया मुसुकाता; सँवलिया गाता !
साँवली सुरतिया रंग,
मोह तरुए अंगे अंग,
देखि देखि जियरा जुड़ाता; सँवलिया गाता !
एने ओने आगा पाछा,
सगरे से लाग आछा,
जेने देख ओनिये भेंटाता; संवलिया गाता !
मुँहवा बा मन हरले,
कतनो लुकइला परले,
लाखन के भीड़ में चिन्हाता; संवलिया गाता।
टेढ़ टाढ़ चाल, बाल,
आँख, नाक, ओठ, गाल,
सुतला प सपना बनि जाता; सँवलिया गाता !

भरौली, शाहाबाद।

जइसन देवता ओइसन पूजा

डॉ० श्रीधर मिश्र

आजु जब दुनिया-संसार के झूठ-प्रपंच, लड़ाई-झगड़ा, मारि-पीटि देख तानी, त मन, बुद्धि, विचार तीनों चकरा जाता। साफे लउकत बा कि कुल्हि चोरवा एकवटि जात बाड़न स आ साधु अकेले माला जपत रहि जात बाड़े। रउरा कहबि कि काहें भुलात बानीं कि चोर-चोर मउसियाउत भाई होले! ठीक बा? बाकिर तबो चोर चोर ह; आ साधु साधु। एके कबो भुलाए के ना चाहीं, नाहीं त दुनिया-संसार से रहलो-सहल सचाई उठि जाई। ई कुल्हि हम सोचते रहनीं कि हमार दिमाग भोजपुरी कहाउतिन के ओरि चलि गइल, जवना में जीवन के अनुभव, सीख, सार भरल बा। देखीं त, ऊ कुल्हि ताड़ी ठोकि-ठोकि लड़े खातिर ललकारत रहलन स। कहत रहलन स कि मरद होख त अब ना पटकि द? आरे पटके के के कहो, अब तू हमरा पीठि में धुरिए ना लगा द।

अमेरिका के राष्ट्रपति जॉनसन साहेब से एगो आदमी पूछलसि कि रउरा एतना चाल्हाक कइसे हो गइनीं? उहाँ का कहनी कि दोसरा के बेवकूफी, बुरवकाही से। ऊ अदमिया फेनु पूछलसि कि ई कइसे? 'आरे ओइसहीं, चाल्हाक आदमी दोसरा के बुरवकाही से शिक्षा लेला आ बुरिबक अपना बुरिबकाही से, कुछु दे के। आ जे एकरो पर ना सीखे ला ऊ महा बुरिबक ह।" ईहे सिखवा, शिक्षा, चाल्हाक बने के गुर कहाउतिनि में भरल रहे ला, जवना से आदमी, आ देस दूनों के कल्यान हो सकेला।

भोजपुरी में कहल जाला कि पानी पिये छानि के, आ दोस्ती करे जानि के। अकुतइला कोंहार लेखा कवनो चीजु से माटी ना खोने के। नाहीं त ओकर हालि ऊहे जानी; आ हमार देस जानल बिना जनले-सुनले दोस्ती कइला के। जब हमरा देस के आजादी के लड़ाई चलत रहे त हम दुनिया-यार सभका खातिर आजादी माँगत रहनी। हमनी के मददि से कइगो देसो आजाद

शरद

सीतासुन्दर देवी 'प्रियंवदा'

आइल शरद् सुहावन सजनी !
चम चम चमकि चान मुसकाइल,
खेत-खेत में धान फुलाइल,
फूटल कास लुभावन सजनी !
लगा लगा आँखिन में काजर ॥
खँड़लिच बा उतरल आरी पर,
घर - आँगन मन-भावन सजनी !
आइल सरद सुहावन सजनी !
पूजा पहुँचल, छठ नियराइल,
गोधन से हियरा हुलसाइल,
सुखदियरी सरसावन सजनी ।
आइल शरद् सुहावन सजनी !

ग्राम—डीहरा, पो० मनीअच, शाहाबाद ।

• • • • •

सँवलिया गाता !

महेश्वर प्रसाद

मोहनी मुरतिया मुसुकाता; सँवलिया गाता !
साँवली सुरतिया रंग,
मोह तरुए अंगे अंग,
देखि-देखि जियरा जुड़ाता; सँवलिया गाता !
एने ओने आगा पाछा,
सगरे से लाग आछा,
जेने देख ओनिये भेंटाता; संवलिया गाता !
मुँहवा बा मन हरले,
कतनो लुकइला परले,
लाखन के भीड़ में चिन्हाता; संवलिया गाता ।
टेढ़ टाढ़ चाल, बाल,
आँख, नाक, ओठ, गाल,
सुतला प सपना बनि जाता; सँवलिया गाता !

भरौली, शाहाबाद ।

जइसन देवता ओइसन पूजा

डॉ० श्रीधर मिश्र

आजु जब दुनिया-संसार के झूठ-प्रपंच, लड़ाई-झगड़ा, मारि-पीटि देख तानी, त गन, बुद्धि, विचार तीनों चकरा जाता। साफे लउकत बा कि कुल्हि चोरवा एकवटि जात बाड़न स आ साधु अकेले माला जपत रहि जात बाड़े। रउरा कहबि कि काहें भुलात बानीं कि चोर-चोर मउसियाउत भाई होले! ठीक बा? बाकिर तबो चोर चोर ह; आ साधु साधु। एके कबो भुलाए के ना चाहीं, नाहीं त दुनिया-संसार से रहलो-सहल सचाई उठि जाई। ई कुल्हि हम सोचते रहनीं कि हमार दिमाग भोजपुरी कहाउतिन के ओरि चलि गइल, जवना में जीवन के अनुभव, सीख, सार भरल बा। देखीं त, ऊ कुल्हि ताड़ी ठोकि-ठोकि लड़े खातिर ललकारत रहलन स। कहत रहलन स कि मरद होख त अब ना पटकि द? आरे पटके के के कहो, अब तू हमरा पीठि में धुरिए ना लगा द।

अमेरिका के राष्ट्रपति जॉनसन साहेब से एगो आदमी पूछलसि कि रउरा एतना चाल्हाक कइसे हो गइनीं? उहाँ का कहनी कि दोसरा के बेवकूफी, बुरबकाही से। ऊ अदमिया फेनु पूछलसि कि ई कइसे? 'आरे ओइसहीं, चाल्हाक आदमी दोसरा के बुरबकाही से शिक्षा लेला आ बुरिबक अपना बुरिबकाही से, कुछु दे के। आ जे एकरो पर ना सीखे ला ऊ महा बुरिबक ह।" ईहे सिखवा, शिक्षा, चाल्हाक बने के गुर कहाउतिनि में भरल रहे ला, जवना से आदमी, आ देस दूनों के कल्यान हो सकेला।

भोजपुरी में कहल जाला कि पानी पिये छानि के, आ दोस्ती करे जानि के। अकुतइला कोंहार लेखा कवनो चीजु से माटी ना खोने के। नाहीं त ओकर हालि ऊहे जानी; आ हमार देस जानल बिना जनले-सुनले दोस्ती कइला के। जब हमरा देस के आजादी के लड़ाई चलत रहे त हम दुनिया-यार सभका खातिर आजादी माँगत रहनी। हमनी के मददि से कइगो देसो आजाद

भइल। आजादी मिलला के बाद 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के नारा से आसमान गूँजि गइल। नेहरू जी जहाँ गइले राष्ट्रसंघ में, भा बांडुग में 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के लेते गइले। नेहरू जी उनका के लेइए ना गइले अदमी बना दीहले।

हमार भाई हो! बाकिर जब १९६२ में चाऊ-माओ भारत पर हमला कइ दीहले तब सबकर आँखि खुलि गइल। नेहरू जी के त अइसन हूक समाइल कि उनका के जाने से ले लीहलसि। तब कहाइलि कि आरे भाई, चइया-मुसवा के हाल त मुँह में राम बगल में छुरी राखेवाला के बा। ठीके कहाइल। चइया-मुसवा बगल में छुरिए ना चोरवले रहलन स, ऊ त भारत के करेजे में भोंकि दीहलनि स। अब त इंडोनेसियो के कलई खुलत बा। इहन लोग कीहें जब आजादी के लड़ाई चलत रहे त श्री बीजू पटनायक इहन लोग के हवाई जहाज से मदद पहुँचावत रहले। इहो लोग नेकी भुलाइल जात बा। दुख बीति गइल, बात बिसरि गइल। ईहे ले नइखे, ई चाऊ के त हमनी का उनही के सबद में 'धर्म-पिता' हईं जा, बाकिर लइका नालायक हो गइल। अब ओकर हालि साँप छुछूनरि के हो गइल बा।

पाकिस्तान के हालि देखि के त ओकरा बूने में फरक बुझाता। वाड़ा सोचनी, बिचरनी त दिमाग कहलसि कि आरे पाकिस्तान त ब्रिटेन के नाजायज संतान नूँ ह? आरे ऊहे, सुरतवाला। तबे कहाउति कहलसि कि हम ना कहले रहनी कि—

"दस हाथ हाथी से बचि ह,
बीस हाथ मतवाला,
अनेक हाथ उनका से बचि ह,
जेकर नाँव सुरतवाला"

बाकिर भारतबासी भाई लोग त पाकिस्तान के साथे सिहुर-सिहुर कइले रहल ह लोग। आ अपना जनमे से ऊ ऊधम मचावले रहल हा। कबो हिन्दू-मुसलमान के लड़ावत रहल ह त कबो भारत में चोर, डाकू भेजत रहल हा। भारत ईहे सोचत रहल ह कि पाकिस्तान के काहें मारल जाऊ, आपने ह। हँ नालायक हो गइल बा। कबो ना कबो रास्ता चेति जाई। बाकिर इज्जतदार के नूँ लाज होला। ऊ आगि में मुतते गइल। ऊ भूला गइल रहे कि अनेति कुछुए दिन ले चलेला।

आदमी आ देस दूनो कबो ना

कबो जरूरे चेतेला। भारतो अंत में सोचलसि कि भाई, रोग आ दुस्मन के छोट ना समुझेके। ऊ देखतो रहे कि कवनो देवता कनइला के फूल आ धतूर चाहत बाड़े, काली माई के तेलहिए पूड़ी नीक लागेले त चमरन-दुसधन के देवता बिना मासु आ शराब के खुसे ना होले। जइसन देवता, ओइसन पूजा। लात के देवता बात से ना मानसु। अब का रहे, भारतो पाकिस्तान के ठीक करे लागल। उनका घर में जाइ के मारे लागल, तब उनकर निसा उतरे लागल। ठीके कहले बा कि बड़ जाति बतिअवले, आ नान्ह जाति लतिअवले। मारला से भूत सात पुस्त के नाँव बके लागेला आ भागि जाला। नाहीं त पहिले उलिटे चोर कोतवाले के डाँटत रहल हा।

जब खूब मारि परल ह त पाकिस्तान के होस ठिकाने लागल ह, तब ऊ त्राहि-त्राहि करे लागल ह। ओकर भाई-बंधु, चइया-मुसवो हूँफे लागल ह, आ इंडोनेसियो फुरनके लागल हा। हं, सँगे-सँगे लँगड़ो देवालि फानेली के हालि बा। हुँफला आ फुरनकला से अब जान बाचेला। जेकरा पर मूसर के चोट गिरेला ऊ नू धान कुटइला के हालि जानेला, दोसर का जानो। दोसरा के माथे सभ केहु खेले चाहेला, आपन कमाइ खरच करो तब नूँ आदमी ह। कवनो रास्ता ना देखि के बेचारा पाकिस्तानो राष्ट्रसंघ के शांति के प्रस्ताव मनलसि ह, बाकिर ओइजो भुट्टो साहब खूब छरिअइले ह। रसरी जरि गइलि, बाकिर घुरुची ना छूटल। ठीके कहले बा, जाति सुभाव ना छूटे, कुकुर टाँग उठा के मूते।

ई कुल्हि सोचते रहनी, तबे कहाउति महराज कहले कि देखनी—'जइसन देवता, ओइसन पूजा' के परसाद, महातम। आजु ले दुनिया में भारत गोहार लगावत रहल ह कि दउर ए लोगे, देख, ई पाकिस्तानी चोर हमरा देस कश्मीर में अमाइल बा, एकर फैसला कर। कचहरी में रउरा गइनी इंसाफ खातिर, ओने पाकिस्तान कश्मीर के कुछु जमीन पर कब्जा कइ लीहलसि। जब एक बेरि कब्जा हो गइल त बाड़ा मुस्किल से बेदखली होला। बाकिर मरला से त भूत भागेला नूँ। पाकिस्तानिओ लोगन के, अयूब-भुट्टो के छठी के दूध मन परि गइल। एगो ना एगो दिन चाउओ-माओ के छठी के दूध मन परावे के होई।

आरे भाई, बरियार के हर भूतो

जोतेला। बरियारा से सभ डेराला। अपना कीहें के लाँगा आ बम्बई के दादा लोगो डेराला। एसे त ईहे बुझाता कि पहिले अपने मजबूत बन, फेरू बोलाव ना सइ जाना दउरल अइहें, काहें कि उनको लाठी के मोका पड़ी। ठीके कहले बा, जबले करबो पूता-पूता; तबले करबो आपन बूता। तुलसियो बाबा ठीके कहले बाड़े—कर बहियाँ बल आपनी छाड़ि पराई आस।

कहाउति महराज फेनु चेतवले कि 'जइसन, देवता, ओइसन पूजा' कर, आ अपना बूता पर भरोसा। दोसरा के भरोसा जगि ना ठानाला। अब बइठि के जव काटेके परी, सुति के जव खूब कटाइल। तोहन लोग के मन; चाल्हाक बन चाहे बुरिबक, भा महाबुरिबक। केहू-केहू के रोकले बा ? अपना-अपना मन के बात कहाउति महराज ठीके कहले। हमहूँ, देस-दुनिया पर ई बतिया छोड़ि देत बानी। जे गाड़ा गड़ाई करी, से भाड़ा भरसाईं परी।

—खालसा कॉलेज, बम्बई-१९

गीत

कुमार दीनानाथ सिंह

जरि जो रे देहिया जराई देवि तोहरा के
अतना निहोरा कइलीं हम पनभरनी।
अगिया लगाई देहब लोगवा के नजरी में,
नेहिया लगाई लेहब हम पनभरनी॥
कतना निठूर बाड, पत्थर करेजवा से,
बिनती से पसिजे ना मन परभरनी।
कुसुम रंग रूपवा सरोज रंग लहंगा से,
गगरी में भर ले सुहाग पनभरनी।
नदियाँ आ नलवा तू जालू सब पनिघट,
पनियाँ पिआवे घरे अइहे पनभरनी॥
बाझि गइले दिठवा नजरिया के बंसी में,
बंशी के दरद छोड़ाव पनभरनी।

—संथाल परगना बिहार।

भोजपुरी भाषा का स्वरूप के सवाल

गणेश चौबे

अगस्त '६५ का 'भोजपुरी साहित्य' का संपादकीय टिप्पणी में विद्वान संपादक का ओर से ई सवाल उठावल गइल बा कि विद्वान लोग भोजपुरी शब्दन का व्यवहार का बारे में आपन-आपन राय देवो। साँच पूछीं त भोजपुरी भाषा में साहित्य-रचना में जे लोग दिलचस्पी ले रहल बा वोह सब लोग का दिमाग में ई सवाल चक्कर काटेला कि भोजपुरी भाषा के परिनिष्ठित रूप का होखे के चाहीं, एकर शब्दकोश, एकर वर्त्तनी आ एकर व्याकरण का होखे के चाहीं? भोजपुरी आन्दोलन का शुरुए से हमर थोड़ा-बहुत एह से संबंध आ रहल बा, एह से एह बारे में हम अपन विचार दे रहल बानी। वादे-विवाद से असलियत के ज्ञान होला—'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः।'

आरंभे से भोजपुरी आन्दोलन के चलावे वाला लोग के ईहे नीति रहल कि हरेक लेखक का अपना-अपना क्षेत्र का बोली में साहित्य रचना करे के चाहीं, आ ऊ लोग एह विषय पर वाद-विवाद करे से भागत रहल। वोह लोग का दिल में बराबर अइसन आशंका बनल रहल कि भोजपुरी का विभाषा सब के सवाल उग्र रूप से खड़ा होके कहीं एह आन्दोलन में बाधा ना पहुँचावे। एह भाव से चलला से भोजपुरी भाषा के समग्र रूप के दर्शन मिली, जगह-जगह के प्रचलित शब्द, मुहाविरा, आ प्रयोग लेखकन का सामने आई, जवना में से बढ़िया-बढ़िया चुन के अपनावे के मौका मिली, आ भाषा विज्ञान का विद्यार्थिन वास्ते भी कुछ मसाला मिल जाई। एकर सबसे बड़हन लाभ ई होई कि कोई आदमी का ई कहे के अवसर ना मिली कि कवनो क्षेत्र का भाषा के उपेक्षा हो रहल बा। असल में भोजपुरी का विभाषा सबके अलग-अलग सत्ता का कल्पना से भोजपुरी आन्दोलन में बहुत बाधा होई, ई भय निराधार नइखे। भोजपुरी भाषा अभी अपना निर्माण काल से गुजर रहल बा। एकरा कविता का भाषा में कुछ एकरूपता त आ गइल बा, बाकिर

गद्य का रूप में बहुत भिन्नता बा। तबहूँ ई कोई खास चिन्ता के बात नइखे। आज के हिन्दी पच्चीस बरीस पहिले का हिन्दी से बहुत दूर आगे बढ़ गइल बा। एह से भोजपुरी का लेखकन का अपना-अपना क्षेत्र का भाषा में लिखे के बहुत अंश तक छूट रहे के चाहीं। भोजपुरी क्षेत्र का भीतर एक क्षेत्र का भाषा के दोसरा क्षेत्र के आदमी बहुत आसानी से समझ ले ला। चार कोस पर बोली में हेर-फेर होखे लागेला, एह से आरंभ में एकरूपता आइए नइखे सकत। भोजपुरी भाषा में एकरूपता लावे के कोसिस धीरे-धीरे होखे के चाहीं। कोई भाषा बनावल ना जाय, ऊ खुद बनेला। भोजपुरी के भी विकास हो रहल बा, आ कुछ समय का बाद वोकर परिनिष्ठित रूप आप से आप बन जाई। तबहूँ एह दिशा में प्रगति लावे वास्ते भोजपुरी का शब्द-कोश, वर्त्तनी आ व्याकरण पर निष्पक्ष आ निर्द्वेष भाव से विचार-विमर्श कइल जा सकेला।

भोजपुरी के शब्दकोश

सबसे पहिले ई सवाल उठत बा कि एह समय भोजपुरी में प्रचलित शब्दन के संख्या केतना होई, आ एह से साहित्य-रचना के काम चल सकत बा कि ना? डा० ग्रियर्सन का 'बिहार पिजैन्ट लाइफ' में करीब बारह हजार शब्द आइल बा जवना में हमरा अंदाज से आठ हजार भोजपुरी के शब्द होई। वोह में खाली देहाती जिन्दगी से संबंध रखेवाला शब्दन के संग्रह बा। श्री अवध बिहारी 'सुमन' (अब स्वामी विमलानन्द सरस्वती) भोजपुरी ग्रन्थन आ देहातिअन का मुँह से सुनके करीब बारह हजार भोजपुरी शब्दन के संग्रह कइले बाड़न। हमहूँ देहात में प्रचलित करीब आठ हजार शब्दन के संग्रह कइले रहीं, जे अब बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् में बा। ऊपर वाला संग्रहन में भोजपुरी के सब शब्द ना आइल होई आ कवनो-कवनो शब्द त तीनो में होई। एह सब बात पर गौर करके हम अंदाज करत बानी कि भोजपुरी के जे साहित्य लिखल बा या जबानी बा, वोह सब में आइल, आ भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित शब्दन के संख्या पच्चीस-तीस हजार से बेसी ना होई। सुनीला कि अंग्रेजी भाषा का बेवस्टर वाला कोश में लगभग छव लाख शब्द बा। वोह कोश का रचना का बाद से आणविक शक्ति, स्पुटनिक आ आउर नया-नया विज्ञानन के ले के अंग्रेजी में एक लाख नया शब्द

आउर आ गइल होई आ अंग्रेजी शब्दकोश में शब्दन के संख्या अब सात लाख तक पहुँच जाई। भोजपुरी भाषा में केतना शब्द के जरूरत बा, ई एह बात पर निर्भर करत बा कि भोजपुरी में कवना तरह के साहित्य के रचना हो रहल बा। कुछ लोग के खेयाल बा कि भोजपुरी में विशुद्ध साहित्य (कविता, कथा. नाटक) के रचना होखे के चाहीं कि भोजपुरी भाषा का लालित्य आ भाव व्यंजकता के रस लेहल जा सके। कुछ लोग के ई खेयाल बा कि भोजपुरी में केवल प्रचारात्मक साहित्य के रचना होखे के चाही, आ आउर-आउर ज्ञान-विज्ञान के काम हिन्दी का माध्यम से होखे के चाहीं। कुछ लोग के इहो खेयाल बा कि भोजपुरी में सब तरह के साहित्य के रचना होखे के चाहीं आ प्राइमरी स्कूलन में पढ़ाई वास्ते पाठ्यपुस्तक भी तैयार होखे के चाहीं। चाहे कवनो खेयाल से ग्रन्थ-रचना होय. एह वास्ते हिन्दी आ आउर-आउर भाषा से शब्द लेवहीं के परी। एह समय देहातन में जेतना शब्द प्रचलित बा, वोह से देहातिए जिन्दगी के चित्रण हो सकेला।

भोजपुरी में तीन तरह के शब्द पावल जाला। कुछ त दोसरा-दोसरा भाषा के तत्सम शब्द बा, जे अपना मूल रूप में भोजपुरी में घुल मिल गइल बा। कुछ शब्द अइसनो बा जवन भोजपुरी के ठेंठ शब्द कहल जा सकेला। लेकिन भोजपुरी में सबसे बड़हन संख्या तद्भव शब्दन के बा जवन दोसरा-दोसरा भाषा के शब्द ह आ भोजपुरी में अपना बिगड़ल रूप में बहुत प्रचलित बा।

भोजपुरी के साहित्य सुगम आ सुबोध होय, एह वास्ते ई जरूरी बा कि रचना में पहिले ठेंठ आ तद्भव शब्दन के जगह देहल जाय, चाहे ऊ भोजपुरी क्षेत्र का कवनो भाग में बोल-चाल का भाषा में प्रचलित होय, आ जवना भाव के प्रगट करेवाला ठेंठ आ तद्भव शब्द ना मिले, वोह भाव के व्यक्त करे वास्ते तत्सम शब्द के व्यवहार कइल जाय। स्वर्गीय डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री के विचार रहे कि भोजपुरी में शब्दन का तत्सम रूप के प्रधानता दिखाए के चाहीं, ना त एकर असर लड़िकन पर परी, आ ऊ सब हिन्दी में वोह शब्दन के हिज्जे लिखे में गलती करे लागी। चाहे जे होय, प्राचीन ज्ञान आ आधुनिक विज्ञान के ठीक-ठीक लिखे वास्ते संस्कृत हिन्दी आ दोसरा-दोसरा भाषा से शब्द लेवहीं के परी। हम-

निका वास्ते ई संभव नइखे कि हमनी भोजपुरी में अलग पारिभाषिक आ वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण करीं ।

तत्सम शबदन के तद्भवीकरण

भोजपुरी लेखकन में ई प्रवृत्ति पावल जाला कि ऊ लोग तत्सम शब्दन के ममोर-चमोर के, तूरतार के वोकरा कें भोजपुरी का प्रकृति का अनुरूप बना के अपना रचना में जगह देवेला आ अइसनो लोग बा जे कोई शब्द के प्रचलित अनेक तद्भव रूप में वोह रूप के चुनेला जे ठेंठ देहात का गँवारन में पावल जाला; जइसे एके क्षेत्र में प्रचलित कोशिश शब्द के तीन तद्भव रूप 'कोसिस' 'कोरसिस' आ 'कोरनिस' में ऊ लोग 'कोरनिस' लिखे के पसंद करेला । देहात में कवन आदमी कवना शब्द के कवना रूप में व्यवहार करत बा, ई वोह आदमी का शिक्षा, संस्कार आ सुरुचि पर निर्भर बा । भोजपुरी सिर्फ गँवारे के भाषा ना ह, जे हमनी शब्दन के गँवारू रूप व्यवहार में लाईं । तद्भव शब्दन का अनेक रूप में हमनीका ऊहे रूप व्यवहार करे के चाहीं जे शिष्ट होय आ तत्सम का नजदीक होय । सब जगह बोलचाल का भाषा में आ साहित्य का भाषा में भेद पावल जाला । कहल जाला कि खड़ी बोली मेरठ कमिश्नरी का देहात के बोली ह, लेकिन उहाँ का देहात का बोली में आ वर्त्तमान हिन्दी भाषा का रूप में जमीन आसमान के फरक बा ।

तद्भव शबदन के तत्समीकरण

जइसे तत्सम शब्दन के बिगाड़ के तद्भव ना बनावे के चाहीं, वोइसहीं तद्भव शब्दन के सुधार के तत्सम ना बनावे के चाहीं । बहुत अइसन शब्द बा जवना का तत्सम रूप के दोसर अर्थ होला आ वोकरा तद्भव के दोसर । भोजपुरी के तद्भव शब्द 'निमन' बढ़िया का अर्थ में आवेला जवना के तत्सम 'निम्न' के अर्थ होला 'घटिया' । अइसहीं 'श्रद्धा' के भोजपुरी तद्भव 'साध' के अर्थ होला अभिलाषा या लालसा । एह से शब्दन का रूप में बिना सोचले-विचरले हेरफेर कइल उचित ना होई ।

भोजपुरी में श, ष, स, ण, न, ङ, ञ का प्रयोग में भी भ्रम पैदा हो जाला । भोजपुरी में 'आसा' लिखल जाय कि 'आशा' दोस लिखल जाय कि 'दोष' आङ्गन लिखल जाय कि 'आङ्न', बरनन लिखल जाय कि वर्णन, पुरिआ लिखल जाय कि 'पुरिया' । एतहूँ तद्भव आ तत्सम के सवाल बा भोजपुरी शब्दन के प्रवृत्ति तद्भव का ओर बा, जवना में संयुक्त-

र के प्रयोग बहुत कम होला। एह से तद्भवे रूप के प्रयोग होखे के चाहीं। हिन्दी में 'आशा' लिखल जाला, लेकिन अधिकांश भोजपुरी भाषी वोकरा के 'आसा' पढ़नेलन। लेकिन कोई तत्सम रूप के प्रयोग करत बा त ऊ गलत ना समुझल जाई। हिन्दी में कोई 'पूर्ण' लिखेला त कोई 'पूरा', आ दूनू ठीक मानल जाला।

भोजपुरी क्रियापद आ शबदन के संक्षिप्त रूप

सब जगह का जनता में शब्दन के छोट करके आसान बनाके बोले के प्रवृत्ति पावल जाला। अपूर्ण वाक्य के प्रयोग, आ शब्द से कोई अक्षर के लोप एही प्रवृत्ति के फल ह। एह तरह के प्रयोग स्थानीय होला आ वोह में व्यापकता ना रहे। अइसन प्रयोग भोजपुरिओ में पावल जाला। भोजपुरी में 'देखत बाड़' अपना संक्षिप्त रूप में 'देखताड़' हो जाला। अइसहीं 'वोह में' का 'ह' के लोप हो जाला आ केवल 'वो में' रह जाला। अइसन स्थानीय प्रयोगन के प्रधानता देहल ठीक ना होई। जहाँ तक हो सके, शब्दन का व्यापक रूप का प्रयोग पर जोर देवे के चाहीं।

भोजपुरी के वर्त्तनी आ व्याकरण

भोजपुरी का वर्त्तनी के भी सवाल कुछ अइसन बा, जेकरा पर विचार कइल जरूरी बा। भोजपुरी का हरेक लेखक का कोई शब्द के लिखे का पहिले वोकरा उच्चारण पर गौर करे के चाहीं आ वोही मोताबिक लिखे के चाहीं। भोजपुरी का रचनन में इ आ ई (हिन्दी यह) उ आ ऊ दूनू रूप मिलेला। श्री रास बिहारी राय शर्मा का 'भोजपुरी व्याकरण' में कहीं त 'इ' 'उ' मिल रहल बा आ कहीं 'ई' 'ऊ'। डा० उदय नारायण तिवारी का 'भोजपुरी भाषा आ साहित्य' में 'ई' 'ऊ' मिलेला। उच्चारण का खेयाल से एकर दीर्घ रूप 'ई' आ 'ऊ' लिखाये के चाहीं। श्री शर्माजी अइसन भोजपुरी के अध्ययनशील विद्वान का दिल में ई भ्रम काँहे पैदा भइल? ध्वनि विज्ञान का विद्यार्थिन का ई बात मालूम बा कि एके वाक्य या एके शब्द पर भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वराघात-बलाघात से वोकर भिन्न-भिन्न अर्थ हो जाला। ई, ऊ के ह्रस्व रूप कुछ अइसने हालत में बोलल जाला। ध्वनि विज्ञान का मोताबिक दीर्घ शब्दन के ह्रस्व उच्चारण आ ह्रस्व शब्दन के आधा उच्चारण भी जगह बेजगह होला। इहाँ तक कि एके शब्द उच्चारण का दृष्टि से

कई एक टुकड़ा में बँट जाला। एह से साधारण लेखक का ध्वनि विज्ञान का भूल भुलैआ में ना फँसे के चाहीं। ऊ बड़ा गहन विषय ह, आ सबका समुझ में ना आवे। कुछ दिन से भोजपुरी का शब्दन का साथे बिकारी (ऽ) लगावे के चलन बढ़ रहल बा। ई बिकारी (ऽ) संस्कृत में आधा 'अ' के बोध करावेला, आ संगीत में दीर्घ मात्रा के बोध करावेला। अइसन मालूम होत बा कि भोजपुरी का लेखकन का शायद संगीत से जादे प्रेम बा। लेकिन ऊ लोग त संगीत के आउर-आउर स्वर-संकेत के अपनावते नइखे। बिकारी (ऽ) के शब्दन का साथ में प्रयोग भ्रम पैदा करेवाला बा आ एकरा के छोड़ देवे के चाहीं। हिन्दी में राम शब्द में 'म' में पूरा अ लिखल जाला, लेकिन लोग म् पढ़ेला। बंगला में लिखाला लक्ष्मी आ पढ़ल जाला 'लक्खी', ई काँहे? गौर करेवाला सवाल बा।

कोई भी भाषा के पहचान ओकरा कारक आ क्रियापद का रूप से होला। भोजपुरी में स्थानिक प्रयोग का चलते कई एक तरह के रूप देखे में आवेला। हिन्दी में संप्रदान के चिह्न ह 'के लिए'। एह जगह पर भोजपुरी में चंपारन में 'ला', शाहाबाद में 'लागि', राँची में 'लागुन' आ काशी में 'बदे' के व्यवहार होला। कवन रूप अपनावल जाय? आउर देखीं। हिन्दी में 'खेती ही' आ 'खेती भी' बोलल जाला, भोजपुरी में एह अर्थ में 'खेतिए' आ 'खेतिओ' कहल जाला। भोजपुरी का रचना में हिन्दी का एह दूनू परसर्ग 'ही' आ 'भी' के चलन बढ़ रहल बा। भोजपुरी वाला प्रयोग कुछ जटिल बा, एह से लोग आसानी का तरफ बढ़त जाता। कवना के प्रयोग होखे के चाहीं, ईहो विचार करेवाला सवाल बा।

ऊपर भोजपुरी भाषा का परिनिष्ठित रूप का बने में कवन-कवन प्रश्न उठ खड़ा होता, एह में से कुछ के एक झाँकी हम भोजपुरी साहित्य का पाठकन का सामने रखनी ह। एतने में एह विषय से संबंध रखेवाला सवालन के अन्त नइखे हो जात। लेकिन लेख के कलेवर त बढ़ गइल। फेर कबहीं हम आउर-आउर सवालन पर विचार करब। अबहीं हम एतने लिख के ई आसा करत बानी कि भोजपुरी के विद्वान लोग एह सवाल पर आपन-आपन विचार प्रगट करीं, जवना से हमरो प्रकाश मिली।

—ग्रा० पो० बँगरी,
मार्ग-पिपराकोठी (चंपारन)।

कहानी :

भेद खुलि गइल

कृष्णानन्द तिवारी

ज़वाना भा समय अइसन चलि आवेला कि कोठिला में भा घर के अंतरी में राखल चीजुओ के भेद खुलि जाला। असहीं एक समय अइसन आ जाला कि कतनो छिपा के राखल बात आपसे आप परगट हो जाले। एकरा के केहू कतनो छिपा के राखे के चाहेला, बाकिर ओह आदमी के जाने के पहिलहीं, दोसर आदमी उनकरा बात के भा उनका कहानी के जाने के कोशिश में रहेला आ सुफलो हो जाला।

सामचरन जब नन्हीमुँटी रहले, तबे उनकर बिआह भइ गइल रहे। पढ़े-लिखे में आछा रहले, सँगही होनहार बालक में जवन गुन होखे के चाहीं तवन भरपूर रहे। इसकूल में बिअहल बहुत कम लइका रहले स, आ जवन रहबो कइले स ऊ छोट जाति के बिआह किलास तक पढ़े वाला। कहे के मतलब कि उहनी के पढ़े में आछा ना रहले स। सामचरन बेचारे एह से बड़ा लजासु; जहाँ सब लइका उनका किलास के वेबिअहल लिखावस ओह घरी, जब इनकर नाम आवे त इनकर करेजा धड़के लागे कि हम बिअहल ना कहि के बेबिअहल लिखावत बानी, बाकिर एह समय में दोसर लड़िका उठि के ई बात माहटर साहब के सामने मति कहि द स कि सामचरन जब तीसरे बरग में रहले तबे इनिकर बिआह भइ गइल रहे। एह से अपना नाम के आवे के पहिलहीं अपना साथी से कहि के चलि जात रहन कि पेसाव करे जात बानीं, तू हमार नाम बोलाइ त कहि दीह, कि उनुकर बिआह नइखे भइल। ज़ब पेसाब कइके आवसु त ओह घरी उनुकर नाम बीतल रहे आ ऊ दंगल मारिलेसु।

सामचरन बरग के लइकन में पढ़े-लिखे में आछा जगह पावल करत रहन। सुभाव से आछा होइओ के भीतर से लजालु रहन। लइकन से भरि मुंह बात कसहूँ करसु, बाकिर जब बिआह के बात चले लागे, चाहे लइकन के बीच-बीच में

हँसी मजाक के सिलसिला में कवनो लइकिनि के बात चली आवे कि फलनिया बड़ खबसूरति बिया। ओह समय इनकर हृदय धड़के लागे कि केहू हमरा से ई मति पूछि देउ कि का हो तहरो बिआह त होइ गइल बा नू? सेन्दूर डाले के बेरि उनकर मुंह झाँकि के ना देख ल कि कइसन बाड़ी। एही विचार सागर में परि के बेचारे भरि पेट हँसबो ना करत रहले। उनका साथ में गाँव जवार कं लड़ीका खूब पढ़त रहले स, दू चारिगो कं मालूम रहे कि सामचरन के बिआह भइल बा, बाकिर बात जब इनका बिआह कं पड़े त ऊ डाँटि कं काँहे देस कि हमार बिआह भइल बा! तू हो जानत बाड़? बेचारे लइका सभ चुप हो जा स, काँहे कि इनका पासे बल आ बुद्धि दूनो रहे, पढ़हूँ में तेज रहन, आ देहिया स मजबूत रहन, आ बरग क सभ लड़िका इनिके तरफ से होइ के झपिला ल स।

एक दिन इसकूल से बाहर सामचरन से दू तीन गो मेहरारू बात करत रहली स, आ सभन कं हाथ में एकएगो रुपया के नोट रहे। उहनी कं इनिका के रुपया हाथ के थम्हावस, बाकिर ई काहे के मानसु, ई त हठ कइ लेले रहले कि "प्रांण जाइ बरुबचन न जाई" हम रुपया ना लेबि। इनिका मुँह से ईहे शब्द निकले। ऊ मेहरारूओ सभ एह हठी रहली स। तीनो चारो मिलि के इनिका के चारु ओर से घेरि ले रहली स, आ कवनो हाथ धरे, कवनो दाढ़ी ध के फुसिलावत रहलीं स, आ कहस कि "ले ल ए बबुआ, हम तहरा के ना देबि त केकरा के देबि, तू ही नू हमार अंजोर अन्हार बाड़, हठ मति कर, ले ल। बाकिर सामचरन काहे के सुनसु उनुकर मन कुकुर के नोचला में पड़ि गइल रहे। चारू ओर से उनुका देही पर चोंथ लागल रहे, बाकिर ई पत्थर के देव सुनसु काहे के! इनिका त बिआह के समय इयादि परत रहे कि ईहे सासु हइ जे 'घड़ी' कहि के ना दिहली, आजु आइल बाड़ी मनावन करे। हम इनिकर देहि त छुइबे ना करबि, जले घड़ी ना दीहें तल, हम इनकर रुपये लेबि। बाकिर मेहरारुनि के जाल से निकलला कठिने बात होला। कइ परकार कं ढँड़नच पसार देली स। बेचारे सामचरन एह जाल में परि के रुपया हाथ में लेके झट दे थइली में डालि दिहले कि केहू देखो मति, बाकिर इनका सोचला

के विपरीते सब काम भइल। सामचरन के एक-एक बात सब लइका सुनले रहलेस आ जवन जवन कौतूक मेहरारू कइले रहली स ऊ सब ई देखले स। किलास में जब सामचरन अइले त इनिका से कवनो लइका कुछ पुछले स ना। ई समझलनि कि कवनो कुछ जानते नइखन स।

जब सामचरन सातवाँ बरग में गइले, त आह घरी इनिकर पढ़े में तेज बुधी आ होनहार देखि के बरग शिक्षक के विचार भइल कि अपना पुष्पा के बिआह हम 'साम' से कइ दिहीं। पुष्पा सामचरन से एक किलास नीचे पढ़त रहली। सुन्दर सुडौल देह रहे। लरिका के समान उनुका पर माई-बाप के नेह रहे। एह से पुष्पा के शरीर पुष्पे के समान सुगन्धित भइल रहे। माहटर साहब जब किछु सोचि बिचारि के आ सामचरन से पुष्पा के बिआह ठीक करे खातिर इनिका गाँव पर गइले। सामचरन माहटर साहब के देखि के परनाम कइले आ, अपना दुआर पर लेइ आ के खाटी पर बिछौना बिछा के बइठवले। माहटर साहब सामचरन से पढ़ाई के बात का पूछसु, जानते रहलनि कि बरग के पहिला लइका हवनि। बाकिर लइका देखे आइल रहलनि एह से सामचरन से उनका बाबूजी के बोलवलन्हि। सामचरन जल्दी से घरे जाके अपना बाबूजी के लिया अइले। बाबूजी सुनिके त खुसे भइलें कि बबुआ के माहटर साहब आइल बाड़न, बाकिर बबुआ के मन-देह पानी से निकाललि मछरी निहन भइ गइल रहे। उनुकर हृदय धड़-धड़ धड़कत रहे कि का माहटर साहब आइल बाड़न ? हमरा से कवनो गलती नइखे नू भइल ? गते-गते बाबूजी के सँगे दुआर पर गइलन। इनकर बाबूजी माहटर साहब के देखि के परनाम कइके आ खटिया के गोड़तारी बइठे के कइले, तले माहटर साहब उनुकर बाँहि धई के कहले कि राम-राम हेने बइठीं। ओरदवान के ओर कइसे बइठबि जी, हमरा से कतनो त रावा बड़े नू बानीं। सर-समाचार होखला के बाद माहटर साहब पहिले सामचरन के पढ़ला के खूब बखान कइल कि राउर लइका पढ़े में बड़ा तेज, सूध, आ काफी होनहार बा। ई हम जरूर रावा से कहबि कि ई बड़ा आदमी बनी। सामचरन के बाबूजी खुशी में झूम उठल, उनुकर हृदय गद-गद होइ गइल बेटा के बड़ाई सुनि के।

माहटर साहब के गाँवों पर गइल जरूरी रहे काहें कि घर के सवाँग मधे इँहें का रहनीं, एगो लइका रहे त ऊ लइकिया से छोटे रहे। एहि से ऊ जाये खातिर तइयार होइ के उठि गइले, आ चलते-चलत कहलनी कि "हम रउवा लइका के बिआह करे के चाहत बानी; अपना एकलौती बेटी पुष्पा से।" तनकी रउआ किरिपा करितीं आ लइकवा के रासि नाम आ कुण्डली ले ले अइतीं। "बिआहे चलल बानी पुष्पा से", ई शब्द सुनि के सामचरन लाजे गड़ा गइले। मुँह मलिन हो गइल, आ दउरि के घर के कोना में जाके पूका फार के रोवे लगले। सामचरन के पिता माहटर साहब से कहले कि माहटर साहेब माफ करीं, सामचरन के बिआह त हम तीसरे बरग में कइ दिहनी, नाहिं त रावा से का कहे के रहल हा। रउवे न इनुकर माई-बाप बानीं। माहटर साहब के चेहरा एक-बा-एक अरूअइला पीठा अइसन उदास होइ गइल, आ ऊ कहले कि धनि ई लइका बा जे आजुले अपना के बेबिआहल बखानत आवत रहल हा।

सामचरन के सब बनल-बनावल छिपल-छिपावल भेद अइसन खुलल कि फेरु से ऊ इसकूल के मुँह ना झँकले।

—महाराजा कॉलेज, आरा।

▲

सायकिल खरीदते समय उसके असली पार्ट्स-पुर्जों की जाँच जरूर कर लें। सायकिल के असली पार्ट्स पुर्जों तथा असली रैले, हरक्युलिस, नार्टन, ऐटलस, इस्टर्न स्टार, ग्रे हाउण्ड और हीरो साइकिलों के लिए

बॉम्बे साइकिल स्टोर्स

गोपाली कुआँ, आरा

में पधारें।

यहाँ सभी माल की गारंटी दी जाती है।

ललित निबंध :

जइसन देस

परशुराम सिंह

एक त गाड़ी में धाका, दोसरे गरमी। जान के साँसत! बाकी का करब, काम के पैगाम बड़ा भारी हृ। ऊ राउर सुबिस्ता असुबिस्ता देख के त आइ ना। ओकर अलगे आपन तेज रहेला। चली, त रथ जोत दी। काम सोझा आ गइला पर सब भोर पड़ जाला, सब बिसर जाला। आदमी धाका में पिसा जाई, से कबूल, बाकी काम ना आकाज करी। ऊहे हाल गरमी के साथ भी। एक छोड़ सात लूक चलत रहे, बाकी काम के सरगरमी के आगा लूक भी-फीका!

हमरो जाये के रहे। साथे आपन वैद जी रहीं, त्रिपाठी जी। दूनो आदमी खलिहा। ई सोच के कबहीं-कबहीं मन अगराइ कि बे-सर-सामान, चीज-बतुस के आदमी भीड़भाड़ देखत, जकसनन पर उतरत-चढ़त, चाह-बिसकुट करत चल जाई। गरम के दिन रहे, यात्रा रात में कइल गइल।

मोहरमो ओही घरी पड़ी, एकर पता ना रहे। बेफिकिर, निचिन्त हमनी स्टेशन पर अइलीं। पान खात, पेट पर हाथ फेरत जब प्लेट फारम पर आइल आदमी, त खाली मूँड़िए मूँड़ी! पूछलीं-वैद जी, का बात हृ! आतना भीड़ कहाँ से, महाराज! वैद जी भी चिहाइले रहीं। खाली 'ऊँ' करके रह गइलीं। आगा बढ़लीं जा, ऊहे हाल, अउर आगा, तनिको सँवसार ना; ओकरो आगा, आदमी पर आदमी; भेंड़न के लदाई! गार्ड के डिब्बा से देखत गाड़ी के गरदन तक चल गइलीं जा। सगरो ठसमठस। तवनो पर चढ़े के चढ़ा-ऊपरी, रेल-पेल, थूकम-फजिहत।

'ए महाराज, हम त बाज अइलीं। चढ़ब त फस्ट क्लास में चढ़ीं, ना त गाड़ी महारानी के गोड़ लागीं।' ई बतकही होते रहे कि एगो डिब्बा में तड़ातड़ गोजी-गीत शुरू हो गइल। "अरे बाप रे, मार, मार! अऊर मार, बाप के गाड़ी हृ! धर ससुरा के गरदन; फेंक दे पहिया का नीचे।

...जा ए नतिऊ। दाँत टूट गइल; केहुनी फूट गइल। हँ, हँ, आँखों में चोट बा।...का हाल्ला कइ ल; ठहर बुड़बक, एक पवाई मिलते नइखे. हूँः मुँहमारी गाड़ी चढ़ला के।' ई सब सतमेंझरा सुनके, हाल बेहाल देखके वैद जी के भी मन थोर हो गइल। ना त ऊ फाने का फेर में रहन। ऊ फनिते, त हमहूं पीठ पर जइबे करतीं। खैर साहेब, हमनी का अब एक जगह खाड़ा होके तमाशा देखे लगलीं। धाका का आगा कामों के भी ताव ठंढा हो गइल।

अब बतकही होखे लागल। सरकारो का कम अनेत कइले बा! काटे के बीस, त काट देता सौ टिकठ। डेढ़ो-दूना ना, सोझे पँच-गुना! सुराज भइल बा सुराज! मुँहमारी अइसन राज के, सुराज के। केहू कहल—'आरे, हई देखलहा?' जेकरा से कहाइल ओकरा भरसक अधछेवे सुनाइल।

जबाब मिलल—हमार देख ना। चलल बाड़े देखावे!

'बड़ भकोल बाड़। ईहे कहत बानीं? बेसुनले पाँय-पाँय करे लग ल।'

'देख, ढेर बह क मत।'

'तू का कर ब?।

तूँ का कर ब? गरदन देखाव तार! मइल छोड़ा देब।

'आईं ?'

'आव।'

हाँ, हाँ, धर, हटाव करते-करत गुत्थम-गुत्थी हो गइल। तबड़ाक, लात, घुसा, जूता, नोह, दाँत, सब चल गइल। फेर हाल्ला, फेर ठंढा। वैद जी हँसे लगलीं। हमरो हँसी ना थामाइल। तब ले गाड़ी में से आवाज आइल 'दाँत चियरले बाड़! मुँह ना देखत हा। रही ति भीतर त बुझाइत।'

का करीं। कुछ बोली ले, त झगरा। मुँह फेर के थूक फेंके लगलीं। वैद जी पूछलीं—'काहे, जी'।

कहलीं—रहीं, मुँह में फतींगा समा गइल।

गाड़ी ठीक बेरा पर सीटी मार-लस। गार्ड के बत्ती वाला हाथ हिले लागल। केनहूं से एगो टी. टी. भी लउकले। उनका साथे दुगो सिपाही भी। हे भगवान, अतना कांड हो गइल. ई लोग कहाँ रहे! के बताइत? गाड़ी खुल गइल, राम-सलाम होखे लागल। छुटकल-फटकल समाचार कहत कहत लोग खिड़की में सटल दौरे लागल। 'जा, जा, गाड़ी खुल

गइल, मत दौर।' 'जातानीं, जातानीं। बतिया कह दीह। जरूर। 'हँ, हँ जरूर!'

'भोर ना नू परी ?

'भोर का परी, खेल ह ! जा तूँ जा। तनी देखत रहिह ऊ अकेले बिया।'

'एकर फिकिर मत कर ! हम बानी नूँ।' गाड़ी तेज हो गइल। प्लेट फारम के लहबर खतम। जे ना गइल, रह गइल—आराम के साँस लेत, फिकिर भी करत। अच्छा कवनो बात ना ! पीठिये पर गाड़ी बिया। अबहीं गाड़ी के आवे में एक घंटा के देर रहे। दूनो आदमी प्लेट फारम पर घूम-घूम के जानल-पहचानल के खोजे लगलीं। सौ कदम बढ़ल होइ आदमी कि आवाज आइल, 'नमस्ते, प्रसाद बाबू। आप कहाँ जा रहे हैं।' के अरे बड़ा बाबू। अपने कहाँ सरकार ? नमस्ते, नमस्ते। 'यही पटने तक। आइये, आइये। गजब की भीड़ है। खैर, आप मिल गये, बड़ा अच्छा हुआ।'

ई बात सुनके कुछ देर चुप रह जाये के पड़ल। हमार हिम्मत रहित, त हम ना चढ़ जइतीं ? बाकिर आपन कमजोरी कइसे कहीं। केहू ना कहे, हमार का मोल। कहलीं— भीड़ त बा, बाकी हिम्मत छोड़े के काम नइखे। ई छूटी, त फेर पीठिये पर मेल बा'।

एही बातचीत में गाड़ी के सिगनल हो गइल। प्लेट फारम पर एगो सनसनी आ गइल। जइसे सूतल समुद्र में आन्ही आ गइल होखे। सभे तैयार होखे लागल। 'कुली, कुली, ए कुली ! साथ रहो।'

'हाँ बाबू, घबड़ाईं मत। बेफिकिर रहीं। भाड़ा याद बा नू-सोरह आना ? बकसीस जे दे, दीं। तीन दिन से पासिंजर नइखन जात।'

गाड़ी आ गइल। दिल धड़के लागल। वैद जी आगा रहीं। बड़ा बाबू खातिर कइल वादा भोर पड़ गइल। परेट होखे लागल। ऊहे हालत ! जे आगा चढ़ गइल रहे, अब फाटके ना खोलत रहे।

'खोल, भाई ! जाये के बा, बड़ा जरूरी काम बा। तारीख बा, अपील करे के बा।'

चार फेरा दे देलीं जा। केहू अपील ना सुनल ! गाड़ी के फाटक बजर के फाटक हो गइल। ना खुलल; केहू ना सुनल। वैद जी के राय रहे कि लात के देवता बात से ना मानसु। चढ़ीं जा। धाका दिआय।

पाछे देखल जाई। सोझ अँगुरी घीव ना निकले। रोअल-गावल केहू ना सुनी। हमरो मन ई सुन के जोसिया जात रहे। बाकी अइसन कहल निमन ना बुझाइल। धाका सोझे लउकत रहे। डिब्बन में तील धरे के जगह ना रहे। सभे परेसान, बेचैन। गोड़-हाथ घुमावल मुश्किल भइल रहे। ओही में जाके दुर्गत उठावे के साहस ना भइल। कहलीं छोड़ीं बैद जी। अबकी वाली में भीड़ ना होई। ओकरे में जाइल जाई। चलीं, जानवर भइला के काम नइखे। अब बड़ा बाबू के खोजल जाउ।

'बड़ा बाबू, ए बड़ा बाबू,' चिचियात घेघ बाझ गइल। कहाँ गइले, कहाँ ना! बड़ा हारान भइल आदमी। तबले देखत का बानी कि एगो डिब्बा के खिड़की आधा खुलल बा। ओही राहे कुली केहू के मोटरी अइसन उठा के फेंकले बा। बड़ा हुजूम। भीतर के लोग बाहर ठेलत बा, एने से कुली भर जोर रोकले बा। सब धड़ चल गइल रहे खाली एगो गोड़ लटकल रहे। पासिंजर चिचियाइल 'उतारो-उतारो, हम नहीं चढ़ेंगे। मर गये। निकाल दो, निकलने दो। बाहर आने दो, कुली!'

बोली सुनते बुझाइल कि ई संग्राम बड़े बाबू पर बीतत बा। तुरंत जुटलीं जा। उनकर लटकल गोड़ उठाके भीतर घुसा दिआइल। फेर बाहर से आनना हल्ला कइल गइल कि भीतर के लोग तनी दब गइल। बड़ा बाबू अब खाड़ा रहन। हालत बेहालत! बुझा कि अब बाप-बाप कके रो दीहें। ई भला आदमी रहन, अइसन भेड़ियाधसान में कबहूँ पड़ले ना। अनभुआर बुझात रहे। मुँड़ी गड़ले ओसहीं खाड़ रहन जइसे कसाइन के बीच रोअ गिरवले गाय। मोह लागल। उनका पता ना रहे कि हमनि भी बानी। तब बैद जी जोर से बोललीं—'घबड़ाईं मत, बड़ा बाबू। बड़ा धाका बा। भीड़ में असहीं होला।'

जब बड़ा बाबू आवाज सुनते स उनका चेहरा पर तनी हरीय आइल। उनका संतोष के का वरनन करीं। जइसे अथाह जल में गोड़ का नीचे कनहूँ जमीन ठेक जाय! बोलले—'बैद जी, प्रसाद बाबू!'

'हँ, हँ बड़ा बाबू, एहिजे बानी जा। घबड़ाईं मत।'

'जरा समझाइये इन भाइयों को। हमारी जान को पड़े हैं। हमारा

क्या दोष ? कुली ने आगे पैसे ले लिये थे। हम वह भी छोड़ने को तैयार थे। कमबख्त ने जबरदस्ती उठाकर गट्ठर की तरह फेंक दिया। बताइये, अब हम क्या करें ?'

बड़ा बाबू के बात अच्छर-अच्छर सांच रहे। के ना ई धरम-धाका देखके कचक जाइत ? कहलीं जा, सभे समुझ गइल, बड़ा बाबू। अब इत्मिनान राखीं। केहू कुछ ना कही। तबले गाड़ी सीटी मरलस।

प्लेट फारम पर तबहूँ आदमी रह गइले। अब गाड़ी के धाका के ओतना डर ना रहे, जतना छूटल पसिंजर के। हमनी अब आखिरी गाड़ी के राह देखे लगलीं। मनसूबा बान्हल आदमी कि चाहे जइसे होखी, अबकी चढ़ल जाई। बात, गारी, मार जवने से काम होई, ऊहे कइल जाई। भलमनसाहत के धीरज छूट गइल। ऊहे बन जाये के परल जइसन सभे रहे।

जहाँ गोजी चले, ऊहाँ वंशी के सूर बेकार; जहाँ मतलब के ढोल पिटाय, ऊहाँ वेद भनल अनेर; जहाँ हुलड़बाजी के बाहवाही मिले, ऊहाँ रईसी बेकूफी! धुतुक में धुतुक सोभा दी, शंख ना।

—हिन्दी शिक्षण योजना,
भारत सरकार,
धनबाद

अधिक सफेद और चमकीली धुलाई के लिए
स्पेशल जाग्रति बार साबुन
और
जाग्रति साबुन
अपने पास के दूकानदारों से खरीदें।
निर्माता
केशरी इन्डस्ट्रीज, आरा
यहाँ 'प्रकाश देव धूप' भी तैयार होता है। एक बार परीक्षा करें।

RajGuru Math, Shivalal Jawahar Collection Equipment; Heritage Foundation, Jalgaon.

कहानी :

बरियाती से

अजितकुमार सिन्हा

कतनो जान बचवला प आखिरी दमे हम बिआह के नेवता के फेरा में पड़िये गइनी। कतना साल से हम ई झमेला से कसहूँ-कसहूँ अपना के बचाइये लेत रहीं, बाकिर एह बेरा हमार जिगरी संघतिया रमाकान्त हमरा के अस पकड़लन कि हमरा प बिपत पड़िये गइल। बिपत ई कि शहर के ना, बलुक देहात के बरियात में जाए के परल। हम रमाकान्त से कहनीं कि देख इयार, हम अजगर के अइसन अगसर रहे वाला आदमी बिआह-शादी के हुरदंग में हेरा जाइब। ओहिजा जा के हम तोहरा काज में मदद ना कर सकब, ऊपरसे तोहरा लोगिन के कपार प एगो बोझे हो जाइब। बाकिर ऊ हमार काहे के कुछुओ सुने जासु। खूबे ठाट बान्हि के बिआह में आवे के नेवता देइये देले। ए साहेब, रमाकान्त के गाँव! एकदम ठेठ देहात। सवारी बस ईहे बूझीं कि बैलगाड़ी आ दु चार गो एक्का कसहूँ काँय-काँय के ओहिजा चहुँपत रहे।

अब जन पूछीं, अधे रहता में ऊ बेमरिया अइसन लागे अवला टट्टू जे एक्का से उखड़ के पराइल. त जान जाईं कि फेनु ना लवटल। काफी असरा देखला के बाद हाथ में ट्रान्जिस्टर लेले पाँवें गाड़ी प तीन-चार घंटा में रमाकान्त के इहाँ चहुँपत-चहुँपत हमार गोड़ कतना जगे छिला गइल। हमरा के देखते मातर हमरा हाथ से ट्रान्जिस्टर ले के रमाकान्त अगरा के बोललस, बाह रे मरदे, हम त बूझत रहीं कि तू ना अइब।

हँ, त हम अब तनी सुस्तावे खातिर जवना कोठारी में झाँकीं तवने में दसबीस गो आदिमी लउकस। ओकरा ऊपर गाँजा आ बीड़ी के धुआँ लउके। खइनीं अतना ठोकात रहे कि छींकत-छींकत मरद हो जात रहे। देहात के भोला-भाला लोग कमर से जाँघ तक धोती बन्हले आ पगड़ी सम्हारत चारो

ओर दउड़े में लागल रहे लोग। भीतरी आँगना में पूड़ी आ मिठाई छानि-छानि घर में पसारल जात रहे। जनाना लोगिन घूघ कढ़ले एने-ओने कुछ अइसन भरमाह लेखा दउड़त रहे कि उनका लोगनी के पेट आ डाँड प के अंचरा ऊपर उधियात चलत रहे। आखिर में हम बहरिए एगा बेंच पर ओठंग गइनी।

जवना दिन हम उनका इहाँ गइल रहीं ओही दिन साँझी खानी उनका इहाँ बरियात आइल। गाँव से इची फरका एगो छोटहन पाठशाला क भिरी आम के एगा बगइचा में बरियात टीकल। दुआरे लागि के बरियात जनवासा में चहुंपल, आ बरियाते का साथे आइलि एगो नटखुट आउर करिया-कुचकुच अधेड़ उमरि के तवाइफ आपन नाच, आ मरद जइसन कंठ से बराती लोगिन के मन बहलावे लागलि। सरंगी आ तबला बजावे अवला लोग अउँघा-अउँघा के, मुँह लटका क थाकल-खेदाइल ताल आउर सुरसे बाई जी क सथत करत रहे। उन्हका के देखला प अइसन लागत रहे जइसे ऊ लोग मुरदा के खोंपड़ी खारि के आइल होखस जा। लोग वाह-वाह कइले रहे। तबले रमाकांत के चाचा दउड़त अइलन आ ओहिजा अपना घरे के आउर गाँवें के लोगिन के बइठ के झूमत देखि के अगिया गइलन, "हूँ, रंडी के गवनई सुनतारन मामा लोग। ओहिजा के कार के देखी रे?" कुछ लोग उठि के भागल आ कुछ लोगिन के टाँग पसार के बइठे के आराम हो गइल। चाचा जब लउट के जाए लगलन तब बर के बाप उनका के बोला के कहलन, "काहे महाराज! हमनी साथे आठ गा हाथी और दस-गो घाड़ा आइल बाड़न स। ऊ सभन खातिर एक-एक पसेरी दाना रउआ अबहीं ले ना भेजववनीं?" ओही घरी समधी साहेब के बड़ भाई आगे आक तना रोखाह बाललन, "रउआ लाग त बड़ मतभरम आदिमी बानी सभे जा, अबहीं तकले दारू ना भेजनीं सभे। हम त रउआ लाग से पहिलहीं कह देले रहीं कि बरियाता में कुछ लाग खाये-पीये अवला लाग भी अइहन। रउआ लाग निठाह गँवार हईं, कौनो इन्तजाम-बात ना कईनीं जा। जाईं जल्दी से सभ सामान भेजीं सभे।"

चचा तनी टेढ़िये रोख के आदमी रहन, लगले टेढ़िया गइलन, "भाई जी, हम ई तना कहले रहीं कि अतना

कहानी :

बरियाती से

अजितकुमार सिन्हा

कतनो जान बचवला प आखिरी दमे हम बिआह के नेवता के फेरा में पड़िये गइनी। कतना साल से हम ई झमेला से कसहूँ-कसहूँ अपना के बचाइये लेत रहीं, बाकिर एह बेरा हमार जिगरी संघतिया रमाकान्त हमरा के अस पकड़लन कि हमरा प बिपत पड़िये गइल। बिपत ई कि शहर के ना, बलुक देहात के बरियात में जाए के परल। हम रमाकान्त से कहनीं कि देख इयार, हम अजगर के अइसन अगसर रहे वाला आदमी बिआह-शादी के हुरदंग में हेरा जाइब। ओहिजा जा के हम तोहरा काज में मदद ना कर सकब, ऊपरसे तोहरा लोगिन के कपार प एगो बोझे हो जाइब। बाकिर ऊ हमार काहे के कुछुओ सुने जासु। खूबे ठाट बान्हि के बिआह में आवे के नेवता देइये देले। ए साहेब, रमाकान्त के गाँव ! एकदम ठेठ देहात। सवारी बस ईहे बूझीं कि बैलगाड़ी आ दू चार गो एक्का कसहूँ काँख-कँख के ओहिजा चहुँपत रहे।

अब जन पूछीं, अधे रहता में ऊ बेमरिया अइसन लागेअवला टट्टू जे एक्का से उखड़ के पराइल. त जान जाईं कि फेनु ना लवटल। काफी असरा देखला के बाद हाथ में ट्रान्जिस्टर लेले पाँवें गाड़ी प तीन-चार घंटा में रमाकान्त के इहाँ चहुँपत-चहुँपत हमार गोड़ कतना जगे छिला गइल। हमरा के देखते मातर हमरा हाथ से ट्रान्जिस्टर ले के रमाकान्त अगरा के बोललस, बाह रे मरदे, हम त बूझत रहीं कि तू ना अइ ब।

हँ, त हम अब तनी सुस्ताये खातिर जवना कोठारी में झाँकी तवने में दसबीस गो आदिमी लउकस। ओकरा ऊपर गाँजा आ बीड़ी के धुआँ लउके। खइनीं अतना ठोकात रहे कि छींकत-छींकत मरन हो जात रहे। देहात के भोला-भाला लोग कमर से जाँघ तक धोती बान्हले आ पगड़ी सम्हारत चारो

ओर दउड़े में लागल रहे लोग। भीतरी आँगना में पूड़ी आ मिठाई छानि-छानि घर में पसारल जात रहे। जनाना लोगिन घूघ कढ़ले एने-ओने कुछ अइसन भरमाह लेखा दउड़त रहे कि उनका लोगनी के पेट आ डाँड प के अंचरा ऊपर उधियात चलत रहे। आखिर में हम बहरिए एगो बेंच पर ओठंग गइनी।

जवना दिन हम उनका इहाँ गइल रहीं ओही दिन साँझी खानी उनका इहाँ बारियात आइल। गाँव से इची फरका एगो छोटहन पाठशाला क भिरी आम के एगा बगइचा में बरियात टीकल। दुआरे लागि के बरियात जनवासा में चहुंपल, आ बरियाते का साथे आइलि एगो नटखुट आउर करिया-कुचकुच अधेड़ उमरि के तवाइफ आपन नाच, आ मरद जइसन कंठ से बराती लोगिन के मन बहलावे लागलि। सरंगी आ तबला बजावे अवला लोग अउँघा-अउँघा के, मुँह लटका क थाकल-खेदाइल ताल आउर सुरसे बाई जी क सघत करत रहे। उन्हका के देखला प अइसन लागत रहे जइसे ऊ लोग मुरदा के खोंपड़ी धारि कं आइल होखस जा। लोग वाह-वाह कइले रहे। तबले रमाकांत के चाचा दउड़त अइलन आ ओहिजा अपना घरे के आउर गाँवें के लोगिन के बइठ के झूमत देखि के अगिया गइलन, "हूँ, रंडी के गवनई सुनतारन मामा लोग। ओहिजा के कार के देखी रे?" कुछ लोग उठि के भागल आ कुछ लोगिन के टाँग पसार के बइठे के आराम हो गइल। चाचा जब लउट के जाए लगलन तब बर के बाप उनका के बोला के कहलन, "काहे महाराज! हमनी साथे आठ गा हाथी और दस-गो घाड़ा आइल बाड़न स। ऊ सभन खातिर एक-एक पसेरी दाना रउआ अबहीं ले ना भेजववनीं?" ओही घरी समधी साहेब के बड़ भाई आगे आक तना रोखाह बाललन, "रउआ लाग त बड़ मतभरम आदिमा बानी सभे जा, अबहीं तकले दारू ना भेजनीं सभे। हम त रउआ लोग से पहिलहीं कह देले रहीं कि बरियाता में कुछ लाग खाये-पीये अवला लाग भा अइहन। रउआ लोग निठाह गँवार हईं, कौनो इन्तजाम-बात ना कईनीं जा। जाईं जल्दी से सभ सामान भेजीं सभे।"

चचा तनी टेढ़िये रोख के आदमी रहन, लगले टेढ़िया गइलन, "भाई जी, हम ई तना कहले रहीं कि अतना

आदिमी आ जानवर लेके रउआ लोग आइब। ई हो जानिए के रउआ लोग चउले नूँ करतानी कि एह साल पानी ना गिरला से ना धान भइल ना रब्बी। आ महाराज, जब आदमीं के दाना मोहाल भइल बा त हमनी का जानवर खातिर दाना कहवाँ से ले आईं जा? ऊपर से रउओ लोग बानी कि सउँसे सकेसे उठा के ले आइल बानीं जा। दोसर बात ई बा कि ई बाभन-बिशुन के गाँव में दारू ना आ सके। हमनी का एही खातिर गँवार बनीं जा त हमनी के धन भाग! हमरा त बुझाता कि जहँवाँ तकले पढ़ल-लिखल आ बड़ होखे के बात बा ओहिजा आज काल्ह दारू आ माँस-मछली खाये अवला लोग आपन ठेपा लगा देले बा।"

एही घरी गवनई सुने अवला लोग के मुंह से बाईजी के तारीफी सुने के मिलल अवरू चाचा के आगे वाला बात ओही में बूड़ गइल। बाकिर थोरि एका में चाचा में आ ऊ लोग में फेन लेह-देह होखे लागल। बाई जी के नाच ई लेह-देह में कुछ मद्धिम पड़ल देखि के दुलहा के बड़का भाई उनका के हुकुम देलन, "तू एने-ओने का ताक तारू! च ल, च ल, खूबे गरमा के नाचत रह। ई लोग के चिचिअइला से तोहार नाच बन्द हो जाई! ऊ लोग आपन काम करता, हमनी के आपन काम करींजा।" तमाशा देखे अवला लोग में कुछ लोग दही में चीनी मिला देलस जवना में आठ दस बरीस के लइका भी लुका के सिगरेट पियत आ पान खात शामिल रहन स। ओकरा बाद तुरन्ते आपन मोट-मोट ओठ पर एगो हलुक मुसुकी लेई के आउर लिलार से पसेना के साथ पाउडर के बेतरह फइलल परत पोंछि के बाईजी चिचिअइली, "हे, गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो, सइयाँ से कर द मिलनवाँ।"

हमरा हँसी बर गइल। ओहिजा एक ओरी लेह-देह करे अवला लोगिन के अलग दुनिया रहे, आ दोसरा ओरी गवनई प थपरी पीटे अवला लोग के अलग। दुलहा के चाचा बोलत रहन, 'हम त पहिलहीं कहत रहीं कि अइसन गँवार गाँव में बिआह कइल बड़का लोग के नीक ना लागी, बाकिर हमार बतिए के सुनेला, धिरकार ह!! जे जनावर के दाना नइखे दे सकत ऊ आदमी के का खिआई!!'

टैम देखि के कुछ बूढ़-पुरनियाँ

लोग ऊ लोग के समझावे लागल आ बूझ जाईं कि कुछ एने-ओने क के कइसहूँ ऊ झगरा के मिटावल गइल।

गुरहत्थी खातिर लोग जब दुलहा के बड़ भाई के बोलावे आइल त ऊ बाई जी के गाना सुने में अतना मगन रहन कि छिनगा के कह देलन, 'हम उठब त अपना पसन के गवनई सुनिये के उठब ना त ना।" हमरा उनका के देख के ठनका मार देलस। हमरा बुझाइल कि ऊ गवनई के महीन बूझे अवला आउर बाईजी लोग के उगलदान साफ करे अवला हवन। आज काल्ह के गवनई बेजाईं नइखे रह गइल, बलुक आज काल्ह के जमाना के राग बन गइल बा। आ ई राग के सुने के हमनी के अतना आदत पड़ गइल बा कि ई अब तनिको जबून ना बुझाए, बलुक अतना नीमन हो गइल बा कि ईहे राग में हमनी का भजनों कीर्तन करे लागल बानी जा, आउर गवनिहार के हाव भाव, कटाच्छ, चाल-चलन, आ मुद्रा में अपना घर में टाँगल सीता आ पारवती जी के तस्वीरियो सजावे लागल बानी जा। एह तरह से हमनी के साइत लाखन बरीस से चलि आइल आपन धरमीक आउर समाजिक भूलन के सुधारे लागल बानी जा।

एगो अवरू बात सुने के मिलल कि कवनो बेरा रमाकान्त के घर में कोई खास बजह से गाँव के बराभन लोग खाइल-पिअल छोड़ि देले रहे। बाकिर ओह दिन हम देखनी कि गाँव के सब बराभन लोग आपन बाल-बच्चन के साथे रमाकान्त के घरे कचरत रहे। बोजह बाद में मालूम भइल जवना घरी हम रात के अन्हरिया में कुछ चीज-बतुस लेके रमाकान्त के घरे से जनवासा ओरि जात रहनी। अन्हरिए में हमरा आगे-आगे रमाकान्त के घरे से खा के ढेकारत बाबा जी लोग चलल जात रहे। एगो बाबा जी कहत जात रहन, "बाकिर भाई, रउआ लौग ई नीमन ना कइनीं कि अतहत बड़हन परतीगया के दू-दू ठो रोपेआ आ दू-दू सेर चाउर प तूड़ देनी। महँगी बा ठीक बा, बाकिर एकर माने ई नइखे कि हम आपन धरम-करम तेज के कुनेती बन जाईं।"

तबहिंए कोई दोसर बाबाजी उनका बात के जबाब देलन, "देखीं मिसिर जी, हमनी के सिखावे के कवनो जरूरत नइखे। रउआ अपने दू महीना पहिले पिपरी गाँव के एगो चमइन के इहाँ खाली सात रुपल्ली

दछिना खातिर मुँह लुका के खइले रहीं, त का ई हमनी का नइखीं जानत। आउर धरम-करम त हम खुदे बनाइला आ मेटाइला जा। करोड़न बरिसन से हमनिये के लोगन अगुआई कइनी जा। जइसन चहनीं जा, लोगन के नचवनीं जा, बाकिर आज हमनिये के नाँचे के पड़ता त एह में घबड़ाये के कौन बात भइल। हमनियों के ई लोगिन के कुछ मोका दीहींजा नचावे के। रामप्रसाद बाबू (रमा के पिता) के हियाँ से दू रोपेआ दछिना मिलत बा, ई सुन के हमनी का अंडे-पोथी उनका दुआर प दउड़ गइनी जा। ईहे उनकर जीत ह, आ हमनी के नाचल भइल।"

तवलकले छूटते एगो नन्हीं मुटी बराभन अपना बाप से बूढ़-पुरनियाँ अस पूछे लागल, "बाबूजी! माई के पेट में जवन बबुआ बा ऊहो जनमि के आज हमनी के साथे चल आइल रहित त ओकरो दू गो रोपेया आ चाउर मिलल रहित नू?" एकरा पर सब लोग हँस देल।

हम ई भुक्खड़ पीढ़ी के अगुअन प आउर ऊ लइका प सोचे लगनीं।

दोसरका दिन रातभर जगला से मन के आ बदन के तकलीफ से घबड़ा के हम सोचनीं कि बरियात के लवटला प हमहूँ घरे लव जाइब।

मड़वा में जब दुलहा साहेब खाये लगलन तब के जाने कइसे हमार ट्रांजिस्टर ओहिजे टेबुल प रखल रहे। खाये के बेरा ऊ हमि गइलन आ लालची कुकुर लेखा चुप-चाप एने ओने ताके लगलन। लोग उनका के समुझावते रहे कि मटे प दुलहा के बड़ भाई हमार ट्रांजिस्टर उठा के उनका गोदी में रख देलन आ हँस के कहलन, 'ले रे भइयवा! घड़ी आ ट्रान्जिस्टर त हो गइल, अब जाये दे। ई लोग हमनी अइसन धनगर नइखन कि जे माँगब से दे दिहन जा।"

रामप्रसाद बाबू हमरा के धीरे से समुझवलन, "रमाकान्त में आ रउआ में कौनो फरकी नइखे। जइसन ओकर बहिन के शादी तइसन राउर बहिन के शादी। बाकिर रउरा जन घबराईं, दोसर नाया ट्रान्जिस्टर हम कीन देहब।"

पाछे दुलहा साहेब के बारे में पाता चलन कि ऊ कलकत्ता के कवनों बड़हन करखाना में काम करत रहन। महँगीं के चलते आजकल हड़ताल कर के घरे बइठल बाड़न। सोचलन कि चल ल बइठल-बइठल

एगो कर लेल जाउ, फेनु त कबहीं ना-कबहीं सिवाना प लडाई होइबे करी, हम दरखास देबे करब आउर भर्ती होइये जाइबि। फेनु त ई बेरोजगारी के फेरा मेंटिये जाई।

दोसरका दिन हम कसहूँ-कसहूँ घरे चल अइनीं। रहता के तकलीफ, बरियात के काँच-पाकल भोजन, आउर ओहिजा के गंदा बिचार हमरा प छोह क के हफ्ता भर के सिरदरद आ दो चार दिन खातिर बोखार के सबुर दे देलस।

कुछ दिन बाद हमरा मालूम भइल को दुलहा के तरफ से लड़की के चढ़ावल गहना-गुरिया के बेंच के रामप्रसाद बाबू शादी में लिहल गइल करज के चुकवलन, आउर दुलहा के बाप लड़की के बेगहना के बिदाई करे के अभियोग में रामप्रसाद बाबू प मोकदमा कर देले बाड़न। आज काल्ह दूनो समधी लोग कचहरी में बाकायदा केस लड़ रहल बाड़न जा।

—तरी मुहल्ला, आरा (बिहार)

* * *

(पृष्ठ ३३ के आगे पढ़ीं)

धब्बा भरल रहे। पूरा मकान में मालिस के तेल के गंध भरल रहे, बाकी ओकरा लागत रहे जे माई-बाबू जी के फुसुर-फुसुर आवाज अबहिंओं ओजा मेंडरातिया।

— प्रोफेसर्स कॉलनी,
के० जी० रोड, आरा।

गीत

सूर्य परमार

नदिया किनारे मोरा गाँव।
बहेला पवनवा झुर-झुर
मोर मनवा उड़े फुर-फुर
लागे उहां पिपरा के छाँव।
चिरईं के बोलीं तीरे
हुलसे करेजवा पीरे
देहियाँ भह रे एही ठाँव।
काँपत बा बेअरिया हो
मातल बा बधरिया हो
चलला प रोकि लेता पाँव।
कतहीं से आईं-जाईं
कतना ले मन बहलाईं
नदिया किनारे मोरा गाँव।

—स्वाधीनता, कलकत्ता।

नयी कहानी :

धीम आवाज

विजय मोहन सिंह

मानस के पोथी पर बड़े-बड़े अछरि में ऊ आपन नाँव टाँकि देलस : कुमारी अमला, बी. ए. (आनर्स)। देखीले अछरिन पर सियाही के गाढ़ रंग चढ़ावत रहे। अचके में ओकरा आँखि से लोर गिरल त ऊ चिहा गइलि। घूमि के देखलसि। चिहइला से घर के पोसुई बिलारि, जवंन चउकठ पर लरकि के झाँकति रहे, गँवे परा गइलि। दलान से माई आ बाबूजी के बातचीत के आवाज उपटत रहे। बाबूजी माई के चीजन के हिसाब बतावत रहले। रिटायर भइला के बाद बाबू जी के बाहर आइल-गइल छुटले दाखिल रहे। बाकी कबहूँ निकलसु त जरूरति के सभ चीजु बेसाहि ले आवसु। कबे-कबे ऊ तब निकलसु जब । कमरा के देवाल पर ओकर नजरि ठहरि गइल रहे। मकरी के जाला पर धूप काँपत रहे, आ एगो बड़हन माछी कमरा में घूसि गइल रहे। बाबू जी आ माई के बात भनभनहटि में डूबे लागल। जंगला के केवारी लूक के चटकन से दिन भर फट-फट बोजत रहली स। बाकी एक घरी ऊ चुप सधले रहीस। दुपहरिया लरकि गइल होई। ऊ कमरा से निकलति बाकी आँगन में आके थथमि गइलि। अभी छत पर बड़ा घाम होई। अभी त आँगने में अतना चकचन्वहीं छवले बा। ऊ चउका में चलि गइलि। दलान में से माई के बोली सुनाइल 'मुन्नी बेटी, तनी चाय बनइह।' ऊ कँउचि गइलि। चाये नू बनावे जात रहलि हा।

अचके में ओकरा बुझाइल कि माई-बाबू जी बड़ा धीमे-धीमे बतिआवता लोग। ओकर देहि तरना गइल, आ साँस रूके लागल। रुकत साँस के डोर केहू दलान के ओरि खींचत रहे। माई-बाबू जी के साँय-फुस से ओकरा बड़ा डर लागत रहे।

चउका के खिरिकी लगे ऊ खड़ा हो गइलि। खिरिकी के बाहर ऊजर रेत के चकमक आन्हीं चलति रहे।

ओकरा जनाइल जे जुग-जुग से ऊ एह खिरकी पर खड़ा बिया, आ सालन्हि से दलान में से साँय-फूस आवाज आवता। माई चाय खातिर आवति होई। केतली उतारे खातिर ऊ अपना अंचरा के खूँट खोजे लागलि। माई आइलि त बड़ा संदेह से ओकरा के निहरलसि। कहीं बात ई सुनि त ना लिहलसि। 'चाय हो जाइ त बाबू जी के दे दीह, थाकल-खोदाइल आइल बाड़े।' ऊ बिना जवाब दिहले माई के सूखल सुंह के ओरि ताकत रहे।

दलान में चउकी पर चाय राखि के जब बाबू जी के प्रनाम करे झुकलि त बाबू जी डायरी में से कुछु जल्दी-जल्दी नोट करत रहन। 'जीअ', ऊ ओही तरे पन्ना उलाटते कहले। चउकी पर से उठा के चाय देवे के बेरा ओकर हाथ काँपत रहे। बाबू जी के चाय देत खा हरदम ओकर हाथ काँपे लागत रहे।

'अनगूते नदी गइल रहलू हा ?' बाबू जी पुछले।

'ना, मउसो अइबे ना कइली', अफुराइल सुर में ऊ कहलिस।

'साँझि खा जइह।'

ऊ चुप रहे, बुझला ऊ चाहत रहन कि ऊ चलि जाउ त हम प्याला उठाईं। उनका डर रहे कि प्याला उठावत खा ओकरा पर नजरि जरूर चलि जाई! बाकी ऊ ओजा से हटि ना सकलि। साइत गइल ना चाहति रहे।

'मानस मिलि गइल' ऊ फे। पुछले।

'जी'

उपन्यास अच्छा ना मिलले स— मोट अछरि वाला तहरा माई खातिर ले आइल बानीं। तहार माई पढ़िहें।'

'जी।'

कबो-कबो बाबू जी कतना बेचारा हो जाले। ओकरा बुझात रहे कि ऊ ओकरा से डेराले।

चाय पी के ऊ छत पर चलि गइलि। कंहू नदी पार करत रहे त ओकरा साफे लउके। बाकी एह घरी नदी रेत के आन्हीं में गोता के अतरिछ भ गइल रहे। 'हो सकेला, आजु भइया आवसु', ऊ सोचलस। भइया जब आवेले त सबसे पहिले ओकरे नजरि उनका पर परेला। उनका अवाई से थोरे देरा खातिर ऊ बाहर के दुनिया से जोड़ा जात रहे। नया पत्रिका, आ किताब ऊ ले आवत रहन। महीननि बाद पत्रिका में ऊ सिनेमा के विज्ञापन देखे आ सड़क, सिनेमा घर, आ

दोकान के चीन्हल गंध ओकरा नाक में भरि जाइ। बाकी भइया अब कतना कम आव तारे, बड़का भइआ त अवरू कम। ओकरा बुझात रहे कि माई-बाबू जी कतना अकेला होत जाता लोग। तब ओकरा लागे कि अब ऊहे माई-बाबू जी के रहि गइलि बा। जब भइआ-भउजी आवसु त माई उन्हना लोग के हीत-नाता नियन खातिरदारी करे। माई हरदम ओकरा के समुझावे कि कवनो बात अइसन ना निकले जवन भउजी के बुरा लागे। बाबू जी भइया से डेराते-डेरात उनका नौकरी के बारे में पूछसु। दिन भर ऊ रानी के लेके घूमति रहे। आ ऊ लगि चलि जाइ त दू बात ओकरा मन में उपटे, एके संगे. एगो त ई कि एह तनाव से अब छुटकारा मिली कि अब कुछुआ बोले क पहिले सोचे के परी कि भइआ-भउजी के खराब मति लागे। साथ हीं इहो सोचे कि अब घर के फेरू से सहनउग बनावे के परी।

पहिले भइया आवे के पहिले चिट्ठी देत रहन। अब अचके में उतरि आवेले। इहो ओकरा नीके लागेला। बाकी जब बहुत दिन बीति जाइ त ओकर मन बेचैन हो जाइ। ऊ सोचे कि कतहूँ कवनो बात होईत। तब बरतन गिरे, आ भड़ाम से दरवाजा बन्द होखे के आवाजो ओकरा निमने लागे। ऊ रोज छत पर आके नदी के टक-टक देखे। धूरि-बालू के बँडेरा पटइला पर नदी के हलुक रेख अलगि आवत रहे। फेरू सगरे अन्हार हो जात रहे। बँडेरा के पीछूतो सूरज जइसे-जइसे बिसवे लागसु, अनजाने में रेलिंग पर ओकर मुट्ठी कसाए लागत रहे।

कबो दुपहरिया में कमरा बन्द क के ऊ बइठि जात रहे आ पुरनका बकसा के अंतरा में लुकाइल बिछ-कुँतिया के भगा के बक्सा खोलि लेइ। जब ले बाबू जी के नाक बाजे के आवाज आवत रहे, ऊ ओहिजे बइठल रहे। बकसा में से ऊ आपन डायरी निकासि लेत रहे। पन्ना-पन्ना खोलत खा ओकर अंगुरी काँपे। पढ़त-पढ़त जब बक्सा के सामान के बोझ से ओकर जाँघ दुखाये लागे त ओकर हाश लवटत रहे। घबरा के ऊ आपन अंगुरी निहारे लागे- बुझाइ जे तितिली के पाँखि के रंगीनी ओकरा पीयर आ रूखर अंगुरी पर छा गइल बा। जइसे अपना भूल काल में ऊ चोरी-चोरी, दबले पँव घुसि आइल होखे आ एगो सपना भरल रहस्य ओकरा आगे खुलि जाइ

रहे; कई बरिस पहिले जब कॉलेज के ट्रिप में ऊ कश्मीर गइलि रहे; कई बरिस पहिले के पंचमढ़ी के ऊ बंगला जवना के गेट पर ओकरा स्कूल के बस ठहरे, स्कूल आ कॉलेज के ऊ दिन'''। अंगुरी पर तितिली के रंगींनी अवरू गहरा जात रहे, आ पसेना से लदफदाइल अंगुरी डायरी के पन्ना पर सटि जात रही स। तले बाबू जी के नाक बाजल बन्द हो जात रहे, आ हड़बड़ा के अपना जाँघ पर साधल बोझा के बकसा में ठूसि देत रहे, जइसे-तइसे।

बाबू जी के आवाज सुनात रहे। ऊ पोसुआ कुकुर के बोलावत रहले। ओकरा अच्छा लागल जे अब बाबू जी माई से नइखन बतिआवत। कहीं टगाइल, अंटकल आकर सांस चले लागल। बाकी ओकरा बुझाइल जे भइये-भउजी ना, घर के सभ लोग एक-दोसरा से एकदम अलगा परि गइल बा। ऊ, माई, बाबूजी, सभ एक दोसरा से अलगे होत जाता। हर आदमी एक-दोसरा के कटि के निकलि जाइ, कम बतिआवे। बाबू जी अपना के अपराधी मानसु आ माई साबुन के टिकिया नियन गलत जात रहे।

छत के बाहर के मटमैला आसमान करिआये लागल। गरम हवा में कहीं-कुछुओ जरला के गंध भरल रहे। जब ऊ छत पर आवे त ओकरा बुझाई कि ऊ दुनिया से बाहर बा। छत ओकरा घर के ना, बाहर फइलल मैदान के हिस्सा ह। जइसे-जइसे अन्हार बढ़िआइल जात रहे ओकरा बुझाई कि अंजोर कहीं बाहर ना ओकरा भीतरे बुताइल जाता, आ अन्हार में देह के एक-एक हिस्सा घुलल जाता। खाली गर्मी के दिन के आँच घर के चारू ओर हवा में टंगाइल रहे। छत ओकरा लेखे ना रहे, ऊ एगो बन्द कमरा नियन रहे।

अंहार हो गइला पर ऊ सीढ़ी टकटोरत नीचे उतरलि। एह तरे टकटोरत उतरल ओकरा अच्छा लागत रहे। टकटोरत खा तरवा में सिहरन होला, आ ई भय जन्मेला कि कहीं सीढ़ी से अन्हार में नीचे मति गिरि परीं। ई सब सोचि के ओकर रोवाँ गनगना जाइ। अंहार में अपने घर ओकरा अजब भुतहा नियन लागे। लालटेन के पातर अंजोर दलान के दरवाजा से निकलि के बरामदा में सरकि आइल रहे। आँगन में उजियार के मइल

(बाकी पन्ना २९ पर पढ़ीं)।

कहानी

तीरथाटन

ईश्वरी प्रसाद गुप्त

करमतली मियाँ नाट-खोट, दुबरे-पातर करिया भुचेंग! सुपा लेखान करिया दाढ़ी, करिया मिरजई आ मइल पैजामा पहिनले अन्हरिया रात में भेंटा जासु त बुझाय, जमराज आ गइलन। बीच गाँव में उनकर घर रहे। एकाध बिगहा के गिरहत रहस। रोटी दाल गिरहथी से नाहिये चले। किस्त पर एगो सिलाई मशीन ले आइल रहलें। परब, तीज आ लगन-पाती के दिनमें त दूनो बेकत का दम मारे के फुरसत ना मिले, बाकी चढ़ते चौमासा मुँह में जाब लागे। एने ओने से ठग-ठूग के सावन कटाइल बाकी चढ़ते भादो त महाजन लोग खमाखम दुआर पर जुमे लागल। बेचारा खरा आदमी ठहरल, बे हीला हवाला के मशीन बन्हकी ध के महाजन लोगन के करजा बेबाक क देलन। दस पांच मेहरारू के दे के कुछ ओही में कलकत्ता जाये के बटसारी बना लेलन आ चल गइले बंगाला। बड़का सहर में त बारहो मास तीज-तेवहार आ होली-देवाली लागले रहेला। जावे उनका नोकरी लाग गइल। महीने-महीने खटाखट मेहरारू कीहाँ खरचा भेजे लगले। मेहरारू होसियार रहे जे खरचा आवे ओमें से आधा सुधा खाय आ बाकी जमा क के सिलाई मशीन, जे बन्हकी पड़ल रहे, छोड़ा लेलक। येही बीते गाँव के भाग जागल, लोग के हाथ रोजगार चले लागल। देखते दिन में गाँव भर के मँड़ई, भीतऊ घर आ खपड़ऊ सजी पक्का के हो गइलें सन। जहवाँ तीन सेर के बनिहारी मोहाल रहे उहाँ ठीकरा हो गइल। रोपेआही नोट त सउँसे गाँवे पिआज के खोइया जइसन उधियाए लागल। सब के करम जागल त करमतली बहू पाछा ना पड़ली, सालो भर झूला, फतुही आ घंघरी सीअते बीत जाय। अपना आ बाल-बच्चा खातिर

अपने कमाए लागल। बाकी उनका घर पर ईंटा ना चढ़ पावल। ऊ अपना मने मन सोचे लागल--एड़ी अलगवले केहू लमहर ना होखे; करम में होई त कहियो ले खोदा मियां भेजवे करिहें। करमतली का घर छोड़ला दू बरिस हो गइल रहें, येह से उनका मेहरारू का विस्वास रहे कि जब अइहें त एक मूठ सवराही रोपेया ले अइहें। बाकी करम में त बहेंगवा धइले रहे। ऊ कलकत्ते बेमार पड़ गइलें आ मेहरारू से बटसारी मंगा के हिलत कांपत घरे अइले। दस-पांच दिन में जब मिजाज ठीक भलइन त गांव में निकललें, देखस त सउँसे गाँव कोठा-अमारी। केहू से पूछे के त उनका फाले ना पड़ल कि लोग कवना रोजगारे अइसन बदल गइल।

घरे आके मेहरारू से फुसुर-फुसुर पुछलें। मेहरारू कहलइन, 'हमनी का करमे में लेंढ़ा लागल बा। तू तीन बरिस ले बंगाला करम कूट ल त जवरे येगो फुटही कउड़ियो ना ले अइल। इहाँ त नेपाली लदनी अइसन चलल बा कि सभे उठ के बइठ गइल।'

करमतली चिहाइले पुछलें—कथी के लदनी चलल बा?

'कथी के लदनी होखो? गांजा, भांग, अफीम के। महीना में दू तीन खेप लाद देवे ला लोग, आ सभे लाल हो गइल।'

'मेहरारू के जात, तूँहूऊ बुड़बक। लोग जे कह देलक मान गइलू। भाई गांजा अफीम पर सरकारी रोक बा। येह पर आपकारी के दरोगा सिपाही तनात रहेला।' करमतली अपना मेहरारू के समुझवले। उनकर बीवी कहली - मियां, येह घरी पइसा जे ना करावे थोड़े बा। येह जमाना में पइसा पर धरम आ ईमान बिकात बा। सरकारी अमला फइला के के पूछो। लदवइया लोग का संगे जइब त सब रंग-ताल बुझाइए जाई। येक खेप में जेकरा चले के ना लूर बा सेहू सै-पचास बना लेवेला।'

मेहरारू का सिखवले करमतली गाँव के लदवइया सन का जवरे पचास रोपेया पूंजी लगा के एक खेप मरले। बे हींग हरदी लगवले दुआरे पर गँहकी पहुँचल आ पूंजी तेबरिया गइल। करमतली के मन चसक गइल। दू तीन खेत लगवलें आ हाथ में हजार रोपेया के पूंजी हो गइलन। सोंचले, बड़ पूँजी-पथारी के रोजगार गऊँजा पथारी के का करी। असगरा

असगरी कइले फायदा बा। येह तरेह सजी कमाई देखार हो जात बा।

सांप के ना मन्तर जानीं, बीछी का बीअल में हाथ लगाईं। से ही हिसाब करमतली के भइल। अभी त येह रोजगार में नया पइसल रहलें। कहवां-कहवां खुर पुजाई देवे के होखे ला—केतना केकर तहरीर होखे ला, कुछो जनले ना सुनलें। लाग गइल लइकधिया, आ नेपाल सिवान से दसे पांच मइल आवते-आवते थाम लेलक येगो अबकारी के दरोगा। माल जप्त हो गइल, करमतली पर मोकदमा चलल। हाकिम छव महीना के सजाय सुना देलक। करमतली मियाँ चल गइलें जेहल के खिचड़ी खाये। मेयाद पूरा भइले जब घरे अइले त लोग पूछे लागल—का हो, करमतली भाई, केने अनेक दिन गुम रहल हवे ?" करमतली का इआद रहे, उनके गाँव के नन्हकू मिसिर येक बेर बेटिकस के रेल गाड़ी में पकड़ा गइले आ उनका एक महीना के सजाय हो गइल। घरे अइला पर लोग का पूछला पर कहलें—चल गइल रहनी हवे तीरिथ करे। बतिया इआदे रहे। करमतली चट से कह देलें—भाई, पड़ गइनी खाला का फेर में। ऊ मनबे ना करस। का करीं। चल गइनी हज करे। बाकी जे तरेह नन्हकू मिसिर के भंडा फूटल जब जुर्माना असूले कुरकी जप्ती ले-ले कचहरी के नाजीर पहुँचल। ओही तरेह करमतली के जुर्माना असुलावे आइल त लोग जनलक कि करमतली हज करे ना गइल रहले, ऊ बड़का घर के मेहमानदारी करे गइल रहलें हवे। करमतली घर दुआर जरपेसकी ध के जुर्माना दे देहलें। आ जे तरेह सराब के निसा हवे ओही तरेह गांजा-अफीम के लदनी के। सभे लदनिहार तर-तहरीर में हिला-हूज्जत भइला पर पकड़इवे करेला आ छूट के आवेला त कहेला तीरिथ गइल रहनी हवे। ओही रोजगार पाय के करमतलियो के भीतऊ घर उजर धपाधप हो गइल। येह बीचे ऊ कय बेरि हज क अइलें। जेहल के केहु नामे ना लेवे सिवा तीरिथ। करमत तली का दुआरे पर मनसी साह के घर। मन्सी साह के बेटा बड़ा पढुआ। इनटरेस के इमतिहान ऊ देइये त देलक। इमतिहान देके जब ऊ घरे आइल त लोग पूछलक, 'काहो, मटर साह, पास क गइल ?' त ऊ कहलक 'पहिले के दोसर पास होवे

रहल हवे अब त बे तीरिथ कइले केहू पासे ना करे।' ई सुनते साह कहलें—'बख्स ये बिलार, मुरगा नाँढ़े होके रहिए रे मटरा, तू घोड़े लदिहे, बाकी तीरिथ के नाम ना लेत होखिहे।' मटर कतनो कहलें—'बाबू, सभ लइका इम्तिहान देके तीरिथ करे जाला। ना जाय ऊहे जे पढ़े लिखे में बड़ा जेहनी बा। हम जेहल जाय वाला तीरिथ करे ना नू जाएब। जाएब-इम्तिहानी लमर बढ़ वावे। वे सै पचास खरच कइले येह जमाना में के माई के लाल बा कि पास कर जाई।' मन्सी साह बेटा के बात सुन के कपार पर हाथ ध के सोचे लगलें—अब इसकोलो सन में तहरीर के रेवाज हो गइल का दुन!

—मोतिहारी, चम्पारन (बिहार)

मेहरारू : अब के

जनार्दन चतुर्वेदी 'जन' रघुनाथपुरी

पलक पपनिया से छयला नजरि लागे
ठटवा क्लिलोल कई मटकी चलावेली।
स्वीटर विनत वेरी ककना विहून हाथ,
चूरी एहवात छोड़ि घड़ी चमकावेली।
बचवा का मुँहवा में डिबवा के दूध देली,
'ममी', 'पापा' बोलि अंगरेजिया सिखावेली।
भारत के ललना का फैसन के फेर 'जन'
अंगरेजी छपवा के अबहूँ बतावेली ॥१॥
सासु ना ननद घर अपने अनन चाहीं,
देवर जेठनिआ के सतुर बतावेली।
गोबर छूअत खानी हाथवा में घिना लागे,
तामचीनी थरिया के नीमन बखानेली।
छम छम चालु चलि चपला लजा व तारी,
फुहरी कुलछनी के रुपवा देखावेली।
रोटिआ सेंकत "जन" तउआ के करिखा लागे,
तोस, केक, बिसकुट में बिटामिन पावेली ॥२॥

—कर्सियांग (प० बंगाल)

एकांकी

खरिहानी में

मुरली मनोहर प्रसाद

पत्नी—देखतानी कि आजु रउरा बहुत भिनसहरे तैयार हो गइलीं। खेते सवेरहीं जाए के बा का?

मंगरू—हँ हो, खेते से बोझा खरिहाने में ले आवे के बा। सोचत रहीं कि आज से दवनी शुरू कइ दीं। कुछ अनाज उपर आइत त मोदियाइन से जान छूटित।

पत्नी—हँ जी. ई त हम पूछबे ना कइलीं, क गो बोझा भइल बा? कतना भइले होई, ईश्वरो के त कोपे रहे एह साल। एकदम मुआर पर गइल बा।

मंगरू—मन परत बा त करेजा टुकी टुकी हो जात बा, छाती भर धान लागल रहे। अगर हथिया पर जाइत त हमनी के करम-किस्मत खुल जाइत। साल भर के खोराको हो जाइत, आ महाजनो के चुकती कर देतीं। कतना निकलले होई, बेसी के उमेदि नइखे।

पत्नी—जाईं। (कुछ ठहरि के) हँ, ई मकई के एगो रोटी रात के बच गइल बा, मुँह में लगा के पानी पी लीहीं। लौटे में देर होखी।

मंगरू—हँ हो, ठीके कहत बाड़ू। खेत से सब बोझा खरिहान में ले आवे के बा। ओकरा बाद पंइचा बैलो जुटावे के होखी, अपना भिरी त एके गो बा।

पत्नी—एही से कहत रहीं कि एगो बै कीन लीहीं त कम-से-कम हर के जोड़ लागि जाइत। जोताइओ के बेरा त रउवा पँईचे लेवे के होला।

मंगरू—हमरो विचार में आवत कि अबकी बरहँपुर के मेला में ए बैल किन लीं। बाकी भगवान के मंजि नइखे। सोचत रहीं कि फसल अच्छा लागल बा। कुछ बच जा त बेच के कुछ रुपया उगाह लेब, आ थोड़ा-मोड़ा जे घटित केकरो हथफेर ले लेतीं।

पत्नी—अभी त झुनुआ के छट्ठी में रुपया लिआइल रहे से अइसहीं कपार पर ठनकत बा। अब कौन असरा बा कि कोई दीही।

मंगरू—हमरो हिम्मत पाछे भाग जा बा लेवे के नाम पर। फसल अच्छा ह जाइत त जे सौ पचास घटीत त माँ के हियावो करतीं, बाकी अढ़ाई तीन स लेवे के हमरा औकाति नइखे। तीरथ चन्द के सूद भरत-भरत त उमीर बीत गइल।

पत्नी - अच्छा जाईं । आईं त मोदियाइन किहाँ कूछ दे लें के ले आईं त आगे जूटो। आज त दँवरिओ नूँ होई। काल्हु ले आइब त उसिनाई आ तब जाके घर के अनाज देखे के अवसर होई । आजु त मोदियाइन के आसरा बा।

मंगरू—अच्छा, अच्छा हम खरिहान से लौट के तुरंते बन्दोबस्त कर देब। खेत पर से बोझा ले आके राखि देब तब बैल के जोगाड़ करब। ऊ पहर दँवरी में हाथ लगाइब।

पत्नी—लगले लौटबि।

(खरिहान में बुझावन के विरहा गावते प्रवेश)

बुझावन—अरे काँहे मरदे, थाक का गइले बोझा ढोवत-ढोवत। मजदूरा काहे ना रख लेल।

मंगरू—मजूरा राखे के कहत बाड़। अतना बेशी भइलबा कि राखीं। देखत नइख, सामनही बीस-बाइस बोझा परल बा।

बुझावन—तब काहे अइसन मन मरले बाड़।

मंगरू—बुझावन भाई, हम मन नइखीं मरले। सोचत बानीं कि अतना से का होखी। धान जब लागल रहे त देखत बनत रहे, बाकी आज खरिहान में अतना कम बोझा देखके करेजा दहल जात बा।

बुझावन—भाई मंगरू, ई मत कह। एह साल त जइसे वजर गिरल ह। बरखा के बिना सब चौपट हो गइल। भगवान के प्रकोप भइल जात बा। अतना मंहगी त भइले रहे, एह साल ना जाने अवरू का होखी।

मंगरू—जनि कह। हम त सोचत बानी त माथा घूमे लागत बा। हम त मन में रखले रहीं कि कुछुओ ना त साल भर के खाएके निकल आई। कुछ घटी त मटर-बूट मिला के साल काट लेतीं। बाकी इहाँ देखत बानी कि छवो महीना के उबारा नइखे।

बुझावन—हमनी के छोट अवकात वाला गिरहत के इहे दशा बा। हमनी से नीमन कूली मजूरा बाड़न सन जे कमाल सन आ खाल सन। अच्छा ल, मन मारला से का होत बा। एगो बीड़ी धराव, माचीस बड़ुवे नूँ।

मंगरू—बीड़ी का पीहीं हो, केथुओ में मन नइखे लागत। झुनुवा के माई सुनी त कतना दुखित होई। कहलें रहे एगो चुनरी कीने के। बेचारी बड़ा अच्छा बिया। भाग अच्छा रहे कि अइसन मेहरि मिलल। फटही पहिनले रहेले, बाकी कबहूँ शिकाइति ना करे। अपने भूखे रह जालें,

बाकी हमरा खातिर कुछ जुटाइए देले।

बुझावन—जाये दे मरदवा। जइसे भगवान रखिहन वोइसे रहे के होई। भगवान मुँह चिरले बाड़न त अहारो दीहन, ल पीअ।

बुझावन—देख मंगरू भाई, सिपहिया एहिजो पहुँच गइल।

कारिन्दा—काँहे रे मंगरूआ, बड़ा मौज में बीड़ी धुकधुकवले बाड़ ससुर, बड़ा चल्हाक बाड़।

मंगरू—काँहे सरकार, अतना खिसियाइल काहे जाता।

करिन्दा—हमरे के चरावे चलल बाड़। अतना भिसहरे सब बोझा ढोके खरिहान में ले अइ ल। हम गइल रहीं खेत पर से बोझा उठा ले आवे आ तू ससुरू इहाँ बइठ के बीड़ी धुकत वाड़।

मंगरू—सरकार, हम खरिहान पर से रउवा भीरी आवहीं के रही।

करिन्दा अच्छा रहे द ई सब चालू। चल चल, सरकार के लगान के हिस्सा निकाल।

मंगरू - सरकार एह बेर लगान माफ कर देल जाए। देखत नइखीं खरिहान रोअता।

करिन्दा--लगान में एही बोझा दे दे। रुपया में असूल होत रही।

मंगरू—सरकार अबकी बोझा भी कइसे देहीं। इहे देखत बानी नँ। बीसे-बाइस बोझा त भइले बा। बताईं, कतना निकलबे करी।

करिन्दा—एकरा से हमरा कवनो मतलब नइखे, हमरा लगान चाहीं अतना बहुत कर दीहीला कि बोझा ले जाके लगान के रुपया में से कटवा दीहीला।

मंगरू- सरकार अबकी बार अहार जाई। हमार कवर जन छीनल जाय। साल भर खाए लायक भी नइखे भइल। हमनी के त एही पर जीं के बा।

करिन्दा— अपसर लोग ई कुल न सुनस। ऊ लोग के अपना लगान से काम बा। जतना भइल बा ओही में से वसूल करेके होई।

मंगरू--सरकार, माफ कइल जाय। अबरी माफ कइल जाय, लगान छोड़वा देल जाय। राउर नाम अब जिन्दगी भर ना बिसरब। रउवा सरकार के करीन्दा बानीं। रउवा चाहीं त हमरा के उबार सकीला। अफ़सर से कह सुनके लगान छोड़वा देल जाय।

करिन्दा —ई कुल्ही हम ना जानीं, हम त हुकुम के तामिल करेके हाल जानी ला। जे कुछ क र, हम त

खरिहान से बोझा उठवाइ ले जाइब। अरे झपसिया, टेंगरवा।

झपसी-टेंगर-(दूर से आवाज आवता) आवत वानीं जा सरकार (नजदीक स्वर) का कहल जाता सरकार।

करिन्दा--ओ में से उठा ले चल दस बोझा।

मंगरू—सरकार अतना मत लीहल जाय। इन्साफ कइल जाउ।

करिन्दा—टेंगरवा ससुरू मुँह का ताकत बाड़। उठा के लादत काँहे नइख बैल गाड़ी पर (वैल के गरदनि के घंटी के टुन-टुन)।

मंगरू--सरकार हम मर जाइब।

करिन्दा - अच्छा रे, वैल गाड़ी पर आठे बोझा लदिहे। (पुकार ता) धनेसरा।

धनेसरा—काह, सरकार।

करिन्दा —अच्छा ले, ई दू बोझा हमरा घरे लगले पहुँचवले आव।

मंगरू-सरकार, ई का कइल जात बा।

करिन्दा—अतना करत वानीं ऊहे ढेर बा। दसे बोझा में फरिया जाता, आठ बोझा सरकार के भइल और दू बोझा हमार।

मंगरू—सरकार, अइसन वे इन्साफी मत कइल जाय।

कारिन्दा—तूँ लोग खाली लाते के देवता हव जा। अतना मेहरबानी पर नाकुर नुकर करत वाड़। ना त दस बोझा सरकार के इहाँ जइवें करीत और हमहूँ दू बोझा से कम ना लेतीं। अइसे बारह बोझा हो जाइत। ई बोझा के तोरा गुने रियायत कर देत वानीं।

मंगरू—सरकार, हम मर जाइब।

कारिन्दा मंगरू, तू त ढेर लोग से अच्छा वाड़ और कुल्ही लोग के त दसों बोझा नइखे भइल। एह साल अकाल पड़ी। झपसिया! ले हाँक लेजो बैल गाड़ी।

(गाड़ी बढ़े के ध्वनि)

मंगरू सरकार, आपन दू बोझा त छोड़ दीहल जाय। नाहीं त हमार बाल बच्चा खइला-खइला बिना पटपटा के रह जइहें सन।

करिन्दा--हमरे के बेकूफ समझले बाड़स। हम आपन हिसा कइसे छोड़ दींही। हमरा बाल बच्चा नइखन स का? ई साल त हमरा जियादा लेबे के मन रहे।

—जैन कॉलेज, आरा।

भोजपुरी जनपद के मेहररुई परब

पिंड़िया के कहनी : एगो मूल्यांकन

सर्वदेव तिवारी "राकेश"

अइसे त कवे-कभार, कवनो भारभखवटी के चलते मरदो पिंड़िया कं दिन, राजी भा बेराजी से, भूखि जाला लोग, बाकिर असलन्हि में, ई ह मेहरारुन्हिये के परब। दूटहा-पुरान सूप-दउरा प हँसुआ से ठेंठावल राग 'ईसर पइ स दलीदर निक ल' के चहेटउवलि के बिहान गोधन-पूजा (गोबरधन-पूजा), भोजपुर के सभ गाँवन्हि में, मेहरारूलोग करेला। ओह दिन रेंगनी के मँगहटि बढ़ि जाले। पूरीरसिआव का सँगे अमर पीठा भा अमर गोभा ओह दिन खाये-खिआवे के भारी महिमा चलल आवता। मेहरारूलोग दूपहर तक भूखेला। नहाइ-धोइ के रेंगनी से सरापि के दुपहरिया में, टोल-परोस के मेहरारू मिलि-जुलि के कवनो चउमोहानी प गोधन कूटेला लोग। गोधन के बूँट अपना-अपना भाई-भतीज कं खिआवे के परथो जनमजुगी महत्त्व के बा। गोधन प के पानी 'अँवरा-भँवरा' के रकत कहिके अपना लट के जरे पिअला आ कहनी सुनला के बाद ओही गोधन के गोबर से पिंड़िया लगावल जाला। जइ भाई जे रहेला तइगो एगो अधिका सोराहो पिंड़िया सभे फरका-फरका लगावेला। एही दिन से पूरे एक महीना तक पिंड़िया के राग-रंग के धूम मचल रहेला।

पिंड़िया के गीतन्हि में मेहरारुन्हि कं ममता-सनल हियरा के फरिछ भाव आ दरकल-दरद में पेहम जिनिगी के जानदार नजारा देखेकं मिलेला। एह मोका प दूगो कहनी कहल-सुनल जाली स। बे सुनले केहू मुँह ना जुठिआ सकेला। पहिला पखवारा में छोटकी कहनी आ दोसरका में बड़की कहनी कहल-सुनल जाले। जे लोग हिन्दी के अतुकान्त छन्दन्हि से कउँचि के बिजुकल, आ गरिआवे खातिर रबड़ छंद आ केंचुआ छद भा कुकुरमुत्ता तक कहि गइल, ओह लोग का ई देखि कं दाँत ना निपोरे के चाहीं कि ई छन्द भोजपुरी लोक-जीवनों में, सभकरा से कम पढ़ल-गुनल मेहररुई-दरबार में, ना जाने कतना सइ बरिस ले आपन आसन जमवले बा। तब,

हिन्दी-कवि निराला, प्रसाद, अज्ञेय आ अउरिओ प्रयोगवादी लोगन्हि के एह छन्द-प्रयोग खातिर नू त दादे देवे के चाहीं आ नू दूसहीं के चाहीं। जवन छन्द लोक-जीवन के अतना करीब बा आ जवना के सोरि सँसरत अतना गहिड़ार गड़लि बा, ओके देखि-सुनि के लोग काहें बिजुकल आ आजुओ पगहा तुरा के काहें माँके लागता, ई नइखे बुझात ! अचरज त ई बा, कि जवना भोजपुरी लोक-जीवन में सबसे पहिले रबड़ छन्द के प्रयोग भइल बा, ओकरा साहित्य में आजुओ ढेरकहा गीते लिखा रहल बा। भोजपुरी में अइसन छन्द देखि के पढ़लो-लिखल लोग भड़कता, जबकि निपढ़ो समाज एह के ढेर दिन का सैकड़ो बरिस ले, अपनवले बा।

पिंड़िया के ई दूनो कहनी भोजपुरी साहित्य के, नया संदर्भ में, गौरव देवे वाली बाड़ी स। ऊ ई कि संसार के सभ साहित्य से पहिले एही में मुक्त छन्द के प्रयोग भइल। ई बात हम ताव में आके, बे सोचले-बिचरले नइखीं कहत। काहें कि एह कहनिन्हि के जनम हजारो बरिस पहिले भइल होइ जवना के भाषा में फेर-बदल हम मानि सकिलें छन्दो बदलल होई, ई माने के हम तेआर नइखीं। जतना पुरान पिंड़िया-परब बा, ओतने पुरान कहनियो के माने के परी। पिंड़िया द्वापर के गोवरधन-पूजा से सुरू भइल। माने ई कि कृष्ण-काल से पिंड़िया के कहनी एह छन्द में आ रहलि बा।

एगो बात अउरी बा। 'गीत-गोविन्दम' नहन एहू कथा-कविता के अन्त में ओकर महातम बतावल गइल बा। एकरा पुरनियापन के इहो एगो सबूते बा।

नीचे दूनो कहनी पारा-पारी दिहल जा रहल बाड़ी स। एमें पाठान्तर आ कथान्तरो मिलि सकेला। जेकरा अइसन कुछु कतो बुझाइ ऊ किरिपा क के लिखे, जवना से एह कहनीन्हि के असली रूप सामने ले आइल जा सके।

छोटकी कहनी

परिवा के दिन,
सोहराइ के राति ह,
गाइ-डाढ़ लागेला,
भँइसी पखेवेले।
चेरि-मोयरिनिया पिंड़िया लावेली;
चेरिया लावे सार कोन,
मोआरिन भँड़ार कोन।
रानी उठि बोलली हा—
''चेरिया रे, चेरिया
तू जो रन में, वन में
इन्हना के कठिया के;

तबले पीठरवा खानि देबि,
कूटि देबि..
ओरि देबि, बारि देबि,
जल के, थल के,
भाई के, भतीज के,
चील्हि के, कउवा के।"
चेरिया गइलि हा
रन में,
वन में,
तबले पीठरवा खनली हा, कुटली हा,
अरली हा- बरली हा
जल के, थल के, भाई के, भतीज के
चील्हि के, कउवा के।
नू सँझिया सँझाइलि हा,
नू बेरिया बिसवलि हा,
नू ईनर के सभा उठल हा,
नू निगई के पटिया टूटल हा,
नू चेरिया के ओड़ा उठल हा,
नू चेरिया घर आइलि हा।
रानी के मन में
खीसि-दीकि भइल हा,
चेरिया के पूतवा
बछिया का खूँटवा
तूरि-तारि चूर लाइ देली हा,
रखिया-छइया दुआर घूर लाइ के
बजर केवार देइ परि-हरि रहली हा।
सँझिया सँझाइलि,
बेरिया बिसवलि हा,
ईनर के सभा उठल हा,
निगई के पटिया टूटल हा,
चेरिया के ओड़ा उठल हा
चेरिया घर आइलि हा।
देखे त हा दइया,
मोर पूत घूर प लोटता-पोटता
झारि-झूरि कोरवा उठव ल सा,
ढक-ढक दुधवा पिअवल सा।
बावा, रे बावा
अइसन रानी, गरबी गुमानी
हाथी-घोड़ा आइत त धाँगि-धूँगि दिहित
सिआर झाकुर आइत चीरि-फारि खाइत,
हम त अइनी, झारि-झूरि उठवनी,
ढक-ढक दुधवा पिअवनी।
काँख तर बेटा, माथ पर ओड़ा
गइली हा रानी घरे।
"रानी हो, केवाड़ खोल
जल्दी से केवाड़ खोल।"
"कइसे में केवाड़ खोलीं
रेलि आउ, ठेलि आउ
पँजरी के हाड़-गोड़ चरमर करता
जीव सथलान में सकफक करता।"
"रानी हो, रानी.
कइसे में रेलि आईं, ठेलि आईं,
काँख मोरा बेटश बा
माथ पर ओड़वा बा।"
बेटवा के नाँव सूनि
चउँकि उठि धवली हा
बजर-केवार खोलि दिहली हा,
सोहरि के गोड़ धाइ परली हा।

"चेरिया रे, कवन ते नेम जान ?
कवन ते धरम जान ?
काहें तोर जिअछ भइल ?
काहें मोर मराछ भइल ?
तोर त पूतवा, बछिया का खूँटवा
तूरि-तारि चूर लाइ देनो हा
पीढ़िया उसीनलीं हा
अपने परोसनीं हा ।
तहरो वखरवा, ढाँकि-ढूँकि देनी हा,
रखिया-छन्हिया दुआर घूर लाइके
बजर-केवार देइ परि-हरि रहनी हा ।"
"रानी हो, तू त राजा के रानी
खटिया ले उठलू मचिया बइठलू
पान-फूल कढ़लू, मुँह जूठिअवलू,
घीव-गुर ढरलू, मुँह जूठिअवलू ।
हम त चेरि-चापटि
गोबरा के गइनीं तँहो कहनीं सुननीं ।
पनिया के गइनीं तँहो कहनीं सुननीं ।
ओइजे हमार जिअछ भइल,
ओइजे तोहार मराछ भइल ।"
हरतो सोग नू परनो सोग
नू गाई के बछिया सोग
नू भइया के बहिनी सोग
सोग परो घूरा-भारा पूत परो कोर में ।
कहनीं लवटो कहनिहार के,
पीढ़िया लवटो सुखनिहार के,
कहती-सुनती दूनो के भाला ।

बड़की कहनी

राज के बिटिया, भाट के बिटिया
एके सँगे रहली हा
दूनो जानी सखिये रहली हा ।
दूनो जानी मरि-हरि गइलो हा
दोसर जनम भइल हा,
तवो रानी राज घरे
आ भटिनी भाट घरे पलली हा ।
रानी के सात पूत भइल हा,
सातो मरि-हरि गइल हा ।
भटिनी के सात पूत भइल हा,
सातो जिअछ भइल हा ।
भटिनी उठि बोलली हा रानी से,
"बहिनी हो, बहिनी
हमरा त रोये के नहाये के
बड़ साध, बड़ मन लागल बा ।"
ई सुनि रानी बड़ खुश भइलो हा
उठि के भटिनी के उकुती बतवली हा ।
"जहूँ तोरा बहिनो हो
रोये नहाये के अतना साध बा, त
जा के सोरही गाई के गोबर मँगइह
आँगन लिपिह, पिअरा सरिसो,
टुँड़ार धान मँगा कें,
अथार-पथार ला दीह;
सातो बेटा अइहें, अउरा-दउरा दीह ।
टुँड़वा गड़ी, पाकी-फूटी
इछिलइहें-बिछिलइहें हाथ-गोड़ टूटी ।
रोये-नहाये के साध तोहार पूजी ।"
भटिनी उठि गइली हा,
सोरही गाई के गोबर मँगवली हा,
आँगन लिपली हा

टुड़वा धान अथार-पथार लवली हा
पिअरा सरिसो पसरली हा।
सातो बेटा अइले हा,
अउरवली हा दउरवली हा
नू टुँड़वा गइल हा,
नू टँगवा बिछिलाइल हा,
नू टूटल हा,
नू फूटल हा,
सातों जाना कूदि-फाँनि के खेललेहा।
रोये-नहाये के साधो ना पूजल हा।
एने रानी उठि बोलली हा—
"चेरिया, रे चेरिया,
जो तनी बहिनी का अँगना में,
देखि आउ,
कवन पूत मरले ? कवन पूत हरले ?"
चेरिया गइलि हा, जाके ऊ देखल सा
ना पूत मरल बाड़े, ना पूत हरल बाड़े
बाजन बाजता, कत्थक नाचता
गायन गावता, भाट बरहमावता
नगर गीत गावतो
बंशी बाजता, चटका उड़ता
सातो बेटवन्हि के ढक-ढक दूध
पिआवेली
सातो बेटा दूधे कुल्ला करतारे।
सातो बेटी-पतोह काजर-टिकुली
कइले बाड़ी।
उनुका अँगनवा बेइलिया लहलह
फुलाइल बा।
सातो बेटा फूल लोरिह
माई के धराब तारे।

(२)

भटिनी उठि गइली हा रानी का अँगना,
कहली हा तपाके से—
"बहिनी हो, बहिनी
जवन कहलू तवन कइनीं
तबो ना रोये-नहाये के साध हमार
पूजल।"
"जहूँ तोरा बहिनी हो,
एहू से ना साध पूजल त
जाके डाल भरि सोना ले ल
सँपहेरी घरे चलि जा,
साँप-बीखि किनि लीह,
लड़ुवा बना दीह।
सातो जाना अइहें
हँसि-हँसि कहिहें—
माई हो कलेवा द।
कहिह तू ओह लोग से
का पूत कलेवा दीं
तोहरी मउसिया, हमरी बहिनिया,
ओइजा से लाड़ु आइल
एकएगो लाड़ु लिह
खारे-खारे दूध ले के
खालीह, पी लीह।
बीखिया भीनि जाई, मरिहें-हरिहें
रोये-नहाये के साध तोहार पूजी।"
गइली हा सँपहेरिया घरे
साँप-बीखि ले अइली हा
लड़ुवा बनवली हा

सातो जाना बबुआ अइले हा, खइले हा;
नू बीखिया भीनल हा
नू मरले हा नू हरले हा
नू रोये-नहाये के साध उनुकर पूजल हा
रानी उठि बोलली हा --
"बेरिया रे जो तें बहिनी का आँगना
कवन पूत मरले ? कवन पूत हरले ?"
"ना पूत मरले, ना पूत हरले,
बाजन बाजता, कत्थक नाचता,
गायन गावता, भाट बरहमावता,
नागर गीत गावता, बंशी बाजता
चटका उड़ता
सातो बेटन्हि के दूधवा पिआवेली
सातो बेटा दूधे कुल्ला करत रे
सातो बेटी-पतोह काजर-टिकुली
कइले बाड़ी
अँगना बेइलिया लह लह फूलल बा
सातो बेटा लोरह तारे
माई के धरा व तारे ।"

(३)

भटिनी उठि गइली हा बहिनी का अँगना
जाके झकझोरली हा—
बहिनी, हो बहिनी
जइसे कहलू, तइसे कइनी
एहू से ना रोये-नहाये के साध पूजल ।"
ई सुनि रानी बड़ दुखी भइली हा
फेर के अभिभो में सोचे कुछु लगलीहा
"बहिनी हो
जइसे कहनी, तइसे कहलू
एहू प ना साध पूजल त
डाल भरि सोना फेनु ले ल
जा के सँपहेरी घरे
जिअते नाग-नागिन ले अइह
घूँचा में भरि के
चूल्ही का पाछा धइ दिह ।
साँझिया सँझा जाई,
बेरिया विसइ जाई,
गाइ-भँइसि दूहे के बेरा होई
सातो जाना बबुआ अइहें
माई हो घूँचा द
का पूत घूँचा दीं
चूल्हि-पाछा घूँचा बा
हाथ लाइ झारि लिह
मुँह लाइ पोंछि लिह
नगवा काटी
नगिनिया डँसी
मरिहें-हरिहें
रोये-नहाये के साध तोहार पूजी ।'
भटिनी गइली हा
नाग-नागिन ले अइली हा
चूल्हा के पाछा धइली हा
सातो बेटा अइले हा
माई हो घूँचा द
झट-से बतवली हा ।
सातो जाना गइले हा
हाथ लाके झरले हा
मुँह लाके फूँकले हा
सोने के हार बनि गइल हा

झारि-झूरि गरे लगवले हा।
दउरल-दउरल माई लगे गइले हा
"आमाँ हो, तू त बड़ बउराहिनि,
बेटी पतोहि पाइति त
नइहर-सासुर पठाइति
चेरि-चापर पाइत त
बेंचि-खोंचि खाइति।
हम त पवनीं हा
गरे ला घलनी हा।
भटिनी उदसली हा,
एहू से ना रोये-नहाये के
साध उनुकर पूजल हा।
रानी उठि चेरिया के
एहूबे पठवलो हा
चेरि जाई फेनु इहे कह ल सा।

(४)

भटिनी फेनु गइली हा रानी का आँगना
"बहिनी हो, बहिनो
इहो कहलू, इहो कइनी
तबो ना साध पूजल।"
"बहिनी, हो बहिनी
एहू से ना साध पूजल त जा
काँख तर बेटा, माथे ओड़ा
भूसा लिह, काठी लिह
तेल लिह, कराही लिह
माँझ बने जइह
चूल्हा खनिह, कड़ाही बइठइह
काठी जरिह, भूसा झोंकिह
तेल लइह
सातो बेटवा के, सात टुकी कके
कड़ाही में डालि दीह।
जरिहें-खोरिहें
रोइह-नहइ साध तोहार पूजी।"
भटिनी उठि गइली गइली हा
सभ चीजु ले ली हा
माँझ बने जा के
रानी के कहला अस
सभ काम कइली हा —
चूल्हा खनेली, ढहि-ढहि जाला,
कराहीबइठावेली गिरि-गिरि जाला,
तेल लावेली पानी होला।
काठी लावेली चनन होला
भूसा झोंकेली जीर होला
सातो बेटवा के सात टुकी करेली
कराही लाइ जाँते ली।
सातो जाना खल-खल हँसेले
निकलि-निकलि आवेले
धधाई कोरा चढ़ेले
माँझा-माँझा कहेले।
एही बीचे सिव-गउरा पारवती
बसँहा चढ़ल अइले हा,
गउरा देखि कहली हा —
हई देखी स्वामी जी
माँझ बने कवन पापिनि,
अपने जामल के, काटतिया-कूटतिया
कराही लाइ भूँजतिया।
चलीं तनी देखिलीं जा
सुनिलीं जा सँवाचिलीं जा।

सिव जी अनसइल हा, खीनसइल हा,
"तू त मेहरारू के जाति
जहँ किछु लउके ला
तँहवे बेलमावे के बा।"
तबो लोग आइल हा
गउरा पूछे लगली हा—
"काहें तूहूँ पापिनि रे,
काटेलिस-कूटेलिस
कराही लाइ जारेलिस
अपने अमल का के।"
"हे माता पारबती,
हमरा त रोये के नहाये के साध बा।"
जहूँ तोरा पापिनि रे,
अतना रोये-नहाये के साध बा त
जो गंगा-तीर वाहीं प
ओही ठाँ राजा सेठ के बेटा
मरल-हरल परल बाड़े।
उनके चिड़ारि चढ़ि, अहि के ढहि के
रोइह-नहइह साध तोहार पूजि जाई।"
गंगा तीरे गइली हा
उनके चिड़ारि-चढ़ि
अहि-महि रोअलीहा।
जहाँ-जहाँ लोर गिरल हा
तहाँ-तहाँ बार जामल
जहाँ-जहाँ आँसु गिरल
तहाँ-तहाँ साँस परल।
अँगरिआ-मँगरिआ के उठले हा।
"आमाँ हो, आमाँ
हम त बहुत सुतनीं।"
"तू सुतल तइसे तोहार
अयरी सूतो, बयरी सूतो,
सात घरे मुदई सूतो।"
हर तो सोग न परतो सोग
नू गाई के बछिया सोग
नू भइया के बहिनी सोग
सोग परो घूरा मारा
पूत परो कोर में।
कहनी लवटो कहनिहार के,
पिड़िया लवटो भुखनिहार के।
कहती सुनती दूनो के माला
सात लेके गइली, आठ लेके अइलीं।

ऊपर दूनो कहनीं के बानगी देखीं। महाकवि निराला के 'जूही की कली' के पहिली बेरि देखि के आ ओके कविता ना मानि के लवटावे वाला संपादक के सोझा एह कहनिन्ह के 'मुक्त छंद' सोगहग खड़ा लउकल रहित त उहाँ का आँभो में ना परे के परित। एह छंद के लय, प्रवाह आ सरलता के देखीं आ तब सोचीं। ई छंद नया ह कि पुरान? एके लोक प्रवृति के अनुकूल कहल जाई कि प्रतिकूल?

हिन्दी विभाग,
महाराजा कॉलेज, आरा

—०—

आपन कथ

- चंगेज खाँ आ नादिर शाह के राह पर चलेवाला अयूब खाँ के करिया करतूति संसार भरि में पाटि गइल बा। उनुका पगलेटई के करनी पर सँउसे दुनिया थूकतिया। आगे आवेवाली संतान एह नादिरशाह आ चंगेज के सपूत पर थूकि।

भारत के जवान देश के एक-एक ईंच धरती खातिर जान के बाजी लगा देले। भारत माता के छाती हुलसता। एह जवानन्हि के वीरता, बुद्धि आ मनोबल के देखि के दुनिया के दाँते अंगुरीं काटे के परल। वीरता के क्षेत्र में फेरु एगो नया कीर्तिमान भारत के जवान कायम कइले। अयूब शाही के छाती दरकि गइल। अयूब के मुँह पर करिखा पोता गइल।

बाकी अभी दुसमन नीके दरकचाइल नइखे। पूरा लतहराइल नइखे। अभी रहि-रहि के लरकता। अबकी आवे त ओकर नक्शा बिगारे के होई, ओर नकबोल रगरे के होई। जागल रहिह जवान।

हम ओह जवानन के सामने सरधा से नवल बानी जे देश के रक्षा खातिर आपन प्राण होम कइले। हम उनका आत्मा के शान्ति खातिर भगवान से प्रार्थना कर तानी।

- संपादक आ व्यवस्थापक के झरिया-धनबाद प्रवास में भोजपुरी के प्रचार में सर्व श्री कान्हजी प्रसाद पाण्डेय, संत सिंह, हरिशंकर त्रिपाठी, धनबिहारी पाण्डेय, शशिनाथ त्रिवेदी, परशुराम सिंह जी, गंगेश्वर लाल, ललनजी पाठक आ अवरू बहुते लोग मदद कइले। हम भोजपुरी के अइसना सरहंग सवांगन्हि के भोजपुरी परिवार के ओरि से धन्यवाद दे तानी।

- भोजपुरी के कुछु अंक श्री लाल बहादुर शास्त्री आ श्री चह्वाण के पास सेना में काम करे वाला भोजपुरी जवानन खातिर भेजल जात बा।

संरक्षक

१. श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, मैनेजर, वनवार कोलियरी, पो० कूजू जि० हजारीबाग।

२. श्री शिवकुमार त्रिपाठी, महाशक्ति आयुर्वेद भवन, तरी मुहल्ला, आरा (शाहाबाद)

३. श्री शिवशंकर मिश्र, एडवोकेट, एम० पी० बाग, आरा (शाहाबाद)

४. श्री जीतन प्रसाद तिवारी, ग्राम तरी मझगाईं, पो० बेलहर, भाया सुलतानगंज, जि० भागलपुर।

५. श्री रामसुन्दर त्रिपाठी, मु० घुरहूपुर, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद।

६. श्री जगतानन्द, एडवोकेट, एम० पी० बाग, आरा (शाहाबाद)।

७. श्री सत्यनारायण लाल, व्याख्याता, राज्य शिक्षा संस्थान, पटना-६।

८. श्री रामखेलावन सिंह, मैनेजिंग डाइरेक्टर, श्रीकृष्ण आयुर्वेद भवन (प्रा०) लि०, आरा।

९ श्री रामदेव सिह, ऐडवोकेट, आरा।

१०. श्री रामरूप उपाध्याय, करनामेपुर, परसौंडा, शाहाबाद।

११. श्री ब्रह्मेश्वर ओझा, वँसवर, रघुनाथपुर, शाहाबाद।

१२. श्री ऋषिकेश तिवारी, मु० पो० निमेज, शाहाबाद।

१३ श्री ईश्वर दयाल दुबे, मैनेजर, टाटा मालकेरा कोलियरी, मु० पो० मालकेरा (धनबाद)।

१४. श्री दामोदर प्रसाद बैजनाथ गुप्त. मेन रोड, झरिया।

१५. श्री चक्रधारी सिंह, ऐडवोकेट, बक्सर (शाहाबाद)

विशेष चन्दादाता

१. श्री केशव त्रिपाठी, मु० एकडार, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद।

२. श्री प्रधानाध्यापक, माध्यमिक विद्यालय, चकनी, पो० दल्लपुर, जि० शाहाबाद।

३. श्री शिवपूजन राम, मु० एकडार, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद।

४. पं० हरिहरनाथ उपाध्याय, वैद्य, काशी रसायनशाला, के २०/६१ राजमंदिर, वाराणसी।

विशेष चन्दादाता

५. श्री विश्वेश्वर प्रसाद, बक्सर, शाहाबाद।
६. श्री रामसूरत मिश्र, तरी-मँझगाँई, बेलहर, भागलपुर।
७. श्री कैलास प्रसाद गुप्त, विकास पदाधिकारी, जीवन बीमा निगम, आरा।
८. श्री जगन्नाथ चौबे, जवहीं, हठीलपुर, शाहाबाद।
९. श्री बलभद्र सिंह पारस सिंह, लाल बाजार, झरिया।
१०. श्री विश्वनाथ प्रसाद राजेन्द्र प्रसाद, मेन रोड, झरिया।
११. श्री सूरजनाथ सिंह पारस सिंह ऐण्ड कंपनी, झरिया।
१२. श्री सकलदेव सिंह ऐण्ड कंपनी, झरिया।
१३. श्री लखन लाल अर्जुन प्रसाद, लाल बाजार, झरिया।
१४. श्री बचन साह, बोरापट्टी, झरिया।
१५. श्री दिगविजय चौबे, मु० पो० गोसाईपुर, शाहाबाद।
१६. श्री ऋषिकुमार मिश्र, मु० पो० रघुनाथपुर, शाहाबाद।
१७. श्री रामदेव मिश्र, चन्द्रपुरा, हठीलपुर, शाहाबाद।
१८. श्री यदुनन्दन मिश्र, खैरा कोलियरी, पो० कुसुण्डा, धनबाद।
१९. श्री कुमार दीनानाथ सिंह, गोड्डा, सं परगना।

टेली ग्राम—नवीन विज्ञान
फोन— कारखाना : २१३
निवास : ४७१

नवीन विज्ञान, आरा

स्टील फर्नीचर
साइंटिफिक एपरेटस्
टाइपराइटर्स
फोम रब्बर कुशन
लकड़ी के फर्नीचर
लैबोरेटरी फिटिंगस्
सोफा कम बेड
स्टील स्प्रीग कुशन

नवीन क्वालिटी के आदर्श पर दृढ़

श्री लक्ष्मण त्रिपाठी व्यवस्थापक द्वारा
श्री सरस्वती प्रिंटिंग वर्क्स लिमिटेड,

2

भोजपुरी साहित्य

दाम : ५०

अक्तूबर, १९६५

संरक्षक

१. श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, मैनेजर, बनवार कोलियरी, पो० कूजू, जि० हजारीबाग ।

२. श्री शिवकुमार त्रिपाठी, महाशक्ति आयुर्वेद भवन, तरी मुहल्ला, आरा (शाहाबाद) ।

३. श्री शिवशंकर मिश्र, एडवोकेट, एम० पी० बाग, आरा (शाहाबाद) ।

४. श्री जीतन प्रसाद तिवारी, ग्राम तुरी-मँझगाईं, पो० बेलहर, भाया सुलतानगंज, जि० भागलपुर ।

५. श्री रामसुन्दर त्रिपाठी, मु० घुरहूपुर, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद ।

६. श्री जगतानन्द, एडवोकेट, एम० पी० बाग, आरा (शाहाबाद) ।

७. श्री सत्यनारायण लाल, व्याख्याता, राज्य शिक्षा संस्थान, पटना-६ ।

८. श्री रामखेलावन सिंह, मैनेजिंग डाइरेक्टर, श्रीकृष्ण आयुर्वेद भवन (प्रा०) लि०, आरा ।

९. श्री रामदेव सिंह, ऐडवोकेट, आरा ।

विशेष चन्दादाता

१. श्री केशव त्रिपाठी, मु० एकडार, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद ।

२. श्री प्रधानाध्यापक, माध्यमिक विद्यालय चकनी, पो० दल्लूपुर जि० शाहाबाद ।

३. श्री शिवपूजन राम, मु० एकडार, पो० हठीलपुर, जि० शाहाबाद ।

४. पं० हरिहरनाथ उपाध्याय, वैद्य, काशी रसायनशाला, के २०/२९, राजमंदिर, वाराणसी ।

बिल्कुल ही नये ढंग के

फिलिप्स

नोबोसोनिक

रेडियो

PHILIPS

जिन्दगी-सी हू-ब-हू आवाज़

फिलिप्स ट्रांजिस्टर रेडियो : टेबुल या पोर्टेबुल अपना सानी नहीं रखते—अत्यधिक मांग के कारण, हमें खेद है, सभी मॉडल सदा प्राप्य नहीं होते।

फिलिप्स इलेक्ट्रिक रेडियो : मधुर आवाज और आधुनिकतम डिजाइन के लिये अत्यन्त लोकप्रिय मॉडल—

सचित्र रंगीन कैटलग के लिये हम से मिलें या हमको पत्र लिखें।

फिलिप्स बत्तियां : फ्लोरेसेंट ट्यूब बत्तियां, उषा, ओरियेंट, कैसेल्स और रैलिस बिजली के पंखे तथा बिजली के प्रत्येक सामान के लिये हमें याद रखें।

शाहाबाद के प्रमुख बिक्रेता

के० के० जैन कम्पनी

आरा

* खेल कूद के सामान

* विज्ञान सम्बन्धी सभी प्रकार के ऑपरेटस

* आधुनिक डिजाइनों के फर्नीचर

तथा

ऐरो सोफा सेट, आलमारी और जे के टाइपराइटर (हिन्दी-अंगरेजी)

के लिए

हमारे शो रूम में पधारें।

नवीन विज्ञान, नवादा, आरा

दूरभाष (फोन) : निवास : ४७१ कारखाना : २१३

अधिक सफेद और चमकीली धुलाई के लिए

स्पेशल जागृति बार साबुन

और

जागृति साबुन

अपने पास के दूकानदारों से खरीदें।

निर्माता

केशरी इन्डस्ट्रीज, आरा

यहाँ **'प्रकाश देव धूप'** भी तैयार होता है। एक बार परीक्षा करें।

सायकिल खरीदते समय उसके असली पार्ट्स-पुर्जों की जाँच जरूर कर लें। सायकिल के असली पार्ट्स पुर्जों तथा असली रैले, हरक्युलिस, नार्टन, ऐटलस, इस्टर्न स्टार, ग्रे हाउण्ड और हीरो साइकिलों के लिए

बॉम्बे सायकिल हाउस

गोपाली कुआँ, आरा

में पधारें।

यहाँ सभी माल की गारंटी दी जाती है।

भोजपुरी साहित्य

(मासिक पत्रिका)

वर्ष : १, अंक : ४
अक्तूबर, १९६५

संपादन
डॉ० जितराम पाठक

एह अंक के मूल्य :
५० पइसा

कार्यालय
प्रोफेसर कॉलनी.
के० जी० रोड, आरा

व्यवस्था
लक्ष्मण त्रिपाठी

सलाना चन्दा :
५ रुपया

कविता

जमकल बदरा चीर के : १ : उमाकान्त वर्मा
पवन पहुनवाँ : २ : हरिराम द्विवेदी
पुरवइया के लहरा : २ : सिद्धनाथ तिवारी
तीन मुक्तक : ३ : रघुनाथ सिंह
खानदान : ४ : वेदनन्दन
सच्चा सेवक : १७ : कालूराम अखिलेश
अलसाइल बादल : ३७ : शरदिन्दु भूषण कुमार

कहानी

लइका लोग : २७ : मधुकर सिंह
बुढ़िया सास : ३१ : सूर्यदेव राय
दूगो देवता : ३५ : विश्वनाथ पथिक

निबंध

लागल बा कुब्री के तीर : ५ : महेश्वर प्रसाद
भोजपुरी साहित्य : एगो दृष्टि : २२ : ब्रजकुमार पाण्डेय

एकांकी

खटवाँस : ११ : डॉ० स्वर्णकिरण

शब्द चित्र

खेदनी : १९ : जगदीश प्रसाद पाण्डेय

स्तंभ

पुरान पन्ना : महा प्रतापी पृथु : ३८ : कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'
लोक कथा : ठग के मग : ४१ : सरयू पाण्डेय
चिट्ठी मिलल : ४५ : डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'
नया साहित्य : ४६ : जि०
आपन कथ : ४८ : संपादक

पांच गो कविता :

जमकल बदरा चीर के

उमाकान्त वर्मा

जमकल बदरा चीर के,
गिरत बिजुरिया पीर के,
छतिया छीलत जाय हो, आंखिया बिसुरल जाय।

(१)
धरती के छितराइल देहिया,
लहकल जइसे लहकें नेहिया,
भीतर भीतर सोन चिरइया, रम-रम मोती खाय हो,
अंखिया बिसुरल जाय!

(२)
रतिया नाचल काजर पोतल,
जइसे स्वयं करुन रस नाचल,
संगवो नाचल भुखवो जइसे, मउवत नाचल जाय हो,
अंखिया बिसुरल जाय!

(३)
धिपल आह जब छुअलस अंगवा
गलत लाज के छूटल रंगवा,
बांहिं पसरले बदरा धावल डगमग पग बउराय हो,
अंखिया बिसुरल जाय!

(४)
धरती के मनवो हरसाइल.
रोम रोम में हंस समाइल,
सकुचल जइसे कहत सनेसवा, मुग्धा सकुचल जाय हो,
अंखिया बिसुरल जाय!

(५)
दिशा कंठ से गायन उभरल,
सृष्टि बीज के निकसल बिह्वल,
हर-नयना के अगम ताल पर जन स्वर तन घहराय हो,
अंखिया बिसुरल जाय!

—राजनारायण कॉलेज, हाजीपुर।

पवन पहुनवाँ

हरिराम द्विवेदी

चारो खूँट घुमरी घुमावै हो मोरा पवन पहुनवाँ।
अँचरा अकासे उड़ावै हो मोरा पवन पहुनवाँ॥
घमवाँ से जब कि कल्हरि उठै देहियाँ।
बदरी कै छतरी लगावे हो मोरा पवन पहुनवाँ॥
उभ - चुभ -जियरा हउल जब पसरै।
रसे-रसे बेनिया डोलावै हो मोरा पवन पहुनवाँ॥
फूलै फुलवरिया ढलत अघरवटा,
आँगन - घर महकावै हो मोरा पवन पहुनवाँ॥
रतन जड़ल सतरंगिया बेरउवा,
बँहियाँ पकड़ि पहिरावै हो मोरा पवन पहुनवाँ।
थरिया भरल थिर पोखरा के पनियाँ,
लहर - लहर लहरावै हो मोरा पवन पहुनवाँ।

—आकाशवाणी, इलाहाबाद।

* * *

पुरवइया के लहरा

सिद्धनाथ तिवारी

बहे पुरवइया के लहरा रे,
किछु कहलो ना जाइ।
निसइलि देह जइसे भँगिया रे,
किछु सहलो ना जाइ।
धान के फसल मरुअइली रे,
एक पनियाँ के आस।

ओस से ना बुझले पियसिया रे,
जेकरा जल के तरासि ॥२॥
बेंचि दींजा बरधा बछरुआ रे,
किनि लींजा धेनु गाइ।
गइया चराइ दूध पी-पी के रे,
दींजा दिनवाँ कटाइ? ॥३॥
सरग भइल निरपनियाँ रे,
धरती गइली अकुलाइ।
दइबा के भेजलि बिपतिया रे,
कटले ना कटाइ ॥४॥

—दलसागर, शाहाबाद।

तीन मुक्तक

रघुनाथ सिंह

दर्द भरल प्यास जगल मनवाँ में प्यार के,
हियरा हहरि गइल कभी से दुलार के,
गीत बनल मीत उहे प्रान प्रिय हो गइल,
मधुआ चुअेला कवनो घरवा उजार के।

रीत गइल प्रीत खाली भरम बा बहार के,
आस भइल चातक के बदरी निहार के,
ओला के गोला बिजुलिया के मरलसि,
बदलल बसंत चलल लुकवा पतझार के।

बहकल बा दानव आजु मानव के मन में,
लहकल बा आजु आगि जन-जन के तन में,
जातिवाद, स्वार्थ, द्वेष खुल-खुल के खेलता,
गाँव आ सहर आजु बदल गइल बन में।

—अमीर उच्च विद्यालय, बगेन (शाहाबाद)।

—:०:—

खानदान

मूल कवि : विलियम स्टैफर्ड

अनुवादक : वेदनन्दन

हमार बाप
सचहूँ इतिहास में सम्पत्ती
ना भइले
ऊ अपना कान्ह के दोसरा ओर
देखत रह गइले
कवनो चूक,
आ बनल रहले हमरा खातिर
अजनबी
काहे कि हम उनकर सम्पत्ती रहीं।

•••

कवनो अइसन खासियत ना रहे
जे उनका समझ में ना आवे,
बाकी खासियतन के
अस लाम रहे
गोहार
कि बहुत लोग लेखा
ऊहो गइले ······ अगुता।

····

हम आज चाह पिअत खानी
प्याली के निहारीला
आ कोसिस करीला कि
अन्दाज भर डरीं
चाहीला कि
बच जाँईं,
उनका लेखा, फउँकी ना

•••

चाहींला कि जतिना लाम दँतुली होखे
ओतने डरीं
जतना भूल ज्ञानी करसु
ओतने गूँग हो जाईं
आ जतना दूर हमार होखे
परमान,······घटना
ओतना दूर घिंसिआ ले जाउ
हमरा के।

—सचिवालय, पटना।

(अमेरीकी कवि विलियम स्टैफोर्ड के कविता पेरेन्टेज के भोजपुरी में पहिला बेर अनुवाद।)

लागल बा कुबरी के तीर कलेजवा में

महेश्वर प्रसाद

'प्रेमचन्द जी हिन्दी के सब से बड़े लेखक हैं। हम हिन्दी-भाषा-भाषी उनके मूल्य को ठीक आँक नहीं सकते। हम चित्र के इतने निकट हैं कि उसकी विविधता, उसका रंग-वैषम्य हमें आच्छन्न कर देता है; उसमें निवास करती हुई और उस चित्र को सजीवता प्रदान करती हुई एकता हमारी पकड़ में नहीं आती। जो एकाध दशाब्दि अथवा एक दो भाषा का अन्तर बीच में डालकर प्रेमचन्द को देखेंगे, वे मेरा अनुमान है, प्रेमचन्द को अधिक समझेंगे, अधिक सराहेंगे। वर्तमान की अपेक्षा भविष्य में और हिन्दी को छोड़कर जहाँ अनुवादों द्वारा अन्य भाषाओं में पहुँचेंगे, वहाँ उनको विशेष सराहना प्राप्त होगी।' ई बात-विचार प्रेमचन्द के बारे में जैनेन्द्रकुमार के बा। भिखारी के अपना बारे में कुछ अइसने लउकता, बुझाता —

अबहीं नाम भइल बा थोरा।
जब ई छूटि जाई तन मोरा।
तेकरा बाद पचास बरीसा।
तेकरा बाद बीस दस तीसा॥
तेकरा बाद नाम हो जइहन।
पंडित कबि सजन जस गइहन॥

भिखारी के सभ आपन चीज पसन्द बा। आदमी के देह पवला के गरब, सन्मुख जगहा[1] पर जनम भइला के गरब, नीमन बोली चाहे भाखा बोलला के गरब भिखारी में कूटि कूटि के भरल बा। भिखारीं 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल' के खूबे जानत-पहचानत बाड़े। तबहीं त लिखत बाड़े कि—

झूठो राम नाम कहला से।
भोजपुरी भाषा गहला से॥
असहीं नाम फयेलते जाता।
रेडियो से कासी कलकाता॥
बिना गाछ के लागल फल।
घटा ना लउकल बरिसल जल॥
जइसे बिना फउज के जीत।

---

[1] गुरु जी भीं लिखले बानीं—

'भलि भारत भूमि भलो कुल जन्म समाज सरीर भलो लहि कै।

—लिखनिहार।

नजर परल बालू के भीत ॥
ओसहीं करनी बाटे मोर।
मातरी बोली के ह निचोर ॥

ई भोजपुरी भाषा के आ मातरी बोली के महिमा ह कि भिखारी अपना सामने सभ के भिखार बना देले बाड़े। गहना (अलंकार) के लोभी लोग इचि एनिओ देखज़े जाई कि भिखारी 'विभावना' के झड़ी लगा देले बाड़े—'विना गाछ के फल', आ 'बालू के भीत'। भोजपुरी में खूबी त ढेर बा, बाकी भिखारी एगो सहजे बात लिखत बाड़े। इहो कम दाम के नइखे कि—

भोजपुरी बोली ह जवन।
अछरि पर परत बा तवन ॥
तवने तवने लिखत बानी।
ना विद्या के हालत जानी ॥
दियरा जंगल के रहवइया।
बकता हईं ना न हईं गवइया ॥
माई जाति भिखारी नामा।
चरचा चलल बा चाकर लामा ॥

लिखे-पढ़े में भरीका लोग के कुछ मेहनत बुझाता; बाकी भोजपुरी सहजे-महज में लिखाता आ पढ़ाता। ढेर लोग त कहत बा कि भोजपुरी लिखला-पढ़ला पर 'शुद्ध हिन्दी' भुला जाई। ओइसन लोग पर हमरा विचार बा कि ऊ लोग दुगो भाषा ना जानि सकसु। भोजपुरी एक त ग्रामीण भाषा❀ सहज-सुलभ भाषा आ मीठ भाषा दोसरे बे-मेहनत के भाषा। कुछ सीखे के नइखे। सब सीखल-सिखावल बा। एह भाषा में कविताई के सचाई बा। दरद आ टीस बुझावे में जतना ई भाषा कोमल बा ओतना दोसर कवनो भाषा नइखे। इहे कारन बा कि भोजपुरी के गीत कबहुँ कान में परेला त करेज में छेद क देला। अइसन भोजपुरी पर भिखारी के गरब होखहीं के चाहीं। भाषा पर गरब बा। बाकी अपना ऊपर अपना मन में भिखारी हीन बाड़े; दीन बाड़े। ऊ ना कवनों विदवान, ना कवनों वकता, ना कवनों गवइये। ई सोचे लायक बात बा। तवहुँ होस करावत रहतारे। जब से एने भोजपुरी के लिखनिहार-पढ़निहार के बाढ़ि आइलि हा तब से भिखारी चेतावे लगले हा—

पद चलल भोजपुरी के
चलानव हो ना।

❀ गुरुए जीं लिखले बानी—

श्याम सुरभि पय विसद अति,
गुनद करहिं तेहि पान।
गिरा ग्राम्य सियराम जस,
गावहिं सुनहिं सुजान ॥
—लिखमिहार

तनि नीके कइले जइहं
पहिचानवा हो ना ।
सीख गानवा के करे के
रचनावा हो ना ॥

पंडिताई के बल से ना केहु कवि भइल बा आ ना होई। कविताई कइल एगो देन ह, जवन जेकरा मिल चुकल बा, ओकरा मिल चुकल बा। भिखारी में कवि के साँच अकुलाहट बा। भिखारी बनल कवि ना हवे। कवि के बीज उनुका में बा। उनुका मुँह से अनायासे कविता निकलेले। निवेदने सुनि के पेट भरि जाला। जइसे—

नइखीं पाठ पर पढ़ल भाई ।
गलती बहुत लउकते जाई ॥
तनिको ना आवे गावे बजावे ।
काहे दो लागल लाग के भावे ॥
ना गावे के जनलीं हाल ।
ढोलक ना जोरी बजवलीं झाल ॥
आज ले साठ बरिस के भउईं ।
ना इसकुल में लिखनी कउई ॥
इहे तमाशा अचरज बाटे ।
चतुर कहइलीं निपट चपाटे ॥
छपरा पटना बलिया आरा ।
चउमुख पर बा घर हमारा ॥
से विहार में विचरत चोला ।
बिन पुरुजा के उड़ल खटोला ।
कहे भिखारी कुतुपुर ग्रामा ।
बोले ना आवत जोड़त ड्रामा ॥

चउमुख में से पटना के एह से छाँट देवे के परी कि उहाँ के भाषा मगही ह। भोजपुरी भाषा के लेखा छपरा, बलिया आ आरा भिखारी के प्रिय बा। एह से ई तीनों जगहा के वखान खूबे कइले बाड़े। पहिले छपरा के वखान लीहीं —

हरि के बस्ती नइखे दूर ।
जिला छपरा में सोनपुर ॥
सिलनिधि राजा सिल्होरी घार ।
विस्व मोहनी सुता जेकर ॥
हर के घर हउए कसमर ।
गंगा गंडक संगम पर ॥
छपरा सहर दहिआवँ में,
रहत दधीची बीर ।
तेकर हाड़ धनुष बनल ।
भइल जनकपुर भीर ॥
दोन दरउली द्रोनाचार्य ।
सुमिरत सिद्ध होत सब काज ॥
कुम्हना कुम्भज रिसि के ठाँव ।
छपरा जिला में बाटे गाँव ॥
नगर जहँगीरपुर मरपूरा ।
हरिहर का जड़ भरत हजूरा ॥
इनर इनरासन छोड़ि के,
इनई कइलन बास ।
मुरुगा बोलल मुकड़ेरा में
गौतम मुनि के पास ॥

छपरा रहसु रजेन्दर बाबू
जीरादेइ मकान ।
छपरा छव पराजयकारी
सोचि के करम उपर नामधारी ।
तबसे धाम चिरान कहावत
लगन चलल ललकारी ।।
महाबीर के अंजनी मइया ।
छपरा जिला के रहवइया ।।

बलिया के बारे में भिखारी के कहनाम बा कि—

बलिया बरियारी से नाम ।
मालूम होता कहत तमाम ।।
भिरगु कुल लेके अवतार ।
छतरी बंस के देलनि मार ।।
से भिरगु आसरम बलिया जिला।
परसुराम के कथा सुनीला ।।

बलिया के बाद आरा के महिमा भिखारी बतावत बाड़े। आरा के कवन जगह कवना कारन से नाम कइले बा भिखारी के चौपाई में देखीं—

पहिल जुध बगसर में भयऊ ।
से उछाड़ लंका चलि गयऊ ।।
आरा आर पार गढ़ लंका ।
राम बान से संत निसंका ।।
गो द्विज संतमातु देव कारन ।
आरा आरन सागर पारन ।।
सहसराम ह आरा जीला ।
परबत में रोहतास के कीला ।।
आरा जिला मसाढ़ भवानी ।
बानासुर के ह राजधानी ।
सिरंगी रिषि रहत सिगेहरहिया ।
तवने जगहा हटे सेमरिया ।।

असहीं भिखारी छपरा, बलिया आ आरा खातिर आपन अपनापन के भाव देखवले बाड़े। भोजपुरी खातिर ई तीनों जगहा अपना खास कीमत राखत बा। ईहे तीनों जगहा भोज़पुरी के हिरदय ह, जहाँ से सगरे शरीर के फैलल अवरु जगहा के संचालन आ जीवन होत बा। ई तीनों जगहा पर भिखारी के जनम-जगह के ममता बा। ठीक असहीं गंगा के ऊपर भी भिखारी के गरब बा। काहे कि 'जनम-भूमि वा परोस'। शिव आ शक्ति के सामने भिखारी के पूजा के भाव बा। मंगलावरन से हर किताब में मालुम हो जाला कि भिखारी सनातन रुढ़ि के पालक हवे। गनेश आ शारदा के स्मरन बराबर मिलत जाई, चाहे उनुकर कवनों किताब खोलि दीं। राम नाम के सुमिरन में भिखारी केहु से पीछे नइखन। ओने सुन्दर दास जी कहत बाड़े—

बैठत रामहिं ऊठत रामहि
बोलत रामहि राम रह्यो है।
जीमत रामहि पीवत रामहि

धीमत रामहि राम गह्यो है ।।
जागत रामहि सोवत रामहि
जोवत रामहि राम लह्यो है ।
देतहु रामहि लेतहु रामहि
सुन्दर रामहि राम कह्यो है ॥
श्रोत्रहु रामहि नेत्रहु रामहि
बक्तहु रामहि रामहि गाजै ।
सीसहु रामहि हाथहु रामहि
पावहु रामहि रामहिं साजै ॥
पेटहु रामहि पीठहु रामहि
रोमहु रामहि रामहि बाजै ।
अन्तर राम नितन्तर रामहि
सुन्दर रामहि राम विराजे ॥

अब जइसे भिखारी कहत बाड़े ऊ देखीं—

असहुँ हँसहुँ तमसहुँ,
गढ़तहुँ गदरसहुँ राम ।
कहे भिखारी रसहुँ अरसहुँ,
जसहुँ अजसहुँ तमाम ॥
सुनत गुनत चूनत विधुनत,
राम नाम कह जीव ।
कहत भिखारी मन-मंदिर में,
ईंधन जोगवत सीव ।
खावत गाबत पान चबावत,
साज बजावत राम ॥
कहत भिखारी एही नाम से,
बनि जइहन सब काम ॥

इहवाँ ‘अनुप्रास’* के बहार त देखहीं लायक बा आ ओकरो से अधिका देखे लायक ई बा कि भिखारी देश, काल आ दशा से अधिका दबल बाड़े। देश काल के दबदबा उनुका पर एह तरह से लदल बा कि देश-काल कहते भिखारी के गाना के बोध हो जाला। देश काल भिखारी के गानन के एगो मुहावरा बनि गइल बा। दशा के परिचय उनुका कइसनों पद में मिल जाला। एह राम नाम के बारे में भी उनकर दशा के निशानी झलकत बा—तमसहुं आ साज बजावतु गावत वगैरह। ‘विधुनत’ भोजपुरी के टकसाली शब्द ह। ई फारिफूार के टुकनी टुकनी कइला के बोध करावेला। ‘रसहुँ अरसहुं’ से त खट देने याद पड़ जाता—

---

* शेक्सपीयर भी अनुप्रायस के झड़ी लगावत रहले हा। जइसे—

वीगाट बाइ वचर बाइ वीसयक्केड।
हाउ हाइ हिज हाइनेस होल्ड्स हिज हाइटि हेड ॥

बाकीं ई रोआई ऊहे ह जवना खातिर कहल बा—

मेरे आँसू न पोंछो खुदा के लिए
वरना दामन तुम्हारा भी जल जायगा।

जौं मोहि राम लागते मीठे।
तौ नवरस खटरस अनरस रस
हॢै जाते सब सीठे।

अवतारन में राम आ किसुन दुनों जना के भिखारी बखान कइले बाड़े। राम के सऊँसे रामायन में भिखारी के पहिले पहिल 'फुलवारी के जगह बुझाइल'। एहसे रामायन के कहनी में से भिखारी अपना गावे खातिर 'राम बिआह' बीछि लेले बाड़े। राम के सब रूपमें भिखारी के पसन परे वाला रूप राम जी दुलहा के बा। बाकी किशुन जी के प्रेम के सब लीला पसन बा। इहे कारन बा कि किसुन जी के लीला देखावे में ऊ अपनहुँ खूबे जोर लगावेले। पारसाल शाहपुर में किशुन जी के लीला होखे लागल, जवना में भिखारी सतहत्तर बरिस के उमर में गिर परेले। बाकी हटले ना। किसुन लीला देखाइये के दम धइले। हँ त, किशुन जी खातिर भिखारी के भाव सब से गाढ़ बा। ऊ उनुका दरद में गोपिन के संगही तड़प रहल बाड़े, तरस रहल बाड़े। किशुन जी के लीला भिखारी के जिनगी में उतरल लीला ह। ऊ खाली नाटक आ डरामा ना ह—जिनगी के 'प्रैक्टिकल' चीज ह। जइसे आज तक भिखारी किशुन जी के राह देख रहल बाड़े—(बड़ा खेलाड़ी से काम परि गइल बा, बाट कहिया ले जोहीं, जसोदा ललन।

किशुन जी के विरह-वियोग में भिखारी के एके बात के शिकायत भा कवलेस बा। ऊ ई कि मीठ भाव आ मधुर भाव के प्रेमी के 'काठो के सवति ना भावे'। किशुन जी के कुबरी के साथे रहल भिखारी के अपने भा उनुका गोपिन के पसन नइखे। सूर के गोपी लोग किशुन जी के बान से बेधाइल बा आ भिखारी के खाली सवतिया जार नइखे सहात। भिखारी अधीर होके रो रहल बाड़े। रो* रहल बाड़े आ गा रहल बाड़े—

लागल बा कुबरी के तीर करेजवा में।
कर धरि धनुष कृष्ण मूरति के,
हो गइली बड़ा गो बीर॥
जहर घोर मुसुकान मोहन के,
भींजल बा सकल शरीर।
जा ऊधो अतने सुधि कहिह,
तनिको सहात नइखे पीर॥
कहत भिखारी बिहारी ना अइले,
फूटि गइले तकदीर॥

एकांकी :

खटवाँस

स्वर्णकिरण

(ममहर के एगो छत के बगल के कमरा। समय दस बजे रात। देई रानी खटवांस—पटवांस ले ले बाड़ी। उनकर मरद मोहित बाबू, जवन सलेटरी ऑफिस में काम करेलन समझावे खातिर बेहाल। देई रानी के भाई, गोपी बाबू, दीदी जी ठीक नीचे के कमरा में लइकन-फइकन के साथ सुतल बाड़न। भाई जी के दाँत में दरद बा; एह से सूतलो प जागले बाड़न। मामा जी, माई जी, ननद जी आ दोसर-दोसर लोग सूते खातिर सब आपन बिछौना प चल गइल बाड़न)।

देई रानी-(तनी जोर से) ना, ना, हम ना नू रहब, भाई जी परेशान-परेशान कर देलन! खाये बइठिहें कि हऊ ले आव, हऊ ले आव; कभी नून मँगिहे; कभी पानी; कभी तरकारी, कभी कवनो चीज, कभी कवनो चीज। ... रउओ इतना परेशान करीला?

मोहित बाबू—त ई कवनो बात में बात बा? कामे नू पियार ह कि चाम पियार ह?

देई रानी—काम पियार ह कि चाम, ई एहिजा रहतीं त पता चलित। आठ-आठ दिन प आइला त रउआ का पता चली? बड़का अइसन घर। दिन भर घरूआरे करत-करत बीत जाला। ना ओठँघे के टाइम मिले ना कुछुओ करेके।

मोहित बाबू - त का होई? माहिंए ओठँघबू त कवन घटी में परि जइबू? काम करबू त देही में फुर्ती आई। काम ना कइला से त देही में जंग लागि जाला, जइसे लोहा में जंग लागेला।

देई रानी—देह लोहा ह कि हड्डिए ह? कड़ा काम होई त हड्डी टूटिए जाई फेन कइसे कुछ पढ़ाई-लिखाई होई?

मोहित बाबू—पढ़ाई-लिखाई भीतर के मन करी त होइए जाई। हमार भइया टिउशनो करत रहन, खायको बनावत रहन आ पढ़तो रहन! का केहू काम करी?

देई रानी—राउर भाइ जी ढेर काम करत रहन आ कर सकेलन त हमरा का? उनकरे अइसन हम गरीब बानी?

मोहित बाबू—ओहो, तोहरा ई बात के घमंड बा कि हम बहुत अमीर बानीं आ एही से बिना काम के बइठल खाइबि, आ राज रजबि ?

देई रानी—त आउर का ? अमीरो ओतने काम करी जेतना गरीब, त अमीर गरीब में फरक कवन बा ?

मोहित बाबू—अमीर आ गरीब में फरक के मतलब ई ना ह कि अमीर बइठल-बइठल खाई आ गरीब हाड़ ठेंठा के खाई। अब बइठ के खाये के जमाना बीत गइल। गरीब त खैर बइठ के नाहिंए खा सकै अमीरो बइठ के नइखे खात। तोहरा कँउची बड़लहीं बा ?

देई रानी—बाह बा ! हमार माई एहीं से बिआह ना कइले रहे कि हतना तकलीफ होखे, आ कोई पूछे वाला ना रहे। हतना दहेज देलस। कुल्ह खेत हमनी के दूनो बहिन में आधा-आधा बखसीस लिखिए देलस। नाहिंओ कवनो काम करीं त बइठ के खाईं ! हमार कवनो हुआ-मुआ बा ?

मोहित बाबू—हुआ-मुआ होई तबहीं काम क के खाई आ हुआ-मुआ नइखे त आगे भी ना होखी ? तू त अइसन-अइसन बात कहत बाड़ू कि ओकर कवनो जवाबे नइखे !

देई रानी—जवाब आ सवाल एगो रउए त जानीला ? हम त लिख लोढ़ा पढ़ पत्थल ! हम कहाँ से जनलीं सवाल आ जवाब करे के हाल !

मोहित बाबू—जइतू कवनो गाँव में त बुझाइत। कुइआँ में से पानी ले आवे के परित, बहरी बहुत दूर जायें के परित आ रेंड़ी के तेल बार के रहे के होइत !

देई रानी—रहे दीं आपन बात अपने पास। सबके खरच मालूम पड़ता रउए चलाइला। जतना गाँव-गँवई के बेटी बाड़ी स सब के अइसने करम जर जाला।

मोहित बाबू—करम कउँची जर गइल बा ? तू त जबले अइलू तब से शहरे में रहलू। हम त गाँव वाला मकान में गइबो ना कइलीं हाँ और भगवान चहिहें त जइबो ना करबि।

देई रानी—हतना काम करे के परी त करमे नू जरल कहाई ?

मोहित बाबू—ई करम जरल कइसे कहाई ? घर में कल। पयखाना, बिजली, रेडियो, पढ़े-लिखे के हतना किताब। जगह-जमीन, कवन बात के कमी बा ? तनी पहिले आइल रहतू त पता चलित। एहिजा के आदमी लोग जानते होइहें, कतना तकलीफ सहे के परल रहे। ना कल, ना बत्ती, ना आ अवरू सुख अराम के चीज।

कुटौनी-पिसौनी सब अपने हाथे करे के परत रहे।

देई रानी—त ई सब रउए नू सुख-सुविधा दिअवा देले बानी-लोग कहेलन कि भाई जी गोपी बाबू, ई सब सुख-आराम करवा देलन !

मोहित बाबू—त इहो ठीके बा। हम त चालिसे गो रुपया दिहिला। ई चालीस में, तोहार खरची, हमार हफ्तावारी खर्चा; हफ्ता में त दू दिन एही हो जाला। डेढ़ दिन के खाना एहीजा होखेला, आ आधा दिन के बाँध के ले जाइला। ई चालीस में कतना बाँची कि फल, बत्ती आ दोसर-दोसर इतना चीज आ जाई। भइया ढेर कमा के देलन तबे नू खरची चल रहल बा !

देई रानी—हँ, रउआ त वोकालति करबे करब। ई भाई जी हवन? कि रात-बिरात के कबहूं पहुँच जइहन आ ओही घरी उठ के फराठा पकाव, त भुँजिया पकाव, चाहे भात पकाव, उसिना तकारी पकाव, आ ओह पर शिकायत ह कि इइसे ना बनल, होइसे ना बनल। एहिजा मामा जी किहाँ बहुत तकलीफ बा।

मोहित बाबू - ई हम माने के तइआर नइखीं। मामा जी किहाँ तोहरा के छोड़ के हम निश्चिन्त रहीला आ समझीला कि मामा जी जब तक रहिहें कवनो तकलीफ ना होई। भइया कौलेज में पढ़ावेलन आ ढेर पइसा देलन, एसे ढेर ध्यान उनकरा प रखे लन, हम कम दिहिला त हमरा प कम ध्यान देलन।

देई रानी—ना जी, आउर कवनो वजह एकरा में मालूम परेला। भाई जी के औरत—दीदी जी कतना अराम से रहेली; हमरा कहाँ अतना अराम मिलेला ?

मोहित बाबू—ई तोहार भरम बा। वोहरो कम आराम ना मिली। मिल जुल के रहबू तब नू, तोहरो के सब लोग पिआर करी आ हाथ प ले ले रही।

देई रानी—अइसन हाथ प राखे वाला ढेर लोग मिल जइहें। ई घर में गुजारा ना हो सके। हम कह देत बानीं, चाहे त दीदी जी रहिहें चाहे हम रहब। दूनो आदमी एहिजा ना रह सके. ना रह सके।

मोहित बाबू—ई डाहह। आ अइसना डाह से बहुत नुकसान होई। एही डाह से आपन देश डूबत चल जा रहल बा। जहाँ औरत-औरत में इतना डाह होई ओहिजा कवनो काम बढ़ियाँ से ना हो सके।

देई रानी—ई डाह कइसे बा ? हम त

अपन हक चाहत बानीं। मामा जी हमरा के जइसन आँख से देखेलन ओइसन दीदी जी के बा देखसु।

मोहित बाबू—फिर ओही बेवकूफी के बात! हम कह त देलीं कि दूनो आदमी के बराबर मामा जी कइसे देख सकेलन-हम चालीस दीहीला, भइआ, सुने में आवेला कि सौ, दू सौ आ खइला-खरचला ले जतना बाँच जाला सब उनका हाथ में दे देलन।

देई रानी ना जी, हम बेवकूफी के बात नइखीं करत। मामा जी बहुत कड़ाई करेलन। नाप-जोख के खरची निकलिहें, तेल-मसाला दीहें आ अचरज भी करिहें कि सब खत्म हो गइल? हम का नइहर भेजवा देत बानीं? भा अपने सब ढकेल जात बानी? भाई जी चिट्ठी में कतना बड़ बात लिख देले बड़ान।

मोहित बाबू—बड़ बात का? ऊ त ठीके लिखले रहन; हम का जानत नइखीं? हमरो पास त लिखलहीं रहन।

देई रानी—ठीक कउँची लिखले रहन। तेल-मसाला में कहले कमी हो सकेला? हम अपना घरे रहीं त तेल में डुबुआ तरकारी खात रहीं, घी लगा के मोमिया के फराठा बनावत रहीं, एहिजा त सब सपना हो गइल बा। हमरा से नानू खाइल जाइ उसिना तरकारी आ सूखल भात! हमरा के जल्दी ले चलीं ई घर से।

मोहित बाबू—खबरदार, ई बात कहलू त कहलू अब मुँह से मत निकलिह। जानत नइखू कतना महँगाई बढ़त चल जा रहल बा। भइया खरची में कम करे के कहलन आ किफायत से रहे के कहलन त कवन खराब बात कहलन! देखत बाड़ू कि जमाना कतना खराब आ गइल बा।

देई रानी कतनो खराब जमाना आ जाई त हम का भूखे मर जाइब? पाँच-बोरा, छः बोरा चाउर हमरा खेत से हर साल आ जाला। रउवा नू दे दिहिला दू बोरा मामा जी के दू बोरा माई जी के। एको दू बोरा हर साल बेच दिहतीं त अब तक हमार सिकरी बन गइल रहित।

मोहित बाबू-(अचरज से)—अच्छा, अब समझ में आइल कि काहे खातिर खटवांस-पटवास कइले बाड़ू। अरे, अब सिकरी-वोकरी पेन्हें के जमाना बा? आ ऊहो सोना के? अब असली सोना मिलतो कहाँ बा?

देई रानी—असली नइखे मिलत त नकलिये के नू सब कोई पेन्हत बा।

मोहित बाबू—ना जी, अब सोना-चाँदी के गहना पेन्हल, लोग बहुत कम

कर दीहल, तू सुनलू हा ना कि जब से चीनिअन के चढ़ाई भइल तब से बहुत सोना देश के जवानन खातिर दान माँग-माँग के गइल आ ढेर एकट्ठा कइल जा रहल बा कि बाहर के दुस्मन जब चढ़ाई करी त ओकर डट के सामना कइल जाई ? तब से चीनिअन सब घात में लागल बा, अब त पाकिस्तान हिन्दुस्तान से भी छत्तीस के संबंध बनावत चल जा रहल बा। कब का होई। कोई ना कह सके।

देई रानी—बाहर कुछुओ होई त घर के औरत का गहना-गुरिया पेन्हल छोड़ दीहें स ?

मोहित बाबू—छोड़ ना दीहें स, त छोड़ हीं के परी ?

देई रानी—ना छोड़े के परी। जब तक ई घर में रहब तब-तक कर-कर ना जा सके, ना हमार सिकरिये बन सकेला। रउवा जहवाँ रहिला, ओहिजा हमरो के राखीं। हम ना रहब एहिजा।

मोहित बाबू—ना काहें रहबू ? तोहरा रहहीं के परी।

देई रानी—हम ना रहब, हम ना रहब, अपना साथ ना राखबि त हमरा के नइहर पहुंचा दीहीं, हम ना रहब एहिजा।

[मोहित बाबू देई रानी के हजामत बनावे खातिर उठते बाड़न कि घर में के सरिआवल ऊपर के बड़का बक्सा हड़हड़ा के नीचे गिर जात बा आ धमाका के आवाज से सब लोग बाग जाग जात बा]

भाई जी—का भइल मोहित बाबू ?

मामा जी—का भइल हो ?

ननद जी, माई जी, दीदी जी सब—का हो गइल हो ?

मोहित बाबू—कुछुओ ना भइल; टीनवा-वाला बड़का बकसवा गिर गइल हा, अउरी का भइल।

[मोहित बाबू आपन कमरा में चल जात बाड़न]

ननद जी—बुझाता, देई रानी के मार बाजल हा !

मामा जी—आयँ ?

माई जी—मार बाजल हा ?

ननद जी—त अचरज कवन बा ?

मामा जी—चार-पाँच दिन से उनकर पेट में दरद बा; कवनो दवाई सुनते नइखे। ना खात बाड़ी, ना पिअत बाड़ी। रसोई-पानी बनावल त दूर के बात।

दीदी जी—ना एकरा में कुछ भीतरिआ बात मालूम होत बा; दरद एगो बहाना बुझात बा।

माई जी—हो सकेला, बबुआ के छोटी माई के मन एहिजा से ऊब गइल

होय ! आ ऊ एहिजा से हटे के चाहत होखसु ।

ननद जी—उनकर माई आइल रही त कहिए गइली, 'बबुई के हतना हाड़ ठेंठावे के परेला—आह रे हमार बाछी ! करम जर गइल हमरा बबुई के !'

मामा जी—करम जर गइल ? अबहुँओ से कुछ भइल बा ? ले जासु अपना बेटी के आ अपना करेजे में साट के राखसु ।

ननद जी—ओहिजा काम ना करेके परबहिन ।

माई जी—अब बिना काम कइले गुजारा बा ? हमरो बात त उठिए जात बा ।

भाई जी—आ हमार बात कवन रहत बा ! मोहित बाबू के हम अतना कइलीं; खरकोंच-खरकोंच के पढ़वलीं अब दू बात कहहूँ के हमार हक ना रह गइल ? पेट में दरद रहे त दवाई देवे कइलीं । घर के दवाई ओरा गइल त बाजार जाके लेआ दिहलीं, आ बराबर ई बात के ध्यान राखीला कि बबुआ के छोटो माई के कवनो बात के तकलीफ ना होखे । हँसी-मजाक में का दूगो बात ना कह सकेला आदमी ।

दीदी जी (थोरे खिसिया के)—उनका अपने के हँसी मजाक ना सोहाय त काहे के हँसी मजाक करींला ? अइसने आदमी से हँसी मजाक कहल जाला ?

(मामा जी मोहित बाबू के ऊपर से पुकारत बाड़न । मोहित बाबू आवत बाड़न) ।

मामा जी—कइसन हरहर-पटपट हो रहल बा हो ?

मोहित बाबू—कुछुओ ना मामा जी, हमार घर के लोग एहिजा से हटे के चाह रहल बाड़ी, हमरा त कुछुओ समझे में नइखे आवत ई औरत लोग के अक्किल में का हो गइल बा ? इनका तकलीफ हो रहल बा एहिजा, हाड़ ठेंठावे के पड़त बा और रसोई-पानी में बहुत हाथ जर रहल बा । हमरो अक्किल कवनो काम नइखे करत, लेकिन हम कह रहल बानीं कि जब तक हम रहब अलग ना रहब, अलग ना हो सकब । औरत लोग चाही कि हमरे हुकुम चले त ई ना हो सके । हम जात बानीं नू अउरी समझावे ।

[मोहित बाबू फेर देई रानी के पास चल जात बाड़न ।]

—सोहसराय, पटना ।

—o—

सच्चा सेवक

कालूराम अखिलेश

सुनीं सभे !
हो सकेला, रउआँ ना चीन्हीं,
हम रउरे घर के, गाँव के, देशके हईं :
देश ई बड़ बा; दुनियो बड़ बा,
बाकी आजु हवाई जहाज, राकेट के युग में
ई गाँव, बगीचा, बधार नियन,
समेटाइ के छोट भइल बा ।
अब असलका बात सुनीं,
ई सेवक काँहे आइल बा !
सेवक के मन सेवा करेके कवेले अकुलाइल बा !
शरीर से सेवा करबि त केहू एके के होई,
बाबा के होई, चाहे आजी के होई ।
बाबू के होई, चाहे माई के होई !
भैया के होई, चाहे भउजी के होई !

बाकी सभे हीत - मीतर परोसी; देश, गाँव, मोहल्ला, टोला, सेवा से बाँचिं जाइत ।

इहे सोचि के हम बुद्धि से रउवा सभे के सेवा करे खातिर अपना के तैय्यार कइली हाँ ।

सच्चा सेवक जे हईं,
धन ना माँगब,
अन्न ना माँगब,
खेत ना माँगब,
रेत ना माँगब,

ः गिब बस सेवा करे के अधिकार !
कागज के नम्हीं चुकी कोर
ऊहो दिहीं केहू ओर
बस ओकरे के मिमोर
हमरा नाम के बक्सा में,
रउवाँ सभे दीहीं छोर
बस अतने से मिल जाई अधिकार
दीहीं कागज, लीहीं सेवा, लीहीं प्यार
रउवा कागज देला ले सेवा के
अधिकार मिलल
फाइल के अम्बार मिलल
बंगला • पहरेदार मिलल
दउरे के फीएट कार मिलल
बुद्धि से सेवा करे बदे ई सब
निहायत जरूरी बा !
भाषण रोजे हम देईला
योजना कागज पर बनाईला
अन्न खूब होई, कहीला
दुख से डेराईं जन
महँगी से घबराईं जन
राम राम कहला ले रामजी परगट हो जाले
गीता रामायण में ठाँव-ठाँव ईहे लिखल बा
अन्न-अन्न कहला ले अन्न काहे ना प्रगटी ?
गीता रामायण में विश्वास करीं
हमरा में, हमरा सेवकाई में विश्वास करीं !

—डुमराँव, शाहाबाद।

शब्द चित्र :

खेदनी

जगदीश प्रसाद पांडेय

अंगना में बड़की रट लगवले रहे, 'खेदनी-रगेदनी—खेदनी--रगेदमी ।' अबहीं हम घढमा के पूरा समझलहूँ ना रहलीं कि उपधिया जी भी बरिसे लगलीं, "हमार त नाक में दम हो गइल बा—अजब-गजब अवइआ-जवइआ से—कहिओ माई राम, त कहिओ बाबा जी ब—आ आजु खेदनी पहुँचल रहलि हा।" बूझि गइनीं खेदनी एहिजो पहुँच गइलि--परिव्राजकाचार्या जे ऊ ठहरलि। लोगन के नाम होला 'व्यास', भले घास छीलत होखसु, आ तन के नाम होला 'सरस्वती', भले उनकर बेटा-बेटी बुढ़ापा में 'रामगती' सिखावत आ दू धौल जमावत होखसु। बाकी खेदनी अपना नाम के मरजादा रखले रहलि हा। 'जथा नाम तथा गुन।' गाँव-जवार के हित के हित के हित के नाम-पता, ठहर-ठेकाना ओकरा जीभिए पर रहत रहल हा—जइसे हरिद्वार भा बैजनाथ धाम के पंडन के बही में कई पुस्त के जिकिर रहेला। ओकरा संगे 'रउआँ कहीं—हम देखत बानी' के सवाल ना रहल हा 'रउआँ कहीं भा मति, हम त जानत बानी'—के फरमूला से ऊ काम करत रहलि हा।

रउआं सभनी संस्कृत के उभय लिंग का बारे में सुनलहीं भरि होखबि, ओकरा के छछात देखले ना होखधि। हमरा एकर अफसोस नइखे। खेदनी के रूप में ऊ अवतार ले ले रहे, हमनीं का अजुँम नियन दरसन कइलीं जा, रावा सभे ओकरा से वंचित रहि गइलीं। हिंदी के नपुंसक लिंग ओकरा के ना कहल जाई—कारन ओकरा बाल-बच्चा बाड़े स।

अब त दुनिए बदल गइल। ऊ चेहरा त अब देखहूँ के नइखस मिलत—भा के जाने मिलतो पर देखतीं जा कि ना। ना त बचपम में ई हाल रहे कि कई-कई दिन तक लगातार, एक संगे घरे-माई राम के घंटी डोलत रहे, त कहीं बाबा जी ब कहंरत रहसु, त खेदनी के लतीफा चलत रहस, त दुआर पर अलुआ

पंडित के चउका लागत रहे अउर उहाँ के घोड़ी जी के सफाई जी होत रहीं। अतने ना रहे केहू खातिर कन पाकत रहे, त केहू के लीटी खातिर मसाला बनत रहे—त केहू खातिर मूँगि के खिचड़ी बनत रहे, त केहू का तनी अमावट के चटनी सातू संगे खाए के मन कइले रहे। घर ना रहे—अजायब घर रहे - उहो एकदम फ्री। पइसा आ सामान त बाबू जी के रहे—त हम काहे 'मसालर्ची' नीअन ओकरा खातिर रोईं? कइसे समझाईं कि घर के बेकतिन के एह आदर-सतकार में चीकस बाहर हो जाई।

बाकी खेदनी भाग के साँढ़ रहलि हा। शरीर में भीम हमनी के जवन भउजी हईं, उन्हुके नइहर के ऊ रहे। ओह घरी रसोईदारिन ऊभी हे रहली। बिलार के भाग से खिकहर टूटल रहे—ओकरा गरम-गरम परोसा रोज मिले—भोरे के पूरा भेंटाइ।

गोस्वामी तुलसीदास जी स्थान-स्थान पर कहले बानीं, "कहा कविन पर कहै न जाना"। बाकी सभ बात ऊहों का नइखे कहे आइल। उहाँ का कहले बानीं, "मोह न नारि, नारि के रूपा"। बाह रे खेदनी के रूप! तुलसी दास निअन कवि के ऊ झूठा बना देलसि। ऊ अइसन 'नारि' रहलि हा जवन पुरुसो के ना मोहिति। पोसाक एकदम मरदाना—पाँव में जूता, कुरता, धोती बिना पोंछिटा के लुंगी लेखा, माथ में जटा। कजरौटा निअन करिआ सरीर, आंखि कौड़ी निअन अलगल—जवना के पलक ना ढांके—जइसे कवनो मोट हलुआई के पेट ओकरा गंजी से ना तोपाइ। खेदनी के ई साधू रूप बड़ा डेरवावन रहल हा। कबो-कबो लागेला कि खेदनी लाचारी-ब्ररम्हचारी रहलि हा। साधुनि होखितीं त का होखितीं- मेहरारू सिध करे खातिर त डाकटरी करे के परित। चपल ना, जूता उनुका जरूरे चाहत रहल हा। पटना जब हम पढ़त रहलीं, ई 'बृहन्नला' ओहिजा पहुँचल। खाली जूता खातिर—हमनीं के कई जोड़ा कपड़ा का जूता में से छांटि के दूगो नीमन निकलल - दूनो एके गोड़ के—बाकी, कवनो हरज ना—जूता त रहे।

मेहरारू के दुइए तीनि गो अंग ओकर परिचय देले स। त चोटी का जगह खेदनी का जटा रहे। बाकी एगो खूबी रहे खेदमी जटा से अपना के पूजवावे ना—ना त गाँव-

देहात में त चमइनिओ जाटा राखि के बाबा जी वो लोग के झारे फूंके लागेलीस—खेलावे लागेलीस। खेदनी काबुल में गदहे रहलिहा।

खेदनी—ना, कहीं कि बिना ओएसिस के मरूभूमि। माता के असली स्थान के त कवनो चिन्हे ना रहल हा। जइसे पृथिवी पर विषवत् रेखा ना भेंटाइ, हिन्दुस्तान और चीन के सीमा पर मैकमेहन लाइन ना लउकी, ओसहीं क़वनो छोट लइका के चबावहुँ खातिर खेदनी के देहि में कुछुओ ना भेंटाइत।

देहात में अधिका घूमे वाला साधू लोग बोले आवे चाहे ना, खड़ी में बोले ला लोग। खेदनिओ साधू के पूरा नकल करी। हमनी से खड़ी में कही "साला! कहाँ जाता है?"—वोगैरह, वोगैरह। नकल करे के पूरा बिलच्छन गुन ओकरा में रहल हा। जैसे रावन मौका परला पर राम जी के पुरोहित बनि गइल—रामेस्वर-स्थापना के समय—ओइसहीं ई सधुआइन भी डोमकच में कमाल करत रहलि हा—ओह मैदान के ऊ दारा सिंह रहलि हा।

बचपन के एगो घटना बराबर याद रहेले। पढ़ले या आदमी—'वहाँ खड़ी थी लक्ष्मी बाई मर्द बनी मर्दानों में'। इहँवा देखीं कि खेदनी बाई खड़ा रहसु मरद बनल जनाना में। मरद हँसि-हँसि के मेहरारून से बतिआवे—ना ऊ लजाइ ना ई मतवा राम लोग लजाई। लइका के मन—लिंग-निर्णय के सोझ रास्ता अपनवलस। बाकी दुःशासन से द्रौपदी के · चीर-हरन होखे? सभ मेहरारू एके बेरि झपटि, परलीस। भागहीं के परल। 'नौकर-मालिक न्याय' से—हमार काम चलि गइल। भले ई खेदमा कहल जासु-हई ई खेदनिए, सचहूँ के।

सेयान भइला पर त ई बुझाला कि खेदनी औरत-पोसाक में रहिति—तबो कवनो डर ना रहल हा। शेक्सपीयर के रोजलिन्ड नीअन उनुका 'गेनीमेड' बनलां के कवन जरूरत? कवन ओरलेन्डो उनुका पर जान कढाइत। शिवजी के बरिआति बरनन पढ़े के आदमी पढ़ि जाला—कौनो साफ तसबीर ना उभरे। खेदनी के रूप ओह तसवीर के सीसा नियम झलका देत रहलि हा। ओही बरिआत के एगो बरिअतिहा खेदनी के रूप धइ के धरा-धाम पर आइल रहल हा।

(बाकी पन्ना ३४ पर पढ़ीं)

विचारोत्तेजक निबन्ध :

भोजपुरी साहित्य : एगो दृष्टि

ब्रजकुमार पाण्डेय

सर्जनात्मक साहित्य लेखन के काम बड़ा कठिन होला। जे मर्द औरत के प्रसव पीरा देखले होई ओकरा ज्ञान होई कि बच्चा पैदा होखे में कतना पीरा होला। बाकी ई के जानता कि लेखक के भी रचना करे में ओतने तकलीफ होला जतना प्रसव वेदना में औरत के। "बाँझ का जाने परसवती के पीरा" कहाउति त कंठे-कंठ में बा। बाकी लेखक के ई बात के ज्ञान जनता में कम बा। समाज में कुछ औरत अइसनो होली जे लड़िका पैदा करे के नकल रचेली, बाकी गुरिया जनमावेली। आजु असहीं लेखको लोग के कमी नइखे जे ईंटा-पत्थल कोरा में राखि के प्रसव वेदना के दुःख ना, आनन्द लूटत बाड़न आ कहत बाड़े कि एह साहित्य रचे में बड़ा दुख भइल बा। अइसने समय में श्रेष्ठ लेखन के सवाल उठता। निरालाजी के बारे में ई कहल जाला कि जब ऊ 'राम की शक्ति पूजा' लिखसु त चार पाँच पाँती लिखला के बाद बाहर निकलसु। पसेना से चहबोथाइल—ओइसहीं जइसे फैक्टरी के मजूर काम से छुट्टी पवला के बाद थकल-माँदल—करिखा में गोताइल-पसीना से लदफद निकलेला। एही से समझल जा सकेला कि साहित्य लिखे में कतना तकलीफ बा?

साहित्य में रचना के साथ ई बात और बा। खउरी में नून चटावे के बात। असपताल में बच्चन के बदलउवल अउर दोसरा के बच्चा के आपन बच्चा बनावे के काम—माने निमन रचना के दबावे के, दोसरा के रचना के चोरी और सात जगह से भाव, शब्द आ छन्द के चोरी के बात त अनमोले बा। एही जगह प सम्पादक आ प्रकाशक के जरूरत पड़ेला। सम्पादक रचना के लालन-पालन के भार अपना-पर उठावेला। ईमानदार सम्पादक के जहर पी के नीलकंठ बने के परेला। पानी के पानी आ दूध के दूध अलग-अलग करेके हिम्मत करेके परेला। तब

सुन्नर रचना के जीव बांचेला—ना त समाज के तथाकथित प्रकाशक अउर सम्पादक नया रचना के नून चटा के मारे के तेयारी करि देला लोग। दुनिया में सम्पादक अउर प्रकाशक दू तरह के होला लोग। एगो जेकरा साहित्य से कवनो सरोकार ना होला, अउर ऊ लोग के सिद्धान्त होला—जगवा में मूल धन रुपइया। दोसर ऊ जे लेखक भी होला और सम्पादक आ प्रकाशक भी। धीरे-धीरे दोसर प्रकार के सम्पादक लोग एह काम के अपना-अपना हाथ में लेबे के कोरसिस कर रहल बा। 'भोजपुरी साहित्य' के प्रकाशन और सम्पादन एह दृष्टि के जहर पीये के काम कर रहल बा।

आजु पूरा संसार संकट के बीच जी रहल बा। सब लोग देखावे वाला दाँत बवले खाड़ा बा। मुखौटा ओढ़ले ले बा सब। कहल कुछ जाता अरथ, कुछ लागता। राजनीतिज्ञ का कहत बाड़े आ का करत बाड़े, ई सब के सामने बा। एक समय स्पेन में अइसने भइल रहे। शब्द अरथ खो चुकल रहे। तब लेखको लोग तरूवार लेके निकल परल रहे। तब का आजु के भारतीय लेखक के सामने अइसने सवाल नइखे आइल? अगर आइल बा त का करेके बा? का शब्द छोड़ के दोसर माध्यम अपनावे के परी? भोजपुरी साहित्य-लेखन के सामने तब कवन उत्तरदायित्व आ गइल बा? एह सब पर गौर करे के बा। अबहीं भारत में बहुत साहित्य एह परिस्थिति के डेराव के महसूस नइखे करत। हिन्दी में एह भयानकता के महसूस कइल जा रहल बा। पूरा दुनिया में एही धरातल के बोध पर रचना हो रहल बा। भोजपुरी लेखक भाई एह दौर में पीछा नइखन। बलिक साथे-साथ कदम में कदम मिला रहल बा लोग। 'भोजपुरी साहित्य' के पहिला अंक एकर पूरा सबूत बा।

कुछ भाई लोग नया अउर पुरान के झगड़ा के बखिया उघार रहल बा। 'नया' कवनो उमिर के ख्याल से नइखे कहल जात। 'नया' सचमुच में ऊ बा। अइसन साहित्य कबहूं ना लिखल जात रहल हा। ना संसार के सामने कबो अइसन परिस्थितिए आइल रहल हा। युद्ध के भय, जातीय अउर रंगभेद के झगड़ा, गुलामी के खिलाफ अतना पुरजोर लड़ाई अउर ठंढा लड़ाई वोगैरह पहिले के सवाल ना रहल हा जतना आजु सबके साथे ई जोरा रहल

बा। एकर फिकिर जे कइले बा—ऊ सचाई के नजदीक बा। ओकरे साहित्य सच्चा बा। काहे कि ई सब परिस्थिति के साक्षात् सब भोग रहल बा। बाकी जे आँखि मुंदले बा ओकरा त सब चीज पुराने लागता। सब ओर हरियरे सुझत बा। विज्ञान में जब कवनो नया आविष्कार होला त बड़ा बड़ाई होला। आजु नारलिकर के धूम मच रहल बा। बाकी साहित्य में जब कवनो नया काम होला, कवनो नया बात उभारल जाला तब बस विरोध के झंडा खड़ा हो जाला। अउर ई संघर्ष बहुत दिन चलेला जब ले ऊ इतिहास के चीज बन के सब के सामने आ जाला। भोजपुरी के पुरान चश्मा वाला लोग से 'भोजपुरी साहित्य' के माफी माँगि लेवे के होई—तब हमनी के स्वस्थ साहित्य समाज के दे सकबि जा।

भोजपुरी में संस्कृत आउर तत्सम शब्दन के प्रयोग पर चिल्लपों मचावे वाला लोग भोजपुरी साहित्य के हितैषी बने के ढोंग रचि रहल बा। तुलसी दास जी अवधी भाषा में रामचरित मानस के रचना कइले बानीं। अगर तत्सम अउर संस्कृत शब्दन के रामचरित मानस में प्रयोग ना भइल रहित त ओकर कवन रूप रहित, ओकर नजारा कल्पना कइला पर मालूम होला। जानि बूझि के कवनो भाषा के फूहड़ अउर देहाती बनावल बहुत बड़ बहादुरी अउर अच्छा ना ह। भोजपुरी के संवारल अउर सजावल त, तत्सम आउर संस्कृत शब्दने से हो सकेला।

आजु पूरा उत्तरी भारत सांस्कृतिक संकट के दौर से गुजर रहल बा। जन संस्कृति नाम के कवनो चीज हमनी के सामने नइखे। आजु के जवान भाई लोग के चइता, फगुआ, रामायन, भजन अउर कीर्त्तन में मन नइखे लागत। भूलत सब चलि जा रहल बा लोग। परिश्रम कइला के बाद मनोरंजन जरूरी बा। एह काम के पूरा करे के काम सिनेमा अउर बिदेसिया अउर तरह-तरह के नाच करि रहल बा। एकरा से जन संस्कृति विकृत हो रहल बा। भोजपुरी साहित्य के माध्यम से भोजपुरी कवि, नाटककार, कहानीकार एह संस्कृति के दोष के मिटा सकेले अउर ठोस जन संस्कृति के निर्माण हो सकेला।

भारत में कृषि-औद्योगिक संस्कृति (Agro-Industrial Culture) के निर्माण होखे जा रहल

बा। भोजपुरी एह संस्कृति के निर्माण में बहुत बड़ काम करी। एह संबंध में हम आपन अनुभव के बात कहवि। करीब दू वरीस से सात आदमी एक साथ रहत बानीं जा। सातो आदमी एम० ए०, एम० एस-सी० पास बा। दू भोजपुरिया एकरा में बाड़े। बाकी हमनी के साथ रहत-रहत सातो आदमी के बोलचाल के भाषा भोजपुरी हो गइल बा। एही तरी हमार दावा बा कि जब देश में फैक्टरी बढ़ि जाई अउर वैज्ञानिक खेती के विस्तार हो जाई त व्यवहार के व्यापक भाषा भोजपुरी होई, अउर काम-काज अउर व्याख्यान के भाषा हिन्दुस्तानी। एही से आजु ई जरूरत बा कि हमनी के भोजपुरी के साफ-सुथरा, अउर दोसरा के लायक भी बनाईं जा। भोजपुरी भाषा के जतना जल्दी लोग सीखे ले अउर एह भाषा के साहित्य के जतना असर जनता पर होला ओतना बहुत कम भाषा के। पन्द्रह दिन में बढ़िया भोजपुरी बोले लोग बिना हरे फिटिकरी के सीख जाला। ई सहजता कवना भाषा में बा? भोजपुरी भाषा अवरू साहित्य के एगो लमहर खूबी बा कि एकरा माध्यम से साफे कइल जाला। कवनो तोप तोपाव के जरूरत ना पड़ेला। 'नया लेखन' के ई बहुत बड़ गुण मानल जाता—जवन गुण भोजपुरी में बहुत पहिले से चलि आ रहल बा। भोजपुरी साहित्य जन जीवन के बहुत नगीच बा। एही कारण पंचवर्षीय योजना, मँहगी, समाजवाद काँग्रेसी राज के दोष के काफी वर्णन भोजपुरी कविता में देखे के मिलेला। बहुत लोग एकरा के दोष बतावत बा कि भोजपुरी खाली एही सब चीज के बरनन करेले। बाकी अइसन बात त ऊहे लोग कहि सकेला जे साहित्य के संबंध जन मानस से अलग मानत होई। गुलाब के खुशबू के फेर में जियत मरत होई। साहित्य त समाज के ऐनक ह। जेकर ऐनक फूटल होई, चूर-चूर भइल होई ओकरा सुघर सूरत कइसे नजर आई। भोजपुरी साहित्य के खूबी बा कि ई दिन-रात जनता के साथ बा। ओकरा से काटि के एकर अलग कवनो रूप नइखे।

हमार देश आजाद हो गइल। बाकी एकरा में 'बाकी' लगले रहि गइल। आजाद देश में सब लोग साच्छर ना हो सकले। अभी

अइसन लोग के जेकर उमिरि चालीस से ऊपर हो गइल बा, करिया अच्छर से भेंट नइखे अउर ना एह जिनगी में कवनो उमेदिये बा। अभी अइसन लोग जे कोंढ़िआता ओकरो निरच्छर रहि जाये के पूरा आसा बा। ओकर कवनो उपाय ना सरकार करि रहल बा, ना जनता। ईहे काम भोजपुरी के पत्र-पत्रिका करी। ई लोग के सामने हिन्दी पढ़ल अंग्रेजी पढ़ल बा। बाकी भोजपुरी आसानी से ई लोग समझि जाई। जेली, सिपाही अउर सैनिक लोग खातिर भी भोजपुरी साहित्य जरूरी बा। एह कारण एह समय में 'भोजपुरी साहित्य' अइसन पत्रिकन के प्रकाशन शुभ लछन बा।

जब-जब हम शहर से गाँव आई लें त गाँव के भाई लोग मिले खातिर धावेले। वोह लोग के पहिला सवाल होला कि कह, देश-दुनिया के समाचार। लड़ाई के का हो रहल बा। चीनवन अउर पकिस्तनियन के का हाल बा। ओह घरी मन में आवेला कि एगो भोजपुरी भाषा में अखबार रहित त हम ई लोग के दे देतीं; पढ़ि लिहित लोग अउर हमार पिण्ड छूटि जाइत। हम सोचत बानी कि ई घटना सब पढ़ल-लिखल भाई लोग के साथ जरूर बीतत होई। एही से 'भोजपुरी साहित्य' खातिर डेराते-डेरात एगो माँग करत बानी कि राजनीति के एगो स्तम्भ एह पत्रिका खातिर बहुत जरूरी हो गइल बा। गाँव में रहे वाला लोग के येह बात के बहुत बड़ मांग बा।

भोजपुरी क्षेत्र में लोग सैनिक अउर सिपाही बहुत होला। सिपाही जी लोग के बाप मतारी के सांस बबुआ पर लागल रहेला। अइसन लोग खातिर सेना समाचार, युद्ध संबंधी कविता, कहानी बहुत जरूरी बा, जवना से ऊ लोग के हिम्मत चौगुना बनल रहे।

ई सब बात 'भोजपुरी साहित्य' के विषय के संबंध में भइल। अपना अनुरूप, अपना अनुसार कवनो चीज के बनावे के नाम विषय ह। हमनी के शास्त्र में 'विषय' के संबंध में कहल गइल बा—"विसिन्वन्ति अवबध्नन्ति, स्वेन रूपेण निरूपणीयं कुर्वन्तीति—विषयाः"। अन्त में हम नमित भाव से कहत बानी कि 'भोजपुरी साहित्य' त आपन विषय बना ले ले बा। कहाँ तक हमारा कहला के असर होई, कहल नइखे जा सकत।

—राजनारायन कालेज, हाजीपुर।

कहानी :

लइका लोग

मधुकर सिंह

मास्टर ! ऊ खूबे हँसे ।

'सरऊ, तू छूरा मारे के धिरावताड़ ? रह जाके कहतानी ।'

ऊ कवनो जवाब ना देलस ।

'तें एकरा के धिरावत रहस रे ?' मास्टर आवते पूछलन ।

'ई हमरा के बोपदेव कहलन हाँ ।'

'बोपदेव त बढ़ियाँ नांव ह । तें कंउचले काहे ?'

'बापदेव गऊदा के कहल जाला' ।

मास्टर ओकरा के लगलन मारे । ओकर आँखि अवरी पथरा गइल । क्लास के कुल लइका डेरा गइलन स ।

दस बजे के लगभग लूक बहे लागल । पछेआ लपलपा के क्लास-रूम छूवते रहे । मास्टर के खीस अउरी कपारे चढ़े लागल । ऊ लइकन से संज्ञा के भेद पूछे लगलन । ग्यारहवाँ लइका बोलल कि पाँच भेद होला । मास्टर के खीस कुछ नरम भइल ।

बारहवाँ ओकरे नम्बर परत रहे । मास्टर व्यक्ति वाचक संज्ञा के परिभाषा पुछलन । ऊ चुप रहे । जातिवाचक संज्ञा के परिभाषा हलकात ऊ कहलस । 'आ भाववाचक' ? मास्टर डाँट के पूछलन ।

'भाववाचक संज्ञा ओकरा के कहल जाला, जवना से मूल्य, दर आ भाव जानल जाय' । कहके ऊ आँखि भूइयाँ गड़ा दिहलस ।

'जइसे' ?

'जइसे सवा रोपेआ किलो चाउर' ।

मास्टर कुनमुनइलन । दूनों हाथे आपन माथा धइलन, आ लगलन नोंचे । दसवाँ क्लास के लइकन के ई हालत ? कुर्सी में घस दे अमा गइलन ।

उनका बड़ा हलकानी भइल । लइका कतुना नलायक पैदा होत बाड़न स ? ई पीढ़ी कतुना नासमझ बिआ ? आगे पढ़ावे के तबीयत इचिको ना भइल । इच्छा होखे जे बारहो सौ लइकन के ले जाके समुन्दर में धँसा दीं । आपन रेंहचट कपार प हाथ फेरत खा

बुझाइल जे रंगनी के कतुना काँट उगल वा। अब कवन उपाय होई? कपार ठोक-ठोक के धीरज बन्हलन, इहे हालत पूरा देश के बा।

अचके में उनकर ओठ बासी हँसी से खुले लागल। लइकन के लजावत-लजावत अपने थाके लगलन। आदते रहे, फेनु मुँह से निकल गइल, अंग्रेजन के जवाना में हमनी का अतुना गदहा ना रहीं जा। मैट्रिक पास लोग वकालत करत रहे।

उनका कर्त्तव्य के खियाल आइल। किताब उघरले आ लइकन से सूरदास के पद निकाले के कहलन। हाथ में खल्ली लेलन आ समझावे लगलन, 'हे मन! जे हरि के विमुख आचरण करत होखे ओकर साथ-संगत छोड़ द।... आगे सूरदास जी कहतानीं कि खल ओह काली कमली लेखा होला, जेकरा प कवनो दोसर रंग ना चढ़ सके। समझल लोग'?

फेनु ऊ लइका, जवन अबके मार खइले रहे, के बुझाइल जे मास्टर ई कुल बतिया ओकरे प कह ताड़न। अगल-बगल तकलस त दू-चार गो लइका गर्मी का ओजह से बेंचे पर ऊँघा गइल रहन स। ओकरा बड़ा संतोख भइल।

मास्टर के गइला के बाद टेबुल का भीरी आइल, आ क्लास के लइकन से पूछलस, 'कह. लोग यारे, पढ़ाई में कुछ रस मिलल?'

'कइसन रस'?

'सिनेमा लेखा रस'।

'एकरा से त अच्छा रहे जे मास्टर जी कुछुओ ना पढ़ा के हमनी से आपन खेत खोनवइतन'। एगो लइका कहलस।

'सभे त एके बतिआ दोहरावेला। एके पढ़ाई। हमनी का कवनों का तोता हईं जा'?

'ना'? एक साथे सब लइका बोललन स।

पाँच मिनिट में लइका सब तय कइलन स कि आज से कवनो मास्टर से ना पढ़े के। हमनी के मुरुख रहला में जवन मजा बा ऊ पढ़ला में कहाँ? क्लास छोड़ के कुल बहरी निकल अइलन स। हेड मास्टर सुन के बड़ा अचम्भित भइलन। बेंत ले ले दउरलन।

कुल लइका मैदान में रहन स।

'का बात ह'? हेडमास्टर पूछलन।

'हमनी का ना पढ़ब जा, सर'।

'ई काहें'?

'पढ़ाई का बेरे कपार दुखाए लगेला'।

'तब कवनो बेमारी होई। किरिन फूटे का पहिले उठल कर लोग' ?

'हम त अनमुँनाहे उठीला'।

'ध्यान द लोग। पढ़ल क ।'

'हमरा त कुल चीजे मजाक ागेला, सर। हमरा त बुझाता जे िताव में जवन लिखल बा ओकरा अदमी पढ़ के चाहे त मूरुखे रही ा ना त पागल।, ऊ कह के हेड ास्टर का आगे ठाढ़ हो गइल।

'हमनी का, भा तोहार माई-बाप ऊहे किताब पढ़ल रहीं जा। काहें' ?

'अँग्रेजन से हमनी का भेंट त इखे नू, सर' ?

हेड मास्टर के कुछो बस ना लल। ऊ रोवे लगलन। आ हलन, 'अनुशासन आ चरित्र-बल ात्र-जीवन के धरम ह। तोहनी ा पासे एको नइखे। शरम करस मूरुख, शरम करस'।

लइका भकुआ गइलन स। एक-दोसर के चिकोटी काट-काट ीतरे हँसत रहन स। एगो लइका आपन हँसी छिपा ना पवलसि। भंडा ट गइल।

'कवन ह'? हेड मास्टर लोरे रल चेहरा से तकलन; जेहमें लइका ूझ स कि उनका प कवनो भारी बिपत बा।

ऊ हवा में बेंत सरसरवलन, 'कवन ह रे'?, भीतरे खुलखुलात रहन स। हेड मास्टर का असली चोर पकड़े में बड़ा मुश्किल बुझाइल कुछ कमजोरो लइका रहस। लगलन-स चिचिआये। हेडमास्टर के खीझ भभकल। लगलन बेंत चलावे। थोड़े देर में हाँफे लगलन।

कवनो लइका क्लास में जाये प तेआर ना भइल। हेड मास्टर डेरवलन, 'हम कुल्हि जाना के नांव काट देब।' लइका डेराके क्लास में चल गइलन स।

साँझ खा छुट्टी के बाद मार खाए वाला पहिला लइका सीधे पार्क में चल गइल। अपना-अपना घरे से आउर लइका जब नासता-पानी क के लवटलनस, तले ऊ ओहिजे बइठल रहे। किताब उठवलस आ सभकन के साथे मैदाने चलल।

किताब पोल का लगे फेंक देलस। आ हवा माफिक दउरे लागल। गेन्दा अतुना खींच के मारे जे पार्क में चल जाय। साथी कुल बड़ा कुनमुना स।

पार्क में छोट-छोट लइकिन के झुंड टहरत रहे। ओकनी के फ्राक आ हँसी बड़ नीक लागत रहे।

लइका सब खेल बन्द क के पार्क में घुसिआ गइलन स। लइकी माला के आकार में कुछ खेलत रही स। ऊ सब एगो बेंच प बइठ के टिटकारी पारे लगलन स।

'कतुना सुनर बाड़ी स रे'। एगो बोलल।

'बाकी हमार वाली से जादे ना'। ऊ कहलस।

'तोर वाली कवन ह' ?

ऊ एगो नीला फ्रॉक वाली लइकी का ओर अँगुरी से बतवलस। लइकी बैलून लेखा घास प उछिलत रहलीस। सभकर ओनही नजर गइल, आ चिन्हे लागल।

'हमरा ओकरा से प्रेम बा'। ऊ बड़ा धीरजा से बोलल।

'तू ओकरा के जान ताड़ ?,

'जनम जनम से जान तानी'।

'ऊ तोहरा के चिन्हतिआ कि ना' ?

'हम नइखीं जानत'।

'त हमनिओ का एक-एक गो चुनलिजा रे' ? दोसरका बोलल।

ऊ छंवड़ ताव में आ गइल। कहलस, 'सरऊ, जवन जाना हमार नीला फ्रॉक वाली प आँखि लगइहन, उनकर टंगरी तूरि देब'।

सब नीला फ्रॉक वाली खातिर तरसे लगलन स।

'हमरा के ना देब हो' ? एगो लइका बोलल।

'खूबे मिठाई खिआइब'।

'ना, ना'। ऊ डंटलस।

'एकदम बुझाता जे इनकर कवनो बपौती होखे'।

'देखिह सेआन भइला प एकरे से बिआह करब' '

'फैसला पक्का' ?

'एकदम पक्का'।

'एकर सबूत' ?

'देखब ? रोज हमरे खातिर पार्क में आवेले'। ऊ दउड़ के गइल। आ नीला फ्रॉक वाली के पकड़ के गाल में चूमा ले लेलस। ऊ लइकी आँखि फारि-फारि के हँदसे घबड़ाए लागल। डरे सब लइकी भागे लगली स। लइका ओहनी के भागत देख के ठठाके हँसलन स।

—धनुपुरा, आरा।

◆

बुढ़िया सास

सूर्यदेव राय

जा, अब तू लइकन के देख। हमरा त अभी केवरियो न देबे जाये के परी—बुधा आपन गोड़ खींचि के कहली।

पतोहि गोड़ दबावल बन कइके धीरे से उठि गइली।

अँजोरिया बूझि गइलि कि ई बात उनके खातिर कहल गइल ह। बहुत देर से बुधा घुमा फिरा के कहत रहली कि अब सुते के जूनि हो गइल बा, बाकिर अँजोरिया जान बुझि के टारत रहली। आज पतोह उनके घर से निकाल देले रहलि। अब अधिका देर टारल मसकिल हो गइल।

कहली—'हं बहिनी, अब हमहूँ चलतानी, ना त बुचवा के माई हमरे खातिर बइठल होई। बिना हमरा खइले खा ना सकेले, आ केतनो मना करीला रोज गोड़ दबावेले।'

'तोहरा पतोह नियन पतोह बड़ा पूनि से मिले ले। सतजुगी ह, आ केतना गिहिथिन ह'—बुधा खटिआ से उठत कहली। डेरात रहली कि कहीं फेर अँजोरिया बात में उनके बझाइ न ले।

बुधा के उठत देखि के अँजोरिया का भी उठे के परल। जसहीं ? उठे के चहली, पीठ के हड्डी चमक गइल। आ आहि क के धम से बइठि गइली।

'का भइल'—बुधा घबड़ा के पूछि बइठली।

'कुछुओ ना, बाई ह, जड़िया में हर साल तंग करेले,—अँजोरिया आँसू पी के धीरे से जबाब दीहली। अपने झूठ पर मन भीतरे-भीतर रोवे लागल। करिहाँइ ध के धीरे-धीरे बहरा चलि पड़ली।

बुधा दरवाजा बन्द करिके चलि गइली।

अँजोरिया चुपचाप दरवाजा का बहरा आ के बहक गइली। कुछ समझे में ना आवे कि का करसु। पतोह उनकर झोंटा ध के घर से बहरा क देले रहलि, आ चिचिआ के कहले रहलि कि फेर भीतर पैर मत रखि ह। एही से बहुत देर तक रात में बुधा से बतियावत रहली। भीतरे-भीतर सोचत रहली कि अब बुधा कहिहन कि एइजे सूति रह। एतना रात

गइले अब कहाँ जइबू ? बाकी बुधा कुछ ना कहली आ अँजोरिया अपने कइसे कहसु। अब तक हरदम सबका से अपना पतोह के सेवा के बड़ाई कइले रहली, आ एही से सास लोगन में उनकर इज्जत रहल। अइसन बात ना रहल कि पहिली बेर पतोह उनके मारीले रहलि, बाकी हरदम आँसू पी के बड़इये करसु। जानत रहली कि एक बार हल्ला हो गइला पर कि पतोह उनका से झगड़ा करेले, उनकर सब आदर मिटि जाई।

थोर हीं देर बाद समूचा शरीर काँपे लागल। माघ के जाड़ि। दाँत कटकटाये लगलन स दरवाजा का बाहर अब बइठल कठिन हो गइल। फेर जोर लगा के उठे के चहली, बाकी फेर पीठ के हड्डी चमक गइलि आ आहि क के गिरि गइली। आँखि से झरझर आँसू गिरे लागल। उनका आँखि में नाचि उठल—'पतोह उनकर झोंटा पकड़ि के खींच तीया।' बस आज कुछ पहिले उनका मुँह से निकल गइल रहे 'खइला बिना मुआ घलबस का?' मुँह से बाति निकलते चुरइलि हाथ में कलछुल ले ले रसोईं घर से बहरा निकलि गइलि, आ गारी देवे शुरू कै दीहलसं—'पेट ह कि भरसांइ? अभीं लइकन का मुँह में एकौ कौर ना गइल आ राँड़ साँझे होत चिल्लाये लगलि।' उनका भी बरदाश्त ना भइल। तीन दिन से जड़ैया जर आवत रहे। उनका मुँह से निकलि गइल—'अरे उड़ासी, आँखिया फूटि गइल बा का। तीन दिन से जर आवता। दवाई त दूर खाहू के नइखे मिलत।'

'मर ना जा। राँड़ मरबो ना करी। सब के खा के त जाई! ई हमरा लइकन पर लागलि बे'—चुरइलि नजदीक आ के गरजे लागलि।

उनका से ना रहि गइल। उहो गारी देबे लगली।

तब तक उड़ासी उनकर झोंटा ध के खींचे लगलि। उहो क्रोध में एकाध थाप चला दीहली। बस उनकर झोंटा ध के पटक दीहलसि। अचानक उनका लागल कि केहू पत्थर उनका पीठ पर पटक दीहल। उनका त आँखि से लुत्ती निकले गइल। झोंटा पकड़ि के खींचे लागलि आ दरवाजा से बहरा ढकेलि के कहलसि—'फेर भीतर पैर मत रखिह'।

अँजोरिया ऊपर आकास के ओर देखली। तीन डँड़ियवा कपार का

ऊपर आ गइल रहे। 'पाँच घरी राति बीति गइलि'-- इनका मुँह से निकलि गइल। फेर उनका आँखि से आँसू गिरे लगलन स—केतना मनौती कइले रहली अपना लइका का बिआह खातिर।' फेर अपना के समझवलीं कि उनका लइका के कवनो दोस नइखे। ऊ रहीत त कबो ई दिन देखे के ना परीत, बाकिर बेचारा का परदेस में रहे के बा। का करो, ई पापी पेट नोकरी करावता। कई बार अँजोरिया सोचली कि ऊ आई त ओकरा से सब बात कहब, बाकी ओकरा अइला पर ई रंडी दिन रात ओकरा के छपले रहेले। फेर सोचि के चुप लगा जाली कि एह छोट बातन से लइका के दिमाग परेसान ना करेके चाहीं। बेचारा दिन-रात नोकरी करत रहेला। अब छुट्टी आइल बा, ओकरा के आराम करे देवे के चाहीं।

अब जाड़ि से सारा शरीर काँपे लागल। सिर के घुटनन के बीच दबावस, तबो ना कँपकँपी जाइ। अचके में दूर गलीन में कुकुरन के रोवाई से मन काँप गइल। चारो ओर देखलीं—केहू ना देखाई परल।

अचानक उनका दिमाग में आइल कि हो सकेला बहू दरवाजा खुले छोड़ि देले होखे। कई बार अइसे भई रहे। हो न हो जरूर ऊ दरवाजा खुले रखले होई। अँजोरिया डाँड़ पकड़ि के अपना दरवाजा का ओर चलि गइली।

धीरे से दरवाजा ढकेलली त पवलीकि बन्द बा। उनकर दिल बइठ गइल। फेर अपना के समझवली कि हो सकेला अभी बहू जागल होखे। आस्ते-आस्ते केवार खटखटावे लगली। कान उनकर दरवाजा का भीतर लागल रहे। सोचत रहली, अब पैर के आहट मिली, बाकी कवनो आवाज ना आइल। बस पीठ पर पछुवा हवा कोड़ा बरसावत रहे। हाथ के अँगुली सुन होखे लगली स। बार-बार हाथन के रगड़स, बाकी अँगुरिन में गर्मी ना आ पावे। अब सारा शरीर में दलदली जाग गइल आ पैर एकदम सुन होखे लागल स।' एको छन बहरा बइठल मुशकिल होखे लागल, बाकी उनका समझे में ना आवे कि दूसर कहाँ जासु?

हो सकेला बहू इन्तजार करत-करत सूति गइल होखे। अब ऊ अपने के डाँटे लगली कि उनका एतना देर दूसरा का घरे ना बठंइठे के चाहत रहल हा। केहू केतना देर इन्तजार करी? अबकी पारी भरजोर लगाके केवाड़ खटखटवली, आ कान

लगाके सुने लगली। बीच-बीच में चारों ओर देख लेसु कि कहीं दोसर केहू मत देखे पावे। बहुत देर तक दरवाजा से कान लगवले रहली, बाकी कवनो आहट ना मिलल।

अवहूँ कुकुरन के रोवाई बन्द ना भई रहे। चारू ओर साँय-साँय करत रहे। अँजोरिया के साँस तेजी से चले लागल। ऊपर से जाड़ि हड्डी में घुसि गई रहे। अपने दाँतन के कटकटइला के आवाज से डर लागे लागल। अब एको छन ओहिजा रहि ना जाइ। अँजोरिया घुसुकते घुसुकत दहिनी ओर चलि दीहलसि। दहिनी ओर बगले में रामअसीस के दरवाजा रहे। अँजोरिया जानत रहे कि उनका किहाँ कउड़ा में जरूर आग होई।

आग उटकारि के अँजोरिया अपना के गरम करे लागलि। धीरे-धीरे ओकरा झपकी लागे लागलि। अचानक कान में धीम आवाज सुनाई पड़ल—'के ह'? ओकरा जनाइल कि सपनां में ओके केहू बोलावता। बाकी दोसरे छन तेज आवाज ओकरा के जगा दीहलसि। ओकरा सुनाई पड़ल। रामअसीस चिल्लात रहल - 'के ह'?

अँजोरिया धीरे से भाग गइल चहलसि, बाकिर फेर पीठ के हड्डी चमकि गइलि। हाथ के बल तेजी से घुसके लागलि। चुपके ऊ उहाँ से भाग गइल चाहत रहलि। बोलला पर तुरत जना जाइत कि ऊके ह आ तब घर के सब इज्जत खतम हो जाइत।

'चोर, चोर' पीछे से ओकरा कान में आवाज आइलि। अँजोरिया दाँत पर दाँत दबा के खड़ा हो गइलि आ चहलसि कि दौड़ के भाग जाय बाकी तब ले एक लाठी ओकरा पीठि पर गिरलि आ आह के साथ ऊ ओहिजे ढेर हो गइलि।

—जैन कॉलेज, आरा।

(पन्ना २१ के आगे पढ़ीं)

अपना रूप के इतना निंदा कवनो मेहरारू के आतमा ना सही। बाकी खेदनी अतना तीरिथि कइले रहलि हा—प्रेम सागर--सुख-सागर सुनले रहलि हा कि ओकरा एकर परवाह ना होई। जे आपन मरद परिवार—सभ छोड़ि के खाक छनले होखे, माँगि के मधुकरी खइले होखे, ओकरा खातिर, 'निंदा- स्तुति उभय सम'। कवनो सिध महातमा से ऊ कम ना रहलि हा। बड़-बूढ़ि, मरद-औरत सबका के ऊ 'बचवा' कहिके बोलावत रहलि हा। पढ़ल ना रहलि हा—त कबीर दास पढ़ले रहले हा? ओकरा खातिर सब बराबर रहल हा—'पंडिताः समदर्शिनः।'

—महाराजा कॉलेज, आरा।

कहानी :

दूगो देवता

विश्वनाथ पथिक

साँझि के सूरुज डूबल जात रहन। सरग में लाली दउड़लि आवत रहे। चारो ओर चिरईं चँ चें करत रही स। पूरब से चनरमा उगल आवत रहन, कांहे कि सावन महीना के पूरनवासी रहे। गंगा जी में अइसन चकोह उठत रहे कि बड़े बड़े साहसी लोगन के करेजा कांप जात रहे। पुरवा हवा सन-सन-सन चलत रहे। लहर का थपेड़ा से नाव डूबे-डूबे हो जास।

शीला तीर पर बइठ के ना जाने कवना सोच में पर गइल रही। गंगा के शोभा उनका के काटे दउरत रहे। रहि-रहि के उनका करेजा में एगो हूक उठत रहे। अपना बिआह में अरुण के कई गो चीठी लिखली, वाकी ना जाने ऊ काहे अतना निठुर वन गइले कि आबे के के कहो चीठिओ ना दिहले। सोचत-सोचत वेकल हो उठली।

एगो जबाना रहे जब बेटी के स्वयंवर होत रहे। एगो ई जबाना बा कि बेटी अपना बिआह का बारे में मुंह खोलि दे त दुनियाँ थपरी पीटि के निहाल हो जाई। हमरो मन के बात मने में रही गइल। हमार बिआह बाप-मातारी कइ दिहल लोग, लाज के मारे हम ना बोललीं।

हमरा पतिब्रता बने के बड़ा सवख रहे। अब हम का करीं। हमरा मन से अरुण के प्रेम जात मइखे। बिआह के बात सुनि के अरुण आत्महत्या मति करले सु। हम एने के भइलीं ना ओने के। हाय! जीवन के साथी अरुण! अब हमार जीअल बेकार बा। चहलीं कि गंगा में कूद के जान दे दीं।

पीछे से आवाज आइल "शीला एके नाव पर चढ़े वाला दू गो राही तूफान का चक्कर में परि के विलग परि जासु, त उनका का करे के चाहीं"।

शीला पीछे फिरि के अरुण के देखली त लाज के मारे धरती में गड़ि गइली। आँखि से लोर बहे

लागल : करेजा धड़के लागल। अब हम धरम राखीं कि प्रेम। आँचर से लोर पोंछत कहे लगली—

'हृदय के देवता। जदी ओह लोगन में धीरज होई त वियोग के दुख उनका ना होखे पाई। ऊ लोग उपासना के राह पकड़ के दुख के सुख में बदल दी।" शीला ई ना जनली की अइसन ज्ञान उनका कहाँ से आइल।

'शीला प्रेम धर्म से बड़ ह। प्रेम देबे के जानेला। लेवे के ना जाने। जब तहार बिआह हो गइल, तब हमनी का उपासना के के राह चलल ठीक होई। तू आज से हमरा हृदय के देबी बन गइलू। हम तहरा पर त्याग आ तप के फूल चढ़ाइबि।'

'रउरा हमरा हृदय के देवता पहिले से हो गइल बानीं, हम श्रद्धा भक्ति के फूल से राउर पूजा करबि। अब हमरा हृदय में दूगो देवता के आसन रही। एगो कुल देवता के, एगो इष्ठ देवता के। हमरा खातिर सब से बढ़िया राह ऊहे होई जवना में अरुण का लालिमा में कालिमा ना लागे। आ दिन दिन ललाई बढ़त जाइ।'

'बाकी देखिह शीला। हमन के जीवन यात्रा समानान्तर होखे। हमनीं के हृदय के तार एक दोसरा से ओही तरे जूटल रहे जइसन राधा से कृष्ण के। शीला, प्रेम के राह जतना कँकरीला ह ओतने गुलाब अइसन कोमल भी ह। हम प्रेम का वेदी पर आत्म हवन नइखी चाहत, विश्राम चाहत बानी।'

"हम अपना देवता के जीवन में कबो ना भुलाइबि', शीला काँपते-काँपते कहली। 'अरुण डर लागत बा जब तहरा आत्म विसवास हो जाइ, तहरा खातिर संसार एक हो जाई तब तू हमरा के भुला जइब।'

'ना देवी तहरा स्नेह का रस से हमरा जीवन के पौधा लहलहा उठी। ओह में महत्वाकांक्षा के फल लागी। तहार सौंदर्य, तहार शील, तहार श्रद्धा, तहार सेवा हमरा राह के कांटा साफ करत रही। तहार याद हमरा मन में पवित्रता के बीआ बोअत रही।'

'ई त रउआ हमरा मन के बात कहलीं। अब हमनी का दोहरी तप करे के परी। एक से समाज सेवा करीं जा दोसरा से एक दोसरा के जीवन सोत देत रहबि जा।'

—गायघाट (शाहाबाद)।

अलसाइल बादल ...

शरदिन्दु भूषण कुमार

चान उगे तक के
कथा हमरा
मालूम बा,
तू एगो —
अलसाइल
आउर
मातल
बादर हऊ;
हम उतरी ला,
तोहरा देखे खातिर—
नीचे
बहुते
नीचे
ताल-तलइयन से
घिसकत
पानी से भी
नी
चे ..

बाकी मन मसोस के
रह जाला —
तोहार हाथ के
द
र
प
न ..
छूट जाला,
टू
ट
जा
ला—
आउर टुकनो —
टुकनो में...
तोहार
बिम्ब....
टुकुर-टुकुर ताकेला ! ..

—रानी घाट, पटना, ६ ।

कन्नौज सुगन्ध भण्डार
धरमन चौक, आरा ।
में
हर तरह के इत्र, तेल आ जर्दा खातिर पधारीं । एजा मस्ताना सेंट मिलेला ।
एक बेरि परीछा करीं । एकरा के सूँघि के मन मस्त हो जाई ।

पुरान का पन्ना से :

महा प्रतापी महाराज पृथु

कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'

पुरान में राजा वेन का भुजा मंथन के रोचक बरनन आइल बा। राजा वेन रहन महाराज अंग के पुत्र आ उनकरि माता रही काल के पुत्री सुनीता। राजा बेन पर माता के परल रहे पुरहर प्रभाव। उनका गद्दी पर बइठत कहीं कि प्रजा पर घोर बज्र घहराइ उठल। गुनी, गुनानी, उदार, दानी, पंडित आ सत्रतुक सलहिया लोग दुरदुरावल गइलन दरबार से आ लुक्कड़, लम्पट, अघी, अतताई आ अहंकारिन के पाँचो आँगुर घीव में। गुनानी लोग गुनि-मथि के एगो सभा कइ के पांच पंच राजा वेन के बुझावे खातिर भेजलन। राजा बेन अपना के विधाता बुझ लेले रहन तब अनकर बुझावल बुझस त कइसे? ओठ ओरमवले बुझनइक लोग घरे गइलन।

राजा बेन का राज में कर, करज आ दंगारचन से दरकचाइ के जनता त्राहि-त्राहि पुकारि उठलि। जनता का त्राहि गोहरवला से धरती थहथराइ जाली आ राज के ताज डगरि जाला गेना अस धूर माटी में बे-लाग। मुनि लोग का राज के ताप ना सहि गइल तब वेकल होइ के स्राप से राजा वेन के विनास कइ दिहल लोग। राजा के त अन्त भइल बाकी अत्याचार के अघ सरुप पाँक ना झुराइल। राजगद्दी ढेर समय तक त सुनि रहे ना; मुनि लोग सोचि विचारि के राजा बेन के भुजा मंथन करवलन, जवना से प्रतापी पृथु के अवतार भइल।

पृथु के राजतिलक दिआइल। उन्हें राज के ताज त मिलल बाकी महाकठिन परीच्छा के परचे उनका के सिद्ध भइल। एक ओर जनता जरति रहे भूख का भयंकर ज्वाला में आ दोसरा ओर अततइन के अत्याचार पताल का पेन में छेद

करे पर उतारू। ऊ राज चलनी का मैंखड़ा में आँटहू मानि के रहे ना, काहें जे महाराज रहन चक्रवरती। हँ, समस्त संसार के पालन के प्रवन्ध रहे त महा कठिन जरूर, वाकी देश आ विदेश का गुट के गरगट गरदन में अंटके के अमहम ना रहे। खंड राज रहित तव दोसरा राज का सोझा हाथो पसारे के परित आ पास पड़ोस के कवनो राज काग भा कुकुर अस झपटवो आ भूंकवो करतन सगल। अपनो देश में जोजना का जंजाल में, प्रखंडन में पखंड लंगटे नाचे लगतन आ घुसखोरी अवरू चोरवाजारी के बाजे लागिति बंसी वेसुध होइ के। समाजद्रोही के वंचावे खातिर जहाँ तहाँ महान लोगन का भी फान में मुँह लगाइ के गते भा गुरगुराइ के कान फुंके के परित अधिकारन के। भारतीय संस्कृति तउलाए लागिति सिनेमा का पलरा पर आँख मूँद के, आ गावे लगतन गरु के नन्हीं मुंट क चरवाहो जे 'बोल राधा वोल संगम होगा कि नहीं'!

शासन सुकसुकाह भइला पर अनुशासन अरुआइल पीठा हो जाला। महाराज पृथु हजारन हजार विभाग ना खोल के पहिले अनुशासन आ उतपादन का ओर आँख उठवलन। उनका सोझा हीत-नात, जाति-पांति आ गोल-दल के दल-दल भा दरार ना दरके पावल। जनतंत्र का जोग छेम में कुकरमिन के अघोर घोंटे के भी सवाल ना खड़ा भइल, ना जनमत खातिर केहू के भुभुन के भेभने पोंछे के परल। धनुप पर बान धरते मातर अघी आ अततायी लोग दूध का धोवला मतिन झकाझक हो गइलन, आ ऊ एह से जे आंह लोग के एगुड़े राह रहे—'सुधार भा समूल संहार'। जन समाज आ अनुशासन का सा‹ हीं जब महाराज पृथी को ओर बान सरहलन त धरती नागिन अस काँपे लगली। हाथ जोर के धरती कहली :—

'महाराज! अपने के अवतार भइल वा प्रजा क पालन करे के आ मुनि लोग के निरूपन कइल आहार बिहार, वेवहार आ विचार के मरजाद के रच्छा करे के। जब राउर प्रजा लोग साच चले-बोले लगलन त हमहूँ आपन धर्म निमुकाइब। हमरा पर ज्यादा अत्याचारी आ अहकारी उपजि जालन आ वेद शास्त्र का मरजाद के मेटावे लागेलन त अकुलाइ के हमहूँ आपन धर्म

छोड़ दिहीला। अब अपने का हमरा के अपना बाहुबल से समतल बनाईं आ महाराज इन्द्र का मेघन के बरिसावल जल के संचि के हमारि छाती जुड़वाईं। हमारि छाती जुड़ाई, तबे जनता के भूख के भयंकर ज्वाला ठंढाई।

महाराज पृथुए का बाहु बल से धरती समतल भइली, आ जुड़इली इन्द्र महाराज का मेघ से। रेता का मछरी मतिन छपटाति जनता का साँस लेबे के सवंस भेंटाइल। प्रजा में संतोख भइला पर महाराज पृथु 'महासत्र' के दीच्छा लिहलन। ओह अवसर पर सवंसे संसार से नेवँतहरी पहुँचल रहन। ओह घरी महाराज पृथु सबकर स्वागत करत कहले रहन :—

हमरा सिर पर ताज एही खातिर राखल गइल, जे हम प्रजा का पालन के उचित प्रबंध करीं आ समाज का आत्म मरजाद के रच्छा करीं। जे राजा प्रजा से खाली करे उगाहे में अफुराइल रहेला, पाप के भागिए ना होखे बलुक बहुत जल्दी ओकर विनाश हो जाला। अपने सब से हमार एगो सनेस बाटे आ सनेस ई बाटे कि राग-द्वेष से ऊपर उठ के मानुष धर्म के पालन करीं'।

महाराज पृथु बहुत काल तक सवतुक राज चला के अपना पाँच पुत्रन में जेठउत—विजिताश्व के राज सिंहासन सउंप के सपत्नी वानप्रस्थी हो गइलन। प्रान अस प्यारी सन्तति आ सम्पति के त्यागी के उहाँ सब वानप्रस्थ धर्म सज से निमुकवलीं। राजप्रसाद छोड़े का बेर हाथ में कानी चित्ती भी लेवे के चित्त ना भइल, तब अवसर प्राप्त अधिकारी अस सुसज्जित महल, गोटगरि बटसारी आ पिनिसिन में नोट का लुँड़ेरा के सवाले कहाँ रहल। महाराज महाकाल का गाल में गइलन, बाकी गवात रही उनकर प्रजाप्रेम आ अटल नेम जुग-जुग ले।

—बक्सर, शाहाबाद।

लोक कथा :

ठग के मग

सरयू पाण्डेय

बहुत पहिले के बात ह। एक बेरा भोजपुर में बड़ा अकाल परल रहे। अकाल से तंग होके एगो बड़ा सुनर-सुभेख नवही विदेश में कमाए खातिर घर छोड़ि के चलल। भाग तेज रहे। ंग परदेस में सिपाही में भरती हो गइल। कुछुए दिन में बहुते माल कमाइल। ओह समय खातिर साठि रुपैया बहुते कहात रहे।

घर छोड़ले सिपाही बाँके।
भइले नोकर विदेश में जाके॥
उहाँ बहुते माल कमाई।
भइल साठि रुपैया भाई॥
एक बैल तलब में पाई।
ओके चलले देश हँकाई॥

आपन देसो त बड़ा दूरि रहे। ल लेले थाकल खेदराइल धनुआ-नुआ के जंगल में पहुंचि गइले। एगो रा लउकल। मरद-मानुस के आहट के ओहिजे चलि गइले। असल में ऊ ठगवा के डेरा रहे। ओकरा अनीरा आ मनीरा नाँव के दूगो बेटा रहस। ओहनी के रोज के काम रहे जंगल में भुलाइल-भटकल राहिन्हि के ठगल। बेचारे सिपाही के बैल लेले देखले स त, ओहनी के हाँथ खभुआए लागल।

दुनो भाई अनीरा मनीरा,
करे ठगहारी ततबीरा।
तू बैल इहाँ ले आव,
मोहि दाम ठीक बतलाव।
सुनि बात बहुत घबड़ाई,
कहे साठि रुपैआ भाई।

ओहनी का मोल त लेबे के ना रहे। ठगे के रहे। कहले स कि तू दाम ठीक-ठीक नइख बतलावत। साँचे-साँच कह, पंचाइति मन ब। अब सिपाही राम समुझि गइले। बाकिर अकेले रहला से घबड़ा गइल। कहलसि कि पंचाइति काहेना मानबि, पंच का मुँहे परमेसर बसे ले। दूनो भाई कहले कि होही डेरा प चलीं जा। ओह में एगो बूढ़ रहेले। ऊ बड़ा इमनदार आदमी हवे। पूजा-पाठ कइला से आ माला फेरला से उनुका फुरसति त ना रहे, बाकिर चाहीं कि हमनी दूनो भाई के बात ना उठइहें। उनुके दाम लगवला प माने के सलाह भइल। राजी भा बेराजी सिपाहिओ भाई का जाए के परिए गइल। अनीरा जाते कहले—

'बाबा ! ए बैल के दाम लगाव
हमनी के ठीक बताव।
एह बैल के बड़ुए ताखी
ई एको ना बाकी राखी।'

बुढ़ऊ बावा माला प से हाथ हटा के पाकल दाढ़ी के सुहरावे लगले। बहुत सोंचि के कहले—

'बबुआ तू लवल कवन ई फेरा
ई पूजा के हमरा बेरा।
रखनी बूढ़, जवान, बछउरा
भइल भाँड़ी के भाँड़ी चउरा।
सभ पई हमू जानी ले
सभ भेव हम्हू मानी ले।
एह बैल के बड़ुए ताखी
ई एको ना बाकी राखी।
छव टके प बैल बिकाइल
सोंचि-सोंचि जवान घबड़ाइल।

अपना धुरुतई से सिपाही के बैल त छवे टका प ले लेले स। सिपाही मन मसोसि के रहि गइल। बेचारा उदास होके चलि देलसि। मन में कइगो बिचार आवत रहले स। ठगवा त ठगिए लेले स। बलू बबुआ आ बबुआ के माई के कपड़े खरीदि लेले रहतीं। ओही घरी एक-ब-एक ओकरा अकिलि के पुँजउरि खुलल। सुनर-सुभेख भगवान बनवलही रहुसु। धोतिए के लूगा निअन पहिरि के फेरु ठगवन्हि का डेरा ओरि चलल। निगिचा पहुँचल त वइठि के अछुँधाह-वेछुधाह होके रोवे लागल। अनीरा आ मनीरा दूनो भाई पहुँचिए त गइले। ओकर रूप देखते दूनो भाई रीझि गइले। अब अपने में झगड़ा होखे लागल। अनीरा कहसु कि हम बड़ हईं, ई तोहार भउजाई लागी। मनीरा कहसु कि पहिले हम रोआई सुनले बानी, ई तोहार भवहि लागी। अन्त में बुढ़ऊ बाबा से फेसला करावे के तइ भइल। ओह औरत के लेके दुनो भाई बाबा किहाँ पहुँचले। बाबा ओह लोग के बात सुनले आ ओह औरत के रूप देखले। आँखि मूदि के धेआन लगवले। जब आँखि खोलले त आगा घुसुकि के कहले कि तोहनी के झगड़ा बेकार बा। असल में ई तोहनी दूनो भाई के मतारी लागी। एकरा से बिआह हम करबि।

औरत के सूनि रोआई
दउगल पहुँचे दूनो भाई।
देखि ओकर बनल रूप
ना रहि सकल केहू चूप।
दूनो जाना चहले सगाई
तब भइले खूबे लड़ाई।
ना मिलल कवनो राह
मम्मिला खूबे भइल बेथाह।
भई के तब मजबूर
कहिंहे बाबा से मंजूर।

औरत के देखि रूपवना
बुढ़ घुसुकल छोड़ि बिछवना।
तोहनी के माई लागी
भइल साँझि उठाव टाँगी।

पूरा जोस में आके बुढऊ कहले—

हाँथ एने मति बढ़ाऊ
पहिले काजी के बोलाउ
सरह मो साथ पढ़ाउ
तब बात बति आउ।
पहिले गइले अनीर
बाकी रहि गइले मनीर।
कइलसि अइसन ततबीर
भेजलसि उनुको के फीर

अब सिपाही का मोका हाथे लागल—

सभ धन-माल गेठिआई
बुढ़ऊ प खूबे बिताई।
बुढ़ऊ तब दाँत निकलले
छव टके प बैल बिकइले।
फेरु कुँआ में लटकाई
लेके बैल साथ पराई।

अनीरा आ मनीरा काजी के लेके इले त खूबे घबड़ा गइल लोग। ना मेहरारू रहे, ना बिछवना प बाबा नि, ना खूँटा प बैल रहे। अनीस आसे छटपटाइल रहनि। मनीरा से बधना पानी मँगले। मनीरा कुँआ पहुँचले त देखतारे कि बाबा कुँआ हिलुआ खेल तारे। देखते हाला ले 'भइआ, भइआ! दउर। बाबा कुँआ में लटकावल बाड़े।' दूनो जाना लागि-भीरि के निकालल लोग। बाबा पिटइला से अधमरू हो गइल रहनि। खाली कहँरत रहस। कसहूँ-कसहूँ कहले—

"ऊ त बाड़ा घँइचटाह
धइलसि सीधे घर के राह।
एगो खाली बैले कारन
गइल सभे धनू के धन।"

अनीरा आ मनीरा बड़ा फेर में परले। बाबा के दवा-दारू के अधिका चिन्ता रहे—

गइले बाहर दूनो भाई
एक बैद राह में पाई।
बैदा त संगे आइल
बाबा के नरी धराइल।
बाबा के ठग केहू बा मरले
बुढ़ऊ तब दाँत चियरले।
बुढ़ऊ सभ बात बताई
बा सही तहार बैदाई।
हरदी हरजोर पुरानी
तब होई दरद के हानी।
पहिले गइले अनीर
बाकी रहि गइले मनीर।
कइलसि अइसन ततबीर
भेजलसि उनको के फीर।
सभ रहल-सहल सरिआई
ठगई के सबक पढ़ाई।
बुढ़ऊ के खूबे बहार ले
छव टके प बैल बिकइले।

तब चलले सिपाही बाँके
परदेस से खूबे कमा के ।

सिपाही घरे जाके खूब खुशी मनवलसि। इनिका एगो साथी के ई सभ देखि ना गइल। भेंट करे अइले आ कमाए के उपाइ पुछले। असल में सिपाही के देखि-देखि ऊ जरत रहनि। ई कवनो नाया बात ना रहे। इनिका बाप से आ सिपाही का बाप से भी खूबे दोस्ती रहे। जब सिपाही के बाप, सिपाही के तीनिए बरिस के छोड़ि के साधू हो गइले, इनिकर सभ खेत लिलाम होखे लगले स। इनिका साथी के बाप सिपाही के मातारी से मलगुजारी खातिर रुपेआ लेसु, आ अपना नावे खेत लिलाम करावसु। सिपाही उनुकर भँइसि चरावसु। सिपाही उनुका के बढ़िआ रास्ता बता देले। कहले कि धनुआ-बनुआ के जंगल में ठगवा के डेरा किहाँ वैद बनि के गइला प कुछुओ बाकी ना रही।

'जा ठगवा के तू डेरा
मिली उँहा माल के ढेरा ।
जब वैद बनि के जइब
उँहा खूबे माल तू पइब ।
लईब वैद-वैद के टेरी
लागी ना तनिको देरी ।

ऊ खट से तैआर हो गइले। अपना मेहरारू से गेंठरी-मोटरी बन्हवा के राह नपले। दउरत-धूपत कुछ दिन में धनुआ-बनुआ के जंगल में पहुँचले। ठगवा के डेरा देखते अकुतइले फेरिए त लगावे के शुरू कइले।

वैद—वैद—वैद
सुनि वैद वैद के टेरी
ना लागल समुझत देरी।
एगो खाली वैले कारन
गइल सभे घर के धन।

तब दऊगले अनीर
पीछा कइले मनीर।
वैदा के बनल दासा
भइल खूबे तमासा।
इनिकर खूबे हालत बनले
छव टका प वैल बिकइले।
कहनी गइल वन में
सोच अपना मन में।

—भँड़सरा (पाण्डेय), शाहाबाद।

चिट्ठी मिलल

डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव', पटना।

"भोजपुरी साहित्य" के दो अंक मिल चुके हैं और बहुत ध्यान से मैं उन्हें पढ़ गया हूँ। मैं देख रहा हूँ आपके सम्पादकत्व में पत्रिका बहुत अच्छी निकल रही है। छपाई, सफाई तो बहुत अच्छी है ही मैटर की दृष्टि से भी बहुत उच्च स्तर कायम हुआ है और आशा की जाती है कि आप इसे न केवल निभा पायेंगे, बल्कि इसे उत्तरोत्तर अधिकाधिक विकसित करते जायेंगे।

आपकी पत्रिका का स्वर बहुत ही स्पष्ट है। आप नये बोध, नये मूल्य और नये स्वर के लिए आग्रहशील हैं। मैं समझता हूँ कोई भी साहित्य इस प्रकार की प्रगतिशीलता के बिना कुण्ठा का शिकार हो जायगा। निश्चय ही आपकी भविष्य के प्रति जो आस्था है और अतीत के प्रति जो गौरवबोध है वही वर्तमान में पथ-प्रदर्शन करता रहेगा।

प्रस्तुत अंक में श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह का "भोजपुरी साहित्य में नायिका वर्णन" काफी सरस है। प्रौढ़ावस्था में भी वे इतनी मजेदार बातें लिख जाते हैं यह देखकर आश्चर्य और आनन्द दोनों ही होता है। उनसे अनुरोध करना चाहिए कि वह इस विषय पर एक पूरा ग्रन्थ तैयार करें, जो, मैं समझता हूँ, अवश्य ही लोकप्रिय होगा। कहानियों में सूर्यदेव राय का "काका" और श्री गणेशदत्त किरण का "बट्टा लागि जाइत" बहुत ही उत्तम कोटि की हैं। कविताओं में दो एक ही हैं जिनकी चर्चा की जा सकती हैं। मुझे आपकी सम्पादकीय टिप्पणी "आपन कथ" बहुत उत्तम प्रतीत हुई और उसके अन्दर से आपका संकल्प झाँक रहा-सा प्रतीत हुआ। आपने भोजपुरी मुहावरे का बहुत अच्छा प्रयोग किया है और आपकी टिप्पणी पढ़कर तबीयत खिल उठती है।

मैं आपके इस अनुष्ठान के लिए भगवान से मंगल कामना करता हूँ, और आशा करता हूँ, आपका भोजपुरी साहित्य निरंतर अधिकाधिक विकसित होता जायगा और एक विशाल जन समुदाय को जिनकी बहुत बड़ी संख्या अण्डमन निकोबार, फीजी आदि द्वीपों में भी है, आकृष्ट करता रहेगा।

नया साहित्य

आग और तूफान : लेखक विजेन्द्र लाल 'अनिल', प्रकाशक : अनिल साहित्य निकेतन, बगेन (शाहाबाद), जुलाई, १९६३, मूल्य : एक रुपया।

आग और तूफान नवछेटिया उभरत कवि बिजेन्द्र लाल अनिल के राष्ट्रीय कविता के संग्रह ह। जब हमरा देश के पवित्तर भूमि पर चीन के चढ़ाई भइल समूचा देश के तन-बदन में आगि जरे लागल। बहादुरी आ वीरता के तूफान उठि के घहराये लागल। नवछेटिया अनिल में आगि के लहरा आ तूफान के गर्जन उठल। एही भाव बोध के ऊ एह संग्रह के कवितन में बन्हले बाड़े।

अपना आजादी के रच्छा के बोध एह कवितन के प्रेरणा-स्रोत बा। चीन के चढ़ाई से आजादी पर खतरा अइला से अनिल ललकारतारे—

खून बहाकर, गोली खाकर, जान गवाँकर आन में,
किसी तरह आजादी को रखना है हिन्दुस्तान में।

आजादी के राह में काँट बिछल बा। एह काँट के निकाले के बा। ना त आजादी ना रही, काँट हरकत रहो। एह से इतिहास के प्रसिद्ध वीरन के ऊ गोहार करत बाड़े। एह गोहार में प्रेरना बा, एह में भारत के सपूतन के एगो सनेस बा। आजादी बचावे के सनेस! ई सनेस जनता तक पहुँचावे में अनिल सफल बाड़े।

अनिल के शब्द में बड़ा ओज बा। छन्द के सुघर प्रयोग बा। एह नवछेटिया कवि के एह कलहल पात से भविष्य के बारे में आस बन्हता।

झुरुकि बहे ना : रामवृक्ष राय 'विधुर', प्रकाशक : अंतरग्रामीय सहृद साहित्य गोष्ठी (गाजीपुर-बलिया), प्रथम संस्करण : १९६२, मूल्य : सौ नये पैसे।

झुरुकि बहेना रामवृक्ष राय 'विधुर' के तैंतीस कवितन के संग्रह ह। विधुर जी प्रकृति के बड़ा नेह आ ध्यान से देखले बानीं। गाँव-गँवई के प्रकृति कई रंग में रंगेले। एह रंग के देखेवाली आँखि विधुरजी के पास बा, अइसन एह संग्रह के कवितन से मालूम होता। शरद् ऋतु के एगो संश्लिष्ट चित्र देखीं :

ऊँजर-ऊजर फूल फुलाइल, राढ़ी के टहकार बा।
रेंडल धान, धरा मुसुकाइलि बहत पवन झंकार बा।
झूमत बाय खेत में बजरा छलकत रस के धार बा।

एह चित्र में माटी के धूसर रंग आ सोन्हाई साफे झलकता। कवि के एह माटी से गहिड़ार परिचय बा। तबे ऊ अइसन चित्र उरेहले बाड़े।

बरिसाति में साँवा टाग़ुँनि के बालि झूलेलीस। पवन के हिंडोला पर झूलति बालि के चित्र बड़ा नेह से उरेहल गइल बा :

साँवा रे टगुँनिया की लमी लमी बलिया
झूलति बाड़ी ना, चढ़ि पवन हिंडोलवा, झुलति बाड़ी ना।

लोक गीत के धुन में रचल एह गीतन में कवि के ग्रामीण क्षेत्र के मजगर परिचय उगल बा। अपना जीवन के आस-पास के बेधक चित्र उरेहे में विधुर जी के पूरा सफलता मिलल बा।

विधुरजी के कविता के सबसे बड़ विशेषता बा रूपक विधान में। प्रकृति के इची-इची बात के रूपक के माध्यम से उजागर करे में उनकर मुकाबिला बहुत कम लोग करी। प्रकृति के नायिका रूप में चित्रण करे में भी ऊ बेजोड़ बाड़े :

जोन्हिया के हार गरे पहिरे अकसवा
गावे रे लगली ढेका बान्हि के कतरिया, गावेरे लगली।

अवरू देखीं :

गोबर पाथत खूनी खनकेली चूरिया, चमके टिकुली लिलार।
बिहँसेली भुइयाँ, हँसेली बँसवरिया, पहिरि किरिनिया के हार।

लोक धुन के ध्यान राखि के लिखाइल, ई कविता बड़ा बेधक बाड़ीस।

—जि०।

आपन कथ

भोजपुर के वीरभूमि जागलि बा, स्वतंत्रता के अगुआ कुँअर सिंह के खून फुफुकारता, चीतू पांडे के रकत खउलता। बढ़ भोजपुर के माटी, जाग भोजपुरी लाठी। आजु भारत के पवित्तर देव थान पर दुसमन के गोला घहरा तारे स। उत्तरी सीमा पर एगो दोसरा दुसमन के फउजि उपटल आवतारीस। उठ भोजपुरिया जवान। अब बेरा आइल बीरता देखावे के। तहार बीरताई त जग जाहिर बा। अब मोका परल बा। फेरु ओह वीरताई के बानगी द जे जुग-जुग ले जहान तहरा बीरता के नाम लेउ।

उठ भोजपुरी भाई! उठ। दुसमन के रकत पिये खातिर काली के रूप में उतर। चाभि जा खून बूनी-बूनी, जे फेरु कवनो अभागा के एने आवे के हिआव ना परे, एने ताके के आँखि के पपनी ना उठे। चीन होखे चाहे पाकिस्तान, जे हमरा देवास निअन धरती पर चढ़े, ओकर भूभुन रँगि द, आँखि टेकुआ से निकालि ल, जीभि खींचि ल। हमनी के दुसमन के ना बरदास करबि जा, जान लगा देबि जा।

माई के दूध के नीखि देबे के बेरा आइल बा, सत्ती मइया के चउरा के रच्छा करे के मोका आइल बा, बरम्ह बाबा के बचावे के बा, अपना बेटा, बेटी, मतारी, बहिनि आ मेहरी के प्रान बचावे के बा। हमनी के रोटी, कपड़ा बचावे के बा, सेनुर, चूरी, लहठी के खनक कायम राखे के बा। उठ भोजपुर के जवान। एक-एक पर तीन-तीनि टूट। देस के रच्छा कर।

जय भारत! जय भोजपुर!! जय जवान!!!

भोजपुरी साहित्य

के नियम

१. १०१ रु० देवे वाला 'भोजपुरी साहित्य' के संरक्षक आ पत्रिका समिति के सम्मानित सदस्य मानल जाई। पत्रिका के ऊ आजीवन ग्राहक होई।

२. २५ रु० देवे वाला पत्रिका समिति के सदस्य आ पत्रिका के ७ साल तक ग्राहक रहिहें।

३. पत्रिका के सालाना चन्दा पाँच रुपया आ एक अंक के दाम ५० पइसा बा।

४. विज्ञापन के रेट खातिर व्यवस्थापक के चिट्ठी लिखीं।

५. समालोचना खातिर किताब के दू प्रति भेजीं।

संपादकीय आ व्यवस्थापकीय
कार्यालय
भोजपुरी साहित्य,
प्रोफेसर कॉलोनी,
के० जी० रोड, आरा

महाशक्ति आयुर्वेद भवन, आरा

के

महाशक्ति संजीवनी

पाण्डु रोग, कमजोरी, नामर्दी, खून के कमी, ज्वर भा कवनो रोग के बाद के कमजोरी, अग्निमान्द्य, हरिद्रोग (**Chlorosis**), मासिक धर्म के कमी, भा बन्द भइला पर अवरू कवनो रोग के बाद के कमजोरी में पी के फैदा उठाईं।

एकरा पियला से रक्तहीनो शरीर में खून दउरे लागी। एक बेरि परीक्षा करीं।

वैद्यसर्जन पं० शिवकुमार त्रिपाठी,
आयुर्वेदाचार्य, ए. एम. एस.
महाशक्ति आयुर्वेद भवन,
आरा (शाहाबाद)।

कृष्णा स्टोर्स

चौक, आरा

रेडीमेड कमीज, पैन्ट, ब्लाउज, बुशर्ट, हवाईशर्ट, फ्राक, गंजी, लेडी साल, जाकेट, मोजा ऊनी कोट, स्वेटर, मफलर इत्यादि हर क़िस्म के सुन्दर कपड़े अत्यन्त सस्ते दामों में हर समय एम दाम (**Fixed Rate**) में बड़ी आसानी से थोक वो खुदरा मिलते हैं।

अतएव एकबार अवश्य पधार कर परीक्षा करें।

और

इस शुभ अवसर को हाथ से न जाने दें।

श्री लक्ष्मण त्रिपाठी व्यवस्थापक द्वारा
श्री सरस्वती प्रिंटिंग वर्क्स लिमिटेड,

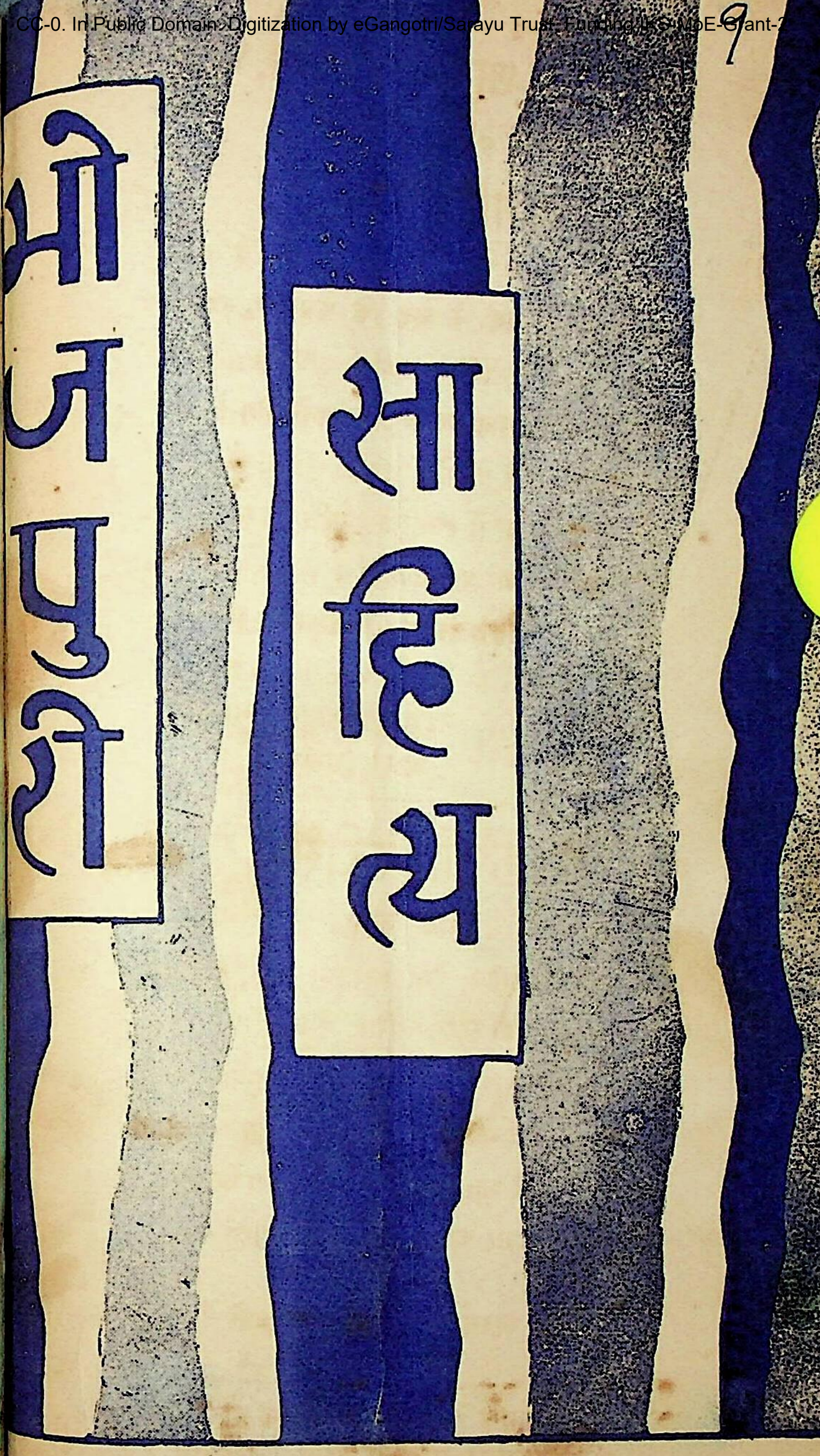

भोजपुरी साहित्य

जुलाई १९६५ प्रवेशांक मूल्य ५० पइसा

भोजपुरी साहित्य

(मासिक पत्रिका)

प्रवेशांक
वर्ष : १ अंक : १,
जुलाई, १९६५

संपादन
जितराम पाठक

एह अंक के मूल्य
५० पइसा

कार्यालय
प्रोफेसर कॉलोनी,
के० जी० रोड
आरा।

व्यवस्था
लक्ष्मण त्रिपाठी

सलाना चन्दा
५ रुपया

निबंध

नयी कहानी : कुछ विचार १ राजनारायण सिंह
संत कवि देवाराम : एगो परिचय ९ सर्वदेव तिवारी 'राकेश'
नयी कविता में भाव बोध २३ रमेश तिवारी
संतन के भोजपुरी सेवा ३१ महेश्वर प्रसाद

कहानी

नया संस्कार १५ मधुकर सिंह
बूला बाबा २८ जगदीश प्रसाद पाण्डेय
चीठी के अरथ ३५ श्रीरंगजी पाण्डेय
हे हमार नीलम परी ४९ बच्चन पाठक

कविता

चारिगो कविता २० वेदनन्दन, उर्मिला जैन,
संतोष कुमार मिश्र, चितरंजन
दूगो कविता ३७ हरि राम द्विवेदी
गणपति पाण्डेय

एकांकी

अन्हार ४० स्वर्ण किरण

स्तंभ

नया साहित्य ४८ स्वर्णकिरण महाकालेश्वर
आपन कथ ५४ सम्पादक

मुख पृष्ठ के शिल्पी : महावीर वर्मा

नई कहानी : कुछ विचार आ संभावना

राजनारायण सिह

आज जवन कहानी समकालीन पत्रिकन में निकल रहल बिआ ओकरा के 'नई कहानी' के नाम से जानल जात बा। ई 'नई कहानी' आज के कहानीकार आ आलोचक लोगन के लिये आलोचना आ प्रत्यालोचना के केन्द्र बन गइल बिआ; बाकी कवनो ठोस निर्णय के अभाव में ई विषय बहुते अझुराइओ गइल बा। जँहवे जे पावत बा एक दोसरा के साहित्यिक लंगी मार देत बा आ आपन डफली अलगे राग में बजावे लागत बा। एही से 'नई कहानी' के झंडा हाथे हाथ बदलत भी रहत बा। पुरान कथाकार लोग त 'नई कहानी' के नया संदर्भ' ना समझला से एकरा पर कटकटा के परत बा लोग, बाकी नया कथाकार लोगन के विचार में भी कम दरार भा छेद नइखे। अबहीं लगले 'धर्मयुग' में 'एक कथादशक' आ "नई कहानियाँ" में 'कुछ और हस्ताक्षर' के जवन परिसंवाद चलल रहल हा ओसे ई बहुते साफ हो गइल कि नया कथाकार लोग भी फतवा देबे में खूब माहिर बा लोग। साँच पूछल जाय त आज के कथाकार लोग कथावाचक भी हो गइल बा लोग। लिखत कमे बा बाकी घेव बजाके हल्ला करे में इचिको पीछे नइखे लोग। एही से कहानी में गाँव के कहानी-नगर के कहानी, देसी कहानी-विदेसी कहानी, पुरानी कहानी-नयी कहानी, सचेतन कहानी—अचेतन कहानी, नई कहानी-अकहानी, किसिम-किसिम के झगरा उठ खड़ा भइल बा।

आज के नई कहानी के लेके त नया आ पुरान कथाकार के बीच में एगो अजबे स्थिति पैदा हो गइल बा। एक ओर जतने जोर से जैनेन्द्र नियन नीमन आ पुरान कथाकार कहत बाड़े कि 'नयी कहानी का अस्तित्व मेरी समझ में नहीं आ रहा है'—त दोसरा ओर ओतने जोर से ज्ञानरंजन लेखा नया कथाकार इ कहत बा कि "जो लोग नई कहानी अथवा जीवन के वर्त्तमान को समझना नहीं चाहते उनके लिये न हमारे पास कोई इलाज है न सबक।" अतने ना, एक तरफ जहँवा अश्क के ई कहनाम बा कि

नई कहानी खाली 'फैशन' करत बिआ आ अइसन प्रयोग पहिले भी कइल जा चुकल बा उँहवे दोसरा तरफ, अइसन ढेर नया कथाकार दावा के साथ कहत बाड़न कि आज के नई कहानी संसार के कहानिन के सामने भी छाती तान के गौरव के साथ रखल जा सकतारीस।

एह बात पर कबो-कबो बड़ा अचरज होला कि अपना देश में 'कहानी' के लेके जतना मजगर विवाद उठ खड़ा भइल बा आ जतना जोर से हल्ला सुनात बा ओतना संसार के अधिकांश देशन में नइखे। अपना देश के प्रायः सब भाषा में इहे हाल बा। हिन्दी में त कपरफुटउवल मचले बा बाकी मराठी, गुजराती, तेलगू, कश्मीरी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम वगैरह में भी ई विवाद इचिको कम नइखे। साँच पूछल जाय त देश में सुराज मिलला के बाद आदमी में जीवन के मूल्य आ विश्वास के लेके एगो अजबे तरह के परिवर्तन शुरू हो गइल हा। नया मान-मूल्य के उगते पुरान मूल्य अररा के ढहत गइले हा स। एह सब के प्रभाव कवनो ना कवनो रूप में अपना साहित्य पर भी पड़ल हा। सामाजिक यथार्थ आ जीवन के बदलत मूल्य के नया कथाकार जतना ईमानदारी से भोगता आ एह नवीन बोध के अपना निजी अनुभव के आधार पर जवना ढंग से प्रस्तुत करता ओइसन प्रायः पहिले के कहानीकार ना करत रहले हा। एही से आज के नई कहानी प्रेमचन्द-प्रसाद युग से बहुत आगे आ गइल बिआ।

सुराज मिलला के कुछ बरिस पहिले हिन्दी कहानी में गतिरोध के स्थिति पैदा हो गइल रहे। पुरान कथाकार में बहुत लोग चुप लगा गइल रहन। बाकी सुराज के बाद ई स्थिति बिल्कुल साफ हो गइल। एह बात के बहुत लोग कबूल कइल कि "हिन्दी कहानी में जो गतिरोध उपस्थिति हो गया था वह अब जैसे टूट चला है और स्वस्थ प्रवृत्तियाँ बलशीला हो चली हैं" (श्रीपत राय)। एह तरह से कहानी के गतिरोध के अच्छी तरह से ढाहि के एगो जवन नया पीढ़ी जनम लेलस ऊ नई कहानी के आ नया कथाकार के पीढ़ी ह। सुराज के बाद ई जवन नया पीढ़ी नया संदर्भ में शुरू भइल ऊ जीवन के नया बोध के लेके चलल। एह नया संदर्भ या भाव बोध के

समझल आसान नइखे। एह नया संदर्भ के पहचाने खातिर खुद के ओह संदर्भ में डाल के अपना के बदलला के जरूरत बा। काँहे कि संदर्भ नया अर्थ देला, आ नया अर्थ समझे खातिर नया संदर्भ समझल बहुत जरूरी बा। नई कहानी मनुष्य के, जीवन के, समाज के, ऐतिहासिक संदर्भ के झेलले बिआ। बिल्कुल साफ बा कि जे सुराज के बाद एह नया संदर्भ के ना पहचान सकल ओकरा खातिर त नई कहानी के अस्तित्व समझल कठिन हो गइल। आ जे एकरा के पकड़े आ बूझे के कोशिश कइल ऊ आपन ईमानदारी के साथ ई साफे कहे लागल कि "यह स्वीकार करने में मुझे आपत्ति नहीं कि कहानी का स्वरूप बदल रहा है और मैं शायद पुराने संस्कारों के कारण कहानी से वह माँग रहा हूँ जो उसका लक्ष्य नहीं है।" (श्रीपत राय)

अब ई बात साफ हो गइल कि केहू चाहे कतनो मुँह-ओठ बिजुकावे, कतनो हाथ गोड़ पटके आ कान में ठेपी ठूँस ले आ घेघ बजा-बजा, चिल्ला के नई कहानी के अस्तित्व ना सँकारे आ एकरा के प्रेमचन्द परम्परा से अलग ना मानल चाहे, बाकी साँच इहे बा कि आज के नई कहानी पहिले के कहानी से ढेर आगे आ गइल बिआ। प्रेमचन्द-परम्परा के कहानी के कुछ चीज छोड़ के भी ई अपना में बहुत कुछ जोड़ले बिआ। बिना पूर्वग्रह के ईमानदारी से दूनों युग के कहानी के जँचला से ई बात के पता चलि जाई।

प्रेमचन्द युग के कहानी में जवना व्यक्तिपरक तत्त्व के अभाव लउकत रहे ऊ आज के कहानी के मूल स्वर हो गइल बा। कहानी में एह व्यक्तिपरक तत्त्व के शुरूआत त एक तरह से अज्ञेय के 'जय दोल' के कहानिन में भी हो गइल रहे, बाकी नई कहानी के व्यक्तिपरकता अज्ञेय से काफी भिन्न बा। अज्ञेय के व्यक्तिपरकता जहँवा उनकर खुद के रहे उहँवा एह कहानिन के व्यक्तिपरकता सबके हो गइल बा। मतलब कि ओकर विशेषीकरन से साधारणीकरण हो गइल बा। आज के व्यक्तिपरकता एक तरह से समाज के प्रतीक बन गइल बा।

ई ठीक बा कि प्रेमचन्द के लोक जीवन आ क्रान्तिकारी चेतना से नया कहानीकार कुछ दूर (अलग ना) हटल बा, बाकी एह तत्त्व के बिल्कुले अभाव बा अइसन माने के कवनो

कारन नइखे। साँच त ई बा कि आज के कथाकार जीवन के संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत करत बा, व्यक्तित्व के अइसन ढेर परत खोल के रख देता जवन अनछुआइले रह गइल रहे।

आज के नया कहानीकार बहुत कुछ अपना ऊपर भोग रहल बा। आपन अनुभव के आधार पर साहस के साथ पूरा सजीव आदमी आ पंगु जीवन के गहराई में जाके ऊ ओह तत्त्व के ढूँढ़ रहल बा जवन ओकर आपन अनुभूति के सचाई बा। पहिले के ढेर कहानीकारन में एकर अभाव रहे। पहिले कहानी 'फैशन' के रूप में लिखल जात रहे, भा लिखे खातिर लिखल जात रहे। ओकरा में अनुभूति के सचाई भा निज के अनुभव प्रायः कमे रहे। बाकी आज के कहानीकार लिखे खातिर कहानी नइखे लिखत, लिखल ओकर प्रतिबद्धता बा। एकरा के दूधनाथ सिंह से शब्द उधार लेके एह तरह से भी कहल जा सकत बा कि "कहानी बनाने और कहानी का अपने आप घटित होने का अन्तर ही पुराने और नये का अन्तर है।" एह तरह से रोमांटिक, लिजलिजी भावना के पूरा तरह से ढाहि के जवना मानसिक परिपक्वता, गहरा पीड़ा बोध आ निज के अनुभव पर अनुभूति के सचाई के नया कहानीकार जइसन स्वर देले बा ऊ नई कहानी के उपलब्धि बा। इहे कारन बा कि अकेले पिछिले दशक में हिन्दी कहानी अपना भीतर जतना विशेषता समेट सकल बिआ आ जीवन के मूल्य के लेके ई जतना कलागत-भावगत उपलब्धि अर्जित कइले बिआ ऊ अपने आप में मिसाल बा। एमें कवनो सुबहा नइखे कि एह पिछिला दशक में कहानी के उपलब्धि उपन्यास से आगे बा।

नई कहानी शिल्प आ नई भावभूमि के दृष्टि से भी पुरान कहानी के चौखट के नीके तहस-नहस कर देले बिआ। पुरान कहानीकार भी मध्यम वर्ग के सामान्य जीवन से सटल ढेर चित्र देखवले रहन, बाकी उनकर चित्र काल्पनिक आ कृत्रिम अधिका हो गइल रहे, काँहेकि ओमे सूक्ष्मदृष्टि आ अनुभव के अभाव रहे, समस्या आ सुभाव ढेर रहे। एही से जिनगी के तिताई चीखे वाला नया कहानीकार के ई 'पवित्रतावादी त्यागमयी झूठी भावना' आ छूँछ आदर्श ना रुचल।

परिणाम एकर ई भइल कि नया कहानीकार पुरान कथानक आ शिल्प के अस्वीकार कइके नया-नया प्रयोग करे लागल। पहिले के कथाकार जँहवा बँधल बँधावल कथानक में आपन अनुभव ढूँसत रहन उहवाँ नया कहानीकार अपना अनुभव के आधार पर नया-नया कथानक बनावे लागल बा।

एह क्षेत्र में नया कहानीकार एगो अवरु नीमन बात ई कइलस कि रोमांटिक भावुकता के अच्छी तरह से तोड़-फोड़ के फेंक देलस। पहिले जवन कहानी बौद्धिक कहल जात रहे ओमें रोमांटिक भावुकता आ करुणा के पक्ष ज्यादा रहे। आजके कहानीकार पहिले आपन अनुभव के झोरी टटोलत बा, आ तब कवनो समस्या के झेलत बा। एही से नई कहानी में 'तल्खी लिये तटस्थता' के पक्ष साफ लउके लागल बा। ("नई कहानी" के हाशिया पर 'एक शिल्प कहानी' आ 'वापसी' के लेके नामवर सिंह जवन सवाल उठवले रहन ओहूमें इहे बात झलकत रहे। बाकी कहानी 'अच्छी और नई' के लेके बाद में लमहर विवाद उठला से बात ढेर अझुरा भी गइल।)

नयी भावभूमि के लेके नई कहानी में आंचलिकता के एगो अउर नया पक्ष जुटि गइल बा। एक पीढ़ी के कथाकार गाँव के ओर फेरु लवटले—आ गाँव के चित्रण में बहुत आत्मीयता के कारन उनकरा अचरज भरल सफलता भी मिलल। रेणु, मार्कण्डेय, शेखर जोशी, शिवप्रसाद सिंह, मधुकर गंगाधर, शैलेश मटियानी के कहानी में एह आंचलिकता के स्वर नीके तरह से उभरल बा, बाकी पात्रन के दिल में ढूकि के आंचलिक शब्द व्यंजना से व्यक्तित्व के सही चित्र परगट करे में जइसन माहिर रेणु बाड़न ओइसन बहुत कम लोग बा।

एह तरह से सुराज के बाद नई कहानी अपना अनेक सीमा के रहलो पर आदमी के संघर्ष आ नया युगबोधके ठीक ठीक पकड़ले बिआ। एह में भीतरी व्यक्तित्व के छटपटाहट से निकलल एगो नया किसिम के आत्मबोध आ व्यक्तित्व निर्माण में अभिमान के अकुलाहट भी आसानी से देखल जा सकत बा। अतने ना, एकर आपन कुछ छोट-छोट मजबूरी भी बा जवना के अभी केहू नइखे छुअले। बाकी 'नई कहानी' ओकरा से आँख चोरा के भागल नइखे चाहत।

ऊ ओकरा के छाती तान के झेलत बिआ आ आपन अनुभव के लेके सामान्य जीवन के छोट छोट चित्र के भी प्रतिनिधि चित्र मान के ओकरा के चित्रित करत बिआ।

एह तरह से नया आत्मबोध आ नया जीवन-मूल्य के साथ परिवेश वोध के सचेतनता, क्षण के अनुभूति, एक खास किसिम के 'मूड' के अभिव्यक्ति नई कहानी में कला आ भाव दूनो दृष्टि से भइल बा। एह आधार पर राजेन्द्र यादव के टूटना किनारे से किनारे तक, जहाँ लक्ष्मी कैद है, एक कमजोर लड़की की कहानी, मोहन राकेश के मिस पाल, मलवे, का मालिक, कमलेश्वर के राजा निरबंसिया, खोई हुई दिशाएँ, निर्मल वर्मा के परिन्दे, एक कुत्ते की मौत, रेणु के तीसरी कसम, अच्छे आदमी, अमरकान्त के दोपहर का भोजन, जिन्दगी और जोंक, मार्कण्डेय के गुलरा के बाबा, दानाभूसा, भारती के गुल की बन्नो, शेखर जोशी के बदबू, मटियानी के प्रेतमुक्ति, रघुवीर सहाय के मेरे और नंगी औरत के बीच, मन्नू भंडारी के यही सच है, क्षय, उषा प्रियम्वदा के वापसी, मछलियां, श्रीकान्त वर्मा के झाड़ी, दूसरे के पैर, दूधनाथ सिंह के रक्तपात, रवीन्द्र कालिया के नौ साल छोटी पत्नी, जितराम पाठक के उधार की जिन्दगी, मधुकर गंगाधर के घाव, विजयमोहन सिंह के कुछ महीने, महेन्द्र भल्ला के एक पति के नोट्स, काशीनाथ सिंह के सुख आदि कहानी आगे ढेर दिन तक याद कइल जइहें स।

अन्त में ई कहल कवनों जरूर ना होई कि नई कहानी कथा साहित्य के बहुत बल देले बिआ आ आगे के नया राह तैयार कइले बिआ। नई कहानी अब स्वस्थ आ सामाजिक दृष्टि अपना चुकल बिआ आ अपना विकास खातिर हरदम सही दिशामें संघर्ष करे के तैयार बिआ, भा करतो बिआ। बाकी जतना ई कहल ठीक बा कि राकेश, यादव, कमलेश्वर, रेणु, मार्कण्डेय, निर्मल, रमेश बक्षी नई कहानी में कई गो महत्वपूर्ण नीमन कड़ी जोड़ले बाड़न लोग आ ओकर अनछुआइल रूप के खोजले बा लोग, ओतने ईभी कहल ठीक बा कि कबो कबो नई कहानी में विभ्रम भी लउके लागत बा। ई विभ्रम नया आलोचक आ कहानीकारे लोग ज्यादा पैदा कइले बा।

अभी कतना नया आलोचक आ कथाकार अइसन बाड़न कि कहानी

के पहिला शर्त ओकर कहानी भइल मानत बाड़न। बिना कहानी के दिलचस्प भइले ऊ नीमन कहानी के अनुमाने नइखन करत। बाकी एगो समर्थ आलोचक के समझ लिहल अब बहुत जरूरी बा कि नई कहानी में किस्सागोई के तत्त्व के अब बहुत दिन तक ना ढोअल जा सके। नई कहानी जवना ओर बढ़ रहल बिआ भा जवन खोज रहल बिआ ऊ किस्सागोई के जाल के तूर तारि के खतम करेके प्रयत्न कहल जा सकत बा। आज के कहानीकार खातिर त "कहानी में कहानीपन बहुत ही नगण्य और हास्यास्पद" लागत बा (रवीन्द्र कालिया)। अतने ना, ज्ञानरंजन लेखा नया कथाकार त ललकार के कहत बाड़े "केवल कहानी कहानी के बारे में में—उसे शेष (जो महत्त्वपूर्ण है) से असम्पृक्त करके जिस तरह सोचा जा रहा है वह बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं है।"

नयी कविता के तरह नई कहानी में भी कबो-कबो अझुराइल बात देखे में मिल जात बा। 'धर्मयुग' के 'नये स्वर' में प्रकाशित कई गो कहानी में नई कविता के समान आत्मरति, कुंठा देखे के मिलल हा। देखला से अइसन बुझात रहल हा कि जइसे कहानीकार कहे खातिर छटपटा रहल बा, बाकी कहि नइखे पावत। कुंठा, पराजय के साथेसाथ कबो-कबो एगो गहरा अवसाद आ अकेलापन के भावना में ऊब आ थकान अउर स्वस्थ दृष्टि के अभाव में खाली नवीनता के पीछे सातू पिसान लेके भागल, भा ह्रासोन्मुख पाश्चात्य सभ्यता के चेला बन के स्त्री पुरुष के यौन-संबंध के निरावरण अंकन नई कहानी खातिर चिंता के विषय बन जात बा।

अभी अभी कुछुए दिन पहिले नई कहानी में जवन अ-कहानी के आन्दोलन आइल बा ऊ ई साबित कर देले बा कि नई कहानी के सही नेतृत्व ओकरा हाथ मे नइखे जेकरा के समझल जात बा। शिल्प, कथा आ भाषा के लेके यादव त राकेश पर आक्षेप करते रहले हा, बाकी एने ई भी देखे में आइल कि यादव, राकेश, कमलेश्वर के नीमन कहानी भी 'शुद्ध फार्मूलाबद्ध' से अधिक नइखे। निर्मल वर्मा त साफ कह देले कि "कहानी की मृत्युचर्चा आरंभ करनी चाहिए'। अतने ना रवीन्द्र कालिया भी ढोल बजा के कह देले कि 'मुझे कहानी के उस

स्वीकृत रूप से घोर वितृष्णा है जिस अर्थ में वह आज कहानी के नाम से जानी जाती है (ज्ञानोदय, समकालीन कहानी विशेषांक)। पश्चिम के अनुकरण पर ई जवन आन्दोलन अबहीं शुरू भइल बा ऊ नई कहानी के कवना ओर ले जाई ई कहल मुश्किल बा, बाकी ई साफ-साफ बुझाये लागल बा कि सामाजिक सतह के खुरदुरा सत्य के जतना नीचे सतह पर जा के ई कहानीकार जइसन सोझ ढंग से आपन बात कहत बाड़े ऊ बहुत नया कथाकार लोगन के लिये भी ईर्ष्या के बात बा। ई ठीक बा कि अ-कहानी के लिखेवाला लोगन में भी ढेर जाना के पास स्वस्थ दृष्टि के अभाव बा, बाकी एह लोग के कहानी जइसना ढंग से शिल्पगत पच्चीकारी फेंक के हलुक पातर आ ठोस हो गइल बिआ, ओह पर लमहर अचरज होत बा। कबो कबो कथा चरित्रन के नाम ग्राम, परिचय के अभाव में एकरा के अमूर्त्त आ असामाजिक मान लेवे के भरम भी हो जाता, बाकी अइसन बात बा ना। एह कथाकारन में पहिले के लोगन से ज्यादा ईमानदारी बा। ढेर नाम ना गिना के थोरे में कहल जा सकत बा कि अइसन ईमानदारी के छटपटाहट निर्मल वर्मा रवीन्द्र कालिया, ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, प्रयाग शुक्ल, विजय चौहान, महेन्द्र भल्ला, काशीनाथ सिंह आदि के कहानिन में देखल जा सकत बा।

—महाराजा कॉलेज, आरा।

संत कवि देवाराम : एगो परिचय

सर्वदेव तिवारी 'राकेश'

शाहाबाद के धरती, आजुये से ना अनादिये से कलम, आ तरुआरि दूनो में, अपना गौरव-गरिमा के सोझा केहू के कवो एह से ना कुछ लगवलस कि सदई से एकर लोहा खुदे सभ मानत आइल हा। एहिजा खलिसा साहित्यिक पहलू के देखीं जा त झटके प लउकी कि इहँवे 'बेदशिरा' (बक्सर) में बइठि के वेद के, कुल्हिए ना त ढेरकहा, रिचन्हि के रचना भइल। अवध के बेटन्हि आ मिथिला के दामादन्हि के राम बनावे वाला विश्वामित्र, जे वेद-मंत्रन्हि के देखनिहारो रहन, एही ठाँव के रहवइया रहन। संस्कृत गद्य के बेजोड़ लेखक बाणभट्ट के 'कादम्बरी' जे अपना अइसन रूप-बनावट के लेके आजुओ दुनिया खातिर बेमिसाले बा, एही माटी के उपज ह। बाण के लँगोटिया इयार आ अपभ्रंश के पहिला जानल कवि ईशानचन्द्र, जेकर चरचा स्वयंभूदेव के 'पउम-चरिउ' आ 'रिट्ठनेमि चरिउ' में आ पुष्पदन्त के 'अपभ्रंश महापुराण' में आइल बा, एहिजे के रतन रहन। दरिया साहब, प्रबल शाह, साहब राम, रामदास, कुंजन दास, चन्दन राम, जयराम दास, जीवन बाबा, रामेश्वर दास, भजन देव (पयहारी), रमैया बाबा—आ एही तरे अउरियो बहुत संत कवि लोग एहिजा समय-समय पर होखत आइल बा, जिनका के देखि के ई मानहीं के परी कि ई माटी तरुआरिये ना, मलो फेरे में केहू से कवो पाछा ना रहे। राष्ट्रभाषा हिन्दी के बिरवाई के लहलहावे में एह भूँइ के घटा दिहल जाउ त चरपाई तिपाई हो जाई, चरमोहानी तिमोहानी में बदलि जाई आ चरखंभा पर टिकल ओरिआनि अरराये लागी। पं० सदल मिश्र, पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा, पं० सकलनारायण शर्मा आ बाबू ब्रजनन्दन सहाय 'ब्रजवल्लभ' जवना हिन्दी गद्य के, किसिम-किसिम के नकासी के साथ, नेंव देइ के आगे बढ़ावल लोग, ओकरा के, बीच-बीच में कटाव-काटत मुड़ेरा तक पहुँचावे-वलन्हि में नामी-गरामी कारीगर जे बिहार में भइल, ऊ एहिजे भइल। सूर्यपुरा के राजा साहब आ दलीपपुर के 'नाथ' जी, अइसन एहिजा कतने

'साहित्यिक परिवार' भइल आ बड़लो बा। अइसने में से एगो परिवार महाराजा कॉलेज, आरा के अँगरेजी-विभाग के प्रोफेसर श्री रंगजी पाण्डेय के भी कहाई जवना में संत कवि देवाराम, अजब दास, गुदरी दास, रामेश्वर बाबा से होत आजु तक आवे वाली लकीर कतो टेढ़ो नइखे भइलि।

संत कवि देवाराम के जनम शाहाबाद के शाहपुर थाना के भीतर करजा गाँव में १७१० ई० के आस-पास भइल रहे। इनिका पिता जी के नाँव पं० मधुबन पाण्डेय रहे।[1] बाबा सादीसुदा गिरहत संत रहीं। इहाँ के दुगो लइका रहीं सभे। पहिला अजायब पाण्डेय (उर्फ अजबदास) त कवियें रहन, छोट जाना नन्हियेमुटी प 'सँपहा' बनि गइले।

देवाराम बाबा अपना जवाना के, जवन संजोग से शाहाबाद के इतिहास में संत-जुग कहा सकेला, तपल संत, कवि, महात्मा, उपदेशक आ समाज-सुधारक रहीं। बाबा कवनो ना त पंथ चलवनीं आ नू केहू के कान-फूँकि के चेला मुड़नी, बाकिर तबो धर्म-गुरू से कम मान-मरजाद उहाँ के कबो नू भइल नू आजुये बा। जगदीशपुर के बाबू भूपनारायण सिंह बाबा के चेला बने खातिर लाख चिरउरी कइले, बाकिर बाबा कबो तेआर ना भइले। बाबा के सिद्धान्त का आगा झूकि के आ खुश हो के बाबू साहब कुछु जमीनो दान देले रहन, जवना से बाबा के मृत्यु-समय १७८५ ई० के पता लागि पावेला। जवना जगहि प बाबा आपन देह छोड़ले रहीं, ऊ बिहिया से दू माइल दखिन बिहिया-जगदीशपुर सड़क प दावाँ गाँव के सोझा बा। आजु ओहिजा एगो बरम्ह-असथान निहन कवनो चीजु बना दिहल बा, आ लोग ना जाने कइसे ओहके 'बउरहवा बाबा' कहे लागल बा। एमें कवनो अचरज ना माने के चाहीं। काहें कि बिहिया के 'महथिन दाई' के क आदिमी बा जे असली रूप में जानेला कि ऊ ब्राह्मण महिला मोहिनी रही, जे अपना सत्त के इच्छा में जरि मुअल रही। का नीमन होइत कि हमनी का अपना सरकार के तकाइ के दावाँ के ओह असथान प देवा-

---

[1] हमरा एम० ए० वाला शोध-प्रबंध में फटल वंश वृक्ष मिलला के आधार पर बाप के नाम गलत लिखाइल बा आ ऊहे गलती 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' में भी छपा गइल बा।

राम-स्मारक आजु खड़ा क दिहितीं जा।

बाबा के गुरू स्वामी नृपति दास जी रहीं। उहाँ का सारन जिला के खोड़ी पाकड़ गाँव-महरौरा एन० ई० आर० स्टेशन से दू माइल पूरब बा—के रहे वाला रहीं। कहाउति के मोताबिक देवाराम आ कवलपट्टी के रामेश्वर दास गुरू भाइये रहीं सभे। रामेश्वर दास के गुरू के नाँव खाली पूर्णानन्द स्वामी गलत बतावल गइल बा। असल में नृपति दास आ पूर्णानन्द एकही अदिमी कें नाँव ह, काहेंकि देवाराम के कईगो पदन्ह में एकर प्रमान मिलत बा। जइसे—

'श्रीगुरू नृपति पूरनानन्द,
संसय सकल कियो जिन मंद।'
'देवाराम भेद सोइ पावे,
जाके गुरु होय पूर।'
'श्री गुरू नृपति पुरा,
जिन कियो भव भय दुरा।'
'श्री गुरू नृपति हैं गुरू,
पूरन हरि के नाम अपार।

एह तरह से 'पूर्णानन्द' 'पूर' 'पुरा' 'पूरन' जेकरा खातिर आइल बा, हो सकेला कि ई ओह संत के उपनाँव होखे।

देवाराम बाबा के लिखल कुल्हिये पद-पुस्तक त आजु नाहिंये मिलि सकल बा, नु मिलवे करी। काहें कि करजा-धर्मशाला प से – जहँवा बाबा के समाधि बनल बा आ ओही प सग रचना बान्हि-छान्हि के, केहू का पढ़े छपावे का डरे, रखल रहत रहे, एगो बउराह उठा के गुदुनी-गुदुनी क के, नदी में फेंकि दिहलस। आजु लगभग दू सइ फुटकर पद आ दू गो पूरा किताब (रामाष्टक आ चौंतीसा) खाली मिलि पावल बा। एही डेढ़ हजार डाँड़ि प देवाराम बाबा के साहित्यिक अध्ययन कइल जा सकेला।

देवाराम बाबा एगो संत कवि रहीं, बाकिर अउरी संतन्ह लोग अइसन इहाँ में खिंचाव-तनाव ना रहे। कबीर के बाद, उन्हुका प्रतिक्रिया में नाना-पंथ जहाँ एक ओरि चलल उहँवे कुछ-कुछ समझदार संत लोग समझौतो के रास्ता अपनावल। देवाराम एही-दूसरका राह के कवि बानीं। एही से संत-साहित्य में मिले वाली कुल्हिये खूबी इहाँ में मिली, बाकिर कुछ सुधार के साथ। आ इहे 'कुछ सुधार के साथ' देवाराम बाबा के, संत कविन्ह में एगो अलगे असथान दिआवे में कामयाब बा।

बाबा गुरू-महिमा के बरनन खूबे कइले बानीं, बाकिर निरगुन कविलोग

निहन ना गुरू के भगवाने मनले बानीं आ नू भगवान के बरोबरे बतवले बानीं। इहाँ के 'खोजत-खोजत भइले अनेख' के अवस्था में 'सतगुर दिहले परम उदेस' के सौभाग्य मिलल रहे। गुरू-मंत्र के रूप में मिलल 'राम-नाम' के बाबा दासरथी राम आ निरगुनिया राम दूनो से अलगा क के अपनवलीं। बाबा के गुरू बरनन अउरी कविन्ह निहन वस्तुनिष्ठ ना, आत्मनिष्ठ आधार प भइल बा। एक आध जगहि प सामान्य-सिद्धान्तो के बात मिली, जवना में कबीर के ना मीरा के सुर अधिका सुनाई। जइसे—

'बारम्बार कहो कर जोरि-
बिना गुरूदेव न तोर उबारा।'
'भवसागर एह परम भयावन
जम्हु डाले गर डोरी।'
'सतगुरू होय तो भेद बतावे,
सुरति निरति के छोरी॥'

देवाराम के गुरूपरक पदन्ह में हियरा के साँच अनुभूति साफ लउकी आ तब बुझाई कि सिद्धान्त बकल एगो दोसर चीजु ह आ ओह के अपना में पचा के 'आपन कहल' दोसर।

देवाराम भगवान के निरगुन-सगुन रूप के पचरा में नइखीं परल। भगवान का ना हवे कि उनुका खातिर कठघरा बनावल जाउ—इहे देवाराम के दलील बा। एह से इहाँ के 'हरि के हजार नाँव' में बिसवास कइले बानीं। तबो 'राम-नाम' ढेर पिआर बा काहें कि—

हमारे गुरू राम-नाम ही दिया,
हिया में ताही को गहि लिया।

'इहाँ का अवतारी रामो से आपन कवनो बिरोध परगट नइखीं कइले। 'रामाष्टक' में राम के रूप-गुन-किरिया के भी बरनन भइल बा। कवि के साफ कहनाम बा कि—

रे मन सुमिर कर्त्ता राम,
जेहि ते होत पूरन काम।

बाकिर ओह राम के रूप सगरो फइलल बा—

है सब में सबहीं ते न्यारे
रहत सकल घट माँई।
जइसे अकास सबहिं के भीतर
सब अकास में होई।

आ ओह राम के रूप, असल में, कइसन ह, एमें कवि के एगो अपने विचार बा—

पूरन ब्रह्म प्रान को जानो
निश्चय करि के ज्ञान।
पसु पंछी जल थल नभ
माही एकाकार समान।

एकरा अलावा, बाबा 'अक्षर-ब्रह्म', 'शब्द' आ 'नाद ब्रह्म' के भी मनले बानीं। ई सभ कुछ भइला प भी इहाँ

के एकेश्वरवादिये कहल जाई—

देवाराम हरि चरित अगम है
गावत हरिजन रसिया।
एके ब्रह्म सब जगत नचावत
दारु जोसित की भँतिया।

बाबा हरि-नाम-महातम पर भी जोर देले बानीं। राम नाम से बढ़ि के हीरा दोसर नइखे। एह नाम-जाप, अजपा-जाप दूनो के महातम के इहाँ का मनले बानी। नाम-अमृत के पिआवे वाला तत्त्व संत आ सत्संग ह, ई बतावत बाबा कतो अघात नइखीं। उहाँ का साफ कहले बानीं—

करु संगति साधु सयाना के।
करिये न खेती परिये न फंदा
फिकिर नहीं तलबाना के।

"सत्संग जिसे सुधरी मति मोरी" कहि के बाबा एह सत्संग-महातम पर अपना अनुभव के मोहरो लगा देले बानी। असल में, महान के हो सकेला, बाबा ई जानत रहीं—

उदवन्त सोई, कुलवन्त सोई,
सिलवन्त सोई, जेहि साधु के चेरा।

देवाराम के पदन्ह में शरीरस्थ सत्संग के बरनन भी आइल बा। ई ठीक से जानि गइला प बाहरी ढकोसला के कवनो जरूरत ना होखे।

देवाराम बाबा भक्त भी रहीं। एह दृष्टि से इहाँ का सगुनिया लोग के नजदीकाह परबि। ए से भजन भाव के चरचा इहाँ का खूबे कइले बानीं—

देवाराम रघुनाथ भजन करु
तजु ममता मद मतसर खानी।
लोक सुजस परलोक होत सुख
आगम निगम पुरान बखानी।

"का रे कहों किछु कहतो ना बनता" वाला पद में बाबा 'दुसह दुख' के कारनो भजन भाव के कमिये बतवले बानीं। इहाँ में 'नवधा-भक्ति' के तत्त्व आसानी से घुलल-मिलल पावल जा सकेला। दोसरा ओरि, निरगुनी-संतन्ह अइसन विरह भी देखे के मिलता। सभ मिला के एहू पहलू प बाबा कबीर आ तुलसी के बीच से गुजरत नजर आवतानी।

बाबा बाहरी ढकोसला के खूलि के निंदा कइले बानी। किताब-ग्यान, तीरथ-ब्रत जात-पाँत, भेस-भूसा, धर्म-विवाद आ करमकांड सभके खिल्ली उड़ावे में बाबा केहू से पाछा नइखीं। बाकिर तबो इहाँ के चुटकी कतो बेलगाम गारी नइखे भइलि।

बाबा गिरहत जोगी रहीं। इहाँ के रचना में जोग के सांगोपांग बरनन मिली। अष्टांग-जोग के सभ रूपन्हि के प्रतिपादन खोजला प इहाँ के पदन्ह में मिलल तनिको कठिन नइखे। तबो

जोग के कवनो प्रचलित कठघरा में इहाँ के बान्हल ना आसाने बा आनू ठीके कहाई। इहाँ का जोग में भगति आ भगति में जोग के समर्थक रहीं।

लोक-जीवन से बाबा का गहरा मोह आ लगाव रहे, जवना से इहाँ के रचना में होली, चैता, सोहर, जेंवनार, बारहमासा, आ चौमासा सभ भरल पूरल बा। आजुओ लोग इहाँ के अइसन रचना समय-समय प खूब लगन आ चाव से गावेला।

देवाराम बाबा के भाषा मुख्य रूप से भोजपुरी बा। अइसे कतो-कतो सत्संगी होखे से, अवधी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली आ राजस्थानियो के छाप मिलल जरूरिये बा। निरगुनी-संतन्ह निहन प्रतीक-जोजना भी इहाँ में खूब आइल बा। एह दिशा में लोक-जीवन आ साहित्य दूनो से मसाला लिहल गइल बा, बाकिर अधिकाई पहिलके के बा। पदन्ह में अलंकारन्हों के दरसन असानिये से पा के, ई कहे के परता कि बाबा के रचना प संत साहित्य के मोहर लगा के इचिको असाहित्यिक ना करारल जा सके। सभ गुन आ सब रस भरल बा इहाँ के पदन्हि में, बाकिर प्रधानता शान्ते रस के बा।

बाबा दरियादास आ रामेश्वरदास के समउरिया रहीं। रामेश्वर बाबा से संबंध त पिछहीं बतावल गइल बा-दरियो से इहाँ का मुठभेंड़ भइल रहे। लोक-प्रसिद्ध कहाउति बा कि —

देवा दरिया भई लड़ाई,
तुरुक मुरत के जान बचाई।

× × ×

देवा दरिया एके;
समुझ-समुझ के लेखे।

बाकी दूनो लोग से संबंध के भीतरिया कवनो सबूत नइखे पावल जात। तवो कहाउति के झुठावे के कारने कवन बा?

बाबा अपना जुग-जबाना के समन्वयवादी संत कवि रहीं—ई बात कई बेरि ऊपर कहा गइल बा। दर असल बातो इहे बा। इहाँ के राम अनन्त उपाधीवाला बाड़े, संगही उपाधीहीनता उनुकर एगो गुन बा। बाबा एके साथ निरगुनिया-संत आ वैष्णव भक्त दूनो बानीं। संतन्ह के कुल्हिये गुन होखलो प इहाँ का गरिआवे नइखीं जनले। केहू के बुरा-भला बात के आलोचना ना कइके बाबा अपने बात ढेर कहले बानीं। संतन्ह अइसन रहता रोकि के जबरन कुछु कहि सुनावे के उतावलापन इहाँ में हइये नइखे। अपना उतावलापन में हिन्दी के संत कवि अतना बहि गइल बाड़े

(बाकी १९ पन्ना पर देखीं)

नया संस्कार

मधुकर सिंह

कच्चा देवाल प सटल जोड़ा बैल के पोस्टर भनुआ उखाड़े लागल। भगत के नजर ओने उठल त हँसी छूट गइल। भनुआ के माई रोज गोबरिआवे खातिर बएखराइल रहे, बाकिर भगते मना कर देस। सुबहा रहे, कहीं ठाकुर ई ना बूझस जे भगत का कवनो बिरोध बा। बैलन के नाद प बान्ह देलन, चुपके से जाके भनुआ के चटाक दे मरले। 'सरऊ, तू गांव में ना रहे देब का ?'

भगत ओकर हाथ से पोस्टर छीन के फेनु चिपकावे लगलन। पोस्टर नोनी लागल देवाल पर ठहरबे ना करे। कसहूँ अँटका देलन। सीढ़ी लगाके, जहाँ भनुआ के बापो ना पहुंच सकस। अचके भगत देखलन, मोट-मोट अक्षर में छापल ठाकुर साहेब के नाँव भनुआ के हाथ में रह गइल रहे। भगत मसमसा गइलन। करेज में अफसोस घुस गइल। मेहरि खाये के देबे लागल त छिपा ठेल देलन, 'रहे द, भनुआ के मतारी, तनी ठाकुर किहाँ से भइल आईं'।'

'का भईल ?' मेहरि लोटा के पानी ले ले जहाँ खड़ा रहे, खड़े रह गइल।

'भनुआ हरामी ह हरामी। तनिको देह में डर नखइस।'

'निकहा जोंक लेखा त सटले बा। का ह, लइका तनी भ छू देलस त ?'

भगत पितपिता के उठलन। बैल पींड़ी खातिर नाद प टुकुर-टुकुर ताकते रह गइलन स।

अचके दुआर प देख के ठाकुर का अचम्भा भइल। 'का हो भगत, कने चलल हा' ?

भगत के बुझाइल जे कोई चेंटी पर जोर से मुका मरले होखे। चट दे भनुआ के हाथ से छिनल ठाकुर के नांव लोल गइलन।

'तबीयत बा कि समूचे देवाल के जोड़ा बैलन से भर दीं'।

ठाकुर ठठा के हँसले।

ब्लॉक का मदद से ठाकुर आपन परती जमीन में अहरा बन्हवावत रहन। भगत का ओकरा खातिर कवनो चाव ना रहे। साले भ पहिले ऊ गैरमजरुआ जमीन रहे। ठाकुर सर्किल इन्सपेक्टर के कुछ दे ले के अपना नांवे टँकवा लेलन। भगत के घर-दुआर भा खरिहान ऊहे रहे। अब कुल्हि अनाज खेते में रहेला। जेकरा मन में आइल उठा के ले

जाला। भनुआ के मतारी से त ऊ इहाँ ले कहस, 'काहो, ठाकुर के ढाठी देवेवाला कवनो नइखे?'

भगत के इआद परल त थरथराये लगलन। कवनो ठाकुर से कह मत देले होखे। घरी-घरी जीभ दाँत से काटत रहस।

'राघो हमरा खिलाफ खाड़ा बा, जान ताड़ नू? ठाकुर पुछलन।

'परसों हमरो किहाँ आइल रहे', भगत पूरा पलहथी लगा के मुसकइलन। 'हम त साफे कह देंली, जोड़ा बैल त जोड़े बैल सही। ठाकुर हरनाम सिंह के धोखा दिहल खनदानी काम ना ह'।

'शहर से कुछ बड़का लोग आइल रहन। जबरन जोड़ा बैल गरे मढ़ गइलन', ठाकुर कहलन।

'हम पहिला आदमी हईं, रघुआ के समझवलीं कि एकाध पुस्त बीते दे त मुखिया बनिहे। अभी नान्ह-चार के जबाना नइखे। अभी ई सब कानून के किताब से बहरिआइल नइखे'। भगत के करेजा धक-धक करत रहे।

'सर्वे सीवाने आ गइल। अब मजा चखाइब।'

भगत काँप गइलन। हमनी के लाज त सरकारे के हाथे बा। सर्वे के लूट से बचाईं। जोड़ा बैल के कसम खात बानीं।'

भगत के आँखि में पानी आ गइल। बाकिर एतुना बड़ गड़हा रहे जे ठाकुर का बुझाइल ना।

'तोहरा प भरोसा बा।'

भगत के उत्साह बढ़ल। बोललन, 'सइ पचास जोड़ा बैल दे दीं। आपन गली सजावल चाहतानीं। राघो के ओह गली, से आइल-गइल दुलम्ह कर देब।'

'राघो मुखिया हो जास त का बने बिगड़े के बा? बी० डी० ओ० हमरे कहल नू करिहें?'

'हमार महल्ला त ठीक बा,' भगत काफी बेचैनी देखवलन। भगत पचास जोड़ा बैल काँख त दबा लेलन। घर चहुंपते मेहरि के भिड़ा के देवाल पर जोड़ा बैल चपकावे लगलन। घंटे भर में महल्ला भर के लइका-मेहरारू से गली ठकच गइल। लइका अपने जोड़ा बैल के जयजयकार मनावे लगलन स। भनुआ ओकनी के मेंठ बन गइल रहे।

गांव में सर्वे आ गइल। दही, दूध, अनाज आ सब्जी से सर्वे-कैंप के कोना-कोना जगजगाए लागल। भगत का पासे एगो पाठी रहे। लगले गभिआइल रहे। अपना नन्हका के दावा-बीरो खातिर किनले रहन।

लइका बराबर रोगिआइल रहत रहे। ठाकुर ऊ पठिआ मँगा लेलन आ सर्वे के बाबू लोगिन के खूब धूम-धाम से ठाकुर के दुआर प पाटी दिआइल।

ओह दिन सँउसे गाँव एकट्ठा रहे। बाबू लोग बड़ा पसन से पारन करे खातिर बइठल रहे। ओह लोग के गाँव के लोग दलिद्दर लेखा घेरले रहे। ओही घरी मुखिया एलान कइलन, 'चुनाव में दसे दिन रह गइल बा। केकरा के मुखिया चुन ताड़ जा? खंखार के कह द लोग।'

सर्वे के बाबू लोग खाये में बाझल रहे। भगत अकुला के इन्तजार करत रहस। उनका भरोसा रहे जे लोग गला फाड़-फाड़ के ठाकुर खातिर चिल्लायी। उनकर साँप-छूछूनर के हालत रहे। सभे काठ लेखा सर्वे दल के मुँह ताकत रहे।

सर्वे दल गँवई लोगिन के नासमझी प भीतरे-भीतरे हँसत रहे। एक जाना कहलन, 'राँवा सभे बोलत काहे नइखीं? कठेआ काहे मार देलस? ठाकुर साहेब में कवन कमी बा? इहें का राउर भलाई करब।'

गाँव केएक-एक अदमी के बुझाइल जे आपन-आपन मुँह में नया जीभ जामल बा आ ऊ हिल रहल बा। कुछ लोग नरेटी खोल के चिल्लाइल, 'हम बैल छाप के बोट देब। ठाकुर हरनाम सिंह जिन्दाबाद।'

बिहान भइला से गली, खेत, बधार-सगरो ठाकुर साहेब के चर्चा रहल। भगत अघइले ना अघास। कहस, 'देखतानीं नूं जे केकर माई साँड़ बिआइल बिआ कि सर्वे दल से गाँव के रक्षा करेला? रावां ई काम कर देस तब नूं जानीं?'

समहुत में दू दिन रह गइल। ठाकुर घरे-घरे घूम के कहत चलस, होशियार रहिह जा, सर्वे चहुंप गइल बा। लोग जोड़ा बैल माँग-माँग के अपना घर प चिपकावे लागल। ठाकुर के दुआर प रोज कीर्त्तन होखे लागल। फजीर होते पढुआ नवही टोली बान्ह के निकल जास आ ठाकुर खातिर बोट माँगसु। बाग-बगइचा सगरे जोड़ा बैल लउकत रहे। कार्यकर्त्ता लोगिन खातिर एक मन अनाज उगाहि के रखा गइल। गीत बना-बना के ठाकुर खातिर गवाये लागल।

समहुत के दिन रात खानी खा-पी के सभकर ठाकुर के दुआर प बोलहटा रहे। तुलसी-तामा लेके कुछ किरिया खाये के रहे। ओह में भगतो एगो रहन।

किरिन डूबते भगत समहुत करे खातिर घर से निकललन। अपने

हाथ में पूजा के समान ले ले रहलु । भनुआ कपार प अँगौछा रखले बैलन के पगहा पकड़ले रहे ।

कई दिन बाद बैल घर से बहिराइल रहन स । गली-मकान में नया-नया चेहरा देखते बिजुके लगलन स । जोड़ा बैल के लाल-पिअर पोस्टर देखते बैल कूदे लगलन स । भनुआ से सम्भार भइल बाड़ा मुस्किल रहे । भगत के कठमुरकी लाग गइल । पोस्टर के बैल बुझास जे पगहा छोड़ा के भागल जात होख स । एगो बैल भनुआ के एक ढाही मरलस आ परा चलल । भगत का मुँह से तुरते निकल, 'असगुन होई का ए राम ।'

दोसरका बैला उँहा से बढ़बे ना करे । भनुआ के हाथ से पैना लेके भगत लगलन धूने । बैल से सहाइल ना आ उहो लुत्ती अस भाग चलल । खीसी भगत भनुओ के चमेटे-चमेटे धुन देलन ।

खेतो प बैल ना रहन स । भगत के मिजाज बड़ा दुखित भइल । आरी प थरिया-लोटा रख देलन । क्रोध आ आँसू दूनो संगे-संगे चले लागल । चारों तरफ घुचघुच अन्हरिया । बगइचा में जाके एगो बैल पकड़ाइल । भगत नाथ में पगहा लपेट के घसेटे लगलन । बैल हफर-हफर हाँफत रहे । समहुत के बखत बीत गइल । कसहूँ थरिया अन्हार में टकटोरलन ।

गली का मोड़ प आवते बैल फेर चिहुँकल । बाकिर भगत सम्भार के धइले रहस । गली में सगरो कारिख पोताइल रहे । देवार प कुछो नजर ना आइल । कसहूँ घींच-घांच के बैल बान्हत रहले, तब ले दोसरको के मेहरि कतहीं से पकड़ि ले आइलि ।

ओह रात भगत का घरे खान-पान ना भइल । नया साल के शुरू में सगुन खराब हो गइल । मेहरि अलगे रोवत रहे, जइसे बेटा मरल होखे । भगत टोअत-टोअत भनुआ के गोदी में उठा लेलन । दिया-बत्ती करेके केकरो सहूर ना रहे ।

ठाकुर के दुआर से कोई बोलावे आइल रहे । मेहरि बगले में ठाढ़ रहे । भनुआ से कहलन, 'जा कह द, बाबू के मिजाज ठीक नइखे । आज ना आ सकस' ।

'ठाकुर बिगड़े लगिहें, ए भगत ! जल्दीकर !' बाहर से बोली सुनाइल।

'केहू ठकुरबा के ढठिआवे वाला नइखे का' ? भगत दाँत पीसत बाहर

निकलल न, 'जाके कह दीह, उनकर जोड़ा बैल हमार नया साल के सगुन चर गइल। घरे हहकार मचल बा।'

अनमुनाहे भगत अपना देवाल से जोड़ा बैल नोंच-नोंच के फेंके लगलन। पीछे से मनुआ के मतारी नोनी लागल देवाल गोबरिअवले जात रहे।

—धरहरा, आरा।

* * *

(पृष्ठ १४ से आगे)

कि ओ लोग में ठहरि के सोचे के आदते नइखे। एही बेकली में ऊ लोग नारी निंदा आ अवतार-खंडन तक क देले बा। बाबा से अइसन गलती नइखे भइल। इहाँ में अवतार के खंडन क के आपन पंथ चलावे आ खुदे भगवान बनि के पुजाये के ना त चाहे बा आ नु खुद 'राम के बहुरिया' बनि के अउरी बहुरियन्हि के गरिआवे के नादानिये देखे के मिली। बाबा आस्तिक आ नास्तिक दूनो के बीच डँड़ार पर खड़ा बानीं। एक ओरि हरि में अटूट बिसवास बा। दोसरा ओरि चार्वाक के सुर में सुरो मिलावत लउकत बानी। इहाँ के इहे सिद्धान्त बा—

चाहे घूसि रहो गह्वर में
चाहे पर्वत वन विहरो।
हरि से साँच रहो अभिअन्तर,
गृह में बैठ के मौज करो॥

बाबा एके संगे हरि-सुख आ घर के मौज दूनो के दूनो हाथन्हि से लूटे वाला रहीं। एह तरह के कवि हिन्दी के संत साहित्य में केहू ना मिली। भोजपुरी के सौभाग्य बा कि एकरा कोखी में देवाराम अइसन एगो अकेला कवि मिलल बा, जेकरा सुर में कबीर तुलसी के मिलल आवाज सहजे सुनाता।

महाराजा कॉलेज, आरा।

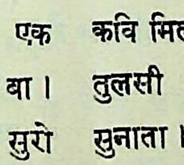

चारि गो कविता—

गली

वेदनन्दन

ई गली के नुक्कड़ पर
छूट गइल रहे
एगो चेहरा
जे आजु तक ना लौटल
बनजारा हो गइल
अब ना गली चेहरा के चीन्हे
ना चेहरा गली के
ई गली रोज भोरहरिहे
किरिया खाले
कि आँख ना मूँदब
बाकी भर दिन—
बुदबुदाते रहेले
कनमनाते रहेले
आ साँझी खा कलेले
बन्द साँस
जे में कवनो जनमतुआ सवाल
ना चिहुँके
सउरिए में कतना लइका के
छू देला जम्हुआ
आ बिना चेहरा के लोग
रात भर
पढ़त रहेला।
पढ़त रहेला
बासी अखबार
बाकी बनजारा चेहरा ना लौटे
आ गली फेन कसम खायेके
करे ले तेयारी
ई गली के नुक्कड़ पर……
छूट गइल रहे एगो चेहरा
जे आजु तक ना लौटल
बनजारा हो गइल०

— सचिवालय, पटना।

रूप के धूप

उर्मिला जैन

अतना भरल चहेरनि में
लुत्ती लेखा
रुप के धूप मधुमाछी अस
बीन्हि दिहलसि गतर-गतर,
कनखी के हंसुआ
करेज खंखोर लेता
हमरा कपार पर
प्रेम के जम्हुआ मेंड़राता
आजु भा काल्हू
अइसन डँसी
कि पानी पिये के होस ना रही,
कचहरी. मेला, बजार, सब जगह
खउराइल कुकुर लेखा घूमे के परी
ई पीर के हरी।

— विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

गीत

संतोषकुमार मिश्र 'गोपाल'

सूरज से ना मिलल प्यार, हम पवलीं प्यार अन्हारी से ।
अब तक केहू लवटल नइखे, हमरा एह दुआरी से ।।
सावन के हम इन्द्र हईं
आ चंचल चन्दा भादव के;
हम दधीचि के सूखल हड्डी
मौन त्याग ऊ राघव के ;
कवच काट के दान दिहीला, अपने ई तरुवारी से ।
खेतन से हम अन्न उगाईं
माटी से सोना उगलाईं
सब के सब कुछ दे दे करके
सूखल-साखल हम सब खाईं ;
मत कतराईं, दूर हटीं मत ई दरिद्र अवतारी से ।
कतनों दूर रहबि हमरा से
परछाहीं त साथ रही,
रउरा पर विपदा जब आई
हमरे पहिले माथ रही ।
बचन निभावे खातिर काटीं, अपनो बेटा आरी से ।

—महाजनटोली, आरा ।

बिरहा

चितरंजन

कोमल कंवल दल काहे कुम्हिलाई गइलो,
काहें बाड़ु अतना अधीर;
माया के मिरिगवा से नेहिया लगवल त
अब काहे ढरे आँखि नीर।

× × ×

मोतिया बेसाहे गइल मेलवा बजरवा में,
अपने गइल तू हेराय।
मुट्ठी भर रेत प मगन होई गइल,
दिहल रतनवाँ लुटाय।

× × ×

भूलि गइल पंडित गेआनी के बचनियाँ
कि हवे बटमार के ई देस।
अचके में डँसि जाले कारी रे नगिनियाँ त,
धइके जोगिनियाँ के भेस।

× × ×

भोली रे सुरतिया आ मधुरी बचनियाँ प,
बनि जाले लाख गो इआर।
बीचे रे डगरिया, अन्हरिया में चुपके से,
पीठिए में मारेले कटार॥

—जनशक्ति पटना।

नई कविता में भाव-बोध

रमेश तिवारी

नई कविता के आधार स्थूल ना सूक्ष्म बाटे। ई अनुभूतिमय होत बिया—बौद्धिकता के गहन परत से बँधल। ओकरा अंदर प्रतीके-प्रतीक देखे में आवत बाटे। एही से साधारण पाठक खातिर ओकर रूप कुछ कठिन आ अबूझ होत बा आ ऊ एगो पहेली नियन बुझात बिया। नयी कविता जतना हद्तक दुर्बोध बा ओह हद तक ऊ जरूर प्रशंसनीय ना मानल जा सके। बाकिर रसाश्रयी भाव-संपत्ति के जरूरी माने वाली समीक्षा-दृष्टि भी एकांगीए मानल जाई आ नई कविता के मूल्य नापे खातिर ओकरा के कसौटी-रूप में स्वीकार ना कइल जा सकेला।

नई कविता पर आज जवन सब से बड़ दोष मढ़ल जा रहल बा ऊ बा अस्पष्टता के। नई कविता में अतिशय बौद्धिकता, सांकेतिकता, नई दृष्टि, बिम्ब-प्रयोग और एकदम नया भाषा के प्रयोग के कारण ई कठिनाई उपस्थित होत बाटे। एकर संप्रेषण साधारण पाठक तक नइखे हो सकत। बाकिर स्वस्थ चिंतन के आधार पर ई कहल जा सकेला कि एह अस्पष्टता के जिम्मेवारी आज के कवियन्ह प ओतना नइखे जतना कि तत्कालीन परिस्थिति प बा। आज नई कविता में संप्रेषण के कठिनाई एह से बड़ुए कि जइसन तरख आ गहन असामंजस्य आधुनिक रचनाकार आ ओकरा समकालीन परिस्थिति में बा, पहिले सायद कबहूँ ना रहे। आज के बारे में एह स्थिति के व्याख्या करत खानी अज्ञेय जी लिख रहल बानी—‘‘इस विरोध के दबाव की कवि के मन पर गहरी छाप है। इतनी गहरी कि वह उसे सीधे-सीधे व्यक्त भी नहीं कर पाता, केवल ध्वनित करता है, केवल एक संकेत देता है जिससे हम आगे बढ़कर देख सकें।’’[1] अर्थात् सांकेतिकता के प्रयोग साभिप्राय होखहीं के बा, ऊ (सांकेतिकता) अर्थहीन होखे, कतहूँ कवनो संदर्भ

---

[1] आत्मनेपद, अज्ञेय, पृष्ठ २८।

या अर्थ के ओर ना ले जात होखे त व्यर्थ बाटे आ कवनो दोसर कौशल भा चमत्कार ओकरा व्यर्थता के छिपा ना सकेला। दोसरा शब्द में ई कहल जाउ कि कृतिकार का शब्द आ सत्य (ऊ एक दोसरा से चाहे जतना तनल रहत होखे) के एकता के प्रमाण अपना रचना में देखहीं के बाटे--

"कवि जो होंगे हों,
जो कुछ करते हैं करें
प्रयोजन मेरा बस इतना है—
ये दोनों जो
सदा एक-दूसरे से तनकर रहते हैं
कब कैसे, किस आलोक-स्फुरण में
इन्हें मिला दूँ—
दोनों जो हैं बन्धु, सखा,
चिर सहचर मेरे।"[1]

आज के साहित्यिक समस्या के अध्ययन करे में हमनी का पहिले ओह तनाव से परिचित होत बानी जा जवन अधिकांश कृतिकार के चेतना पर हर समय एह रूप में बनल रहत बाटे कि व्यंजना के पुरान साधन पर्याप्त नइखे। एह रचनात्मक असंतोष से प्रेरित होके आज के कृतिकार अभिव्यक्ति के नया से नया माध्यम निकालत रहल बा। नयां उपमा, विम्ब-प्रतीक के साधारण पाठक प्रायः चौंक के देख रहल बा, आ कबहूँ-कबहूँ अनुभव करत बा कि कृतिकार के अभिप्रेत अर्थ पावल कठिन बाटे। आ ई कि अब रचना के साधारणीकरण संभव ना रहल। जे साधारणीकरण के रचना के सफलता के आधार मानत बा ऊ कृतिकार के अनुभूति के कृति के पहिले के पाठ में ग्रहण कर लेवे के चाहत बा, आ अइसन ना भइला पर निराश होत बा। जब शमशेर जी अपना "शाम" कविता में लिखत बानीं--

"नीबू का नमकीन-सा शरबत, शाम
(गहरा, नमकीन) ..
प्राचीन ईसाई चीजों-सी कुछ
राजपुताने-से बहुत कुछ
गहरी सोन - चम्पई
सोन गरिमा शाम।
..... शान्त।"[2]

तब साधारण पाठक खातिर एगो नये कठिनाई उपजत बा। एगो त ऊ अपरिचित, दोसरे ऊपर से देखला पर एक-दोसरा से एकदम टूटल कल्पना के सहज आ पुनः रूपान्तर ओकरा मन में संभव नइखे

---

[1] अरी ओ करुणा प्रभामय—अज्ञेय, पृष्ठ १९।

[2] कविताएँ : ५८—संपादक चन्द्रदेव सिंह।

हो पावत। बाकिर ई कठिनाई रहलो पर शमशेर आ उनका बाद के कवि 'शामे' के कल्पना अवरू नया आ असंबद्ध रूप में करत बा लोग, आ धीरे-धीरे पाठक के रचना के गहरा अर्थ के प्रति पर्युत्सुक बनावत बा लोग, आ ओकरा संवेदन-क्षमता के तीव्र करत बा लोग। एह तरह से रचना के विकास में धीरे-धीरे ई कठिनाई हल हो जात बिया। जवना पाठक खातिर कवि संध्या के हई चित्र खिंचले रहे,

"दिवस का अवसान समीप था,
गगन था कुछ लोहित हो चला ”

त ओकरा तबहीं कठिनाई भइल रहे जब निराला जी लिखले,

"अलसता की सी लता
किन्तु कोमलता की वह कली।
सखी नीरवता के कंधेपर डाले बाँह
छाँह-सी अम्बर-पथ से चली।"

एकरा से ई स्पष्ट हो जात बा कि "जब कृतिकार अपने नये भाव-बोध के अनुसार भाषा की क्रमशः संकुचित होती हुई सार्थकता की केंचुल फाड़कर उसमें नया, अधिक व्यापक और अधिक सारगर्भित अर्थ भरना चाहता है,"[१] त ई कठिनाई पाठक के सम्मुख आ जाले। प्रसाद, पंत, निराला सब लोग ई कठिनाई पाठक खातिर पैदा कइले बा लोग। आज के कवि लोग ओकरा में कुछ अवरू बढंती कर देले बा लोग, काँहे कि ओह लोग का सामने खाली भेष के बदले, नया बनावे के प्रश्न नइखे। ऊ लोग का त अनुभव आ अभिव्यक्ति अर्थात् वस्तु आ भाषा के बीच के सभ प्रक्रिये बदले के परल बाटे। इहे कारन बा कि केदारनाथ सिह बिम्ब के उपयोग करत बाड़े त बौद्धिक धरातल पर समकालीन परिस्थिति के जटिल वास्तविकता, ओकरा संक्रमण-संघर्ष के एगो ठोस, स्पष्ट आ बेलाग अर्थ देवे खातिर—

"एक लकीर
पृथ्वी के सारे अक्षांशों से होती हुई
जहाँ
सौर मण्डल के पास
खो जाती है
वहाँ मैं खड़ा हूँ।"[२]

केदारनाथ सिंह आगे लिखत बानीं, "बिम्ब अधिक से अधिक कवि के रागात्मक अनुबंधों पर आधारित होने के कारण अपने साथ एक व्यापक संदर्भ लिए होता है।

---

[१] प्रयोग और प्रेषणीयता : आत्मनेपद-अज्ञेय, पृष्ठ ३६–३७।

[२] पिकनिक से लौटते हुए—कल्पना-मार्च, ६१, पृष्ठ ६४।

उसके तल तक पहुँचने के लिए उस संदर्भ का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है।"[1] एकरे के स्पष्ट करत खानी अज्ञेय जी संकेत कइले बानीं कि "बिम्ब के पीछे सत्य का आत्यंतिक मूल्य एक बात है, उसकी संबंधकारकता, उसकी तदर्थ प्रेषकता दूसरी बात है।"[2] आ एह तरह से रचना में अपेक्षित संदर्भ-ज्ञान (समकालीन यथार्थ से परिचय) के बिना संप्रेषणीयता संभव नइखे रहि गइल।

"फूल जैसे अंधेरे में चीखता हो
इस तरह वह दरपनों में कौंध
जाता है।"

अनागत के ई उपर्युक्त बोध कृतिकारे के तरह पाठक में सम्यक-दिक-काल-ज्ञान के अपेक्षा राखता। आज के कृतिकार में सर्जनात्मक महत्वाकांक्षा अधिक बाटे। ओकरा कुंवर नारायण के अनुसार, 'वह एप्रोच पसंद है जो किसी भी सत्य को स्वयं में अंत न मान कर उसे अगले सत्य तक पहुँचाने का साधन मानता है।"[3] प्रचलित भा घिसल-रूप, भा ढाँचा (Form) के तूरल नई रचनात्मक प्रक्रिया (Creative Process) के प्राथमिक स्थिति बाटे; अगिली स्थिति बा, ओह कठोर, तीखा, नामहीन यथार्थ के पकड़े के प्रयत्न, जवन पकड़ से बाहर बाटे!

आज हमनीका साहित्य में समाज के यथार्थ चित्र (सत्यचित्र) देखे के चाहत बानी जा, आदर्शात्मक भा भावुकता-पूर्ण चित्र ना। नया कवि जदि आज के समाज के सच्चा यथार्थ के अपना रचना में व्यक्त करत बा त ई संभव नइखे कि ओकरा में प्रभावित करे के क्षमता ना होखे। कवि का कृति में ओकर आत्म-तत्त्व प्रधान रूप से व्यंजित होला जवना के ओकर वैयक्तिक-बोध भा जीवन-दर्शन के नाम देल जाला। हजारी प्रसाद जी द्विवेदी के अनुसार "महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या कवि अपने जीवन-दर्शन को ईमानदारी से अभिव्यक्त कर पाया है? और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि कवि ने जो ईमानदारी से भोगा या जिया है, क्या उससे पाठक को इम्प्रेस कर पा रहा है?" एह बात में अगर कवि का सफलता मिलल बा त कवि के सृजन सार्थक बा। अज्ञेय, केदार नाथ सिंह, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना,

---

१. वक्तव्य : तीसरा सप्तकः केदारनाथ सिंह, पृष्ठ १९८।

२. आत्मनेपद : अज्ञेय, पृष्ठ २३०।

३. वक्तव्य : अज्ञेय : तीसरा सप्तक, पृष्ठ २४८-२४९।

गिरिजा कुमार माथुर, बालकृष्ण राव, कुँवर नारायण के अइसन अनेकों रचना बाड़ी स जवना में आज के मानव के मनःस्थिति, ओकरा जीवन चेतना के सच्चा चित्र देखल जा सकेला, आ जवन पाठक के अभिभूत कर देवे के क्षमता भी राखत बा ।

केदारनाथ सिंह के कविता में प्रतीक के माध्यम से व्यक्ति स्वतंत्रता के मांग कइल गइल बा जवना में कवि बाह्य आरोपित दायित्व के नकार के अपना सार्थक दायित्व के खोज कइल चाहत बा—

"नहर को हक दो—
वह कभी संग पुरवा के
कभी संग पछुआ के
इस तट पर भी आए—
उस तट पर भी जाए।"[१]

श्री कुंवरनारायण सिंह के कविता में छोट शहर के अफवाह आ जल के प्रतीक से व्यक्त आज के मनुष्य के विवशता आ बंधन के सशक्त चित्र देखीं—

"दायरा
फिर दायरे पर दायरा
ये खत्म ही होने न आते दायरे
तालाब भर अफवाह जैसे—
एक छोटे से शहर में
अचरजों
आँखों
बराबर फैलती ही चली जाएँ
एक कंकड़
बंधे जल में
बड़ी घटना"[२]

नई कविता में जीवन के लघु लक्ष्य के अभिव्यक्त करे के सफल प्रयास भइल बा। नया कवि विशिष्ट क्षण के अनुभूति के गहराई के साथ व्यंजित करे पर विशेष जोर देले बाटे।

स्पष्ट बा कि अब ई स्थिति हो गइल बा कि नई कविता के बोध, स्वायत्तीकरण आ प्रेषण के प्रश्न जटिल नइखे रहि गइल। अगर कवि आ कवि से जादे आलोचक खुद समस्या खड़ा कर के ओकरा समाधान खातिर ना दउरे त नई कविता के मूल्यांकन के प्रश्न बहुत पेचीदा नइखे मालूम परत। बाकिर तवहूँ पुरान कविता से भिन्न होखे के वजह से एकरा 'मान' के प्रश्न उहे ना हो सके आ ना अइसन भी हो सकेला जवन पुराना से एकदम अलग आ बेजानल होखे।

—महाराजा कॉलेज, आरा।

---

[१] फल को हक दो : शीर्षक कविता से।

[२] धर्मयुग में प्रकाशित कविता।

बूला बाबा

जगदीश प्रसाद पांडेय

'बूला बाबा' नाम ना ह, ई कवनो सिनेमा के गीत के मजेदार कड़ी ह, जइसे 'मेरा नाम रामू...' आ 'बोल राधा बोल...।' असली नाम उनकर जरूर दोसर होई, बाकी ऊ त गदहा का सींघि नियन गायब हो गइल, आ इहो हो सकेला कि दू-चार गो बूढ़-पुरनिया जानत होखसु। बूला बाबा अगर पैजामा ना हवे त साधारन आदमियो ना हवे। लोहिया अगर भारत के राजनींति के बिटनिक हवे त बूला बाबा भोजपुर के गाँव के बिटनिक हवे। अंगरेज बने के हउसला उनका में खूब ह। कुछ विधाता भी मदद कइले बाड़े—गोर चमड़ी, भूअर आँखि, कमीज बिना कालर के—खाए—पीए में कवनो परहेज ना—गौतम बुद्ध ऊ सुरूए से हवे। मांस, मछली, अंडा—उनका खातिर अभच्छ कुछऊ ना ह। साबुन ऊ लगइहें जरूर—कपड़ो के होखे त हरज नइखे।

पुरुष-समाज अउर खास तौर से अपना उमिर के आदमी से ऊ कम बतिआवेले-बाकी झगड़ा भइला पर पूरा मरदाना लागेले—तलवार के एगो पुरान मियान लेके दउरेले—भलहीं ओकरा के खोलला पर ओह में चोरे झोल मकरा के अलावा कुछऊ ना निकले। अतने ना, ऊ अपना मरदानगी के अउरी सबूत देले। ऊ रेल में काम कइले बाड़े। एह से जतना आदमी रेल दुरघटना में कटले सब उन्हुके फटवावल रहले। बड़ा खतरनाक आदमी बुझाले। इन्हुका बल के हाल त विधाता जानत होइहें, बाकी बात से मजा लड़िका खूब उठावेलेस।

ऊ दोसरा के अनाज पेट बथतो चबावेवाला आदमी त ना हवे, बाकी चबाइ-चबाइ पेट बथवा सकेले। कई बरे कवनो तेवहार के खाइ सकेले। दूध कइओ सेर पी सकेले—भले पेट देर देरि ना राखि सके। एक बेर भादोके राति रहे। अहिरा दूध डेरा पर से घरे ना ले जा सकले स। बड़ा हवा-पानी रहे। बूला बाबा के हँसी खिआली में पिआ दिहले स। उनकर राति खराब हो गइल—तड़के

नहाए के परल, कई दिन कुछउ ना खइले।

झूठ बोलल जेकरा खातिर पाप होई, ओकरा खातिर, बूला बाबा में जीवन के ऊ खूबी ह। उन्हुका लड़िका के तनखाह खाली पचहत्तर रुपया ह, बाकी पूछला पर ओकरा के खाली पंचगुना बढ़ा देले। गंगा जी नहात खा एक बेरि हँसी के ओर ना रहल। दू-तीन दिन उनुका बोखार लागल रहे। लोग पूछल, कइ डिगरी रहल हा। उनका बुझाइल ना। कहि दिहले, इहे दू-तीन सई डिगरी होई। सफाई के नियम उनकर अनमोल हवेस। पैखाना से अइला पर माटी ना छूअसु। बनिकी गोबर से हाथ-लोटा पवित्तर कइलेले। दतुअनि के बिना उनकर काम हमेसा चलि जाला। साबुन से नहात खा दाँत साफ कइलेले—ओह घरी ऊ रेहाना से कम खूबसूरत ना लागसु। भोजन के टाइम उनकर आपन ह—जबे भूखि लागी—रातिओ खा १२-२ बजे उनका गौत मिल जाएके चाहीं। उनका से अउर केहू डेराइ चाहे ना—बेमारी जरूर डेराले। हम अपना होस के २५ बरिस में उनका के बेमार एके-दू बेरि देखले होखबि।

बूला बाबा के चरितर केरा के पतई ह--जतने उघारीं ओतने उघरी। गाँव में रामगती वाला गुरू बाड़े, कानो फूँके वाला--बाकी भोग के सिच्छा के गुरू के कमी उहें के पूरा करीले। अंडा खइला के कौन-कौन फैदा ह—बरांडी दूध में मिला के पिअला से कतना बल-बुधी बढ़ेला, एकर नाप-जोख उनका पास बा। एक माने में ऊ महातमा हवे। तुलसी दास में कौनो बुराई ना रहे एह से कहि दिहले 'मोसम कौन कुटिल खल कामी', बाकी बूला बाबा उनुको से अधिका बड़ाई के पातर बाड़े। ऊ अपना दोसो के—जवन बा-जवन नइखे—खूब परचार करेले। अतने ना छोट-छोट लड़िकन के ऊ बड़ा उपकार एह माने में करेले कि अपना जीवन और गाँव-जवार के कतना बूढ़न के गाड़ल मुरदा उखाड़ि उखाड़ि जीवन-संगराम खातिर तैयार करत रहेले। उन्हनी के ऊ नैतिक-गुरू हवे।

एह सोना में सोहागा नीअन बूला-बाबा के सामाजिक पक्छ ह। अछूतन के अतहत बड़ उधारक हमरा नजरि में केहू नइखे। सबसे अधिका चमइनि उनुके दुआर पर के इनार से पानी खींचेलीस। पानी

त इनार से मिलेला, एहमें उनकर कौन बड़ाई ? ना, उन्हनीं के सेवा ऊ चोटी, बउँखा, ऐनक, ककही से करेले। ई पुनि के काम ऊ ललकारि-ललकारि करेले। जाति के भेद मिटावे वाला अगर सहीदन में उनकर नाम अमिट रही। चमार, मलाह कमकर, अहीर सबन के अपना पलंग पर कुरसी पर बइठा-बइठा सभ्य बनावेले। उन्हनी खातिर ऊ पारस हवे, कौनो दुविधा ना जानसु।

अरे! अबहीं ले सभ कला के बरनन हो गइल, बाकी चनरमा के सीतलता के बरनने ना भइल। बूला बाबा एह बारीकी से गंभीर बनि के कल्पना कइ सकेले कि भूठो लजा जाई। पटना के गरैंड होटल के साइनबोडो ऊ नइखन देखले बाकी भोजन के बरनन—छबीसो परकार के उनुका से सुनि लीहीं। भाग में खाली छोकड़े के नाच रहल बा, बाकी बनारस और पटना के बाई लोगन से अपना भेंट-मुलाकात के ऊ ओतने अभिमान से बड़ाई करेले जतना नारद जी सीलनिधि-कनिया के कइ सकत रहले।

भूगोल में लड़िकन से सवाल पुछाला—अगर हिमालय ना रही त का बुराई होई ? हमहूँ अपना मन से पूछत बानीं—बूला बाबा ना रहिहें त का होई ? जबाबो मन दे देता—ना ई चौकड़ी रही ना सरब जाति सम्मेलन—ना इनार के ऊ भाग। हरिचंद के कहानी निअन हमनीं का बड़ा अफसोस के साथ एह चारबाक के याद करबि जा।

—पाण्डेयपुर, शाहाबाद

संतन के भोजपुरी सेवा

महेश्वर प्रसाद

अगर कबीर से ही हिन्दी-साहित्य के-श्री गणेश मान लिहल जाउ त केहू के कवनो आपत्ति ना होई। कबीर हिन्दी के प्रथम बेजोड़ कवि हवे। उनकर जनम सं० १४५६ वि० मानल जाला। भाषा के सम्बन्ध में ऊ खुद स्वीकार कइले बाड़े—मेरी बोली पूरबी'। अतना त निर्विवाद बा कि कबीर के 'पूरबी बोली' बिहारी ह, बनारस से पूरब के बोली ह। बिहारी बोलिन में ,भोजपुरी' के स्थान हरदम खास रहल। 'भोजपुरी' के बड़ाई में ओकर 'पूरबी' गीत बहुत सहायक बाड़े स। कबीर के 'निरगुन'-खातिर 'पूरबी' छोड़के दोसरा कवनो लय भी नइखे कबीर गवले, अजब मस्ती में गवले,

कवनो ठगवा नगरिया लूटल हो।
चनन काटि के बनल खटोलवा,
ओपर दुलहिन सूतल हो।
उठ ए सखी मोर माँग सँवार,
दुलहा बाड़न रूठल हो॥

कुछ अइसन लागता कि जाने-अनजाने 'भोजपुरी' के सेवा हिन्दी-साहित्य के प्रारम्भें से हो रहल बा। प्रेम के पीर परगट करे में जतना 'भोजपुरी' समर्थ बा ओतना दोसर कवनो उपभाषा नइखे। प्रेम के पीर जगावेवालन में जायसी के स्थान कबीर के बाद आवता। जायसी के जनम सन १४९२ ई० के आसपास मानल जाला। उनकर भाषा ठेठ अवधी ह और ह पूरबी अवधी। भाषा बहुत मीठ बा। ओकरो मिठास में इहाँ-उहाँ सगरे 'भोजपुरी' के मिठास झलकता,

का सिंगार ओहि बरनों राजा।
अहिक सिंगार ओही पर छाजा॥
वेनी छोरि झार जो बारा।
सरग पतार होई अंधियारा॥
बरनों माँग सीस उपराहीं।
सेनुर अबहिं चढ़ा जेहि नाहीं॥
विनु सेंदुर अस जानहुँ दीआ।
… … .. …. ….॥
कहौं लिलार दुइज के जोती।
…. …. …. …. ….॥
रहौं लजाई तो पिउ चलै,
कहौं तो कहमोहि ढीठ।

कहे के अभिप्राय ई कि 'अवधी

के उच्च कोटि के कविता में भी 'भोजपुरी' के सम्यक पुट बा। हिन्दी-साहित्य के कवि-केसरी त अपना 'मानस' जइसन कीर्त्ति-स्तम्भ पर 'भोजपुरी' के आदर पूर्वक अंकले वाड़े। 'भोजपुरी' के कोमल शब्द कुछ त अइसन वाड़े स जवन 'अवधी' के दामन पर बेल-बूटा के काम करे लेस। जइसे 'बर बौराह', 'रउरे' 'राउर', 'बाउर' और,

हमहुँ कहबि अब ठकुर सोहाती।
नाहि त मौन रहब दिन राती॥
कोउ नृप होउ हमहि का हानी।
चेरि छाड़ि अब होब कि रानी॥

गोस्वामी जी के आविर्भाव-काल सं० १५५४ वि० स्वीकार कइल गइल बा। 'मानस' के रचना सं० १६३१ वि० में भइल। 'विनय' के रचना 'मानस' के बाद भइल। 'विनय' के उपसंहार से अइसन निश्चय होता कि गोस्वामी जी के साकेत धाम पधारे के समय कं ऊ अन्तिम रचना ह। 'विनय' में कवि प्रबन्ध के घेरा से एकदमे मुक्त बा। 'विनय' में कवि के गूढ़ व्यथा बा। भोजपुरी' से प्रभावित 'विनय' के सुप्रसिद्ध पद लीहीं—

राम कहत चलु, राम कहत चलु,
राम कहत चलु भाई रे।
नाहिं त, भव, बेगारि में परिबे,
छूटब अति कठिनाई रे॥
बाँस पुरान साज सब अठकठ,
सरल तिकोन खटोला रे।
हमहिं दिहल करि कुटिल करमचंद
मंद मोल बिनु डोला रे॥
विषम कहार मार मद माते
चलहिं न पाउँ बटोरा रे।
मंद बलंद अभेरा दलकन,
पाइय दुख झकझोरा रे॥
काँट कुराय लपेटन लोटन
ठावहिं ठाँव बझाऊ रे।
जस जस चलिय दूरि तस तस
निज बासन भेंट लगाऊ रे॥
मारग अगम संग नहिं संबल
नाँव गाँव कर भूला रे।
तुलसी दास भव त्रास हरहु
अब होहु राम अनुकूला रे॥

एजा 'भोजपुरी' के छींटा पर्याप्त मात्रा में बा। एह छींटन के कारण पद कहे सुने अउर धारण करे में अत्यन्त सहल हो गइल बा। 'भोजपुरी' के विशेषता के कारने ई 'विनय' के पद बहुत लोक-प्रिय बा। 'मंद बलंद ' अरबी-फारसी के शब्द ह। बाकी काँट कुराय लपेटन लोटन भोजपुर के कहार के एक तरह के बोली ह, जवना के असवारी ढोवे के समय ऊ आपस में बोलेलेस।

एही तरह 'भव-बेगार में परबे', 'छूटब', 'बाँस पुरान साज सब अठकठ' 'नाँव गाँव' वोगैरह शब्दन के सरलता देखे लायक बा। पहिली पांती त अनासे विना-प्रयास कंठ से फुटतिया—राम कहत चलु, राम कहत चलु, राम कहत चलु भाई रे।

कबीर दास जी के चेलन में महात्मा धरमदास जी के स्थान भी बहुत महत्वपूर्ण रहल। उनकर जनम सं० १४८० वि० समझल जाता। धरमदास जी के शब्दावली में 'भोजपुरी' के रंग काफी गाढ़ा देखे के मिलता। एगो बानगी लीं—

ओछे जल के नदिया हो,
बहे अगम अपार।
उहाँ नाव नहिं बेरा हो,
कइसे उतरब पार॥

अतने काँहे? धरमदास त 'भोजपुरी' में पद के पद गढ़ले बाड़े। 'भोजपुरी' में उनकर ई पद कतना मार्मिक और कतना कीमती बा—

कहँवा से हंस आइल,
कहँवा समाइल हो।
कहँवा कइल मुकाम,
कहाँ लपटाइल हो॥
निरगुन से हँस आइल,
सगुन समाइल हो।
काया गढ़ कइल मुकाम,
माया लपटाइल हो॥
एके बूंद से काया,
महल उठावल हो।
बुंद परे गलिजाइ,
पाछे पछितावल हो॥
हंस कहे भाइ सरवर,
हम उड़ि जाइब हो।
मोर तोर अतने दीदार,
बहुरि नहीं पाइब हो॥
इहवाँ कोइ नहिं आपन,
केहि संग बोले हो।
बिच तरवर मैदान,
अकेला हंस डोले हो॥
लख चौरासी भरमि,
मानुष तन पावल हो।
मानुष जनम अमोल,
अपन सों खोवल हो॥
साहेब कबीर सोहर गावल,
गाइ के सुनावल हो।
सुनहु धरमदास
इहे चित चेतऽहो॥

'सोहर' भोजपुरी के विशेष शैली ह। अपना शैली-विशेष में बँधिके 'भोजपुरी' के पद लिखल जाले स। 'भोजपुरी' के अनुरूप शैली गुलाल के भी मालूम रहे। उनकर जनम सं० १७५० वि० के आस पास समझल जा सकेला। गुलाल के पद में प्रेम के निखरल रूप मिलेला।

तनिकी प्रेम के परिचय औ प्रणय के स्वाँग त देखीं—

पावल प्रेम पियरवा हो
ताहि रे रूप।
मनवा हमार बियाहल हो
ताहि रे रूप॥
ऊँच अटारी पिया छावल हो
ताहि रे पर।
गुरू गम गाँठि दियावल हो
ताहि रे पर॥
मोतियन चौक पुरावल हो
ताहि रे पर।
अगम धुनि बाजन बजावल हो
ताहि रे पर॥
दुलहिन दुलहा मन भावल हो
ताहि रे मन।
भुज भर कंठ लगावल हो
ताहि रे मन॥
गुलाल प्रभुवर पावल हो
ताहि रे पद।
मनवा प्रीत लगावल हो
ताहि रे पद॥

गुलाल के स्थान भारतीय मधुरोपासक संत में बा। भारत में कबीर से लेके प्रायः आज तक अनेक प्रेम-पगल संत हो गइले जिनका वाणी से हिन्दी-साहित्य धन्य भइल। प्रेम के प्रफुल्ल स्वरूप तथा मिलन के मुखर भावना जदी देखे के होय त 'भोजपुरी' में गुलाल के पद में देखीं। 'भोजपुरी' के खातिर गुलाल गुलाल हवे। अबीर गुलाल। प्रेम-रसमें छकल प्रेमी के दिव्य रसानुभूति के आकलन शब्द में केहू का करी, ऊ त अनुभव के चीज ह।

जनम सुफल भइल हो
हम धनि पिया के पियारी।
सोरहो सिंगार संपूरन
पहिरल देखल रूप निहारी॥
लत तिलक से माँग सँवारल
बिनवल अचरा पसारी।
आठ पहर धुनि नौबति बाजे
सहज उठै झनकारी॥
रीझि रीझि निछावर वारल
मुकुता भरि भरि थारी॥
गगन मँडल में परम पद पावल
जमहि कइल घर छारी।
जन गुलाल सोहागिन पिय संग
मिलि ल भुजाँ पसारी॥

बाबा धरनीदास जइसन संत कवि परत भोजपुरी-भाषा के भी गर्व बा। उनकर जनम सारन जिला के माँझी गाँव में सं० १७१३ वि० में भइले रहे। उनकर कविता कइसन रहे एकरा खातिर एकाध नमूना दीहल काफी होई। प्रथम भोजपुरी कवि के 'साध' सुनीं—

(बाकी पन्ना ४७ में देखीं)

चीठी के अरथ

श्रीरंगजी पाण्डेय

"… …राबा जल्दी चलि आईं। हमार मन एहिजा एको पइसा नइखे लागत ……"

छबिआ मनीकान्त किहां अपना नइहर से एकाध-गो चिठी होस्टले का पता प भेजि देत रहे। छुटी-छपाटी में मनी का गाँवे चलि गइला प, जेठ-बड़ के लाज-डर से ऊ एको चीठी गाँव पर ना भेजे। अभी त बेचारी एक बेरा ससुरा आइल, आ साले-डेढ़ साल के बाद अपना नन्हका भइया सोहन का बिआह में नइहर चलि गइलि।

मनी ऊपर के अछरे से जानि जासु कि ई चिठी जरूर उनुके किहाँ के ह। बिना हरख-विषसाद के लिफाफा फारि के चिठी पढ़ि लेसु, आ फेरू ओकरा के फारि-फूरि के अइसन नापाता करसु कि केहू तनिको जानिओ ना पावे। उनुका सब साथिन्हि के अइसन चीठी जब अंगरेजी में ना आवे त कम-से-कम लिफाफा के ऊपर के पाता त अंगरेजी में रहते रहे। साथिन्हि के बीच हाहा-हीही में अइसन चीठी घंटन्हि सजा द स। एह खुशी का दिन में होटलबाजी आ सिनेमा त एक दम जरूरी चीज रहे। मनी खातिर चीठी देखावे के बात त अलग रहे, बिआहे के छिपावत-छिपावत जान प नउयति आइल रहे। मनी इहे कहि के रहि जासु कि हमार त बिआहे नइखे भइल; आ बिना इञ्जिनिअरिंग पूरा कइले करबो ना करबि। हाँ, त ई का केहू जानता कि छबिया कइसन रूप रेख के ह। रूप-रेख कइसनो होखो, चीठी में लिखल अछरिआ त बकुला के टाँगे नियन रहत रही स। मनी जब पढ़े लागसु त उनुका बुझाइ कि एह चिठिन्ह का आगे आइन्स्टाइनों के थिउरी सहजे बा। तबहूँ चीठी के आधा अरथ नाहिंए खुले। छबिआ कै का दोष? कसहूँ-कसहूँ अपना गाँव-घर के भउजाइन्हि से अछरि चलावे भरि पढ़ि लेलसि। गाँव में लइकन्हि के त इस्कूले ना रहे, त लइकिन्हि के के पूछो। ओकर बाबा निकलल धनी-मानी आदमी रहसि। झटके प मनी लइके रहसि त उनुकर बिआह करि देले। मनी के बूढ़ बाप के अँखिओ अपना

एकलौता बेटा के बिआह देखि के जुड़ाइल चाहत रहो स। नवे बरीस के उमिरि में बिआह ठीक हो गइल। बाकीर मनी के बाबू अपना विचार से टस-मस नाहिंए भइले—

"जाँति-पाँति पूछे ना कोई।
रुपया दी से ससुर होई।।"

मनी सब चीठी त जीव जाँति के पढ़ि लेत रहसु, बाकिर जब ऐकतारे से महीने दिन का भीतर दुइए-एक दिन बीच डालि के अनेकन्हि चीठी अइली स त उनुकर चिन्ता बढ़ि गइल। ललो-चपो के अउरी बातन्हि के अलावे सभ में लिखल रहत रहे—"रावा जल्दी चलि आईं। हमार मन एहिजा एको पइसा भरि नइखे लागत।" बहुत लइकइएँ में मनीं के बिआह भइल रहे बाकिर छबिआ त कवनो कमसीन ना रहे। आजु से कइअक बरिस पहिलहीं नइहर जाएका बेरा मनी पूरा समुझवले रहनि कि हमरा के कबे मति बोलइह। ई सब सोंचि के ओह चिठिन्हि के अरथ अवरू ना लागे। एकरा संगे-संगे उनुका ससुरारी के एकाध गो लइकन्हि के भी उन्हुका के लिया जाएके पूरा जोड़ रहे।

एह सब बात प सोचत-सोचत नकनका गइले। ससुरारी जाएके त विचारे से डबडबा जासु। बाकिर बाद में ना जाने का मन में आइल कि मनी रविपुरा जाएके तेयार हो गइले। शहर में दोकानन्हि आ लौन्डरिन्ह के कवन कमी बा? चेट गरम चाहीं। कपड़ा-लत्ता सरिअवला के अलावे ले जाए लायक कुछ समानो खरीदि लेले। ससुरारी में खूब आदर मानि भइल। सासु-ससुर के दुलार आ साली-सरहजि के मीठ गारी में एकदमे अपना के भूलि गइले। सब से त बड़ बात ई रहे कि छबियो से भेंट भइल। परीछा डेगे भरि रहला से चारे-पाँच दिन में लौटि अइले। इहो जरूरी रहे कि ससुरारी गइला के बारे में घर के केहू मति जाने।

छव सात महीना के बाद उनका खबर मिलल कि उनका बेटी भइल हा। सभे कहल कि उनुकर बेटी सतवांसु हो गइलि, बाकिर मनी के आँखि मुदाइयो गइला प सभ समझसु। पहिल की चीठीन्हि के अरथ एकदमे साफ हो गइल—

"रावा जल्दी चलि आईं। हमार मन एहिजा एको पइसा नइखे लागत।"

—करजा, शाहाबाद।

◆ ◆ ◆

दूगो कविता :

अगनइया लगै उजियार

हरिराम द्विवेदी

सेमर कै फुलवा ऍगुरुवा कै बुनकी कइले वहुरिया सिंगार रे,
अँगनइया लगै उजियार।
सरसो कै खेतवा फराय गदरइलैं,
पाकलि फसिलिया सिवान पियरइलैं
सरदी के जाये कै दिन नियरइलैं, भेंटैले भरि अँकवार रे,
अँगनइया लगै उजियार।
पात झरे लउकैले निबिया कै टुनगी
फूटै भोरहरी किरिन अस फुनगी।
टुँसवा निहारि मन भइलैं भँवरवा छूवैं न पावैं लचार रे,
अँगनइया लगै उजियार।
अमवा के गँछियन में झूमै बउरवा
जइसे कि दुलहा के माथे मउरवा
झाँकै दुअरिया के फाँफर से छिप के जइसे बसन्ती बहार रे,
अँगनइया लगै उजियार।
डोलै फगुनई लगै जइसे दहका
जगों-जगों फगुआ कै चउताल चहका
भुइयाँ उतरि कै करैले पहुनई जोन्हिया बड़ो टहकार रे,
अँगमइया लगै उजियार।
बोवैला जइसे चनरमा चननियाँ
धरती के माथे थकहरी कै घनियाँ
पोंछै सनेहिया बिहनवाँ पसिनवाँ ललकी अंगोछिया उतार रे,
अँगनइया लगै उजियार॥
मछुआ के आँखी बसै नाहीं सिलिया
लाल रंग डोरवा गहिर एक झिलिया

लागै अँजोरिया में अइसन फसिलिया पनियां में जइसे सेवार रे,
अँगनइया लगै उजियार ।

दिनवां परास-बन डह-डह डहके
रतियां अकेलवैं बेइल अस महकै,
चुपके से खोलै भोरहरी सिकड़िया आवैले मातलि बयार रे ,
अँगनइया लगै उजियार ॥

नान्है क दिन भये बयस सयनवां
महुआ के रस भरि आवै नयनवां
बुझै न काहे के मनवां लोभाला बारी बगइचा निहार रे,
अँगनइआ लगै उजियार ॥

—वाराणसी

व्यंग्य कविता :

बे मिनिस्टर के

गणपति पांडेय 'संकेत'

मंदिर, बिनु मूरति सून, पाउडर बिनु सूरति सून,
सून लागे जइसे मसीन बिना पिस्टर के।
द्वार सून रेडियो बिनु, जीप सून वीडियो बिनु,
मेम सून लागति राह चलत बिना मिस्टर के।
पाँव सून जूता बिनु कार सून कुत्ता बिनु,
मारग चलत गोद सून बिना ट्रांजिस्टर के।
वाइन बिनु होटल सून, कैदी बिनु कोतल सून,
सभा मंच सून लागे, तइसे बे मिनिस्टर के ॥

× × ×

किरिया खियाके जान छोड़ेले मुखियन के,
साथे सरपंच लंच लागे अकुताइके।
गाड़ल सभ भूत के उखाड़ेले चउरा पर,

पंचरा सुनाय खूब देवकुर बमकाय के ॥
केहू के सराध हो बिआह चाहे बरही हो,
धमकेले दुअरा आय जीप हनहनाइ के।
कहत संकेत बस पलके में पलक मारि,
फलक बनावसु झट हलफ के उठाय के ॥

× × ×

बैंक इतिहासन में पुरखा के पौरुख धन,
वोकरे पर चेक नित नगदे भंजावेले।
भाखन के भोजन दे जनता जनार्दन के,
आठो जाम भोग सालिग्रामे के लगावेले ॥
स्वागत के सामत चढ़ावसु नित लोगन पर,
बोली के गोली दागि दुश्मन दहलावेले।
कहाँ ले बताईं प्रभुताई संकेत सभ,
बिजय माल लेके रोज काटर लौटि आवेले ॥

× × ×

मांछी के पछारि मोछि मच्छड़ के उखाड़ि लेले,
मूस अवरू मुसरी सभ जानत प्रभुताई के।
सरपट सराब भागे छोड़ि काग बोतल के,
होटल हबड़ाय जाय सुनते अवाई के।
कछुआ अस सटके परान सभ मुरगिन के,
ओठ सूख जात प्याली सुनते पियाई के।
कहत 'संकेत' बल कतना बताई हम,
माला बा तगमा सभ इन्हका बीरताई के ॥

—जगतपुर पकड़ी, शाहाबाद।

अन्हार

स्वर्ण किरण

[स्थान—एगो गाँव में बाबू सूरज सिंह के मकान के सामने चरित्तर बाबू के दलान। छह कोना खटिया। फाटल दरी। समय—छ बजे सुबह। चरित्तर बाबू खाँसी से पीड़ित। उठ के खाँसते बाड़न कि गोपी बाबू बेग ले ले पहुंच गइलन।]

गोपी बाबू—(पैर छुअत) प्रणाम बाबू जी, रात में त स्टेशने पर टिक गइलीं। राम प्रवेश बाबू आवहीं ना देलन।

चरित्तर बाबू—खुश रह बबुआ, आव बइठ। (खटिये प बइठावत बाड़न। छह कोना खटिया त मरमरा के रह गइल। गनीमत ई कि टूटल ना।)

गोपी बाबू—बाबू जी, हम सुनलीं कि अपने के तबीअत बहुत खराब रहे।

चरित्तर बाबू-हँ बबुआ, देखत नइख। अबहीं ले खाँसी बड़ले बा। आपन समाचार कह।

गोपी बाबू—हँ बाबू जी, समाचार अच्छे बा। ई खाँसी बहुत जबरदस्त मालूम होत बिआ। इहाँ दवा-दारू के इन्तजाम बढ़िया नइखे त काहे ना एगो चिट्ठी लिख देलीं, हम आके लिया जइतीं। अस्पताल में कहतीं त अस्पताल में, घर में कहतीं त घर में इन्तजाम करा देतीं। सूरत त अपने के एकदम बिगड़ गइल।

चरित्तर बाबू—हँ बबुआ। इहाँ कहाँ कवनो बढ़ियाँ डागडर-बैद कि देखाईं। पंचकौड़ी के नाती से देख ना, ई दवा मँगवले रहीं आरा से। फिर ऊ तइयारे ना भइल कि आउर एक शीशी दवा मँगवाईं।

गोपी बाबू—हँ बाबू जी, अपना बिना सपना के कहाउत का झूठ ह? अब हम आइए गइलीं, अपने के लेके शहर चल चलब। घर में बड़की बबुई त ना होइहें। सुनले रहीं उनकर मामा आइल रहन हाथे-पाथे मदद करे खातिर।

चरित्तर बाबू—हँ अब कहाँ बाड़न, बबुई के मामा। ऊ त लड़ाई करके कबे चल गइलन। छोटकी बबुई आ उसकर मतारी बाड़ी; ई लोग से का होई इहाँ; बगइचा बिका गइल, बैल बिक गइल, ई दलान भी रेहन हो गइल।

मँहगाई बढ़त चल जात बिआ; कइसे का होई कुछ बुझात नइखे।

गोपी बाबू—बाबू जी, घड़राए के बात नइखे, मोहित बाबू, ठाकुर बाबू के साथ इंट्रेंस के इम्तहान में बइठलन हा; आगे भगवान के मरजी।

चरित्तर बाबू—(आश्चर्यित होके) आयँ, छोटको बबुआ इन्ट्रेस में पहुंच गइल ?

गोपी बाबू—हम गलती कहब ?

चरित्तर बाबू—ना बबुआ, छोटका बबुआ बहुत छोट बाड़न, इन्ट्रेस पास कर जइहें त बड़ा नोकरी लाग जाई। फिर दुख-दलिद्दर कहाँ रही ?

गोपी बाबू—हँ बाबूजी, इंट्रेस, आई० ए०, बी० ए० पास कइल मुश्किल नइखे। मन लगा के कोई पढ़ी त एम० ए० भी पास कर जाई आ बढ़िया नम्बर से पास करी, इंट्रेस, आई०ए०, बी०ए० का चीज ह। देखत नइखीं। शिक्षा के प्रचार कतना बढ़त चल जाता। डोम, चमार, मुसहर, धोबी छोट-छोट जात कतना पढ़ रहल बाड़न स आ कतना बड़का-बड़का अफसर बन रहल बाड़न स। मोहित बाबू पढ़े में तेज बाड़न, उनका सरकारी नोकरी मिले में तनिको दिक्कत ना होई। सरकारी नोकरी में बहुत आराम बा; दवा-दारू के खर्चा अलग, रोब-दाब अलावे।

चरित्तर बाबू—(कुछ अचरज करत) ई बात बा ?

गोपी बाबू—हँ बाबूजी, दिल के छोटा कइला से आदमी छोटा होखेला। कवनो आदमी दुनिया में छोटा नइखे। सब आदमी में बहुत ताकत भरल बा। गोली, बंदूक, तोप, तलवार एक ओर, आदमी के साहस एक ओर।

(सूरज बाबू जा रहल बाड़न)

चरित्तर बाबू—(सूरज बाबू के देखके) बबुआ, खटिया पर से उतर, हमहूँ उतर जाईं।

गोपी बाबू—काँहे बाबूजी ?

चरित्तर बाबू—अरे बाबू सूरज सिंह नू जात बाड़न ? देखके का कहिहें ? हमनी के छोट जात के नू हईं जा।

गोपी बाबू—बाबूजी, छोट आ बड़ जात के भइला से का ? बड़ जात के आदमी खटिया प बइठल रही, छोट जात के आदमी उठ जाई ? ई कहाँ के बात ह ?

चरित्तर बाबू—बबुआ, अपने से नइ के रहे के चाहीं। ई बड़ लोग कहिहें कि छोटकन के घमंड हो गइल। जानते बाड़, घमंड कतना खराब चीज ह। जे घमंड कइल ऊ ना बांचल। बांचे खातिर, जिन्दा रहे खातिर एकरा के

छोड़हीं के चाहीं।

गोपी बाबू—ना बाबूजी, ई गलत ख्याल बा। बड़ लोग अगर ई सोचत बाड़न कि छोट लोगन के बइठे के ना चाहीं हमनी के सामने, त ई ऊ लोग के जरूरत से ज्यादा छूट दे देल कहल जाई। हम ना उतरब; देखतानी बाबू सूरज सिंह का करत बाड़न।

चरित्तर बाबू—ना, ना, अइसन मत कह बबुआ। (बाबू सूरज सिंह के देखके) प्रणाम बाबू साहब। ई छोटका बबुआ के भाई आइल बाड़न। शहर में रहेलन। (बाबू सूरज सिंह कुछ ना बोललन। इनका जाए के समय गोपी बाबू भी प्रणाम कइलन।)

गोपी बाबू—बाबू जी, बाबू सूरज सिंह चाहे आउर कोई बाबू साहब, कोई कुछ ना कर सकस। नया रोशनी, नयका अँजोर सबके बराबर सुविधा दे रहल बिआ, सबके बराबर हक दे रहल बिआ। ई अपने के भ्रम कहल जाई कि छोट आदमी के खटिया प बइठे के हक नइखे। ऊ बड़का लोग भगवान के बनावल हवन, त ई हमनी के छोटका लोग भी त उनके बनावल हईं। ई हीन भावना जब तक दिमाग में घर कइले रही तब तक उन्नति बिल्कुल ना हो सके। अब छोटा बड़ा, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब के बीच से भेद-भाव दूर हो रहल बा। गाँव शहर बन रहल बा, शहर नगर बन रहल बा। नगर बड़का नगर बन रहल बा। हर तरह के सुविधा, हर तरह के आराम, हर तरह के मशीन, हर तर तरह के दुकान-ई सब जमाना के विकास के सूचक बा।

चरित्तर बाबू—अच्छा। अब दिसा-मैदान, अस्नान-जलपान होखे के चाहीं। [छोटकी बबुई अचानक झाँक के चल जात बिआ। गोपी बाबू देख लेत बाड़न। छोटकी बबुई के मतारी दलान में आ जात बाड़ी।]

गोपी बाबू—प्रणाम माई जी!

माई जी—खुश रह बबुआ! कब अइल हा?

गोपी बाबू—अब ही कुछुए देर हो रहल बा। अइलीं त रात हीं। स्टेशने पर रामप्रवेश बाबू के हियाँ रात के ठहर गइल रहीं।

माई जी—लोटा-बोटा ले आवत बानी, ठहर। नाश्ता-पानी पहिले हो जाये के चाहीं।

गोपी बाबू—ना ना माई जी, दिशा-मैदान हो ले ले बानी, मुँह-हाथ भी धो ले ले बानी, लेकिन बिना अस्नान कइले कुछ खा ना सकीं।

माई जी—त चल बबुआ, पहिले नहा ल फिर बातचीत होत रही। अबेर

करे के काम नइखे ।

[माई जी बगल के इनार प गोपी बाबू के साथ ले के जात बाड़ी ।]

गोपी बाबू-(अचरज से) अरे, ई अइसन इनार ? एकर त मेड़े नइखे ? गली के सब पानी, बहाइन एकरा में जा सकेला ।

माई जी—बबुआ, ई शहर ना नू ह कि जब जे जइसन चाही हो जाई ! केकर मन करेला कि मिहनत क के खाईं ।

गोपी बाबू—ना माई जी, हम कहत बानी कि ई इनार में सुधार होखे के चाहीं । एकर पानी जरूर खराब हो गइल होई ।

माई जी—ना बबुआ । गाँव में जतना इनार बाड़न स ऊ सब में इहे बढ़िया बा, आ एकर पानी से दाल गल जाला । देखत नइख, एगो पत्थर बिछावल बा जेकरा फींचे, सबुनावे के होखेला ऊ एहिजे आवेला या घर में चौकी, पटरा या पत्थर के टुकड़ा पर फींचे सबुनावे ला । मुखिया जी कहत रहन कि एकरा प मेड़ बने वाला बा ।

गोपी बाबू—हँ माई जी, मेड़ तुरन्त बन जाये के चाहीं; कह त हम मुखिया जी से कहीं ।

माई जी—ना ना, मुखिया जी खिसिया जइहें; बुरा मान जइहें । अपना मन में आई त अपने सुधार करवा दीहें ।

गोपी बाबू- गाँव के आउर बड़का-बड़का आदमी लोग सूतल बाड़न ? अब तक केतना सुधार हो जाये के चाहत रहे । कतना गाँव के भाग चमक गइल । कतना घूरा-गनौरा आबाद हो गइल । कतना झोपड़ी महल बन गइल; कतना जंगल फुलवारी हो गइल ।

माई जी—बबुआ, बड़का-बड़का आदमी लोगन में से बहुत लोग के इहाँ चाँपाकल बा, उनका लोग के का जरूरत ? पंचायत के मुखिया जी के इहाँ कुछ लोग कहलन त बिगड़ गइलन कि तोड़ा रखल बा ? कइसे गाँव में सुधार होई ?

गोपी बाबू— माई जी, ई इनार जब तक अइसन हालत में रही तब तक इहाँ के लोग के स्वास्थ्य अच्छा ना रह सके । अभी पानी अच्छा बा । त धीरे-धीरे खराब होइए जाई । फिर एकर पानी से तरह-तरह के रोग हो जाये के सँभावना बा । एकर जल्दी उपचार होखे के चाहीं । बाबू जी से पूछब, एह इलाका के बी० डी० ओ० साहब कवन हवन ? कहाँ रहेलन ? कब भेंट होई ?

माई जी—बबुआ, जल्दी नेहा ल ।

गोपी बाबू- (गंदा डोल देख के) माई जी, ई डोल के अइसन हालत ?

एकरो के बदल देवे के चाहीं। ई ईनार में गड़ारी लाग जाए के चाहीं, मेड़ त बनहीं के चाहीं। (बहुत मुश्किल से अस्नान करके, मन में सोचत) माई जी, सब लोग के मिल के बी० डी० ओ० साहब के हिआँ दरखास देवे के चाहीं।

[बाद में, दलान में पहुंच के गोपी बाबू बइठ जात बाड़न। छोटकी बहुई मुँह तोप के जलपान रख जात बाड़ी। गोपी बाबू जलपान करत बाड़न चरित्तर बाबू के खाँसी बढ़ जात बिआ।]

गोपीबाबू—बाबूजी, ई इलाका के बी० डी० ओ० साहब कवन हवन? कहाँ रहेलन? इहाँ के इनार त बड़ा खराब बा। पहिले पहिल एहिजा के ई हालत देखे के मिलल हा।

चरित्तर बाबू—इहिजा के बी० डी० ओ० साहब.......(खाँसते-खाँसते बेदम हो जात बाड़न। बेहोशी भी हो गइल।)

[गोपी बाबू जल्दी से जलपान करके, उठके, माई जी के पुकारत बाड़न]

गोपी बाबू— माई जी, इहिजा डोली वाला होखस त एगो के बोलवा दीं। हम बाबू जी के लेके शहर जाईं। बिना अस्पताल गइले इनकर हालत ठीक ना होई। जल्दी करीं। एहिजा बढ़िया डागडर-वैद नइखन लोग नू?

माई जी—ना बबुआ, एहिजा डागडर-बैद कहाँ बाड़न लोग? बढ़िया डागडर-बैद लोगन के त शहर में भी अकाले होखे ला।

गोपी बाबू—ना, माई जी, शहर में बढ़िया डागडर-बैद लोग मिलिए जालन। हम तुरन्त जात बानी बाबू जी के लेके। बाद में बी० डी० ओ० साहब के हियाँ जाइब, मुखिया जी से भेंट करब।

[माई जी तुरन्त डोली वाला के बुलवा देत बाड़ी। गोपी बाबू हाथ के इशारा से बाबू जी के बइठा के शहर के ओर रवाना हो जात बाड़न।]

—स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
मगध विश्वविद्यालय, गया।

हे हमार नीलम परी

बच्चन पाठक 'सलिल''

जमशेदपुर के माडल बालिका-विद्यालय। १ बजे के समय रहे। टिफिन में लइकी लोग एने ओने घूमत रहे। तरह तरह के पहिराव आ किसिम किसिम के बोली। टाटा में पंजाबी, बंगाली, गुजराती, आ पारसी-सभे रहेला। एही से लइकी लोग के देखि के बुझाइ कि कवनो अजाएब घर ह। केहू फराक पहिरले घूमता, त केहू सलवार पैजामा में झमकता। कुछ लोग सारिओ पहिरले लउकत रहे। स्कूल के हाता में महुआ के फेंड़ का नीचे एगो लइकी देस दुनियाँ भुलाइ के एगो पत्रिका पढ़त रही। अतने में एक जानी आ के उनकर आँखि मुँदि लेली।

"के ह? हमरा ई बेहूदा मजाक नीक ना लागे। छोड़।" बाकिर आँखि ना छूटल। अब पहिलको लगली अन्दाज लगावे। 'बसुमती, माला, माया, आल्डा, शिरीन, अरे भाई के हमार दुश्मन ह। सरग से कवनो देवता त आइल ना होइहें।"

आ दूसरको उनकर आँखि छोड़ देली। लगली हँसे। उनकर हँसी थमे ना होखे। थोरे घरी का बाद कहली—"सरग से देवता ना अइहें त नरक से सैतान त आइए जाई। नानू चिन्हलू हा। हम हईं तहार सदावृज, तूँ हऊ हमार सारंगा। हीर-राँझा एक दोसरा के ना चीन्हे, कतना मुस्किल बा। बोल, हमार अनबोलता रानी।'

आ पहिलकी जानी अपना सखी के अँकवारी में बान्हि लिहली। अतने कहली, 'सतवन्त'।

'हँ, कमला' सखी के जबाब रहे।'

कमला आ सतवन्त लइकाइएँ के सखी रहे लोग। कमला के बाबू जी टाटा नगर के एगो नामी व्यापारी रहले। लाखन के कारबार होत रहे। सतवन्त के बाप टाटा कम्पनी में मिस्त्री। पइसा ओतने मिले कि घर के मरजाद कइसहूँ चले। पहिले दूनो घर में दाँत काटल रोटी चलत रहे। अब ई लोग एक दोसरा के परछाँहियो धांगल पाप बूझत रहे।

एक हाला सन्तबन्त के बाबू सरदार संतोख सिंह कमला के बाबू हरिहर सिंह से पाँच स रुपया कर्जा लिहले। पइसा ना जूटल, ना दिआइल। भेंट भइला पर हरिहर सिंह सरदार जी के डँटले। कहले कि तू लाज हया घोरि के पी गइल बाड़? रुपया का हराम के ह?

सरदार संतोख सिंह बाबू साहेब के लेहाज करत रहले। बाकिर उनकर अइसन बात ना सहाइल। पंजाबी खून, गरमा गइले। कहले, 'अतना जोम मति देखाव। रुपए नू चाहीं। हम सूद का साथ देब।'

'तू हमार जोम देखब।' बाबू साहेब अकड़ि गइले। खीसी में ऊ अन्डसन्ट बके लगले। सरदार जी संगे नीमन झगड़ा हो गइल। बाबू साहेब कचहरी गइले। फैसला हो गइल आ सइ-सइ रुपया महीना सरदार के तनखाह से कटे लागल। तबे से दूनो घर में आवा जाही बन्द हो गइल।

बाकिर ई दूनो सखी के प्रेम में फरक ना परल। एक संगे ऊठल-बइठल चलत रहे। टिफिन में कमला अपना घर से मिठाई ले आवसु, चाहे सतवन्त कवनो पंजाबी चीज ले आवसु त दूनो जानी एके संगे बइठिके खासु। कमला रहली त बिहारी, बाकिर ऊहो पैजामा, सलवार पहिरसु आ दुपट्टा ओढ़सु। कुछ-कुछ पंजाबिओ बोलिलेसु। सतवंत भी कुछ-कुछ भोजपुरी सीखि ले ले रही। देखला पर बुझाइ कि दूनो एके बहिन ह लोग। कमला के माई उनुका के सतवंत का संगे देखि के जीयसु ना। कहसु कि ई दुसमन का संगे रहतिया। बात ई रहे कि मोकदमा हरला के बाद सरदार बाबू साहेब के इन्कम टैक्स वाला लोग से धरवा देले रहले, जेह में बाबू साहेब के हजारन खर्चा हो गइल रहे।

बाकिर कमला आ सतवन्त के प्यार बढ़ते गइल। सालाना इन्तहान आगइल। कमला के बिआह भी ठीक हो गइल। बिहारी परिवार में लइकिन के ढेर पढ़ला के त कवनो जरूरत होखे ना। तय हो गइल कि इन्तिहान के बाद कमला के बिआह होई। लइका पुलिस इन्सपेक्टर रहे।

एक दिन सतवन्त कहली—'मुबारक हो बहिन! सखा जी के हमरा देखे के मिली कि ना?' कमला उनुकर मुँह बन्द करे लगली। सतवन्त फेरु कहली—"इयादि बा, हमनी का चउथा

किलास में परन कइले रहीं जा कि हमनी के बिआह एके दिने, एके सहर में होई। हा-हा-हा-हा। लइकाइयों में आदमी का का सोचेला।"

'हमनी का ठीक सोचले बानी जा, कमला गँभीर होके बोलली। 'हमार शादी अभी ना होई। देस पर चीन के चढ़ाई हो रहल बा। हम नर्स हो के जा रहल बानी।"

"बाबू जी मनिहें।"

"कवनो रास्ता नइखे। हम साफ साफ कहि देले बानी ?"

"बहिनी, हमरो के ले चल। तोहरा बिना हमरा से कइसे रहि जाई।" सतवंत रोवे लगली।

अपना दुपट्टा से उनकर लोर पोंछत कमला कहली—"हम जान तानी। देख, हई फारम तहरो खातिर लेआइल बानी।"

फारम पर दसखत करत सतवंत अगरा गइली। फेरु उनका गरदन में हाथ डाल के कहली—"हमनी के बिआह एके संगे बोमडोला में होई। विजय के दुलहा आ दुस्मन के खून के सेनुर। हा—हा—हा—।"

फेरु कहली—"हे हमार नीलम परी, हम तहरा उड़न खटोला के राजकुमार हईं।"

—कॉलेज रोड, जमशेदपुर–१

(३४ के बाकी पढ़ी)

जहाँ प्रभु बइसे सिंहासन आसन
डासब हो।
तहवाँ बेनिया डोलइबों बड़ सुख
पइबों हो॥
जहाँ प्रभु करिहें वासन पौढ़ि हे
आसन हो।
करते पग सुहरइवों हृदय सुख
पइबों हो॥
धरनी प्रभु चरनामृत नितहिं
अचइबों हो।
सनमुख रहबों मैं ठाढ़ अनत नहिं
जइबों हो॥

पत्नी के एहसे बढ़िके दोसर कौन साध हो सकेला—प्रियतम के आसन पर बइठाना; ओह पर रस बेनिया के हवा, स्वामी के सुतला पर उनका चरण-कमल के धीरे-धीरे 'सुहराना'। ई 'सुहराना' शब्द 'भोजपुरी' छोड़ के दोसरा जगह ना मीली। एही तरे 'अंचइबो' शब्द भी 'भोजपुरी' के आपन खूबी बा। मतलब ई कि 'भोजपुरी' के सेवा संत और भक्त लोग हिन्दी-साहित्य के प्रारम्भे से करत आ रहल बा। एहिजा एकाध गो बानगी दिआइल बा। खोज कइला पर पता चली कि भोजपुरी के प्रभाव हिन्दी के हर कवि पर बा।

—भरौली, शाहाबाद।

नया साहित्य

जन कवि भिखारी ठाकुर

लेखक : महेश्वर प्रसाद; प्रकाशक : पांडेय नर्मदेश्वर सहाय, संचालक, भोजपुरी परिवार सालिमपुर अहरा, पटना–३; प्रथम संस्करण, १९६४; पृष्ठ : ११४ (भूमिका आदि छोड़ के), मूल्य ४·०० ।

जन कवि भिखारी ठाकुर भोजपुरी अंचल के, भोजपुरी भाषा आ साहित्य के रत्न हवन आ भोजपुरी के बाहर भी इनकर तूती बोल रहल बा। अब ई बात संदेह आ विवाद के ना रह गईल। कविए ना, गीतकार, संगीतकार, नाटककार, रंगमंच के सूत्रधार आ अभिनेता आदि के रूप में भिखारी ठाकुर काफी नामी हो गइल बाड़न। अफसोस के बात इहे बा कि अब तक इन्हका पर कोई काम ना भइल। 'पंचामृत' आ 'चतुर्युगी' के मशहूर लेखक महेश्वर प्रसाद इन्हका प, आपन सधल कलम उठवलन हा. ई इन्हकर महत्त्व बतला रहल बा। 'मुलल अछरिया जोरले जइहऽ' में ई एकरा बने के इतिहास थोड़े में बतलवले बाड़न जेह से मालूम होत बा कि एकरा पीछे बहुत बरस के साधना छिपल बा। सन १९४४ के आसेपास असल में एकर सामग्री पत्र-पत्रिकन में प्रकाश में आ गइल आ सन् १९५० में किताब के रूप में भी प्रस्तुत हो गइल। लेकिन छप के आवे में एकरा एतना समय लाग गइल।

भूमिका लेखक, पटना जादूघर के डा० परमेश्वरी लाल गुप्त लिखले बाड़न कि एह ग्रंथ में लेखक महेश्वर प्रसाद भिखारी ठाकुर के रचना के एगो सहृदय पाठक के रूप में देखे के चेष्टा कइलने बाड़न। भिखारी ठाकुर के अन्तस् के भावना जेह रूप में उन्मुख आ विकसित भइल बा ओकरा के सराह के लेखक पाठकन के ध्यान आकृष्ट करे के कोशिश कइले बाड़न आ एकरा में इन्हका पर्याप्त सफलता भी मिलल बा, ई पाठक लोग पढ़के खुद अनुभव करिहन। भूमिका लेखक के ई सब बात में तनिको अतिशयोक्ति नइखे मालूम पड़त। लेखक जादे से जादे अन्तर्साक्ष्य के सहारा लेके भिखारी ठाकुर के सुंदर परिचय शुरू में देले बाड़न।

अन्तर्साक्ष्य के उपयोग से ई खूब प्रामाणिक हो गइल बा। भिखारी ठाकुर के व्यक्तित्व के सब पक्ष पर ई ठीक से प्रकाश डलले बाड़न। शायदे कवनो पक्ष होई जे एकरा में आवे से रह गइल होई। भिखारी के भक्त हृदय, भिखारी के कवि हृदय, भिखारी : एक नाटककार, भोजपुरी भाषा और शैली में भिखारी, भिखारी के स्थान में बहुत ईमानदारी आ तटस्थता से लेखक बिचार कइले बाड़न। रामनाम के लौकिक प्रतिष्ठा, राम-विवाह आ कृष्ण लीला, नीति, मर्यादावाद आ उपदेश, समाज आ भिखारी, न्याय, विरह वेदना एह विषयन पर भी आलोचक के हैसियत से विचार कइले बाड़न। एकरो में अन्तर्साक्ष्य के अधिक सहारा ले ले बाड़न जेकरा से ई परिचयात्मक अखबारी लेख के भ्रम उत्पन्न कर रहल बा। बाकी शुरू-शुरू में कवनो आदमी के प्रकाश में ले आवे खातिर दोसर कवनो ढंग भी ना कहल जा सके जेकरा उपयोग से लेखक अखबारपना के बचइतन।

लेखक भिखारी ठाकुर के नाटकन के समस्या पर अधिक ध्यान देले बाड़न। बिदेसिया भिखारी ठाकुर के पहिला नाटक ह, आ एकरे से इनकर नाम भी भइल बा। भाई बिरोध नाटक, गंगा स्नान नाटक, बेटी वियोग नाटक, विधवा विलाप नाटक आदि भी कम महत्त्व के ना कहल जा सके। ई सब नाटकन में परिबार आ समाज के यथार्थ चित्र प्रस्तुत भइल बा। एकरा में भिखारी ठाकुर के पैनी दृष्टि के जेह रूप में लेखक बंदी बनवले बाड़न ऊ बहुत कमाल के कहल जा सकेला। ई खुसी के बात बा कि लेखक खाली मनोरंजन के दृष्टि से ई ग्रंथ प्रस्तुत ना कके उपयोगिता के दृष्टि से प्रस्तुत कइलन हा। भोजपुरी अंचल के बहुत खूबी आ खामी पर एकरा से अँजोर पड़ गइल बा। भोजपुरी जीवन में फइलल विकृति आ बुराई के कइसे निकालल जा सकेला, एह प भी लेखक के ध्यान कम नइखे गइल। भिखारी ठाकुर के नाटक जीवन में फइलल विकृति आ बुराई खातिर करारा व्यंग्य बाड़न स। एकरा से ई भी कहल जा सकेला कि भिखारी ठाकुर के व्यंग्यकार आ समाज सुधारक रूप प भी लेखक काफी अंजोर डलले बाड़न।

लेखक के भाषा आ शैली बिषय के अनुकूल मालूम पड़त बा। भिखारी ठाकुर के भाषा आ शैली बिल्कुल गँवार आदमी के भाषा आ शैली ना कहल जा सकेला। जतना उदाहरण एह ग्रंथ में भिखारी ठाकुर के देल गइल बा ऊ एकर जबरदस्त प्रमाण बा। लेखक बहुत सँभल-सँभल के इनकर उद्धरण देले बाड़न, आ अलग से भी एह प बिचार कइले बाड़न आ कहले बाड़न कि भिखारी ठाकुर के भोजपुरी चलत-फिरत आ मुहाबिरेदार बा। इनकर शैली गीत प्रधान होखलो प भी अनेक शैलियन के अपना में समेटले बिआ। बिरहा, सायरी, गजल. कबिता, सवैया आ छंद कहे आ लिखे में त भिखारी ठाकुर माहिर बड़ले बाड़न।

नृत्य कला बिशारद, हृदयहारी संगीतज्ञ, मनोहर नाटककार, मानव समाज के हितैषी भक्त आ भोजपुरी-साहित्य के सम्राट के रूप में भिखारी ठाकुर के लेखक के स्थापना बहुत सूझ बूझ के कहल जा सकेला। ई खुसी के बात बा कि भावावेश में लेखक इनका के भोजपुरी के शेक्सपियर बना के संतोष के सांस ना लेलन। असल में, अभी जरूरत बा कि भिखारी ठाकुर के सब रचना के ठीक-ठीक संपादन होखे आ तबे एकर अवरू बढ़िया से मूल्यांकन हो सकेला। प्रस्तुत ग्रंथ भिखारी ठाकुर के मूल्यांकन के क्रम में पहिला प्रयास होखला प भी पहिला प्रयास अइसन नइखे लागत। छापा के भूल बहुत कम बाड़ी स।

भोजपुरी-ब्याकरण

लेखक : पं० रासबिहारी राय शर्मा; प्रकाशक : दंडी स्वामी विमलानंद सरस्वती; राजगुरू मठ, शिवाला, वाराणसी; प्र० सं० जनवरी १९६५; पृष्ठ : ८६; मूल्य : २'००।

भाषा के गाड़ी के बढ़ावे, सजावे आ सँवारे में बेआकरण (व्याकरण) के कतना हाथ बा, ई भासा के सीखे वाला से भाषा शास्त्री आ भावाविद आलोचक लोग अधिक बतला सकेलन। कहल गइल बा कि बेआकरण 'भासा के पैना' ह, अर्थात् भासा के ठीक रास्ता पर बढ़ावे खातिर बेआकरण बहुत जरूरी बा। नया भासा पहिले धीरे-धीरे बढ़ल चल जाला, संसरग से

एकर विकास होखा आ वेआकरण के मुँहताज ना रहे; ई त वेआकरण के मुँहताज तब होले जब एकरा में काफी विकास हो जाला। भोजपुरी भाषा भी अब बोली तक सीमित ना रहल। दिल्ली से आसाम, आ एकरा बाहर भी, जहाँ तहाँ एकर गूँज सुनाई दे रहल बा। ई हालत में एकर वेआकरण बनही के चाहीं। बल्कि कुछ पहिलहीं बन जाइत त कोई अचंभा के बात न कहल जाइत। डॉ० उदय नारायण तिवारी एह भाषा पर खास काम कइले बाड़न आ भोजपुरी भाषा और साहित्य नामक किताब भी छपवले बाड़न, लेकिन भोजपुरी भाषा के खूबी आ खराबी जाने खातिर एतने से काम नइखे चल सकत। फिर वेआकरण पर उदय नारायण तिवारी जी के खास ध्यान भी ना रहल। एही भोजपुरी भाषा के वेआकरण के रूप में रास बिहारी राय शर्मा के भोजपुरी व्याकरण के प्रकाशन बहुत महत्त्वपूर्ण कहल जा सकेला, लेकिन माला में पहिलका फूल के जवन अस्थान हो सकेला ऊहे अस्थान एकर भी मानल जाई। हिंदी के जरिया से भोजपुरी वेआकरण जाने खातिर ई पहिला परयास ह, एही से एकरा में अभी पतलापन बा। लेखक शायद एही से ई रूप में निकलले बाड़न कि आलोचना-प्रत्यालोचना के बाद एकर कायाकल्प करब।

लेखक सचमुच अनुभवी मालूम पड़त बाड़न; सन् १९२९ से भोजपुरी वेआकरण के सपना जे देखत चल अइलन--उड़िया मित्रन के भोजपुरी सीखे के क्रम में भोजपुरी व्याकरण के आग्रह के कारण। सन् १९५३ में, तब के पटना बिश्वविद्यालय के हिंदी विद्वान् डा० विश्वनाथ प्रसाद के भोजपुरी वेआकरण के सुझाव के ई रूप सन् १९५८ से पहिले ना मिल सकल। 'भोजपुरी व्याकरण के आवश्यकता' पर विचार करे के क्रम में लेखक बहुत ईमानदारी से एह पर प्रकाश डलले बाड़न, आ प्रेरक, सहायक लोगन के उल्लेख भी कइले बाड़न। (संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के बलदेव उपाध्याय एकर भूमिका लिखले बाड़न जेकरा से भोजपुरी के महत्ता सिद्ध हो रहल बा। भोजपुरी के संबंध में दूइ बात लिखके, ई वेआकरण के प्रकाशक राजगुरु मठ, शिवाला, वाराणसी के दंडी स्वामी बिमलानंद सरस्वती ई वेआकरण के महत्त्व बहुत बढ़ा देले बाड़न। वास्तव में ई भोजपुरी भाषा

के बढ़िया इतिहास के काम कर रहल बा। एकरा साथ-साथ भोजपुरी जनपद के इतिहास, भोजपुरी लोगन के आचार-बिचार (लोक-संस्कृति), आ भोजपुरी भासा का आवे के—परगट होखे के—स्रोत पर भी अच्छा परकास पड़ गइल बा।

लेखक वेआकरण के समझावे खातिर वर्ण-विचार, शब्द और वाक्य, संज्ञा, लिंग, वचन, कारक, संज्ञा के रूपावली, सर्वनाम, सर्वनाम के रूपावली, विशेषण, क्रिया, काल, प्रेरणार्थक क्रिया, विधि क्रिया, नाम धातु, धातुरूपावली, प्रत्यय, आ समास नामक अंग पर विचार कइले बाड़न। परिशिष्ट में भोजपुरी के भजन, कजली, चैती, बिरहा, गजल, सोहर आदि अनेक छन्दन के भी उल्लेख कइले बाड़न, उदाहरण भी देले बाड़न। एकरा से मालूम होता कि वेआकरण के वैज्ञानिक अंगन पर इनकर ध्यान गइल बा। वाक्य विचार, अर्थ विचार, संधि पर लेखक अँजोर ना डललन, शायद आलोचना प्रत्यालोचना के बाद ए पर विचार कइल जाय। असल में अभी तक भोजपुरी के शब्दन के संग्रह तइयार ना भइल, एह से वेआकरण के निरमान में, कठिनाई के बात स्वाभाविक बा। एकही के अस्थान भेद से तरह-तरह के रूप हो जाला, सब पर ध्यान रखके अइसन वेआकरण के जरूरत बा जेकरा पर तुलनात्मक ढंग से विचार कइल जाय। लेखक समास के लक्षण बतलावे के क्रम में लिखले बाड़न कि 'जब दो या अधिक शब्द अपनी विभक्तियों को छोड़कर आपस में मिल जाते हैं, तब एक नवीन शब्द बन जाता है। इसी मेल की क्रिया को समास कहा जाता है, (पृ० ६७)। एहिजा शब्द के बदले पद के प्रयोग रहित त अच्छा होइत। अइसे वेआकरण बहुत अच्छा आ उपयोगी बा। एकर स्वागत होखे के चाहीं। अगिला संस्करण में त एकर कलेवर बढ़िए जाई।

—स्वर्णकिरण

पिंजड़ा—(कविता संग्रह)

कवि : गणेश दत्त 'किरण', प्रकाशक : शेरशाह स्टोर्स, इटाढ़ी (शाहाबाद), मूल्य : एक रुपया।

गणेशदत्त 'किरण' भोजपुर जनपद के एगो उदीयमान तरुण कवि हुईं। 'पिंजड़ा' कविता संकलन में किरण जी के तरुण-पाँव के

छाप देखे के मिली। पतीख कवितन के ई संग्रह पाठक के वरबस खींची।

एह संकलन में कवि के कुछ गीत, कुछ श्रद्धांजलिपरक कविता, कुछ युग चेतस् भावुक हृदय के यथार्थ में तपल उद्गार, सब कुछ रवा पा लेब। भोजपुर के भींगल, भाव से भरल गीत के नमूना 'वधार', 'फागुन', 'चिरइया', 'ताल में चान के परछाहीं', 'अँचरा लहराइल', 'वरसात में' अइसन कवितन में देख सकींला। भोजपुर जनपद के निछक्का चित्र उतारे वाला एह नवयुवक कवि के स्वागत बा। कविता पढ़त-पढ़त पुरवा बयार में बह जाईं, घसिहारिन के उड़त एकरंगा अचरू खुलल झपोली देख झपकी मारलीं, कोंचदार महुआ के रस में मात जाईं, फागुन के फाग में गदरा जाईं—सगरो रवा भोजपुर के अल्हड़ मस्ती मिली। 'किरण' के गीत में प्रकृति रानी आपन बड़ा सिंगार कइले बाड़ी। अइसन आलंबनगत चित्रण करे वाला भोजपुरी साहित्य के भविष्य में मानदण्ड बन सकेला।

'बनिहार', 'के के दुश्मन बा आ के आपन बा', 'फरक', 'का खाईं'', 'आसरा' आदि कवितन के दरपन में भोजपुर के यथार्थ चित्र देखलीं। 'तुलसी दास', 'बापू', 'कुँवर सिंह, कवितन में कवि के भाव-भींगल श्रद्धांजलि तथा 'पिंजड़ा' शीर्षक कविता में कबीर के रहस्यवादी छाप रवा देख सकीला। कुल मिला के 'किरण' जी के बारे में इहे कहल जा सकेला कि इनका से भोजपुरी साहित्य के एक नया पद्य मिली, काहे कि बिहान के ई 'किरण' दुपहरिया तक छितिज के अचरू अंजोर करी।

—महाकालेश्वर

आपन कथ

भोजपुरी साहित्य के पहिला अंक रउआ हाथ में देत मन अगराइल बा। बहुत दिन के सँपरहटि एह पत्रिका में अँकुरल बा। ई अंखुआ भोजपुरी भाई लोगन के नेह-छोह के रस पी के हरिअराई, फूली अउर फरी एकर पूरा बिसवास बा।

भोजपुरी भाषा माटी के बोली ह। माटी के दुलरुआ सपूतन के मतारी के दूध के संगे पीअल भाषा में जतना मिठास, लोच आ शक्ति बा, ऊ बतावे के ना परी। सभ लोग एकर कायल हो चुकल बा। भोजपुरी भाषा के कईगो फिलिम तराउपरी आवतारी स। उन्हनीं के पएसार आ सफलता देखि के मन हुलसता। बम्बई से लेके कलकत्ता तक माटी के बोली के परस, मिठास, आ ओकरा प भोजपुरी बोले वाला लोग के नेह-छोह साफे लउकता।

बाकी अभी बड़की खोलि सिंकहरे बा। भोजपुरी भाषा आ साहित्य के ऊ मानि-मरजादा नइखे भेंटाइल जवन एकरा मिलेके चाहीं। काहें? अइसन समर्थ भाषा आ साहित्य रहलो पर एकर आदर काहें नइखे होत? भोजपुरी भाषा आ साहित्य के मुंह उजियार काहें नइखे होत? एह सवाल पर सभ नेही लोग के सोचे के परी। आजु ना त काल्हु। पछुअइला से दिन मरी, सवाल ना टरी। एह से एही घरी सोंची।

हमरा बुझाता कि भोजपुरी सँवाग लोग छितरा गइल बा। कवनो काम लागि भीर के नइखे होत। हमनीं के चाहीं कि एक राय कइके एह काम के करींजा आ पढ़ाई-लिखाई के क्षेत्र में विश्वविद्यालय तक एह भाषा के उठाईं जा। अलगे-अलगे जुमला से काम ना होई। सभ मिलि के एह बोझा के उठाईं। माटी के एह बोली में अतना दम बा कि एकर हक केहू से ना पची।

एकरा साथे हमनी का भोजपुरी साहित्य के बढ़ावे के कोरसिस होखे के चाहीं। साहित्य के सभ विधा के विकास करे के बा। ई बात साच बा कि सभ विधा के ओर लिखनिहार लोग के ध्यान बा और ओहमें प्रगति भी बा, लेकिन जतना प्रगति होखे के चाहीं ओतना नइखे भइल। एकर अवरू विकास करेके परी, तबे एकर साहित्य अवरू भाषा आ उपभाषा के साहित्य के बराबर भा ओकरा से बढ़ के होई। अभी भजगर मेहनति करे के बा। एकरा के सात-साँच के लाठी बनाईं। साझ के हीत नियन उपास रखला से एकर दिन पातरे परी। भोजपुरी साहित्य निकाले के इहे मनसा बा कि एकर साहित्य अधिका से अधिका बढ़ावल जाउ। अतना मीठ, समर्थ आ तेज भाषा के साहित्य अतना बढ़े कि एकरा हक में जतना आदर-सन्मान बा, ओतना एकरा मिले। विश्वविद्यालय में आ अवरू जगह एकर उचित मानि-जानि होखो।

आजादी के बाद भारत के रस्म-रिवाज, रहन-सहन, सोचे-विचारे के ढंग में जवन परिवर्त्तन भइल बा, ऊ साफ झलकता। स्वतंत्र भइला के बाद समाज के जीवन-दृष्टि आ जिये के ढंग बदलि गइल बा। पुरान मूल्य टूट गइले स। नया मूल्य उभरतारे स। भोजपुरी बोले वाला क्षेत्र में भी ई नया मूल्य आइल बाड़े स। एह प्रदेस में रहनिहार के जिनगी भी कईगो समस्या के कारन असंतुलित हो गइल बा। एह असंतुलन के कई रूप में सहे के परता। एही से असली आ नकली दूगो जिन्दगी जिये

के परता । जवन हम भीतर बानी तबन बाहर नइखीं । एह से हमनी का बहुरुपिया हो गइल बानी जा ।

भोजपुरी साहित्य सिरिजे वाला एह हालति के समाज के संगे-संगे भोगता । ओकरा साहित्य में एह भाव-बोध के बरनन होखे के चाहीं । नया भाव-बोध के परगट करे खातिर नया शिल्प, नया शब्द अपनावल जरूरी बा । बौद्धिकता अवरू आधुनिकता के अनुभव भोजपुरी साहित्यकार भी करतारे । बाकी अभी ले नया भाव-बोध के अभिव्यक्ति भोजपुरी साहित्य में बहुत कम भइल बा । भोजपुरी के नेही भाई लोगन के चाहीं कि एह नया बोध के पकड़ो । अगर अइसन ना होई त भोजपुरी साहित्य अउरी साहित्य के बराबरी में पछुआ जाई ।

एह अंक में नया साहित्य के परिचय दिहल गइल बा । रउआं सभ एह प्रयास के बढ़ाईं त भोजपुरी साहित्य के बड़ा कल्याण होई ।

भोजपुरी साहित्य नया साहित्य के बढ़ाई, बाकी पुरान साहित्य से एकरा विरोध नइखे । दूनो साहित्य के बीच उपटल दरार भरे के कोशिश ई करी ।

भोजपुरी साहित्य के अपनाईं कि ई अपना उद्देश्य के पूरा कर सको ।

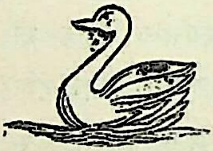

भोजपुरी साहित्य

के नियम

१. १०१ रु० देवे वाला 'भोजपुरी साहित्य' के संरक्षक आ पत्रिका समिति के सम्मानित सदस्य मानल जाई। पत्रिका के ऊ आजीवन ग्राहक होई।

२. २५ रु० देवे वाला पत्रिका समिति के सदस्य आ पत्रिका के ७ साल तक ग्राहक रहिहें।

३. पत्रिका के सालाना चन्दा पाँच रुपया आ एक अंक के दाम ५० पइसा बा।

४. विज्ञापन के रेट खातिर व्यवस्थापक के चिट्ठी लिखीं।

संपादकीय आ व्यवस्थापकीय
कार्यालय
भोजपुरी साहित्य
प्रोफेसर कॉलोनी
के० जी० रोड, आरा

श्री लक्ष्मण त्रिपाठी द्वारा श्री सरस्वती प्रिन्टिङ्ग वर्क्स, आरा
में छाप के प्रकाशित ।